प्रस्तावना

"ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वह फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। नौ रत्न की माला कोई हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन रत्नों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर यह रत्न समझ अंगूठ्ठियां पहन लेते हैं। इन ज्ञान रत्नों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये रत्न ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।" सा.बाबा 10.1.69

ज्ञान-सागर परमपिता परमात्मा ने हमको अनेक प्रकार का ज्ञान दिया है, जो हमारे जीवन की सफलता के लिए अति आवश्यक है, जिसमें परमात्मा, आत्मा, सृष्टि-चक्र अर्थात् विश्व-नाटक, त्रिलोक, संगमयुग, योग, कर्म-सिद्धान्त, पवित्रता, स्वर्ग-नर्क का ज्ञान मुख्य है, जो हमारे आध्यात्मिक पुरुषार्थ के लिए अति आवश्यक है। इस सब पर विचार करें तो सृष्टि-चक्र अर्थात् इस विश्व-नाटक के ज्ञान में सब आ जाता है, इसलिए इस विश्व-नाटक के ज्ञान के विषय में यहाँ विचार किया गया है।

ये विश्व-नाटक परम अद्भुत नाटक है, परमात्मा ही इसके गुह्य रहस्य का पूर्ण ज्ञाता है। इसके सर्व रहस्यों को पूर्ण रूप से जानना तो आत्माओं के वश से परे है परन्तु जितना हमारे लिए आवश्यक है, उतना ज्ञान परमात्मा ने हम आत्माओं को दिया है। विश्व-नाटक के कुछ मुख्य रहस्यों पर यहाँ विचार किया गया है और उनको समझने के लिए बाबा के महावाक्यों का संग्रह किया गया है।

ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी (Eternal) है, इसके विधि-विधान सत्य हैं और सदा ही सत्य हैं। उनमें देश-काल-व्यक्ति के कारण कोई अन्तर नहीं हो सकता है, उन पर भी विचार किया गया है और जो स्वेच्छिक विषय हैं, उनके विषय में वैचारिक भिन्नता अवश्य सम्भावी है क्योंकि ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है। उनमें एक-दो के विचारों को सम्मान देकर यथार्थ सत्य का निर्णय करना ही यथार्थ है। ऐसे विषयों में देश-काल-परिस्थितियों के आधार पर किसी व्यक्ति के अपने ही विचारों में भिन्नता हो सकती है, वे परिवर्तन हो सकते हैं, इसलिए उनकी कोई निश्चित (Hard Fast) सीमा-रेखा नहीं हो सकती है। इनमें धारणायें और सेवा के क्षेत्र विशेष हैं।

बाबा की मुरली में भी कई विषयों पर देश-काल-परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग उत्तर होते हैं। इसलिए बाबा ने जो कहा है, उसको उस देश-काल-परिस्थिति के अनुसार ही समझना और निर्णय करना है।

विश्व-नाटक का ज्ञान एवं पुरुषार्थ की सफलता

विषय सूची

1. ड्रामा की परिभाषा और उसका सत्य अस्तित्व **(Real Fact of Drama)**

2. विश्व-नाटक और उसकी संरचना अर्थात् विश्व-नाटक की कलम **(Sapling)**

3. विश्व-नाटक की अनादि-अविनाश्यता और सतत परिवर्तनशीलता का सिद्धान्त **(Law of Eternity and Ever-Changebility of World Drama)**

4. विश्व-नाटक, परमात्मा, आत्मा और प्रकृति का सम्बन्ध

5. विश्व-नाटक और परमात्मा की शक्ति एवं कर्तव्य

6. विश्व-नाटक एवं जन्म-मृत्यु अर्थात् देह-परिवर्तन

7. विश्व-नाटक और काल

8. विश्व-नाटक के गुण-धर्म अर्थात् विशेषतायें **(Characterstics)**

9. विश्व-नाटक के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

10. विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति का सिद्धान्त,

11. विश्व-नाटक की विविधता, भिन्नता एवं सतत परवर्तनशीलता

12. विश्व-नाटक की स्वत: गतिशीलता अर्थात् स्वचालिता

13. विश्व-नाटक के आध्यात्मिक नियम और सिद्धान्त

14. विश्व-नाटक और कर्म का विधि-विधान

15. विश्व-नाटक और कर्म-फल का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

16. विश्व-नाटक का सत्यता, न्यायपूर्णता और कल्याणकारिता का सिद्धान्त

विश्व-नाटक की न्यायपूर्णता

विश्व-नाटक की सत्यता और कल्याणकारिता

17, विश्व-नाटक और विश्व-परिवर्तन

18. विश्व-नाटक और विश्व-कल्याण

19. विश्व-नाटक और हीरो पार्ट

20. विश्व-नाटक का सतोप्रधानता और तमोप्रधानता का सिद्धान्त

21. विश्व-नाटक और जो हुआ अच्छा हुआ ...जो होगा अच्छा होगा

22. विश्व-नाटक और चिन्ता एवं चिन्तन

23. विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी शूटिंग के रि-शूटिंग का राज़

24. विश्व-नाटक की परमानन्दमयता

25. विश्व-नाटक और सुख-दुख

26. विश्व-नाटक और पवित्रता, प्रेम, शक्ति, शान्ति एवं आनन्द

27. विश्व-नाटक और मुक्ति-जीवनमुक्ति

28. विश्व-नाटक और मोक्ष

29. विश्व-नाटक और सृष्टि-चक्र का आदि-मध्य-अन्त

30. विश्व-नाटक और स्थापना-विनाश अर्थात् सृष्टि-चक्र का परिवर्तन

31. विश्व-नाटक और पुरुषोत्तम संगमयुग
31. विश्व-नाटक और गीता अर्थात् गीता-ज्ञान
33. विश्व-नाटक और स्वास्तिका अर्थात चार युगों की दिशा और दशा
34. विश्व-नाटक और कल्प की आयु
35. विश्व-नाटक और विश्व की हिस्ट्री-जाग्राफी एवं विश्व की जनसंख्या
36. विश्व-नाटक और विभिन्न धर्म-मठ-पंथ अर्थात् कल्प-वृक्ष
37. विश्व-नाटक और तीन लोक
38. विश्व-नाटक और परमधाम से आत्माओं के आने-जाने का विधि-विधान
39. विश्व-नाटक और विभिन्न योनि की आत्माओं की गति-विधि
40. विश्व-नाटक और सूर्य, चांद, तारे
41. विश्व-नाटक और सुखधाम, दुखधाम, शान्तिधाम
42. विश्व-नाटक और पुरुषार्थ
43. विश्व-नाटक और योग अर्थात् निर्संकल्प एवं निर्विकल्प समाधि
44. विश्व-नाटक और रुहानी ड्रिल
45. विश्व-नाटक और ब्राह्मण जीवन की सफलता
46. विश्व-नाटक के ज्ञान का जीवन परिवर्तन में महत्व
47. विश्व-नाटक और आत्माओं एवं जड़ प्रकृति की चढ़ती कला एवं उतरती कला का विधि-विधान **(Upward and Downward Tendency of Souls and Matter)**
48. विश्व-नाटक और हमारा कर्तव्य
49. विश्व-नाटक और निश्चयबुद्धि विजयनति
50. विश्व-नाटक और 'नथिंग न्यू"
51. विश्व-नाटक और शुभ-चिन्तन एवं व्यर्थ चिन्तन
52. विश्व-नाटक और भगवान एवं भाग्य

द्वितीय अध्याय

1. विश्व-नाटक और साक्षी स्थिति
2. विश्व-नाटक और अचल-अडोल, निर्विघ्न, बेफिकर बादशाह अर्थात् एकरस स्थिति
3. विश्व-नाटक और दैवी गुण
4. विश्व-नाटक और राग-द्वेष, निन्दा-स्तुति, ईर्ष्या-घृणा
5. विश्व-नाटक और निर्दोष दृष्टि
6. विश्व-नाटक और शुभ-भावना शुभ-कामना
7. विश्व-नाटक और मित्रता-शत्रुता
8. विश्व-नाटक और परस्पर सम्बन्ध
9. विश्व-नाटक और स्वदर्शन चक्र एवं स्वदर्शन चक्रधारी
10. विश्व-नाटक और चिन्तन-धारा
11. विश्व-नाटक और साइन्स के अविष्कार
12. विश्व-नाटक और भक्ति के कर्म-काण्ड, साक्षात्कार आदि

13. विश्व-नाटक और स्वर्ग-नर्क, जीत-हार, दिन-रात, क्षीरसागर-विषयसागर
14. विश्व-नाटक और स्वमान एवं सम्मान
15. विश्व-नाटक और ऊंच-नीच अर्थात् अहंकार-हीनता की भावना **(Feeling of Superiority and Inferiority)**
16. विश्व-नाटक और कर्मभोग
17. विश्व-नाटक और विनाश एवं कर्मातीत स्थिति
18. विश्व-नाटक और पुण्य-पाप का खाता
19. विश्व-नाटक और काम-विकार एवं पाप-पुण्य
20. विश्व-नाटक और प्रेम
21. विश्व-नाटक और अधिकार एवं कर्तव्य
22. विश्व-नाटक और मान-अपमान, ... जीत-हार में समान स्थिति
23. विश्व-नाटक और खेल-भावना
24. विश्व-नाटक और समय एवं समय की विशेषता
25. विश्व नाटक और आत्मा की प्राप्तियां
26. विश्व-नाटक और साधन-सम्पत्ति एवं स्वामित्व परिवर्तन
27. विश्व-नाटक और अनभिज्ञता **(Ignorance)**
28. विश्व-नाटक और स्व-स्थिति
29. विश्व-नाटक और विश्व की राज-व्यवस्था
30. विश्व-नाटक और विश्व की शासन-पद्यति
31. विश्व-नाटक और राजाई की स्थापना
32. विश्व-नाटक और भारत-भूमि
33. विश्व-नाटक और क्यों, क्या और कैसे का प्रश्न
34. विश्व-नाटक और स्मृति-विस्मृति
35. विश्व-नाटक और जीवन की कला
36. विश्व-नाटक और साकार मम्मा-बाबा

तृतीय अध्याय

1. विश्व-नाटक अर्थात ड्रामा शब्द का प्रयोग **(Application of Drama)**
2. विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा की कसौटी
3. ड्रामा के यथार्थ स्वरूप में स्थित व्यक्ति की पहचान **(Critaria to real understanding of the knowledge of Drama)**
4. विश्व-नाटक के विषय में विविध बिन्दु:-
5. विविधि प्रश्न और उत्तर
6. विविध विचारणीय प्रश्न

सार
अमृत-धारा

विश्व-नाटक अर्थात् ड्रामा

ये सृष्टि आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का परम-अद्भुत और परमानन्दमय खेल है, जो अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलने वाला है। ज्ञान सागर परमात्मा ने इस विश्व-नाटक का सत्य ज्ञान अभी हम आत्माओं को दिया है, जो आत्मा इसके यथार्थ रहस्य को समझ लेता है, उसे ये परमानन्दमय और परम-सुखमय अनुभव होता है।

इस संगमयुगी ब्राह्मण जीवन के यथार्थ सुख को अनुभव करने के लिए परमात्मा का जितना महत्व है, उतना ही उनके द्वारा दिया गया इस विश्व-नाटक के ज्ञान का महत्व है। इस विश्व-नाटक की यथार्थता को जानने और उसका सुख अनुभव करने के लिए निम्नलिखित बातों के विषय में विचार करना और जानना अति आवश्यक है।

विश्व-नाटक के ज्ञान का महत्व

"ये सृष्टि एक अनादि-अविनाशी नाटक है। ये नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और परम कल्याणकारी एवं परम-अद्भुत रहस्यों से परिपूर्ण है। इसकी यथार्थता को जानने वाला ही इसके परम सुख को अनुभव कर सकता है। परमात्मा सहित हम सभी आत्मायें इस विश्व-नाटक में पार्टधारी हैं। हम इस विश्व-नाटक के पार्टधारी भी हैं तो दर्शक भी हैं, इसलिए विश्व-नाटक में सफलतापूर्वक पार्ट बजाने और इसकी दिव्यता और अद्भुतता को अनुभव करने और उसका आनन्द लेने के लिए इसका यथार्थ ज्ञान का होना परमावश्यक है। परमात्मा इसका पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए वह इसकी किसी घटना से प्रभावित न होकर, सदा साक्षी होकर इसको देखता है और पार्ट बजाता है। कल्प के संगमयुग पर ही वह आकर इसका यथार्थ ज्ञान हम आत्माओं को देता है, तब ही हम आत्मायें इसकी यथार्थता को जानकर इस इसके सुर-दुर्लभ परम सुख को अनुभव करते हैं।

सृष्टि की यथार्थता को देखें तो हम देखते हैं कि लक्ष्मी-नारायण, जो सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी होते हैं, वे भी अपने प्रथम जन्म से गिरती कला में आ जाते हैं और विश्व की सतत गिरती कला ही होती है। यदि हम इसके कारण की खोज करेंगे तो पायेंगे कि विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की अनभिज्ञता ही इसका मूल कारण है। ज्ञान सागर परमात्मा पिता आकर इसके सत्य ज्ञान को देते हैं तब ही आत्माओं और विश्व की चढ़ती कला होती है।

इस विश्व-नाटक के परम सुख को अनुभव करने के लिए परमात्मा पिता के द्वारा

दिये गये परम अद्भुत ज्ञान से इस विश्व-नाटक सम्बन्धी कुछ नियम-सिद्धान्तों और उनसे सम्बन्धित कुछ रहस्यों को समझकर यहाँ उद्धत किया गया है, जिससे अन्य भाई-बहनों को भी इसके परम सुख को अनुभव करने में सहयोग मिले और हम आशा करते हैं कि इस विश्व-नाटक के परम सुख को अनुभव करने में उनको अवश्य ही इससे सहयोग मिलेगा।

"यह बना-बनाया नाटक है। हम समझते हैं कि यह सभी एक्टर्स हैं। नाटक की निन्दा तो कर नहीं सकते। नाटक की तो जरूर महिमा ही करनी पड़े। अपना ही नाटक है, हम उस नाटक के एक्टर्स हैं। नाटक को एक्टर्स खराब थोड़ेही मानेंगे। इसको देखकर तुम खुश होते हो, निन्दा तो कर नहीं सकते, बाकी मनुष्यों को माया के फंदे से छुड़ाने के लिए समझाते हैं।"

सा.बाबा 28.1.69 रात्रि क्लास रिवा.

"जो कुछ भी ड्रामा में होता है, उसमें कल्याण ही भरा हुआ है। अगर ये स्मृति में सदा रहे तो कमाई जमा होती रहेगी।" अ.बापदादा 7.3.81

"हम आत्मायें कहाँ की रहने वाली हैं, फिर कैसे आती हैं पार्ट बजाने ?... आत्मा कैसे आकर छोटे से शरीर में प्रवेश करती है। बड़ा ही वण्डरफुल खेल है।... यह बेहद के नाटक की नॉलेज सिर्फ एक बाप ही सुना सकते हैं, और कोई सुना न सके। बाबा ने स्वर्ग देखा थोड़ेही है परन्तु उनमें सारी नॉलेज है।... वण्डर लगता है ना कि जिसने कभी पार्ट ही नहीं लिया, वह कैसे बतलाते हैं और हम जो पार्टधारी हैं, हम कुछ नहीं जानते हैं!... ड्रामा अनुसार बिगर देखे, अनुभव सुनाये सारी नॉलेज देते हैं। ... ड्रामा अनुसार पहले से ही उनमें ये पार्ट बजाने की नूँध है। ड्रामा की हर एक बात वण्डरफुल है।"

सा.बाबा 12.5.04 रिवा.

"परमात्मा को पुकारते हैं - हे पतित-पावन आओ। यह नहीं कहते कि आकर सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाओ। बाप कहते हैं - इस सृष्टि-चक्र को समझने से ही तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो, याद से ही पावन बनते हो।" सा.बाबा 19.7.06 रिवा.

"सतयुग में यह ज्ञान नहीं होगा।... तुम्हारी बुद्धि में यह चक्र फिरना चाहिए। अभी तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो, जिससे फिर जाकर चक्रवर्ती राजा बनेंगे।"

सा.बाबा 11.7.06 रिवा.

"वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, यह तो जानना चाहिए ना। जो अच्छी रीति जानते हैं, बुद्धि में धारण कर औरों को धारणा कराते हैं, वे ऊंच पद पाते हैं। जो नॉलेज मेरे में है, वह तुमको दे रहा हूँ। ड्रामा प्लेन अनुसार मैं रिपीट करता हूँ। मेरा भी ड्रामा में पार्ट है।"

सा.बाबा 13.7.06 रिवा.

विश्व-नाटक अर्थात् ड्रामा की परिभाषा और उसका सत्य अस्तित्व

(Real Fact of Drama)

ये विश्व-नाटक क्रिया-प्रतिक्रिया, पुरुषार्थ-प्रालब्ध-पुरुषार्थ, कर्म-फल-कर्म पर आधारित अनादि-अविनाशी, विविधतापूर्ण, परम-कल्याणकारी परमानन्दमय एक घटना-चक्र है, जिसकी हर घटना 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होती है और एक घटना दूसरी घटना का आधार बनती है।

ये सृष्टि-चक्र कहो, विश्व-नाटक कहो, जो कल्प के आदि के प्रथम क्षण से आरम्भ होता है और अन्तिम क्षण तक सतत चलता है। सृष्टि की कब आदि-अन्त नहीं है, इसलिए सृष्टि को अनादि-अनन्त कहा जाता है परन्तु इस चक्र की आदि और अन्त है। सतोप्रधानता की चरम सीमा और तमोप्रधानता की चरम सीमा ही इसकी आदि और अन्त का समय है। इस विश्व-नाटक में कर्म और फल का अद्वितीय सन्तुलन है, जिसके आधार पर ये विश्व-नाटक 5000 वर्ष तक अबाध गति से सफलतापूर्वक चलता है और 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। किसी भी व्यक्ति को अंशमात्र भी प्रश्न करने गुंजाइश नहीं है।

ये विश्व-नाटक परम सुखमय है, जो आत्मा इस नाटक की यथार्थता को जानकर अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर पार्ट बजाती है, इसको देखती है, वही इसके परम सुख को अनुभव करती है। विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञाता परमात्मा ही है और वे ही कल्पान्त में आकर ये ज्ञान आत्माओं को देते हैं, जिससे आत्मायें भी साक्षी होकर इसके परम सुख को अनुभव करती है। इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान ही साक्षी स्थिति का एकमात्र आधार है।

यह सृष्टि स्मृति-विस्मृति का एक खेल है। संगमयुग पर आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, तीनों लोकों, कल्प-वृक्ष, कर्म-सिद्धान्त, आत्मा की चढ़ती कला उतरती कला आदि का ज्ञान परमात्मा से मिलता है, जिसकी स्मृति से आत्मा की चढ़ती कला होती है, स्वर्ग की स्थापना होती है। सतयुग से जब आत्मा परमधाम से इस धरा पर पार्ट बजाने आती है, तब से ही ये सब ज्ञान विस्मृत हो जाता है और आत्मा में देह-भान आ जाता है, जिसके कारण सतयुग आदि से ही आत्मा की उतरती कला आरम्भ हो जाती है। यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान की विस्मृति के कारण सतयुग से ही आत्मा और सृष्टि की उतरती कला तो आरम्भ हो जाती है अर्थात् देह-भान के कारण आत्मिक शक्ति का ह्रास होने लगता है परन्तु आत्मिक शक्ति होने के कारण विकारों की प्रवेशता नहीं होती है। द्वापर से ये विस्मृति देहाभिमान का रूप धारण करती है,

जिससे आत्मा में 5 विकारों की प्रवेशता होती है और आत्मिक शक्ति का तीव्रता से ह्रास होने लगता है।

कल्पान्त में जब परमात्मा पिता आकर पुन: ये ज्ञान देते हैं तो स्व-स्वरूप, स्व-पिता, स्व-देश, स्व-धर्म, स्व-कर्तव्य, स्व-राज्य, स्वदर्शन-चक्र की स्मृति से आत्मिक शक्ति का विकास होता है, जिससे आत्मिक शक्ति देहाभिमान पर विजय प्राप्त करती है, जिसके फलस्वरूप नर्क फिर से स्वर्ग बनता है। इन सब बातों की विस्मृति से आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है, जिससे देहाभिमान आत्मिक शक्ति पर विजय प्राप्त कर लेता है और स्वर्ग नर्क बन जाता है। स्वर्ग से नर्क और नर्क से स्वर्ग का ये चक्र सतत चलता रहता है, इसलिए परमात्मा ने इसे स्मृति-विस्मृति, जीत-हार, स्वर्ग-नर्क का खेल कहा है।

इस विश्व-नाटक के इतिहास को एक प्रेम कहानी कहें तो भी कोई अतिश्योक्ति या भूल नहीं होगी क्योंकि प्रेम इस कहानी में मुख्य भूमिका निभाता है, जिसके आधार पर ये सारा नाटक चलता है। प्रेम आत्मा अनादि-अविनाशी स्वभाव है, परमात्मा को भी प्रेम का सागर कहा जाता है।

"बाप ने तो सारा ज्ञान दे दिया है। जिसने जितना कल्प पहले धारण किया था, उतना ही अभी करेंगे। पुरुषार्थ करना है, कर्म बिगर तो कोई रह न सके। ... कल्प-कल्प एक ही बार बाबा बतलाते हैं कि यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है।"

सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

'यह है बड़ा वण्डरफुल ड्रामा। अभी तुम बच्चे आदि से लेकर अन्त तक सब जानते हो। ... बाप के पास सारा ज्ञान है, तुम्हारे पास भी होना चाहिए।... यह साक्षात्कार आदि सब ड्रामा में नूँध हैं, इसमें तुमको मूँझने की दरकार नहीं है।" सा.बाबा 28.3.05

"यह समझानी जो अभी तुमको दे रहा हूँ, यह हर कल्प देता आया हूँ। ... यह एक बेहद का नाटक है। इसमें कोई की निन्दा आदि की बात नहीं है। अनादि ड्रामा बना हुआ है, इसमें फर्क कुछ भी नहीं पड़ सकता। यह अनादि बना-बनाया बड़ा अच्छा नाटक है, जिसको बाप समझाते हैं। इस ड्रामा के राज़ को समझने से तुम विश्व के मालिक बन जाते हो।"

सा.बाबा 4.10.04 रिवा.

"यह ईश्वर की बारात है ना।... अभी नाटक पूरा हुआ, अब घर चलना है। पावन जरूर बनना है। तुम्हारे लिए ड्रामा अनुसार मैं कल्प-कल्प आता हूँ।"

सा.बाबा 4.10.04 रिवा.

"यह आत्मा और जीव दो का खेल है। ... यह तो पढ़ाई है, यह कोई दवाई नहीं है। दवाई

है याद की यात्रा। ... यह केसा भूल-भुलैया का खेल है, जिस बाप से इतना बेहद का वर्सा मिलता है, उनको ही भूल जाते हैं। ... यह दुर्गति और सद्गति का खेल बना हुआ है। अभी बाप ने तुमको सद्गति-दुर्गति के टाइम आदि का भी समझाया है।"

सा.बाबा 20.11.04 रिवा.

"मनुष्य से देवता और देवता से मनुष्य कैसे बनते हैं - यह राज़ बाप ने तुमको समझाया है। ... इस अविनाशी ड्रामा के राज़ को जो ठीक रीति जानते हैं, वे सदा हर्षित रहते हैं। ... हू-ब-हू सारी एक्ट फिर से रिपीट हो रही है। इसमें संशय कर नहीं सकते।"

सा.बाबा 17.12.04 रिवा.

"बाप आकर सारे सृष्टि चक्र की नॉलेज देते हैं। ... यह चक्र फिरता रहता है। ये बड़ी सूक्ष्म बातें हैं समझने की। यह बना-बनाया खेल है। ... देही-अभिमानी बनें तब खुशी का पारा चढ़े। ... बाबा से कोई बात पूछते हैं तो बाबा कहते हैं - ड्रामा में जो कुछ बताने का है, वह बता देते हैं। ड्रामा अनुसार जो उत्तर मिलना था सो मिल गया, बस उस पर चल पड़ना है।"

सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

"आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है, फिर वही पार्ट बजायेंगे। इसको कहा जाता है कुदरत। ... शास्त्रों में भूल कर दी है। यह भी भूल हो तब तो हम आकर अभूल बनायें। यह भूलें भी ड्रामा में नूँध हैं।"

सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

"परमात्मा ज्ञान, गुण, आनन्द, पवित्रता का फार-एवर सागर है। उनका यह पद अविनाशी है। ... भल अभी तुम मास्टर ज्ञान का सागर, पवित्रता का सागर बनते हो, परन्तु लिमिटेड बनते हो। तुमको मैं अन्-लिमिटेड नहीं बना सकता। नहीं तो फिर सृष्टि का खेल कैसे चले।"

सा.बाबा 21.6.06 रिवा.

विश्व-नाटक और उसकी संरचना अर्थात् विश्व-नाटक की कलम (Sampeling)

ये अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। न ही ये ड्रामा विनाश होता है और न ही सृष्टि विनाश होती है परन्तु इसमें हर क्षण परिवर्तन होता है, इसलिए इसका हर दृश्य नया प्रतीत होता है। कल्प के संगम युग पर सृष्टि का मूलभूत परिवर्तन होता है अर्थात् ड्रामा का एक चक्र पूरा होकर, नया चक्र चालू होता है। व्यतीत होने वाले चक्र से आने वाले नये चक्र का गहरा सम्बन्ध है अर्थात् पुराना चक्र नये चक्र का आधार बनता है, इसलिए परमात्मा ने इस परिवर्तन को कलम (Sapling) की संज्ञा दी है। कल्प के पुरुषोत्तम

संगमयुग पर ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा आकर इसका सत्य ज्ञान देते हैं, जिससे इसकी कलम लगती है। संगमयुग परमात्मा के अवतरण से लेकर श्री लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने तक चलता है अर्थात् संगमयुग का कुछ समय पुराने चक्र में और कुछ समय नये चक्र में आता है।

ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है, इसकी न कभी रचना हुई है और न ही इसमें कुछ परिवर्तन हो सकता है परन्तु हर क्षण, पल-विपल परिवर्तन अवश्य होता है, इसलिए जगत को परिवर्तनशील कहा जाता है। ये एक आश्चर्यजनक सत्य है कि इस विश्व-नाटक में कुछ परिवर्तन नहीं हो सकता है किन्तु दृश्य और घटनायें हर क्षण परिवर्तन होती रहती हैं, जिसके कारण हर क्षण नया प्रतीत होता है और हर 5000 वर्ष के बाद हर दृश्य और घटना हू-ब-हू पुनरावृत्त होती है। जड़ और चेतन की पवित्रता अर्थात् सतोप्रधानता की सम्पूर्ण स्थिति और अपवित्रता अर्थात् तमोप्रधान की सम्पूर्ण स्थिति के संगम से ही इसके नये चक्र के आरम्भ और पुराने चक्र के अन्त की पहचान होती है, उस समय सर्व आत्मायें पतित से पावन बनती हैं और अपने घर वापस जाती हैं, जहाँ से नये चक्र का शुभारम्भ होता है।

सृष्टि की तो कभी नई रचना नहीं हुई है परन्तु इसका चक्र नया-पुराना अवश्य होता है अर्थात् दुनिया नई और पुरानी होती है, चक्र का आदि-अन्त होता है सृष्टि का नहीं। परमात्मा सृष्टि-चक्र की रचना नहीं करता है परन्तु नये चक्र की पुर्नरचना (Restart) अवश्य करता है अर्थात् पुराने को नये में बदलता है। हर पांच हजार साल के बाद परमात्मा पिता आकर ज्ञान देकर नये चक्र की कलम लगाते हैं, जिससे इसका नया चक्र चालू होता है। तमोप्रधानता की चरम सीमा और सतोप्रधानता की चरम सीमा ही इसके आदि-अन्त की पहचान है, जिसको स्वर्ग और नर्क के नाम से भी जाना जाता है। अभी वही संगम का समय चल रहा है, जब परमात्मा इसकी कलम लगा रहे हैं, आत्माओं को ब्रह्मा तन से एडॉप्ट कर ज्ञान देकर पावन बना रहे हैं। इस प्रकार हम देखें तो परमात्मा विश्व-नाटक की संरचना नहीं करता लेकिन नये चक्र की संरचना अवश्य करता है अर्थात् पुराने से नया बनाता है।

"सभी आत्माओं को माया के बन्धनों से छुड़ाना और फिर नई दुनिया का सेपलिंग लगाना और पुरानी दुनिया का परिवर्तन करना... यह सब काम उनका है।... दूसरा गॉड इज ट्रुथ कहते हैं। तो ट्रुथ क्या चीज है, किसमें ट्रुथ ? यह भी समझने की बात है।... नहीं, गॉड इज ट्रुथ का मतलब ही है कि गॉड ने ही आकर सब बातों की जो सच्चाई है, वह बताई है।... जो सर्वज्ञ है, वही ट्रुथ को जान सकता है।" मातेश्वरी 21.06.64

"यह ड्रामा अनेक बार रिपीट होता है, उसका कोई आदि अन्त नहीं। ड्रामा का आदि-अन्त तो

है,फिर-फिर रिपीट होता रहता है ऑटोमेटिकली।"

सा.बाबा 13.11.73 रिवा.

"ड्रामा कैसे बना हुआ है, कैसे चक्र फिरता है, सो तो जो बाप के बच्चे हैं, वे ही जानते हैं। बाप है रचता, वह नई दुनिया स्वर्ग रचते हैं परन्तु सब तो स्वर्ग में आ नहीं सकते। ड्रामा के राज़ को भी अच्छी रीति समझना है।"

सा.बाबा 13.03.06 रिवा.

"कई पूछते हैं - पहले-पहले मनुष्य कैसे रचे, भगवान ने सृष्टि कैसे रची ? ... बाप कहते हैं - ऐसी कोई बात नहीं है, यह तो बेहद का बना-बनाया ड्रामा है।... बाप तुमको संगम पर ही सारी सृष्टि का समाचार सुनाते हैं। सतयुग में थोड़ेही सुनायेंगे। जिस समय सृष्टि की आदि-मध्य-अन्त हुई ही नहीं तो उसका समाचार कैसे समझायें।"

सा.बाबा 26.02.06 रिवा.

"इतनी छोटी सी आत्मा में 84 जन्मों का अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है, यही है सबसे वण्डरफुल बात। ... ऐसे नहीं कहंगे ड्रामा कब से शुरू हुआ। कुदरत कहते हैं ना। ... जैसे बाबा वण्डरफुल है, वैसे ज्ञान भी बड़ा वण्डरफुल है।... नाटक कब बना, यह कोई प्रश्न उठा नहीं सकता।"

सा.बाबा 29.12.05 रिवा.

"स्वदर्शन चक्रधारी होकर रहो। उठते-बैठते, चलते-फिरते बुद्धि सारी नॉलेज रहे। ... यह बना-बनाया ड्रामा है, जो फिरता ही रहता है। यह कह नहीं सकते कि भगवान ने इसे कब, कैसे और कहाँ बैठ बनाया ? ... पूछा जाता है - ड्रामा सर्वशक्तिवान है या ईश्वर ? ... बाप कहते हैं - मैं भी ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूँ।"

सा.बाबा 11.5.06 रिवा.

विश्व-नाटक की अनादि-अविनाश्यता और सतत परिवर्तनशीलता का सिद्धान्त

(Law of Eternity and Ever-Changebility of World Drama)

यह अनादि-अविनाशी नाटक है अर्थात् ये न कब बनाया गया है और न कब विनाश होता है। बाकी इतना अवश्य है कि जब नई दुनिया होती है तो पुरानी दुनिया खलास हो जाती है और सृष्टि के नियमानुसार नई सो पुरानी होती है। यह नया सो पुराना और पुराना सो नया का घटना-चक्र फिरता ही रहता है।

ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है, इसलिए इसकी रचना का तो प्रश्न ही नहीं उठता है अर्थात् न इसकी कभी रचना हुई है और न ही विनाश होने वाला है परन्तु इसमें हर पल-

विपल परिवर्तन अवश्य होता है। इसलिए जगत को परिवर्तनशील कहा जाता है। इस सतत परिवर्तन के आधार पर ही ये विश्व नाटक नित्य नया प्रतीत होता है।

"हर आत्मा अपना-अपना 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। एक सेकेण्ड न मिले दूसरे से। एक सेकेण्ड का पार्ट दूसरे सेकेण्ड से मिल न सके। ... अब बाप को रचता कहा जाता है परन्तु ऐसे नहीं कि वह ड्रामा का कोई रचता है। रचता अर्थात् इस समय आकर सतयुग को रचते हैं।"

सा.बाबा 21.5.05 रिवा.

"माला को तुम अच्छी रीति जान गये हो। जो बाप के साथ सर्विस करते हैं, उनकी यह माला है। शिवबाबा को रचता नहीं कहेंगे। रचता कहेंगे तो प्रश्न उठेगा कि कब रचना की ? प्रजापिता ब्रह्मा अभी संगम पर ही ब्राह्मणों को रचते हैं ना। शिवबाबा की रचना तो अनादि है ही। वे सिर्फ पतित से पावन बनाने के लिए आते हैं। ... मनुष्य सृष्टि को रचने वाला हो गया ब्रह्मा, जो मनुष्य सृष्टि का हेड है।"

सा.बाबा 25.5.05 रिवा.

"बाप आकर सत्य बात समझाते हैं। ... भगवान मनुष्य सृष्टि की रचना कैसे रचते हैं, यह कोई नहीं जानते। ... ब्रह्मा कोई क्रियेटर नहीं है, क्रियेटर तो एक निराकार ही है। निराकार आत्मायें तो अनादि हैं, उनको किसी ने क्रियेट नहीं किया है।"

सा.बाबा 15.7.05 रिवा.

"यह शास्त्र आदि सब ड्रामा में नूँध हैं। इस ड्रामा की आदि तो कह न सकेंगे। जो कुछ पास्ट होता आया है, वह ड्रामा में नूँधा हुआ है। उसको रिपीट जरूर करना है।"

सा.बाबा 14.12.73 रिवा.

"अब चक्र का नाम रखा है अशोक चक्र परन्तु यह है ड्रामा सृष्टि का चक्र। अब तुम इस चक्र को जानने से ही अशोक बन जाते हो। बात तो ठीक है, सिर्फ उलट-पुलट कर दिया है। तुम 84 के चक्र को याद करने से ही चक्रवर्ती राजा बनते हो।... आत्मा में 84 जन्मों का अविनाशी रिकार्ड भरा हुआ है। न ड्रामा कभी विनाश होता है और न एक्ट बदली हो सकती, यह भी वण्डर है। कितनी छोटी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट बिल्कुल एक्यूरेट भरा हुआ है। यह कभी पुराना नहीं होता। नित्य नया है।"

सा.बाबा 17.1.03 रिवा.

"अनादि-अविनाशी ड्रामा है। ... हम एक्टर्स भी ड्रामा में हैं ही हैं। ... यह कभी पुराना नहीं होता। यह अविनाशी ड्रामा कब पुराना होता है क्या ? नहीं।"

सा.बाबा 30.6.02 रिवा.

* यदि यथार्थ दृष्टि से इस विश्व-नाटक को देखें तो ये सतत परिवर्तनशील है। इसका हर

दृश्य हर क्षण परिवर्तन होता रहता है। परिवर्तन ही इस विश्व-नाटक की शोभा है और इसे नवीनता प्रदान करता है।

* ये विश्व-नाटक हर क्षण परिवर्तनशील होते हुए भी 5000 वर्ष की हर घटना अपरिवर्तनीय है, जो 5000 हजार वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होती है।

* आत्मा में भरा संस्कार अविनाशी है, जो परिवर्तन नहीं हो सकता है परन्तु समय रूपी सुई के साथ वह हर क्षण परिवर्तन होता है क्योंकि ये विश्व-नाटक हर क्षण परिवर्तनशील है।

5000 वर्ष का यह विश्व-नाटक समय और स्थिति की दृष्टि से चार समान भागों में विभाजित है, जो सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग के नाम से जाने जाते हैं। कलियुग और सतयुग के मध्य एक छोटा सा सन्धिकाल होता है, जो कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग के नाम से जाना जाता है, जिसका समय इन दोनों युगों के समय से मिलाकर गिना जाता है। सतयुग-त्रेता ब्रह्मा का दिन और द्वापर-कलियुग ब्रह्मा की रात के रूप में जाना जाता है। कलियुग का अन्त अति दुख-अशान्ति का समय है और सतयुग आदि का समय सर्वाधिक सुख-शान्ति का समय है।

समय की गति के साथ इस विश्व-नाटक में जीवात्मायें वृद्धि को पाती जाती हैं और साधन-सम्पत्ति सबमें विभाजित होती जाती है और प्रदूषित होती जाती है, जिससे मनुष्यों की सुख-शान्ति में कमी होती जाती है। वर्तमान जगत में अनन्त जीवात्मायें हैं, जिनकी असंख्य विचार तरंगें वातावरण में विद्यमान हैं, जो आत्माओं के मन को उद्द्वेलित करके अशान्त कर रहीं हैं। सतयुग में बहुत कम जीवात्मायें होंगी और विनाश के समय की वैराग्य वृत्ति और परमधाम से आने के कारण बहुत कम आत्माओं के संकल्प होंगे, जिससे वातावरण में बहुत कम विचार तरंगें होंगी, जिससे आत्माओं को अशान्ति की अनुभूति नाममात्र भी नहीं होगी।

"ऐसे नहीं कहेंगे कि आत्मा सदा से एक ही स्टेज में है। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है तो आत्मा की स्थिति बदलती है लेकिन वैसे आत्मा अनादि-अविनाशी है। बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि उसकी स्थिति भी अनादि-अविनाशी है।" मातेश्वरी 21.06.64

'यह अनादि-अविनाशी ड्रामा है। इसमें जीतते भी हैं और फिर हारते भी हैं। अब यह चक्र पूरा हुआ, अभी हमको घर जाना है। ... बाबा हमको रावण पर जीत पहनाते हैं। ऐसी-ऐसी बातें सवेरे-सवेरे उठकर अपने साथ करनी चाहिए।"

सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

"अभी तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर बैठे हो, बाकी और सब हैं कलियुग में।... मैं बैठकर तुमको ड्रामा राज समझाता हूँ। मैंने बनाया हो तो फिर कहेंगे कब बनाया! बाप कहते हैं - यह

अनादि है ही। कब शुरू हुआ, यह सवाल नहीं आ सकता। अगर कहेंगे फलाने समय शुरू हुआ तो कहेंगे बन्द कब होगा! परन्तु नहीं, यह तो चक्र चलता ही रहता है। ... यह है पुरुषोत्तम संगमयुग, इसमें पुरुषार्थ कर पावन बनना है। ... दिन प्रतिदिन सीढ़ी नीचे उतरते तमोप्रधान बनते जाते हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है। एक्टर्स होकर ड्रामा के क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर को न जाने तो क्या कहेंगे!"

सा.बाबा 10.5.04 रिवा.

"संगम पर ही यह सब होता है। अभी तुम यह सब कुछ जानते हो। बाप कहते हैं बाकी जो कुछ राज़ हैं, वे आगे चलकर धीरे-धीरे समझाते रहेंगे। जो रिकार्ड में नूँध है, वह खुलते जायेंगे, तुम समझते जायेंगे। इन-एडवान्स कुछ भी नहीं बतायेंगे। यह भी ड्रामा का प्लेन है, रिकार्ड भी खुलता जायेगा। ... ड्रामा का राज़ सारा भरा हुआ है। ऐसे नहीं कि रिकार्ड से सुई उठाकर बीच में रख सकते हैं।"

सा.बाबा 8.4.04 रिवा.

"यह ड्रामा बना हुआ है। कभी-कभी बाबा सोचते हैं - कुछ ड्रामा में चेन्ज हो जाये परन्तु चेन्ज हो नहीं सकता। यह बना-बनाया खेल है। ... फिर ख्याल आता है - स्वर्ग में तो सारी राजधानी चाहिए। कोई दास-दासियां, चण्डाल आदि भी होंगे। ड्रामा में कुछ चेन्ज नहीं हो सकती। भगवानुवाच - यह ड्रामा बना हुआ है, इसको मैं भी चेन्ज नहीं कर सकता। ... जो कुछ ड्रामा में नूँध है, वही होता है। बाप भी कुछ नहीं कर सकता। इसको कहा जाता है - ड्रामा की भावी। तुमको बेफिकर बनाते हैं। ... जब तक कच्ची अवस्था है, थोड़ी-बहुत लहर आती है।"

सा.बाबा 24.3.04 रिवा.

"जब-जब भारत पर अति धर्म ग्लानि होती है, जब सभी धर्मों का जो पारलौकिक बाप है, उनको भूल जाते हैं तब ही बाप आते हैं। यह भी खेल है। जो कुछ होता है, खेल रिपीट होता रहता है। ... यह नाटक अनादि-अविनाशी जूँ मिसल चलता रहता है, कभी बन्द नहीं होता। टिक-टिक होती रहती है परन्तु एक टिक न मिले दूसरे से। कैसा वण्डरफुल नाटक है।... यह ड्रामा बना हुआ है, इसको कोई नहीं जानते हैं। तुम भी नहीं जानते थे। अभी तुमने जाना है, अब तुमको स्वदर्शन चक्रधारी कहा जाता है।"

सा.बाबा 16.2.04 रिवा.

"मूल बात है काम कटारी की। यह भी ड्रामा है ना। ऐसे भी नहीं कहेंगे कि ऐसा ड्रामा क्यों बना ? यह तो अनादि खेल है, इसमें मेरा भी पार्ट है। ड्रामा कब बना, कब पूरा होगा - यह भी नहीं कह सकते। ... आत्मा अविनाशी है, उसमें पार्ट भी अविनाशी है। ड्रामा भी अविनाशी है। बाप जो पुनर्जन्म में नहीं आते हैं, वे ही आकर सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सब राज़ समझाते हैं।"

सा.बाबा 3.2.04 रिवा.

"यह ड्रामा है। हरेक आत्मा को अपना पार्ट मिला हुआ है। कोई को 84 जन्मों का पार्ट है, कोई को दो-तीन जन्मों का पार्ट है। यह इमार्टल ड्रामा है, जो रिपीट होता रहता है।"

सा.बाबा 20.5.73 रिवा.

"यह ड्रामा अनादि चलता रहता है। कब बना, यह कह नहीं सकते। इसकी नो इण्ड। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्राफी रिपीट होती है।" सा.बाबा 4.03.06 रिवा.

"बहुत लोग पूछते हैं ड्रामा ऐसा क्यों बनाया है ? अरे यह तो अनादि है। क्यों बनाया, यह प्रश्न उठ नहीं सकता। यह तो अनादि-अविनाशी बना हुआ है।"

सा.बाबा 15.02.06 रिवा.

"हर एक को अपना पार्ट बजाना ही है। जो पीछे आते हैं, उनको शान्ति कितनी मिलती है। ... ड्रामा अनुसार जिसका जो पार्ट है, वही बजायेंगे। किसका भी पार्ट बदल नहीं सकता। ... पिछाड़ी वालों को पिछाड़ी में ही आना है।"

सा.बाबा 26.4.06 रिवा.

"दृढ़ता असम्भव को भी सम्भव करा देती है। ... कोई न कोई निमित्त बन अपना भाग्य बनाते हैं। देने वाले पहले ही ड्रामा में नूँधे हुए है।"

अ.बापदादा 23.12.94

"अभी ही नई दुनिया और पुरानी दुनिया के बीच बाप यह ज्ञान देते हैं, फिर यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। देवताओं को यह ज्ञान नहीं होता है। अगर उनको यह चक्र ज्ञान हो तो राजाई में मज़ा ही न आये। अभी भी तुमको ख्याल होता है कि राज्य लेकर फिर हमारी यह हालत होगी। परन्तु यह तो ड्रामा बना हुआ है, चक्र को फिरना ही है।"

सा.बाबा 27.7.06 रिवा.

विश्व-नाटक और परमात्मा, आत्मा एवं प्रकृति का सम्बन्ध

ये सृष्टि एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जिसमें आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का अनादि-अविनाशी पार्ट चलता रहता है। हर आत्मा एक स्वतन्त्र सत्ता है, जो इस विश्व-नाटक में पार्टधारी है। आत्मायें चेतन्य हैं और प्रकृति जड़ है। परमात्मा सहित सर्वात्मायें इस विश्व-नाटक में अविनाशी पार्टधारी हैं। आत्मा-परमात्मा इस विश्व-नाटक में चेतन्य पार्टधारी हैं और प्रकृति जड़ पार्टधारी है। जैसे आत्माओं में अपना-अपना पार्ट नूँधा हुआ है, ऐसे ही जड़ प्रकृति के हर अणु-परमाणु में अपना पार्ट नूँधा हुआ है। जड़-चेतन के सहयोग से ये नाटक चलता है। आत्मायें चेतन्य होने के कारण सुख-दुख दोनों का अनुभव करती हैं अर्थात् पार्ट बजाती हैं,

जड़ प्रकृति जड़ होने के कारण सुख-दुख दोनों का ही अनुभव नहीं करती है। परमात्मा चेतन्य होते भी सुख-दुख दोनों के अनुभव से परे है।

परमात्मा ज्ञान का सागर है, इसलिए वह इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है परन्तु रचता नहीं। परमात्मा का भी इस विश्व-नाटक में अपना पार्ट है, जो वह कल्प-कल्प बजाता है। वह जब आकर इस विश्व-नाटक का ज्ञान देता है तब ही इसकी नई कलम लगती है, इसलिए ही उसको विश्व का रचता कहा जाता है और कह सकते हैं। विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता होते हुए भी ड्रामानुसार समय पर ही ये ज्ञान उनमें इमर्ज होता है, जिसके आधार पर विश्व-नाटक का नया चक्र आरम्भ होता है।

विश्व-नाटक के नियमानुसार विश्व-नाटक में हर आत्मा का कर्म और फल का, सुख-दुख का, आत्मा का आत्मा के साथ हिसाब-किताब का पूर्ण सन्तुलन है। आत्मा मूल स्वरूप में सच्चिदानन्द स्वरूप है परन्तु उसकी अनुभूति देह में रहते ही हो सकती है। जब देह में रहते देह से न्यारी स्थिति में होती है तो परमानन्द का अनुभव करती है। ये परमानन्द की अनुभूति कल्पान्त में ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों के आधार पर ही होती है और कल्प के

आदि में आत्मिक शक्ति के आधार पर आत्मा को परम-सुख की अनुभूति होती है। ये परम-सुख की अनुभूति हर आत्मा को अपने पार्ट के अनुसार आदि में होती ही है।

ड्रामा का ज्ञान ड्रामा के ज्ञाता परमपिता परमात्मा ने ड्रामा अनुसार ही दिया है। हर आत्मा और हर तत्व अपने मूल स्वरूप में अच्छा है, गुणकारी है और विश्व-नाटक के सफल मंचन में महत्वपूर्ण है। समिश्रण (Compound) के आधार पर ही उसका अच्छा या बुरा प्रभाव होता है। गन्द भी खाद बनकर पौधों को शक्ति प्रदान करती है और उससे सुन्दर, सुगन्धित, स्वास्थ्यप्रद फूल-फल पैदा होते हैं। उसमें नीहित कीटाणु भी उसको खाद का स्वरूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

"यह है हाइएस्ट बाप की रिइन्कारनेशन। फिर सब नम्बरवार आते हैं, कम ताकत वाले। ... तुम विश्व के मालिक बनते हो। तुम्हारे में फुल फोर्स की ताकत आती है। ... मुख्य है ड्रामा, जिसकी नॉलेज तुमको अभी मिलती है। ... तुम बच्चे भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो और उस अनुसार ही पद पाते हो।" सा.बाबा 25.1.05 रिवा.

"बाप भारत में ही आते हैं। यह भी ड्रामा अनादि बना हुआ है। कब बना, कब पूरा होगा - यह प्रश्न नहीं उठ सकता है। ... तुम अपने को आपेही अपने को राजतिलक देते हो।... मन्मनाभव, जिससे अपने को आपेही राजतिलक मिलता है, बाप नहीं देते हैं।"

सा.बाबा 14.1.05 रिवा.

"हमको सभी बात पसन्द है क्योंकि यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। हार-जीत का खेल है। जो होता है सो ठीक। क्रियेटर को ड्रामा पसन्द तो होगा ना। जरूर क्रियेटर के बच्चों का भी ड्रामा में पार्ट है। ड्रामा सारा अच्छा है। ड्रामा को बुरा क्यों कहेंगे, ड्रामा का राज़ बुद्धि में है। ... बहुत सुन्दर नाटक बना हुआ है। नाटक में सुख-दुख सभी पार्ट को देख खुशी होती है। यह भी बेहद का खेल बड़ा फाइन बना हुआ है। सो तो पसन्द ही आना चाहिए। ... बहुत फर्स्ट क्लास खेल है। इसको जानने से बुद्धि पूर हो गई है। हम इस खेल को जान गये तो समझते हैं मजा ही मजा है। ... सारा दिन बुद्धि में यह ख्याल चलना चाहिए - कैसा वण्डरफुल खेल है। ... इस वण्डरफुल ड्रामा को भी नहीं जानते। जो अच्छी रीति जानते हैं और समझते हैं, उनको जरूर खुशी का पारा चढ़ता होगा। जो बहुत दान करते हैं उनको नशा भी होगा ना।"

सा.बाबा 21.4.72 रिवा.

"यह बना-बनाया नाटक है, हम समझते हैं कि ये सभी एक्टर्स हैं। निन्दा तो कर नहीं सकते। नाटक की तो जरूर महिमा ही करनी पड़े। अपना ही नाटक है, हम उस नाटक के एक्टर्स हैं। नाटक को एक्टर्स खराब थोड़ेही मानेंगे। इसको देखकर तुम खुश होते हो, निन्दा तो नहीं कर सकते। बाकी मनुष्यों को माया के फन्दे से छुड़ाने के लिए समझाते हैं।"

सा.बाबा 28.1.69 रात्रि क्लास रिवा.

"सभी को यही एक पाठ पढ़ाओ कि हम सब आत्मायें एक बाप के हैं, एक ही परिवार के हैं, एक ही घर के हैं, एक ही सृष्टि रंगमंच पर पार्ट बजाने वाले हैं। हम सर्व आत्माओं का एक ही स्वधर्म शान्ति और पवित्रता है। ... सारी रचता और रचना की पढ़ाई सिर्फ तीन शब्दों में पढ़ ली है। आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र।" अ.बापदादा 22.4.84

"आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है, फिर वही पार्ट बजायेंगे। इसको कहा जाता है कुदरत। ... शास्त्रों में भूल कर दी है। यह भी भूल हो तब तो मैं आकर अभूल बनाऊं। यह भूलें भी ड्रामा में नूँध हैं।" सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

"यह है बड़ा वण्डरफुल ड्रामा। अभी तुम बच्चे आदि से लेकर अन्त तक सब जानते हो। ... बाप के पास सारा ज्ञान है, तुम्हारे पास भी होना चाहिए। ... यह साक्षात्कार आदि सब ड्रामा में नूँध हैं, इसमें तुमको मूँझने की दरकार नहीं है।" सा.बाबा 28.3.05

"कल्प-कल्प का मेरा पार्ट है, इसमें अदली-बदली हो नहीं सकती। ड्रामा में नूँध है ना। तुमको कई कहते हैं सिर्फ भारत में ही आता है। क्या सिर्फ भारत ही स्वर्ग बनेंगा? ... यह ड्रामा में एक्यूरेट नूँध है।" सा.बाबा 7.2.05 रिवा.

"जो कुछ होता है, वह सब ड्रामा में नूँध है। मैं भी ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूँ। नूँध बिगर

कुछ कर नहीं सकता हूँ। राम-रावण दोनों का पार्ट है।"

सा.बाबा 7.2.05 रिवा.

"कैसे नम्बरवार सब आत्मायें ऊपर जाती हैं और फिर अपने समय पर पार्ट बजाने आती हैं। सबको अपना अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। ... खेल कैसा वण्डरफुल बना हुआ है।"

सा.बाबा 29.12.04 रिवा.

"एक बाप दूसरा न कोई, ऐसे आदि से सहयोगी बच्चों को बाप का एक्स्ट्रा सहयोग मिलता है। ... जो दिल से सहयोगी रहे हैं उन्होंको ऐसे समय पर एक्स्ट्रा मार्क्स रिटर्न के रूप में प्राप्त होती है। समझा - इस रहस्य को! ... ऐसे निमित्त बनने वाली आत्माओं को, आईवेल पर सहयोगी बनने वाली आत्माओं को, ऐसी कोई भी मुश्किल की वेला आती है तो बापदादा भी उन्हें उसका रिटर्न देता है ... यह एक्स्ट्रा गिफ्ट ड्रामा में नूँधी हुई है।"

अ.बापदादा 18.01.86

"मैं तुम बच्चों को सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझा रहा हूँ। यह जो नाटक है, जिसको ड्रामा कहा जाता है, जिसके तुम एक्टर्स हो, मैं भी उसका एक्टर हूँ ... अभी मैं भी एक्ट कर रहा हूँ। मेरा पार्ट सिर्फ इस संगमयुग पर होता है।... तुम जानते हो - हम सब एक्टर्स यह चोला लेकर पार्ट बजाती हैं।"

सा.बाबा 1.03.06 रिवा.

"अभी तुम समझते हो - यह ड्रामा बना हुआ है, इतने सब एक्टर्स हैं। ये सब बातें बुद्धि में होनी चाहिए। ... बाप अनादि तो आत्मायें भी अनादि हैं और ये खेल भी अनादि है।"

सा.बाबा 06.01.06 रिवा.

"जितना-जितना शक्तिशाली सतोप्रधान वायब्रेशन होंगे तो यह प्रकृति और मनुष्यात्माओं की वृत्ति दोनों ही चेन्ज हो जायेगी। मनुष्यात्माओं को वृत्ति से चेन्ज करना है और प्रकृति को वायब्रेशन द्वारा परिवर्तन करना है। ... ड्रामा में मालूम है, ब्रह्मा को भी मालूम है और था कि नारायण बनना ही है, फिर भी क्या किया ? निमित्त बने ना। जगदम्बा को भी पता था फिर भी निमित्त बनकर दिखाया।"

अ.बापदादा 23.12.93 पार्टी 1

विश्व-नाटक और परमात्मा की शक्ति एवं कर्तव्य

परमात्मा भी एक आत्मा है परन्तु वह विशेष आत्मा है, उनका विशेष पार्ट है, इसलिए उनको परम+आत्मा कहा जाता है। ड्रामानुसार अपने गुण और कर्तव्य का ज्ञान भी

परमात्मा स्वयं ही आकर देते हैं। मनुष्य तो परमात्मा को सर्वशक्तिवान अर्थात् जो चाहे सो कर सकते हैं परन्तु वह क्या कर सकता है और क्या नहीं कर सकता है, उनका ड्रामा में क्या पार्ट है, वह ज्ञान भी वे स्वयं ही आकर देते हैं।

विश्व-नाटक और परमात्मा का यथार्थ ज्ञान और उनके मध्य अन्तर को न जानने के कारण विश्व-नाटक के गुण-धर्मों को भी परमात्मा के गुण-कर्तव्यों के साथ में जोड़ दिया है। परमात्मा ने अभी ज्ञान दिया है, जिससे अभी हमको जानकारी मिली है कि ये विश्व-नाटक सुख-दुख का अनादि-अविनाशी बना हुआ है परन्तु मनुष्य परमात्मा के लिए समझ लेते हैं कि सुख-दुख दोनों परमात्मा ही देता है, जबकि परमात्मा तो दुख-हर्ता, सुख-कर्ता है।

बाबा का पार्ट है ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर राजयोग सिखलाकर नई दुनिया की स्थापना करना और सब ड्रामा में नूँध है, सो सारे कल्प चलता ही रहता है।

"मनुष्य समझते कि भगवान तो बड़ा समर्थ है, वह जो चाहे सो कर सकते हैं लेकिन बाबा कहते हैं - मैं भी ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूँ। ... मेरे पार्ट की भी लिमिट है। ... ड्रामा में हर एक का एक्यूरेट पार्ट नूँधा हुआ है।"

सा.बाबा 25.1.05 रिवा.

"ऊंच ते ऊंच कर्तव्य बाप का है। ऐसे नहीं कि ईश्वर तो समर्थ है तो जो चाहे सो करे। नहीं, यह तो ड्रामा अनादि बना हुआ है। सब कुछ ड्रामा अनुसार ही चलता है। लड़ाई आदि में कितने मरते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। इसमें भगवान क्या कर सकते हैं। ... इसमें बचाने आदि की तो बात ही नहीं है।"

सा.बाबा 12.1.05 रिवा.

"यह है बड़ी गुह्य बात। ड्रामा अनुसार जिस समय, जो बात जिस पर निकलती है, वह नूँध है। शिव बाबा ड्रामा अनुसार पढ़ाते हैं। ड्रामा के बन्धन में बाँधा हुआ है। जल्दी विनाश नहीं करा सकते। कहते हैं हमारा भी ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है, इसमें चेन्ज नहीं हो सकती। बच्चे पूछते - बाबा आप किसके हुक्म पर चलते हैं। हम ड्रामा के हुक्म पर चलते हैं। मैं भी ड्रामा के बन्धन में बाँधा हुआ हूँ। ड्रामा अनुसार जो सिखाया है, वही कल्प बाद सिखाऊंगा। कल मंगलवार है, वही वाणी निकलेगी, जो कल्प पहले मंगलवार के दिन निकली थी। कितनी गुह्य बातें हैं।"

सा.बाबा 6.4.73 रिवा.

"बाप जादूगर भी है ना। समझते हैं मैं भी ड्रामा के वश में हूँ। ऐसे नहीं कि ड्रामा के बगैर कुछ कर सकता हूँ। नहीं। ... तुम जानते हो कल्प 2 ड्रामा अनुसार हम बाप से वर्सा लेते हैं।"

सा.बाबा 26.5.71 रिवा.

"ऐसे नहीं कि मेरा मन्दिर लूटते हैं तो मैं कुछ करूँ। ड्रामा में लूटने का ही है, फिर भी लूट ले जायेंगे। ... ड्रामा में विनाश की भी नूँध है, सो फिर भी होगा। मैं कोई फूंक नहीं देता हूँ कि विनाश हो जाये। यह भी ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

"ऊंच ते ऊंच कर्तव्य बाप का है। ऐसे नहीं कि ईश्वर तो समर्थ है तो जो चाहे सो करे। नहीं, यह तो ड्रामा अनादि बना हुआ है। सब कुछ ड्रामा अनुसार ही चलता है। लड़ाई आदि में कितने मरते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। इसमें भगवान क्या कर सकते हैं। ... इसमें बचाने आदि की तो बात ही नहीं है।"

सा.बाबा 12.1.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - यह ड्रामा बना हुआ है, मैं भी ड्रामा के बन्धन में बँधा हुआ हूँ। इस ड्रामा से मैं भी छूट नहीं सकता हूँ। ... मैं किसको थोड़ेही दुख देता हूँ। यह तो हर एक का अपना पार्ट है।"

सा.बाबा 8.1.05 रिवा.

"इस ड्रामा के राज़ को अभी तुम समझते हो। इस बेहद के ड्रामा को जब कोई अच्छी रीति समझे, तब बुद्धि में बैठे। ... राजयोग प्रेरणा से तो नहीं सीखेंगे। यह सब बातें दिल में नोट करनी हैं। जैसे परमात्मा की बुद्धि में सारी नॉलेज है वैसे तुम्हारी बुद्धि में भी बैठना चाहिए।"

सा.बाबा 29.12.04 रिवा.

"बच्चे, इस ड्रामा में हर एक को अनादि पार्ट मिला हुआ है। मैं भी क्रियेटर, डायरेक्टर, प्रिन्सीपल एक्टर हूँ परन्तु ड्रामा के पार्ट को हम कुछ चेन्ज नहीं कर सकते। ... परमात्मा तो खुद कहते हैं मैं भी ड्रामा के अधीन हूँ, इसके बन्धन में बांधा हुआ हूँ।"

सा.बाबा 12.12.04 रिवा.

"इस ड्रामा का राज़ बाप के सिवाए और कोई नहीं जानते हैं।... बाप सारी नॉलेज देते हैं। अपना भी परिचय देते हैं और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी समझाते हैं। ... बाप ज्ञान का सागर नॉलेजफुल है। बाप नॉलेज में आप समान बनाते हैं।"

सा.बाबा 9.10.04 रिवा.

"बाप जो ज्ञान का सागर है, वही सर्व की सद्गति कर सकते हैं।... यह दुर्गति और सद्गति का खेल है। ... यह ड्रामा बना हुआ है, इसमें कभी कुछ चेन्ज हो नहीं सकती है। ... ये अविनाशी ज्ञान रतन एक-एक लाखों रुपये का है। तुम पद्मापदम भाग्यशाली बनते हो। तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। बाप तो खुशी और ना-खुशी दोनों से न्यारा है। साक्षी होकर सारा ड्रामा देख रहे हैं।"

सा.बाबा 20.7.04 रिवा.

"यह भी ड्रामा बना हुआ है, इसलिए इसमें कुछ भी गम या खुशी नहीं होती। सब हमारे बच्चे

हैं। ... ऐसी गुह्य बातें कोई समझ थोड़ेही सकते हैं, इसमें चाहिए सोने का बर्तन। वह याद की यात्रा से ही बन सकता है। ... लिखते हैं बाबा कृपा करो, शक्ति दो, रहम करो। बाबा लिखते हैं - शक्ति आपेही योगबल से लो। अपने ऊपर कृपा रहम आपेही करो। बाप युक्ति बताते हैं।"

सा.बाबा 2.7.04 रिवा.

"अभी तुमको यह नॉलेज मिली है, जो तुम साथ ले जाते हो। जो नहीं लेते, उनका भी ड्रामा में पार्ट है। वही पार्ट बजायेंगे। ... यह ड्रामा बना हुआ है। यह राज़ भी बहुत अच्छा समझने का है। ... दिन-प्रतिदिन बाबा गुह्य बातें समझाते रहते हैं।"

सा.बाबा 2.7.04 रिवा.

"स्टेज पर आने से पार्ट बजाते हैं। पार्ट पर ही सारा मदार है, आत्मा में तो कोई फर्क नहीं है। जैसे तुम बच्चों की आत्मा है, वैसे इनकी भी आत्मा है। बाप परम आत्मा क्या करते हैं, उनका आक्यूपेशन क्या है, वह जानना है।"

सा.बाबा 11.6.04 रिवा.

"अभी तो हम पतित हैं। हम आत्मायें जहाँ से आई हैं, वहाँ तुम पावन थे। यहाँ आकर पार्ट बजाते-बजाते पतित बने हैं। अब फिर पावन कौन बनाये ? पुकारते भी हैं - हे पतित पावन आओ। ... यह बना-बनाया ड्रामा है, इसमें चेन्ज हो नहीं सकता।"

सा.बाबा 26.5.04 रिवा.

"बाप की दृष्टि तो सब आत्माओं की तरफ जाती है, सबका कल्याण करना है। सबको वापस ले जाना है। न सिर्फ तुमको परन्तु सारे वर्ल्ड की आत्माओं को याद करते होंगे। उसमें पढ़ाते तुम बच्चों को हैं। यह भी समझते हो - जैसे नम्बरवार जो आये हैं, वे फिर जायेंगे भी ऐसे। सब आत्मायें नम्बरवार आती हैं। तुम भी नम्बरवार कैसे जायेंगे, वह सब समझाया जाता है। ... ड्रामा में मेरा पार्ट ही है सबको पावन बनाने का। ... बाप सभी रूहों का बाप है।"

सा.बाबा 3.4.04 रिवा.

"ईश्वर का पार्ट अपना है। कहते हैं बच्चे मैं भी इस ड्रामा के बन्धन में बॉधा हुआ हूँ। मुझे भी कर्म करना पड़ता है। मेरा भी पार्ट है। मैं वहाँ बैठे भी कर्म करता हूँ। भक्ति मार्ग में भक्तों की अल्पकाल के सुख की मनोकामना वहाँ से पूरी करता हूँ। यह भी ड्रामा में नूँध है।"

सा. बाबा 28.11.73 रिवा.

"वहाँ बहुत थोड़े होंगे, जो सूर्यवंशी घराने में राज्य करेंगे। सभी तो आ न सकें। ड्रामा के बन्धन में बाँधे हुए हैं। बाप खुद कहते हैं मैं भी ड्रामा के बन्धन में बाँधा हुआ हूँ। कोई बात का रेस्पाण्ड ड्रामा में होगा तो बताऊंगा। ड्रामा का सारा राज़ अभी थोड़ेही बताऊंगा। मेरे में भी

पार्ट नूँधा हुआ है, जैसे इमर्ज होता जाता है वैसे तुमको समझाता रहता हूँ। ड्रामा की नूँध अनुसार ही चलता है। इसमें फर्क नहीं पड़ सकता। ड्रामा में न होगा तो रेस्पान्स करेंगे नहीं। ऐसे नहीं कि बता दूँगा कि बाकी इतने वर्ष हैं।"

सा.बाबा 13.12 .72 रिवा.

"मनुष्य समझते हैं पत्ता हिलता है, यह भी परमात्मा ही हिलाते हैं। पत्ते-पत्ते में वह है। अरे पत्ता तो हवा से हिलता है। ड्रामा अनुसार जो होता है सो फिर होगा। ड्रामा को समझने के लिए बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए।" सा.बाबा 18.2.72 रिवा

"माया की बॉक्सिंग भी ड्रामा में नूँध है। मैं थोड़ेही माया को कहूँगा कि विकल्प न लाओ। बहुत लिखते हैं - बाबा कृपा करो। मैं थोड़ेही किस पर कृपा करूँगा। यहाँ तो तुमको श्रीमत पर चलना है। मैं कृपा करूँ फिर तो सभी महाराजा बन जायें। ड्रामा में भी यह है नहीं।"

सा.बाबा 4.01.06 रिवा.

"उनको परमपिता परमात्मा कहा जाता है, वे भी ड्रामा अनुसार सर्विस करते हैं। वह भी ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ है। ... भगवान खुद कहते - इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में विघ्न पड़ेंगे जरूर। यह भी ड्रामा में नूँध है। ऐसे नहीं कि परमात्मा साथ है तो विघ्नों को हटा देंगे। इसमें बाप क्या करेंगे! ड्रामा में जो नूँध है, वह होना ही है।"

सा.बाबा 12.4.06 रिवा.

"इस ड्रामा को अच्छी रीति समझना है ना। इसको कहा जाता है हार और जीत का खेल। भारत का ही यह खेल है, इसमें तुम्हारा भी पार्ट है। ... मुझे भी ड्रामा अनुसार आना ही पड़ता है। मैं भी इस ड्रामा में बांधा हुआ हूँ। यह हो नहीं सकता कि मैं आऊं ही नहीं, ऐसे भी नहीं कि मैं आकर मरे को जिन्दा कर दूँ या कोई को बीमारी से छुड़ा दूँ।"

सा.बाबा 26.4.06 रिवा.

"जब कोई से मिलते हो तो यह समझाना पड़े कि यह बना-बनाया ड्रामा है। ... कल्प पहले तुम ऐसे ही बैठे होंगे। पत्ता हिला ड्रामा अनुसार। ऐसे नहीं कि पत्ते-पत्ते को परमात्मा हिलाते हैं। ऐसी-ऐसी बातें समझकर फिर सबको समझाओ।"

सा.बाबा 23.6.06 रिवा.

"मैं भी ड्रामा के वश हूँ। ऐसे नहीं कि ड्रामा के बिगर मैं कुछ कर सकता हूं। ... तुम जानते हो - कल्प-कल्प ड्रामा अनुसार हम बाप से वर्सा लेते हैं।"

सा.बाबा 1.6.06 रिवा.

विश्व-नाटक एवं जन्म-मृत्यु अर्थात् देह-परिवर्तन / विश्व-नाटक और काल

जन्म-मृत्यु इस विश्व-नाटक की अपरिहार्य और अति आवश्यक घटनायें हैं। जन्म, मृत्यु और फिर जन्म का ये चक्र विश्व-नाटक में अनादि काल से चलता आया है और अनन्त काल तक चलते रहने वाला है क्योंकि इसके आधार पर ये विश्व-नाटक चलता है। इसलिए इनके रहस्य को जानना भी अति आवश्यक है। ड्रामा के सफल मंचन के लिए ये अति आवश्यक और परम कल्याणकारी घटनायें हैं। अन्तर्दृष्टि से देखें तो विश्व-नाटक में मृत्यु आत्मा को प्रकृति का परम वरदान है, जो अज्ञानता और मोहवश अभिषाप बन गई है। मृत्यु और जन्म ही आत्मा को पुराना वस्त्र त्याग कर नया वस्त्र धारण कर नये पार्ट को बजाने का आधार है। मृत्यु और जन्म तो ड्रामा में पार्ट बजाने के लिए वस्त्र बदलने जैसा ही है। लौकिक गीता में भी ऐसा ही वर्णन किया गया है। मृत्यु और जन्म ही आत्मा को नया पार्ट बजाने के लिए पुनस्फूर्ति (Refresh) प्रदान करते हैं। फिर प्रश्न उठता है कि जीवात्मा मृत्यु से भयभीत क्यों होती है? अज्ञानता वश देहाभिमान और विकारों के वशीभूत किये गये विकर्म मृत्यु-दुख का मूल कारण है, जो जीवात्मा को दुखी करते हैं। इसीलिए कहा गया है - जनमत-मरत दुसह दुख होई। परन्तु ये वर्णन द्वापर-कलियुग का है, सतयुग-त्रेता में आत्माओं जन्म-मृत्यु का न कोई भय होता है और न ही दुख होता है।

विश्व-नाटक के यथार्थ रहस्य को समझने वाले और देह से न्यारी स्थिति का अभ्यास करने वाले के लिए यह सहज और सुखदायी हो जाती है।

"मुख्य है निर्भयता का गुण। निर्भयता कैसे होगी, उसके लिए मुख्य साधन क्या है? निराकारी बनना। जितना निराकारी अवस्था में होंगे उतना निर्भय होंगे। भय शरीर के कारण ही होता है।" अ.बापदादा 26.5.69

"ड्रामानुसार ही यह सब कुछ होता है। कोई गया तो क्या हुआ, हमें उनके लिए कुछ करना नहीं है। हमारा तो सब कुछ गुप्त है। वास्तव में अवस्था उनकी अच्छी है, जिन्हें कभी आंसू न आये। ... उसके लिए कभी कोई आंसू आने की दरकार भी नहीं है। हम तो खुद भी खुशी से शरीर छोड़ने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। मम्मा का भी कोई कार्य अर्थ इस समय जाने का था, यह भी ड्रामा है।" सा.बाबा 25.6.1965

"अगर कोई बात ड्रामा में पहले से बताने की नहीं है तो मैं कैसे बताऊं। ... यह बाबा भी साक्षी होकर देखते हैं, तो बच्चों को भी साक्षी होकर देखना है और बाप की याद में फखुर में रहना

है कि हम ईश्वर की सन्तान हैं।" सा.बाबा 25.6.1965

"वास्तव में आत्मा को काल खाता नहीं है। ड्रामा अनुसार जब समय होता है तो आत्मा चली जाती है। ... सतयुग में भारतवासियों की आयु भी बड़ी थी क्योंकि योगी थे। ... आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा लेती है। काल कुछ भी नहीं है। ... सतयुग में यथा राजा-रानी तथा प्रजा आयु पूरी कर शरीर छोड़ते हैं, तथा प्रजा का भी ऐसा ही होता है परन्तु पद का फर्क है।" सा.बाबा 4.8.04 रिवा.

"सारे सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, वह तुम बच्चों की बुद्धि में अर्थ सहित है। जैसे कोई ड्रामा देखकर आते हैं तो कोई पूछेंगे ड्रामा याद है तो हाँ कहने से ही सारा ड्रामा आदि से अन्त तक बुद्धि में आ जाता है। बाकी वह वर्णन करके सुनाने में तो समय लगेगा। ...सतयुग में जानवरों को भी दुख नहीं होता है, उनकी भी अकाले मृत्यु नहीं होती है। यह ड्रामा ही ऐसे बना हुआ है।" सा.बाबा 3.8.04 रिवा.

"जो भी आत्मायें हैं, सब इस ड्रामा के एक्टर्स हैं। जैसे एक्टर्स नाटक में ड्रेस बदलकर भिन्न-भिन्न पार्ट बजाते हैं, वैसे इस बेहद के नाटक में आत्मायें 5 तत्वों के बने हुए शरीर में प्रवेश कर पार्ट बजाती हैं। परमात्मा और ब्रह्मा-विष्णु-शंकर सब एक्टर्स हैं।" (क्या ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को पार्टधारी कहेंगे ?) सा.बाबा 23.3.06 रिवा.

"पहले-पहले सबको बाप का परिचय देना है। ... फिर यह समझाना है कि हम सब आत्मायें भाई-भाई हैं, सब अपना मिला हुआ पार्ट इस शरीर द्वारा बजाते हैं।... यह चक्र अनादि, एक्यूरेट बना-बनाया है, इसको जानना पड़े।" सा.बाबा 26.01.06 रिवा.

"खेल में भिन्न-भिन्न खेल देखते रहते हो। साक्षी होकर खेल देखने में मज़ा आता है ना!... साक्षी होकर खेल देखो तो वह अपने विधि का खेल और वह अपने विधि का खेल।... कोई भी आकर्षण अन्त समय आकर्षित न करे, इसको कहा जाता है सहज चोला बदली करना।... पहले से ही किनारे छूटे हुए हों। ... सिवाए मंजिल के और कोई लगाव नहीं हो।"

अ.बापदादा 25.11.93 दो कुमारियों का समर्पण और आलराउण्डर दादी ने शरीर छोड़ा

विश्व-नाटक के गुण-धर्म अर्थात् विशेषतायें (Characterstics)

विश्व-नाटक के गुण-धर्मों पर विचार करें तो इसमें अनन्त विशेषतायें हैं। जैसे परमात्मा के गुण और विशेषतायें सागर के समान अथाह है, वैसे ही इस विश्व-नाटक के गुण और विशेषतायें सागर के समान अथाह और अनन्त हैं। यदि हम उन सब विशेषताओं को जानकर जीवन में धारण कर लें तो जीवन में कब मायूसी, दुख-अशान्ति की महसूसता, राग-

द्वेष, भय-चिन्ता आ नहीं सकती। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से जीवन परमानन्दमय हो जायेगा।

1. ये सृष्टि एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। इसमें हर आत्मा और जड़ तत्वों के हर कण में सारे कल्प की गति-विधि का विधि-विधान नूँधा हुआ है। इसके गुण-धर्मों को जानने वाली और अपने स्वधर्म में स्थित होकर पार्ट बजाने वाली आत्मा इसके परम सुख को अनुभव करती है। इसलिए इसके गुण-धर्मों का ज्ञान जो परमात्मा ने दिया है, उसमें से कुछ मुख्य-मुख्य का यहाँ वर्णन करते हैं।

2. विश्व-नाटक के नियम-सिद्धान्त हर आत्मा पर समान रूप से प्रभावित होते हैं, उनमें किसी तरह का पक्षपात न ही होता है और न ही हो सकता है।

3. विश्व-नाटक का ज्ञान कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही परमात्मा द्वारा मिलता है, जो सतयुग के आदि से ही प्राय: लोप हो जाता है।

4. ये विश्व-नाटक क्रिया-प्रतिक्रिया के सिद्धान्त पर आधारित है अर्थात् इसमें कोई भी घटना अनायास नहीं होती है। हर घटना का कोई न कोई निमित्त कारण अवश्य होता है। हर क्रिया की प्रतिक्रिया होते हुए ये घटनाचक्र आगे बढ़ता है।

5. आत्मा और परमात्मा एक ही वंश के हैं, इसलिए आत्मा में भी परमात्मा के समान गुण-धर्म हैं परन्तु आत्माओं के गर्भ से देह धारण करने से वे विस्मृत हो जाते हैं, परमात्मा कब गर्भ से जन्म नहीं लेते, इसलिए गुण-धर्म सदा एकरस कायम रहते हैं। परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है, आत्मा भी सच्चिदानन्द स्वरूप है। आत्मायें पार्ट बजाने के लिए गर्भ से देह धारण करती हैं, परमात्मा परकाया प्रवेश होकर पार्ट बजाते हैं।

6. परमात्मा सहित सर्व-आत्माओं और जड़ तत्वों के अणु-परमाणुओं में सारे कल्प की गति-विधि का अविनाशी पार्ट उनमें नूँधा हुआ है, जो कल्प-कल्प पुनरावृत्त होता है। परमात्मा को छोड़कर हर आत्मा और हर वस्तु की सतो, रजो, तमो स्थिति आती है।

7. परमधाम सर्व आत्माओं का घर है और इस आकाश तत्व के अन्दर ये साकार लोक एक ड्रामा स्टेज है। परमधाम से सभी आत्मायें अपने निश्चित समय पर पार्ट बजाने आती हैं और कल्पान्त में सभी आत्मायें वापस घर परमधाम जाती हैं। हर आत्मा को अपने पार्ट के समयानुसार मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है। कल्प के आदि से ही आत्मायें इस सृष्टि पर आती रहती हैं, ऊपर मुक्ति में जाने का समय कल्पान्त का पुरुषोत्तम संगमयुग ही है।

8. सारा विश्व एक ड्रामा स्टेज है और सूर्य-चाँद, तारे इस विश्व-नाटक को प्रकाशित करने वाली बत्तियां हैं।

9. ये सृष्टि-चक्र चढ़ती कला और उतरती कला, स्मृति-विस्मृति, ज्ञान-भक्ति, दिन-रात का खेल है। इसकी यथार्थता को भूलने और देह में आने से आत्माओं की उतरती कला होती है और परमात्मा द्वारा इसका यथार्थ ज्ञान मिलने पर उस ज्ञान की धारणा और परमात्मा की याद से आत्माओं की चढ़ती कला होती है। मनुष्यात्मा सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ चिन्तनशील प्राणी है, इसलिए उसके उत्थान से जड़ तत्वों सहित सारे जगत के सर्व प्राणियों
का उत्थान होता है और उसके पतन से सारे विश्व के प्राणियों का पतन होता है।

10. जब आत्मा पवित्र बनती हैं तब भी इसमें प्राकृतिक आपदायें आती हैं, अणु-युद्ध, गृह-युद्ध आदि होता है, जिनसे इसका मूलभूत परिवर्तन होता है और त्रेता के अन्त और द्वापर आदि में जब आत्मायें पतित बनती हैं अर्थात् काम-विकार में प्रवेश करती हैं तब भी प्राकृतिक आपदाओं से इसमें विशेष परिवर्तन होता है, जिससे दैवी सभ्यता के अवशेष भी विलीन हो जाते हैं।

11. इस विश्व-नाटक में कोई किसका मित्र-शत्रु नहीं है, सभी पार्टधारी हैं। मित्रता-शत्रुता अज्ञानता जनित भ्रम है, जो भी विश्व-नाटक के अस्तित्व और समयानुसार आत्माओं के यथार्थ रीति पार्ट बजाने के लिए अति आवश्यक है।

12. सृष्टि-चक्र सतत परिवर्तनशील है परन्तु 5000 साल के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है।

13. सृष्टि-चक्र में और भी अनेक प्रकार के चक्र हैं, जो पुनरावृत्त होते हैं परन्तु हू-ब-हू नहीं। यथा दिन-रात का चक्र, मास का चक्र, वर्ष का चक्र, जन्म-मृत्यु का चक्र, बीज और झाड़ का चक्र आदि आदि। पुरुषार्थ का भी चक्र है। अमृतवेला अच्छा होगा तो दिन अच्छा होगा, दिन अच्छा होगा तो सोने का समय अर्थात् रात्रि भी अच्छी होगी और रात्रि अच्छी होगी तो अमृतवेला अच्छा होगा। यह भी एक चक्र है, इस चक्र की आदि कहाँ से हो ? जहाँ और जैसे खड़े हैं, वहाँ से ही आदि करने वाले का ही सब अच्छा होगा।

"स्वदर्शन चक्र के अन्दर फिर यह एक दिन का चक्र है ।... यह बेहद का 5000 वर्ष का चक्र है, उसमें फिर छोटे-छोटे चक्र हैं। तो अपना यह दिनचर्या का चक्र सदैव क्लीयर रहे।"

अ.बापदादा 18.7.71

14. ये विश्व-नाटक सुख-दुख, हार-जीत का खेल होते हुए भी परम सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी (Eternal, Just, Auspicious) है। कल्पान्त में जो महाविनाश होता है, वह भी कल्याणकारी और विश्व-नाटक की अति आवश्यक घटना है।

15. सृष्टि-चक्र अनादि-अविनाशी है, जो चार समान भागों में विभाजित है। पहले दो भाग स्वर्ग और दूसरे दो भाग नर्क कहलाते हैं, जिनको ब्रह्मा के दिन और ब्रह्मा की रात के रूप

में भी जाना जाता है। इसको सुख-दुख, जीत-हार, दिन-रात का खेल भी कहा जाता है।

16. सृष्टि-चक्र के आधे भाग में एक देवी-देवता धर्म और आधे भाग में अनेक धर्म होते हैं। हर धर्म-वंश, हर आत्मा और वस्तु की सतो, रजो, तमो अवस्थायें समय और अपने पार्ट के अनुसार होती ही हैं।

17. विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है। इसकी न कभी रचना हुई है और न कभी विनाश होने वाला है। परमात्मा के द्वारा दिये गये विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान के आधार पर इस विश्व-नाटक के चक्र की कलम लगती है अर्थात् पुराने चक्र से ही नया चक्र अस्तित्व में आता है।

18. यह विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है, इसका एक दृश्य न मिले दूसरे से, एक क्षण का दृश्य न मिले दूसरे से, एक जीवात्मा के फीचर्स न मिलें दूसरे से अर्थात् हर बात में भिन्नता और विविधता अवश्य है, जो इसकी शोभा है।

19. विश्व-नाटक में आत्माओं के पार्ट और कर्म-फल अर्थात् पुरुषार्थ और प्रालब्ध का अद्वितीय सन्तुलन है। बिना कर्म के कोई भी आत्मा सुख या दुख को पा नहीं सकती। हर आत्मा अपने पार्ट के आधे समय बाद विकर्मों में प्रवृत्त हो जाती है, जिसके फलस्वरूप दुख पाती है। परमात्मा के द्वारा दिया गया यथार्थ ज्ञान और परमात्मा की याद ही विकर्मों को विनाश करने और श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति प्राप्त करने का एकमात्र साधन है।

20. विश्व-नाटक में आदि से अन्त तक के पार्ट में प्रेम मुख्य आधार है, इसलिए इसको प्रेम-कहानी भी कहा जा सकता है।

21. ये विश्व नाटक एक अनादि-अविनाशी परमानन्दमय खेल है, जो आत्मा अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित साक्षी होकर इसे देखता है, उसको ये परमानन्दमय अनुभव होता है।

22. ये विश्व-नाटक सतत परिवर्तनशील है, इसलिए साक्षी होकर देखने वाले को भी ये नित्य नया प्रतीत होता है।

23. इस विश्व-नाटक का अन्तर्जाल (Internate) इतना सूक्ष्म और शक्तिशाली है कि कोई आत्मा कहाँ भी कोई कर्म करे, मन में संकल्प भी करे तो भी उसका फल निश्चित हो जाता है, भले कोई उसको देखे न देखे और हर आत्मा को वह फल सुख या दुख के रूप में भोगना ही पड़ता है।

24. विस्मृति भी इस विश्व-नाटक की एक बड़ी महत्वपूर्ण विशेषता है, जिसके कारण ही हर आत्मा अपने वर्तमान पार्ट को सफलतापूर्वक बजाती है और ये नाटक रुचिकर बन जाता है और अबाध रूप से निरन्तर गतिशील है।

25. ये अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है परन्तु हमको आगे का

ज्ञान नहीं है इसलिए पुरुषार्थ करना हर आत्मा का स्वभाविक गुण है और कर्तव्य है। कोई भी आत्मा कर्म के बिना इस सृष्टि रंगमंच अर्थात् कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती। इसमें कर्म और कर्मफल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के विधि-विधान की अनादि-अविनाशी नूँध है, जिस पर ये नाटक सतत गतिशील है।

26. इस विश्व-नाटक में न कोई ऊंच है और न कोई नीच है, इसलिए इसमें अहंकार और हीनता का कोई स्थान नहीं है। सब आत्मायें इसमें अनादि-अविनाशी पार्टधारी हैं और परमात्मा की प्रिय सन्तान हैं। हर आत्मा देश-काल के अनुसार ऊंच-नीच बनती ही है।

27. विश्व-नाटक के नियम-सिद्धान्त अटल-अविनाशी हैं, जिनमें कब भी कोई भूलचूक न हुई है और न हो सकती है।

28. इस विश्व-नाटक की ये भी विशेषता है कि आत्मा इसमें पार्टधारी भी है और दर्शक भी है। जो इसको साक्षी होकर देखती है और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाती है, वह इसके परम सुख को अनुभव करती है।

29. विश्व-नाटक के नियमानुसार जो आत्मा सतोप्रधानता अर्थात् चढ़ती कला अर्थात सुख का रास्ता बताता है, वही ड्रामानुसार समय आने पर तमोप्रधानता अर्थात् उतरती कला अर्थात् दुख का भी रास्ता दिखाता है परन्तु परमात्मा पर यह सिद्धान्त लागू नहीं होता है क्योंकि वह सदा निराकार है और कभी देहाभिमान में नहीं आता है। यथा जो ज्ञान मार्ग में मार्ग प्रदर्शन करते हैं, योगबल से सन्तानोत्पत्ति का विधि-विधान निर्माण करते हैं, वे ही द्वापर से भक्ति मार्ग आरम्भ करते हैं और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति की प्रक्रिया का अविष्कार करते हैं परन्तु वह विकार का भी सतोप्रधान स्वरूप होता है अर्थात् केवल

सन्तानोत्पत्ति के लिए ही विषय भोग करते हैं और जो इन विधि-विधानों का आरम्भ करते हैं, उनकी भावना आत्माओं के और विश्व के कल्याण की ही होती है। क्योंकि वहाँ योगबल से सन्तानोत्पत्ति की शक्ति आत्माओं में खत्म हो जाती है।

"दुनिया पुरानी हो गई है, नाटक को पुराना नहीं कहेंगे। नाटक तो कब पुराना होता ही नहीं। नाटक तो नित्य नया है। यह तो चलता ही रहता है। बाकी दुनिया पुरानी होती है। हम एक्टर्स तमोप्रधान दुखी हो जाते हैं।" सा. बाबा 3.2.69 रिवा.

"इस सृष्टि में कोई भी चीज सदा कायम है नहीं। सदा कायम तो एक शिवबाबा ही है। बाकी सबको नीचे आना ही है।... यह सब राज ड्रामा में हैं।... बाप आकर ज्ञान और योग के पंख देते हैं। योग बल से तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे और तुम पुण्यात्मा बन जायेंगे।"

सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

विश्व-नाटक के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

इस विश्व-नाटक के विधि-विधान बड़े ही कल्याणमय हैं और सत्य हैं। कोई भी विधि-विधान के कार्य में कब भी कोई भूल-चूक नहीं हो सकती। सृष्टि का हर नियम अपने समय पर बिल्कुल एक्यूरेट कार्य करता है। आध्यात्मिक उन्नति और सुखमय जीवन के लिए विश्व-नाटक के मुख्य-मुख्य विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त, जिनका आध्यात्मिक पुरुषार्थ से सम्बन्ध है, उनके विषय में जानना अति आवश्यक है। विश्व-नाटक का अनादि-अविनाशी अटल नियमों और सिद्धान्तों का जितना स्पष्ट ज्ञान होगा, उनका अनुभव होगा, उन पर निश्चय होगा, उतना ही आत्म-नियन्त्रण होगा। विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी सिद्धान्त कभी भी निष्प्रभावी हो नहीं सकते। परमात्मा ने जिन नियम-सिद्धान्तों का ज्ञान दिया है, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:-

विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति का सिद्धान्त,
विश्व-नाटक की विविधता, भिन्नता एवं सतत परवर्तनशीलता का सिद्धान्त
विश्व-नाटक की स्वत: गतिशीलता
विश्व-नाटक के आध्यात्मिक नियम और सिद्धान्त
आत्मा और प्रकृति के सम्बन्ध का विधि-विधान
कर्म और फल अर्थात् पुरुषार्थ और प्रालब्ध का विधि-विधान
विश्व-नाटक के सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारिता का सिद्धान्त
विश्व-परिवर्तन का विधि-विधान,
आत्मा और प्रकृति के सतोप्रधानता और तमोप्रधानता अर्थात् पावन और पतित का विधि-विधान
जीवात्मा अपना आपही ही मित्र है और आपही अपना शत्रु है का विधि-विधान
आत्माओं के परस्पर हिसाब-किताब का विधि-विधान,
परमधाम से आने और वापस जाने का विधि-विधान,
जन्म-पुनर्जन्म का विधि-विधान,
ज्ञान और भक्ति और उनके सम्बन्ध का विधि-विधान
विभिन्न धर्मों की स्थापना का विधि-विधान,
स्वर्ग और नर्क का विधि-विधान
स्मृति-विस्मृति का विधि-विधान
आत्माओं और विश्व की चढ़ती कला और उतरती कला का विधि-विधान (Upward Downward Tendency of Souls Matter)

हर आत्मा के सुख-दुख के सन्तुलन का विधि-विधान
पुरुषार्थ और प्रालब्ध का विधि-विधान
विश्व-नाटक का विधि-विधान है कि चक्रवर्ती राजा योगबल वाला ही बन सकता है, बाहुबल वाला नहीं।
आदि आदि

सृष्टि के ये सब विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त बिल्कुल सही रीति अपने समय पर कार्य करते हैं। चैतन्य तो चैतन्य लेकिन जड़ प्रकृति भी अपने नियमानुसार समय पर अपना कार्य बिना किसी भूल के सही रीति करती है। सृष्टि के इन नियम-सिद्धान्तों को न परमात्मा चलाता है, जैसी कि भक्ति में मनुष्यों की मान्यता है और न और कोई चलता है। ये सृष्टि के अनादि-अविनाशी नियमानुसार स्वत: चलते रहते हैं, परमात्मा तो आकर इन सब विधि-विधानों का राज़ समझाते, जिनको जानककर आत्मायें इस विश्व-नाटक का परम-सुख अनुभव करती हैं, पतित से पावन बनती हैं, जिससे ये विश्व-नाटक तमोप्रधान से सतोप्रधान में परिवर्तित होता है। विश्व-नाटक का नया चक्र चालू होता है।

"क्रिश्चियन्स में इतनी ताकत है। वे आपस में मिल जायें तो विश्व पर राज्य कर सकते हैं परन्तु बाहुबल से कोई विश्व पर राज्य करे, यह लॉ नहीं कहता। ड्रामा में यह कायदा नहीं है, जो कोई बाहुबल से विश्व का मालिक बने। विश्व की बादशाही योगबल से मेरे द्वारा ही मिल सकती है।" सा.बाबा 20.5.06 रिवा.

"अभी तुम ईश्वरीय गोद में हो। तुम्हारा यह अन्तिम जन्म बहुत अमूल्य है। भारत की खास, दुनिया की आम तुम रुहानी सेवा करते हो। ... बाप आकर तुमको वर्सा देते हैं, फिर रावण श्राप देते हैं। यह खेल है। यह भारत की ही कहानी है।"

सा.बाबा 20.5.06 रिवा.

"विधि और विधान दोनों के साथ ही विधाता की याद आती है। अगर विधाता याद रहे तो विधि और विधान दोनों साथ स्मृति में रहेगा। ... जब विधि और विधान दोनो साथ रहेंगे तब सफलता गले का हार बन जायेगी।" अ.बापदादा 7.6.70

"भारत अभी कितना कंगाल है, रावण राज्य है। कितना ऊंच नम्बरवन था, अभी लास्ट नम्बर है। लास्ट में न आये तो नम्बरवन में कैसे जाये। ये भी हिसाब है ना। अगर धीरज से विचार सागर मंथन करें तो सब बातें आपेही बुद्धि में आ जायेंगी।"

सा.बाबा 13.7.05 रिवा.

"जरूर वहाँ का कायदा होगा। बच्चा किस आयु में आयेगा। वहाँ सब रेग्यूलर चलता है ना।

वह आगे चलकर महसूस होगा।... वहाँ 150 वर्ष की आयु होती है, तो बच्चा तब आयेगा जब आधा लाइफ से थोड़ा आगे होंगे।... पहले बच्चे की, फिर बच्ची की आत्मा आती है। विवेक कहता है पहले बच्चा आना चाहिए। पहले मेल, पीछे फीमेल। आठ-दस वर्ष की देरी से आयेंगे। ... रस्म-रिवाज भी जरूर सुनाते जायेंगे। आगे चलकर बहुत सुनायेंगे और सब साक्षात्कार होते रहेंगे।" सा.बाबा 28.6.04 रिवा.

"आत्मा में अनेक जन्मों का रिकार्ड भरा हुआ है, जो वह प्ले करती है। यह है प्ले करने का स्थान, इसलिए इसको नाटक भी कहते हैं, ड्रामा भी कहते हैं। उसमें एक बार परमात्मा की भी एक्ट है। ... इस सृष्टि के जो अनादि-अविनाशी नियम और कायदे हैं, उन्हें भी समझना है।... इस सृष्टि में हर चीज का नियम है।" मातेश्वरी 21.06.64

यह विश्व एक विशाल नाटक है, इसमें असंख्य आत्मायें पार्टधारी हैं, उन सबके हिसाब-किताब के विधि-विधान की क्रिया-प्रतिक्रिया अपनी है। सर्व आत्माओं के हिसाब-किताब, विधि-विधान की क्रिया-प्रतिक्रिया को समझना या किसी आत्मा विशेष के 84 जन्मों के हिसाब-किताब की क्रिया-प्रतिक्रिया को समझना किसी भी आत्मा के लिए सम्भव नहीं है। परमात्मा भी कहता है - मुझको ये सब जानने की आवश्यकता नहीं है परन्तु मैं जब चाहें तब उसे प्रत्यक्ष की भांति देख सकता हूँ। ये सृष्टि एक स्व-चालित नाटक और इसके सभी विधि-विधान स्व-चालित हैं। सभी विधि-विधान सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी हैं, जो अनादि काल से चल रहे हैं और अनन्त काल तक चलने वाले हैं। ज्ञान सागर परमात्मा ने इस सत्य सिद्धान्त को सार रूप में हम आत्माओं को बता दिया है कि कोई भी आत्मा बिना किसी कर्म के कोई अच्छा या बुरा फल नहीं भोग सकती। परमात्मा और समर्थ आत्माओं में ये शक्ति है कि वे संकल्प करते ही किसी आत्मा के विषय में जान सकते हैं परन्तु किसको ये जानने की आवश्यकता नहीं है। इसीलिए परमात्मा ने कहा है - बिना साक्षात्कार कराये धर्मराज भी सजा नहीं दे सकता है।

इस विश्व-नाटक के सत्य सिद्धान्तों को समझनें के बाद किसी भी ज्ञानी आत्मा को किसके विषय में संकल्प, वर्णन, चिन्तन करने का अंशमात्र भी स्थान नहीं है। ये करना भी उन आत्माओं के साथ अपना हिसाब-किताब बनाना है और अपने भविष्य को अन्धकारमय बनाना है।

"बाप को याद करते-करते हम पावन बन जायेंगे। नहीं तो सजायें खानी पड़ेंगी। ... वहाँ पर फिर ट्रिबुनल बैठती है, सब साक्षात्कार होते हैं। बिगर साक्षात्कार किसको सजा दे नहीं

सकते। बिगर साक्षात्कार सजा दें तो मूँझ पड़े कि यह सजा हमको क्यों मिलती है। बाप को मालूम रहता है कि इसने यह पाप किया है, यह भूल की है। सब साक्षात्कार कराते हैं।"

सा.बाबा 14.6.04 रिवा.

हर आत्मा का अपना, सर्व आत्माओं का और परमात्मा का हर पल-विपल का पार्ट विश्व के कम्प्युटर में भरा हुआ है, जो समय पर अपना काम करता है। परमात्मा इस विश्व-नाटक का अनादि ज्ञाता है, वह जब चाहे संकल्प करते ही उसे देख सकता है।

"बाप कहते हैं - मैं हूँ गरीब निवाज, गरीबों को ही पढ़ाता हूँ। साहूकारों को ताकत नहीं है पढ़ने की। ... गरीब ही साहूकार बनते हैं, साहूकार गरीब बनेंगे - यह कायदा है। दान कभी साहूकारों को दिया जाता है क्या ? ये भी अविनाशी ज्ञान रतनों का दान है। ... बाप से कुछ भी मांगना नहीं है। इसमें निश्चय चाहिए। ... जिसे याद किया जाता है, वह जरूर कभी आयेगा भी। याद करते ही हैं फिर से रिपीट होने के लिए।"

सा.बाबा 3.4.04 रिवा.

विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति का सिद्धान्त

ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी परमानन्दमय अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हर 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। परन्तु सत्यता ये है कि जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा।

ये विश्व-नाटक एक काल-चक्र है, जिसमें अनेक चक्र हैं, जो देश-काल और परिस्थितियों के अनुसार पुनरावृत्त होते हैं यथा जन्म-मरण-जन्म का चक्र, बीज-झाड-बीज का चक, दिन-रात-दिन का चक्र, मास का चक्र, वर्ष का चक्र आदि आदि और कल्प का चक्र। 5000 वर्ष के बाद विश्व का अणु-परमाणु सहित पूरा चक्र हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। खगोलविदों के अनुसार भी विश्व की अनेक घटनायें एक निश्चित समय के बाद पुनरावृत्त होती हैं सभी घटनायें चक्रवत चलती हैं। जैसे 24 घण्टे में दिन-रात का चक्र, 30 दिन में चन्द्रमा की कलाओं का चक्र, 12 मास में ऋतुओं का चक्र पुनरावृत्त होता है। ऐसे ही कुछ घटनायें 12 वर्ष के बाद पुनरावृत्त होती हैं। परन्तु 5000 वर्ष के बाद हर घटना हू-ब-हू पुनरावृत्त होती है। ये पुनरावृत्ति का सिद्धान्त अणु-परमाणु के साथ भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों कालों पर लागू होता है।

विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति के सिद्धान्त के अनुसार हर तत्व के अणु-परमाणु 5000 वर्ष के बाद अपने मूल स्थान पर स्थानान्तरित होते ही हैं, परन्तु ये आवश्यक नहीं कि

वे कल्पान्त में एक साथ ही स्थानान्तरित हो जायें, जैसे कल्पान्त में आत्मायें परमधाम में एकत्र होती हैं। हर क्रिया सारे कल्प में अर्थात् 5000 वर्ष में अपने समय पर हू-ब-हू पुनरावृत्त होती है। स्थान परिवर्तन की ये क्रिया सारे कल्प चलती है और हर क्षण परिवर्तन होती है। 5000 वर्ष के बाद हर अणु-परमाणु अपने पूर्व स्थान पर आता ही है, ये अटल सत्य है।

तत्वों में देखें तो देखेंगे सागर जल मूल है, सागर से बादल पानी खींचते हैं, जाकर बरसते हैं, फिर वही जल बहकर सागर में ही जाकर मिलता है। इसीलिए पानी कहाँ भी छोड़ेंगे तो उसका बहाव सागर की ओर ही होगा। ऐसी ही दिशा और दशा अन्य तत्वों की भी है।

एक ही पदार्थ, तत्व, धातु के परमाणुओं के गुण-धर्म समान होते हुए भी भिन्नता है, उनके प्रभाव में अन्तर है जैसे आत्माओं के गुण-धर्म-संस्कारों में। इसलिए हू-ब-हू पुनरावृत्ति का सिद्धान्त तब ही यथार्थ सत्य सिद्ध होगा जब कल्प बाद वे ही परमाणु उस स्थान पर आयें और हर परमाणु कल्प बाद अपने यथा स्थान पर आता ही है, ये प्रकृति या विश्व-नाटक का अनादि-अविनाशी सिद्धान्त और विधान है।

"यह 5 हजार वर्ष का ड्रामा है, जो चलता रहता है। इसकी डिटेल तो बहुत है परन्तु मुख्य-मुख्य बातें समझाई जाती हैं। ... तुम बच्चों को वण्डर लगना चाहिए कि जो फीचर्स, जो एक्ट सेकण्ड बाई सेकण्ड पास्ट हुई, वह फिर 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू रिपीट होनी है। कितना वण्डरफुल यह नाटक है।" सा.बाबा 21.10.04 रिवा.

"बच्चों की बुद्धि में ये वण्डरफुल बातें हैं। कैसा यह वण्डरफुल ड्रामा बना हुआ है, कल्प-कल्प हम वही पार्ट बजायेंगे। कल्प-कल्प बजाते रहते हैं। ... बनी-बनाई बन रही ... जो अनहोनी होये। यह चक्र फिर भी रिपीट होगा। इसमें मूँझने की बात नहीं।"

सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

"तीव्र पुरुषार्थी शुद्ध संकल्पों में पहले से ही मन को बिजी रखेंगे तो और संकल्प आयेंगे ही नहीं। ... मंथन करने के लिए तो बहुत खज़ाना है।... समय की कौन सी तेजी देखते हो ? समय में बीती को बीती करने की तेजी है। वही बात को समय फिर कब रिपीट नहीं करता है ? ... ड्रामा में जो बात बीती, जिस रूप से बीती, वह फिर रिपीट नहीं होगी। फिर 5000 वर्ष के बाद ही रिपीट होगी।" अ.बापदादा 26.1.70

"यह सब ड्रामा अनुसार चलता रहता है। भोग आदि यह सब ड्रामा में नूँध है। सेकण्ड बाई सेकण्ड जो एक्ट होती है, वह सब ड्रामा में नूँध है। ... जो ज्ञानी बच्चे हैं, वे कभी साक्षात्कार आदि की बातों में खुश नहीं होंगे।" सा.बाबा 30.5.05 रिवा.

"तुम समझ सकते हो जो भी इस दुनिया में है जड़ वा चेतन, सभी हू-ब-हू रिपीट करेंगे।"

सा.बाबा 9.1.69

ड्रामा और आत्मिक स्थिति चक्रवत हैं अर्थात् ड्रामा को जानेंगें तो आत्मिक स्थिति स्वत: हो जायेगी और आत्मिक स्थिति होगी तो ड्रामा का ज्ञान बुद्धि में स्वत: इमर्ज होगा।

ड्रामा, आत्मिक स्थिति और परमात्मा चक्रवत हैं अर्थात् ड्रामा का ज्ञान होगा तो आत्मिक स्थिति स्वत: होगी और आत्मिक स्थिति होगी तो परमात्मा की स्मृति भी अवश्य होगी। ऐसे ही परमात्मा का ज्ञान होगा, परमात्मा का साथ होगा तो आत्मिक स्थिति अवश्य होगी और समय ड्रामा का ज्ञान भी अवश्य ही इमर्ज होगा।

"तुम ऐसा लक्ष्मी-नारायण तब बनेंगे जब बाप से नॉलेज लेकर पूरी करेंगे। तब ही हू-ब-हू कल्प पहले मिसल बनेंगे। यह कैसा कुदरती वण्डरफुल ड्रामा है ... सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी जो होकर गये हैं, वे हू-ब-हू फिर से बनेंगे जरूर इस नॉलेज से। वण्डर है ना।... कितना वण्डरफुल ज्ञान है, यह बुद्धि में ठहरे भी तब जब दिल की सफाई हो।"

सा.बाबा 6.8.04 रिवा.

"यह भी बाबा ने बहुत बार समझाया है कि मनुष्यों को कैसे पता पड़े कि यह सृष्टि का चक्र हर 5000 वर्ष के बाद फिरता है। ... विचार सागर मंथन करना होता है, जो औरों को समझा सकें। यह त्योहार होते हैं, तुम कहेंगे - यह कोई नई बात नहीं, हिस्ट्री रिपीट होती है।... यह है बेहद का ड्रामा। यह ड्रामा बड़ा एक्यूरेट है, इसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता।"

सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

"कब-कब बाबा ख्याल करते हैं - ड्रामा अनुसार जो कल्प पहले आज के दिन मुरली चलाई थी, वही आज चला रहा हूँ। परन्तु ऐसे फिर बेकायदे हो जाता है। कब-कब कहता हूँ, जो कल्प पहले मुरली चलाई थी, वही जाकर चलाऊंगा। तुम भी कह सकते हो कल्प पहले बाप से जितना वर्सा लिया है, उस अनुसार ही फिर लेंगे।"

सा.बाबा 12.11.73 रिवा.

"हर आत्मा को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है। जिसने कल्प पहले जितनी पढ़ाई धारण की है, उतनी अब भी धारण करते हैं। ... पढ़ाई अनुसार ही पद मिलता है। ... जो सेकेण्ड, जो मिनट पास होता है, वह हू-ब-हू रिपीट होता है।"

सा.बाबा 30.01.06 रिवा.

"ड्रामा के राज़ को भी अच्छी रीति समझना है। ड्रामा में जो नूँध है, वह हू-ब-हू रिपीट होता है।... भारत के भी कितने थोड़े टुकड़े में देवतायें होते हैं। ... सृष्टि भी अनादि है, उसमें हर एक आत्मा का पार्ट भी अनादि है। ... ड्रामा में जिसके लिए जितना समय है, उतना समझने

में समय लेते हैं।" सा.बाबा 20.01.06 रिवा.

"तुम समझा सकते हो कि इस दुनिया में जो भी जड़, चेतन्य हैं, सब हू-ब-हू रिपीट करेंगे। ... एटम बॉम्ब आदि बनाने वाली आत्मा में पहले से ही ड्रामानुसार ज्ञान होगा, जो समय आने पर उनमें इमर्ज हो जाता है। ... तुम्हारे लिए वह कोई नई बात नहीं है। इस ईश्वरीय ज्ञान से ऊंच कोई नॉलेज होती नहीं। .. तुम देवता बन जाते हो।"

सा.बाबा 16.01.06 रिवा.

विश्व-नाटक की विविधता, भिन्नता एवं सतत परवर्तनशीलता

विविधता, भिन्नता एवं सतत परिवर्तनशीलता ही इस विश्व-नाटक की शोभा है, जो इसके रहस्य को जानता है, वही इसका यथार्थ सुख अनुभव करता है। परमात्मा ने अभी विश्व-नाटक की विविधता, भिन्नता और सतत परिवर्तनशीलता का भी ज्ञान दिया है और कहा है कि हर एक नाटक में विविधता, भिन्नता अति आवश्यक है। नाटक में सब दृश्य एक समान हो तो नाटक अच्छा ही न लगे। ये सतत परिवर्तनशीलता, विविधता और भिन्नता ही इसकी विशेष विशेषता है, जो इसकी शोभा में चार चांद लगा देती है, जिसके कारण ही ये विश्व-नाटक नित्य नया प्रतीत होता है। जो इसकी विविधता और भिन्नता को जानता है और इसको नाटक की दृष्टि से देखता और पार्ट बजाता है, उसे ये परमानन्दमय अनुभव होता है।

यह अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक, जो कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, सतत परिवर्तनशील है अर्थात् इसमें हर क्षण परिवर्तन होता है। विश्व-नाटक सतत परिवर्तनशील है परन्तु एक परिवर्तन होता है पतन से उत्थानोन्मुख और दूसरा परिवर्तन हो है उत्थान से पतनोन्मुख। सतयुग के आदि से लेकर सारा कल्प जो परिवर्तन होता है, वह पतनोन्मुख ही होता है परन्तु अभी जब परमात्मा आकर विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देते हैं, तब ही परिवर्तन की दिशा उत्थानोन्मुख होती है। इसलिए इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान बहुत ही महत्वपूर्ण है।

इस विश्व-नाटक में सारे कल्प में और किन्हीं दो स्थानों के या दो समय के दृश्य एक समान नहीं होते हैं। हर दृश्य में कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य होगी। दो व्यक्तियों के फीचर्स कितने भी समान हों परन्तु फिर भी उनमें भिन्नता अवश्य होगी। सारे कल्प में किन्हीं दो क्षणों के दृश्य या एक ही समय के दो दृश्य एक समान नहीं होते हैं परन्तु कल्प 5000 हजार वर्ष के बाद हर दृश्य हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, उसमें कोई भी परिवर्तन नहीं हो सकता है। इसके हर दृश्य में विविधता और भिन्नता अवश्य होती है।

इस विविधता-भिन्नता और परिवर्तनशीलता के सत्य को जानते हुए जो आत्मा दूसरों की प्राप्तियों का चिन्तन न कर अपनी प्राप्तियों को देखता है और उनका सुख लेता है वही इस विश्व-नाटक में परम सुख को पाता है और विश्व-नाटक के गुण-गान करता है।

"आत्मा में 84 जन्मों का अविनाशी रिकार्ड भरा हुआ है। न ड्रामा कभी विनाश होता और न एक्ट बदली हो सकती। यह भी वण्डर है कितनी छोटी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट बिल्कुल एक्यूरेट भरा हुआ है। यह कभी पुराना नहीं होता, नित्य नया है। हू-ब-हू आत्मा फिर से अपना वही पार्ट शुरू करती है।"

सा बाबा 8.1.98 रिवा.

"कितना हंगामा हो गया। ड्रामा में जो होने का था, वह हो गया। ख्याल भी नहीं था कि ऐसे होगा। बाबा खुद वण्डर खाता था कि क्या हो रहा है। ... यह सब ड्रामा में नूँध है। नाटक में यह सब होता है। ड्रामा में हँसीकुड्डी आदि आदि सब होता है। यह तो दोनों बाप कहते हैं हमने कुछ भी नहीं किया।"

सा. बाबा 28.5.99 रिवा.

"जब वैरायटी आत्मायें हैं और वैरायटी ड्रामा है तो सब आत्माओं का एक जैसा पार्ट हो नहीं सकता। अगर किसी आत्मा का तमोगुणी अर्थात् अज्ञान का पार्ट है तो शुभ भावना और शुभ कामना से उन आत्माओं को शान्ति और शक्ति का दान दो।... साक्षी होकर पार्ट देखते हुए, जो शक्ति का दान देना है, वह दो। लेकिन घबराओ मत।"

अ.बापदादा 31.5.77

"जब नाम ही है वैरायटी ड्रामा।... तो उसमें वैरायटी संस्कार व वैरायटी स्वभाव व वैरायटी परिस्थितियाँ देखकर कभी विचलित होंगे क्या?... साक्षीपन की सीट पर सेट होकर वैरायटी ड्रामा की स्मृति रखते हुए अगर एक-एक पार्टधारी का हर पार्ट देखो तो सदैव हर्षित रहेंगे।"

अ.बापदादा 8.7.73

"वैसे भी कोई भी बात, कोई दृश्य, कोई भी चीज परिवर्तन तो होनी ही है। यह ड्रामा ही परिवर्तनशील है। ... इस प्रकार हर बात परिवर्तित होनी है लेकिन जिस समय आपके सामने वह बात विघ्न रुप बन जाती है उस समय अपनी शक्ति के आधार से एक सेकेण्ड में परिवर्तित कर दिया तो उस पुरुषार्थ करने का फल आपको प्राप्त हो जायेगा।"

अ.बापदादा 24.12.72

"सब नम्बरवार तो होते ही हैं। एक के फीचर्स, एक्टिविटी न मिले दूसरे से।... ये फिर बेहद के आज और कल का ड्रामा है। आज भारत पुराना नर्क है, कल नया स्वर्ग होगा।"

सा.बाबा 29.12.04 रिवा.

"ड्रामा में एक पार्ट दो बारी नहीं हो सकता ... 5000 वर्ष की पूरी एक्टिविटी का रिकार्ड

आत्मा में भरा हुआ है, वह बदल नहीं सकता ... बाप जो कल्प-कल्प सुनाते आये हैं, वही आकर सुनाते हैं। इसमें ज़रा भी फर्क नहीं हो सकता।"

सा.बाबा 24.01.06 रिवा.

विश्व-नाटक की स्वत: गतिशीलता अर्थात् स्वचालिता

परमात्मा ने ये भी राज़ बताया है कि ये विश्व-नाटक स्वत: गतिशील नाटक है, जो अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलने वाला एक घटना-चक्र है। इसकी एक घटना दूसरी घटना को जन्म देती है और यह चक्रवत स्वत: चलता रहता है। मैं इस नाटक का ज्ञाता हूँ, मैं न रचता हूँ और न ही इसको चलाने वाला हूँ। मेरा भी इस नाटक में अनादि-अविनाशी पार्ट है, जो मैं बजाता हूँ परन्तु मेरा पार्ट अन्य आत्माओं से भिन्न है। मैं आकर इसका ज्ञान देता हूँ, जिस ज्ञान से इस विश्व-नाटक का नया चक्र चालू होता है अर्थात् ये तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाता है।

"ऐसे हम भी ड्रामा की रस्सी में बंधे हुए हैं।... इस खेल में तुम पार्टधारी हो। मुख्य क्रियेटर, डायरेक्टर, एक्टर होते हैं ना। मुख्य तो है शिवबाबा।... इस अनादि ड्रामा के पार्ट से एक भी छूट नहीं सकता। सबको पार्ट बजाना ही है। यह बड़ी वण्डरफुल बातें हैं, जो अच्छी रीति समझकर धारण करते हैं तो खुशी का पारा चढ़ता है।... वास्तव में यहाँ आशीर्वाद आदि की बात नहीं है। जो ड्रामा में बना हुआ है, वही होता है।... हम जो कर्म करते हैं, उनका दण्ड तो जरूर हमको मिलेगा, बाप थोड़ेही बैठ दण्ड देंगे। यह ऑटोमेटिक बना-बनाया ड्रामा है, जो चलता रहता है। बाप इसके आदि-मध्य-अन्त का राज़ ही समझाते हैं।"

सा.बाबा 23.1.04 रिवा.

"यह पहाड़ियाँ आदि टूट जायेंगी फिर बनेंगी। आबू फिर भी बनेगा। बहुत बच्चे इन बातों में मूँझते हैं। बाप कहते हैं इनमें मूँझने की कोई दरकार नहीं। कहते हैं द्वारका समुद्र के नीचे चली गई, फिर निकलेगी। नीचे जो चीज गई सो गई, खत्म हो जायेगी। तुम जानते हो स्वर्ग में हम अपने महल आदि बनायेंगे।"

सा.बाबा 18.1.72 रिवा.

विश्व-नाटक के आध्यात्मिक नियम और सिद्धान्त

ये विश्व-नाटक आत्मा, परमात्मा और प्रकृति पर आधारित है। एक-दूसरे से घनिष्ट सम्बन्ध है, इसलिए इस विश्व की हर घटना आध्यात्मिक है क्योंकि उसका प्रभाव आत्मा पर और आत्मा का प्रभाव जड़ प्रकृति पर पड़ता ही है परन्तु यहाँ कुछ ऐसे नियम और सिद्धान्तों

का अध्ययन करेंगे, जो सीधा आत्मा से सम्बन्ध रखते हैं।

परमात्मा ज्ञान का सागर है और इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, वही आकर इसके सर्व नियम और सिद्धान्तों का ज्ञान देता है। जो आत्मायें इन सब नियम और सिद्धान्तों को समझ लेते हैं, उनको समझकर उन पर निश्चय करते हैं और उन नियम-सिद्धान्तों को सदा बुद्धि में जाग्रत रखते हैं, उनको ये विश्व-नाटक परमानन्दमय, परम सुखमय अनुभव होता है क्योंकि ये नाटक हार-जीत का होते हुए भी परमानन्दमय है। परमात्मा ने ज्ञान दिया है कि ये विश्व नाटक सत्य अर्थात् अविनाशी, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है, जो कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। परमात्मा इसके नियम-सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए वह कभी इसकी किसी भी प्रिय-अप्रिय घटना से प्रभावित नहीं होता है। वह हमको भी अपने समान मास्टर ज्ञान-सागर बनाता है। जो बनते हैं, वे इसके परमानन्द को अनुभव करते हैं।

पवित्र आत्मा को आवश्यकता अनुसार सर्व प्राप्तियां समय पर आपही होती हैं।

जो परमात्मा के साथ सच्चे होकर रहते उनको आवश्यकता के समय परमात्मा अवश्य मदद करता है।

आत्मा परमात्मा की सन्तान है अर्थात् आत्मा-परमात्मा एक ही कुल के हैं, इसलिए हर आत्मा में भी परमात्मा के समान ज्ञान-गुण-शक्तियां नीहित हैं, जो विश्व-नाटक में उसके पार्ट अनुसार इमर्ज होती हैं। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को धारण कर जब आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है तो वे ज्ञान-गुण-शक्तियां इमर्ज होती हैं।

स्व-स्वरूप में स्थित आत्मा को परमात्मा पिता की याद स्वत: आती है और जब आत्मा परमात्मा की मधुर स्मृति में स्थित होगी तो वह स्व-स्थिति में अवश्य स्थित होगी, उसमें उसके समान ज्ञान, गुण, शक्तियाँ अवश्य जाग्रत होंगी।

विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार हर आत्मा को अपने ही कर्म के फल स्वरूप सुख या दुख होता है।

हर आत्मा विश्व-नाटक के पार्ट के समय अनुसार आधा समय जीवनमुक्त और आधा समय जीवनबन्ध स्थिति में होती है, बाकी समय मुक्त स्थिति में परमधाम में रहती है।

पावन आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है।

आत्मा के संकल्पों का प्रभाव उसके शरीर पर पड़ता है। जैसे संकल्प होते हैं, उसके अनुरूप शरीर में ग्रन्थियों से रस स्राव होते हैं, जो उसके अनेक दैहिक रोगों का कारण भी बनते हैं और अनेक रोगों का उपचार भी करते हैं। इसीलिए बाबा ने खान-पान की अनेक

प्रकार की परहेज बताई हैं।

आत्मा के संकल्पों का प्रभाव वातावरण पर पड़ता है, जिससे अन्य आत्मायें प्रभावित होती हैं और वातावरण में नीहित संकल्पों का प्रभाव उसके अपने ऊपर भी पड़ता है। इसलिए आध्यात्मिक जीवन के पुरुषार्थी को वातावरण का भी ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

"कितना बड़ा बेहद का नाटक है, तो उसको जानना चाहिए ना। सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। हर एक का ड्रामा में जो पार्ट है, वही बजायेंगे। ड्रामा में कोई रिपलेस हो नहीं सकता। ... यह सारी नॉलेज बुद्धि से समझने की है।"

सा.बाबा 14.9.04 रिवा.

"जो कुछ एक बार होता है, फिर कल्प बाद वही रिपीट होगा। कितनी अच्छी समझानी है। इसमें बहुत विशाल बुद्धि चाहिए। ... क्रिश्चियन लोग भी कहते हैं - क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले हेविन था। फिर जरूर अब होगा।"

सा.बाबा 3.11.04 रिवा.

"भारतवासी तो बिल्कुल तमोप्रधान हैं। विदेश वाले न इतना दुख उठाते हैं और न इतना सुख ही पाते हैं। भारतवासी सबसे अधिक सुखी बनते हैं तो सबसे अधिक दुखी भी बनते हैं। हिसाब है ना। ... एक दिन आयेगा जो फॉरेनर्स सबसे जास्ती आबू में आयेंगे। वे चाहते हैं भारत का प्राचीन राजयोग सीखें, कौन है जिसने पैराडाइज स्थापन किया।"

सा.बाबा 15.11.04 रिवा.

"कलियुग है, यहाँ भाई-बहन भी खराब हो पड़ते हैं। परन्तु लॉ मुजिब भाई-बहन के बुरे ख्यालात नहीं रहेंगे। ... तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियां हो तो यह ज्ञान पक्का हो जाना चाहिए कि हम भाई-बहन हैं। हम आत्मायें भगवान के बच्चे भाई-भाई हैं।... हम आत्मा इन कर्मेन्द्रियों से अलग हैं।"

सा.बाबा 29.7.05 रिवा.

विश्व-नाटक और कर्म का विधि-विधान

विश्व-नाटक और कर्म-फल का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

"इसीलिए नाम है - कर्म-क्षेत्र, कर्म-सम्बन्ध, कर्मेन्द्रियाँ, कर्मभोग, कर्मयोग।... कर्म श्रेष्ठ है तो श्रेष्ठ प्रालब्ध है, कर्म भ्रष्ट होने के कारण दुख की प्रालब्ध है। लेकिन दोनों का आधार कर्म है। कर्म आत्मा का दर्पण है।"

अव्यक्त बापदादा 19.3.82

ये विश्व-नाटक कर्म-फल-कर्म के घटना-चक्र पर आधारित अनादि-अविनाशी नाटक है। कर्म आत्मा का स्वभाविक गुण है, इसलिए कोई भी आत्मा कर्म के बिना इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती। आत्मा का अपना कर्म ही उसके सुख-दुख का मूल कारण है। हमारे कर्म सदा श्रेष्ठ हों, उसके लिए कर्म के विधि-विधान का ज्ञान अति आवश्यक है। परमात्मा ने जो विश्व-नाटक का जो ज्ञान दिया है, उससे ये पता चला और अनुभव हुआ कि इस नाटक में आत्मा के पार्ट, कर्म और फल का अद्भुत सन्तुलन है, जिससे कोई भी आत्मा किसी को दोष नहीं दे सकती है, कोई भी आत्मा कर्म के बिना रह नहीं सकती और कोई भी कर्म बिना कर्म-फल के होता नहीं है अर्थात् हर आत्मा को अपने कर्म का फल अवश्य मिलता है। इसलिए लौकिक गीता में भी लिखा है - हे अर्जुन तू कर्म कर, फल की चिन्ता मत कर। विश्व-नाटक के अनादि नियमानुसार हर आत्मा कर्म करने के लिए और कर्मानुसार कर्मफल भोगने के लिए बाध्य है अर्थात् कर्म करने और कर्म का फल भोगना ही पड़ता है। इस कर्म, कर्म-फल और फिर कर्म के आधार पर ही ये विश्व नाटक आदि से अन्त तक सफलता पूर्वक चलता है।

ये विश्व-नाटक कर्म-फल-कर्म पर आधारित एक घटना-चक्र है। विश्व-नाटक में कर्म का अटल विधि-विधान नूँधा हुआ है। जो जैसा कर्म करता है, उसके अनुसार उसको फल अवश्य मिलता है। कोई भी आत्मा इस कर्म-क्षेत्र पर कर्म के बिना रह नहीं सकती और कोई भी कर्म फल के बिना नहीं हो सकता। कर्म करना, कर्मानुसार उसका फल मिलना, ये विधि-विधान इस विश्व-नाटक में नूँधा हुआ है और स्व-चालित है अर्थात् कोई कर्म का फल देता नहीं है, हर आत्मा को अपने कर्मानुसार स्वत: मिलता है।

इस विश्व-नाटक और कर्म की गहन गति को समझना मनुष्य की शक्ति से परे है परन्तु ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है और कर्म का विधान पूर्ण न्यायपूर्ण है। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखता और पार्ट बजाता है, वह इसकी न्यायपूर्णता और परम सुख को अनुभव करता है। समय-समय पर बाबा के द्वारा बताये हुए कर्म के सम्बन्ध में कुछ विधि-विधानों, नियम-सिद्धान्तों का उल्लेख यहाँ किया गया है।

* ये विश्व-नाटक एक कर्मक्षेत्र है, यहाँ कोई भी आत्मा स्थूल या सूक्ष्म कर्म अर्थात पार्ट के बिना रह नहीं सकती और और कोई भी कर्म फलहीन नहीं होता। जो आत्मा जैसा कर्म करती, उस अनुरूप उसका फल अवश्य भोगती है। गायन है - "तुलसी ये तन खेत है, मन्सा भया किसान। पाप-पुण्य दो बीज हैं, जो जस बुवै सो तस लुनै निदान।"

इस कर्मक्षेत्र पर आत्मायें कर्म करने और उनका फल भोगने के लिए ही अवतरित

होती हैं। इसीलिए तुलसीदास ने कहा है - कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस कीन्ह तासु फल चाखा।

* हर आत्मा का अपना कर्म ही उसके सुख-दुख का मूल कारण है, दूसरे तो ड्रामा अनुसार केवल निमित्त कारण बनते हैं। इसीलिए लौकिक गीता में भी कहा है - जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है।

* कर्म एक दर्पण है, जिसमें उसके कर्ता की अन्तर्भावना प्रतिबिम्बित होती है और जो उसकी वंश परम्परा को भी प्रदर्शित करता है एवं भूतकाल और भविष्य का भी साक्षात्कार कराता है। इसलिए हर आत्मा को कर्म के विधान और सिद्धान्त को समझकर कर्म करना चाहिए, जिससे उसका फल सुखमय हो।

* साधारण रूप से देखें तो जो कर्म दिल को खाता है वह विकर्म होता है, उसको करने से आत्मा को बचना चाहिए।

"अपने कर्मों पर खबरदारी रखना है। कोई भी पाप कर्म न करना है। ... अगर अपने घाटे और फायदे का पोतामेल न रखेंगे तो फेल हो जायेंगे। माया ऐसी है जो बहुतों को फेल कर देगी। युद्ध है ना। ... जो कर्म दिल को खाता हो, उसे छोड़ते जाओ।"

सा.बाबा 3.8.68

* पाप कर्म और गलत कर्म करने वाले की सुरक्षा करना या बचाने का प्रयत्न करने वाला भी उस पाप कर्म का भागी होता है। इसी तरह से श्रेष्ठ कर्म करने और श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देने वाले को भी उस श्रेष्ठ कर्म के फल में हिस्सा मिलता है।

* पाप कर्म करने वाले को साधन-सम्पत्ति या राय-सलाह के द्वारा पाप कर्म करने में सहयोग करने वाले पर भी पाप-कर्म का बोझ चढ़ता है।

"दान भी पात्र को देना चाहिए। पापात्मा को देने से फिर देने वाले पर भी असर हो जाता है। वह भी पापात्मा बन जाता है। ऐसे को कब नहीं देना चाहिए, जो जाकर उस पैसे से कोई पाप करे।"

सा.बाबा 14.8.69 रिवा.

* हर चैतन्य प्राणी में मन-बुद्धि-संस्कार है और वह अपनी श्रेणी अनुसार कर्म करता है और उसके कर्म अनुसार उसको फल मिलता है और उसके आधार पर उसका जन्म-पुनर्जन्म होता है। सभी चैतन्य प्राणी अपने कर्मानुसार अपनी योनि में ही सुखी-दुखी होते हैं।

* मन्सा-वाचा-कर्मणा आत्मा जो भी कर्म करती, जिससे व्यक्ति सीधा प्रभावित होते हैं, वातावरण प्रभावित होता है, जिससे वर्तमान में या भविष्य में आत्मायें प्रभावित होती अर्थात् सुख-दुख पाते, उसका फल कर्ता आत्मा को सुख या दुख के रूप में अवश्य मिलता है। भल

फल के निर्णय में कर्म के स्वरूप से कर्ता की भावना प्रधान होती है। पेड़ लगाने, अस्पताल, धर्मशाला आदि बनाने से अच्छा फल और फेक्टरी के दूषित धुयें, बारूद, गैस आदि से वातावरण को दूषित करने से भी कर्ता को उसका फल अवश्य भोगना पड़ता है।

"गरीब का भावना से दिया गया एक पैसे का फल भी साहूकार के एक हजार रुपये के बराबर हो सकता है ... कोई तो दो पैसा भी देते हैं, बाबा हमारी एक ईट लगा दो, कोई हजार भेज देते हैं। भावना तो दोनों की एक है ना, तो दोनों को बराबर मिल जाता है।"

सा.बाबा 30.11.69 रिवा.

* देश, समाज, संगठन... के द्वारा कोई अनुचित या अन्यायपूर्ण किये गये कर्म में उस देश या संगठन के लोगों के द्वारा खुशी प्रगट करना भी सामूहिक कर्म हो जाता है और उसका सामूहिक फल सबको अवश्य ही भोगना पड़ता है।

* इस जगत में कर्म का अटल सिद्धान्त लागू है, जो स्वत: प्रभावित है, जिसके अनुसार हर आत्मा को अपने कर्म का फल स्वत: मिलता है। परमात्मा कर्म की गुह्य गति का पूर्ण ज्ञाता है। परमात्मा ही आकर कर्म की गुह्य गति का ज्ञान आत्माओं को देता है और श्रेष्ठ कर्मों का रास्ता बताता है, जिस पर चलकर आत्मा सुख-शान्ति पाती है। परमात्मा का फल को देने में कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। फल तो विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार स्वत: मिलता ही है।

"जो पाप कर्म करते हैं, उसका दण्ड तो जरूर मिलेगा ना। बाप थोड़ेही बैठ दण्ड देगा। यह तो ऑटोमेटिक ड्रामा बना हुआ है, जो चलता रहता है। बाप इसके आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं।"

सा.बाबा 19.2.69 रिवा.

"दूसरी तरफ बाप सुप्रीम जस्टिस के रूप में कल्याणकारी होने के कारण बच्चों के कल्याण अर्थ ईश्वरीय लॉज (नियम) भी बताते हैं। सबसे बड़े ते बड़ा संगम का अनादि-अविनाशी लॉ कौन सा है? ड्रामा के प्लॉन अनुसार एक का लाख गुणा प्राप्ति और पश्चाताप वा भोगना - यह ऑटोमेटिकली लॉ अर्थात् नियम चलता ही रहता है। बाप को स्थूल रीति-रस्म के माफिक कहना वा करना नहीं पड़ता कि इस कर्म का यह लेना वा इस कर्म की ये सजा है, लेकिन यह ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी है। ... इसलिए गाया हुआ है - "कर्मों की गति अति गुह्य है।"

अ.बापदादा 3.5.77

* ये विश्व "कर्म-फल-कर्म, पुरुषार्थ-प्रालब्ध-पुरुषार्थ, क्रिया-प्रतिक्रिया" के घटना-चक्र पर आधारित एक कर्मक्षेत्र है। यहाँ हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है, जो उसके कर्ता पर उसके अनुरूप ही प्रभावित होती है।

* किसी के द्वारा किये गये पाप कर्म को अच्छा समझकर स्वीकार करने वाले या ऐसे कर्म

के कर्ता की महिमा करने वाले पर भी उस पाप कर्म का प्रभाव पड़ता है और उसको भी उसका फल मिलता है।

* दुखी, अशान्त होना भी एक विकर्म है क्योंकि इससे देहाभिमान और दुख के वायब्रेशन प्रवाहित होते हैं, जो उस अनुरूप वातावरण का निर्माण करते हैं, जिससे वह अन्य आत्माओं को भी उस अनुरूप प्रभावित करते हैं अर्थात् दुखी करते हैं।

"श्रेष्ठ संकल्प से वायुमण्डल शुद्ध होता है, तो व्यर्थ से दूषित होता है, जिसका बोझा आत्मा पर चढ़ जाता है।" अ.बापदादा 5.7.74

* ये सृष्टि-चक्र भूत-वर्तमान-भविष्य के घटनाचक्र पर सतत गतिशील है। हर आत्मा का वर्तमान, भूतकाल के कर्म का फल और भविष्य का बीज या आधार-शिला है। वर्तमान ही हमारे हाथों में है। इसीलिए गायन है - बीती को चितवो नहीं, आगे की धरो न आश ... अर्थात् वर्तमान ही हमारे हाथों में है, जब हम श्रेष्ठ कर्म करके अपने सुखमय भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

* आत्माभिमानी स्थिति में किये गये कर्म अकर्म (सूक्ष्म ह्रास), देहाभिमानी स्थिति में किये गये कर्म विकर्म (आत्मिक शक्ति का तीव्रता से ह्रास) और आत्माभिमानी-परमात्माभिमानी स्थिति में रहकर किये गये कर्म ही सुकर्म (आत्मिक शक्ति का विकास) होते हैं, जो आत्मा की चढ़ती कला एकमात्र आधार हैं। ये ज्ञान ज्ञान-सागर परमात्मा संगम युग में ही देते हैं, तब ही आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला होती है।

"बाप (परमात्मा) को छोड़कर दूसरे को याद करना - यह भी विकर्म है।"

सा.बाबा 5.1.69 रात्रि क्लास

* जो जैसा कर्म करता है, वह उसका वैसा फल अवश्य ही पाता है। भगवानोवाच्य - दुख देंगे तो दुख पायेंगे, सुख देंगे तो सुख पायेंगे।

* हर कर्म कर्ता के संकल्प और भावना से प्रेरित होता है और उसके आधार पर ही उस कर्म का फल निर्धारित होता है। भक्ति में एक का एक गुणा, ज्ञान में एक का सौगुणा अर्थात् ज्ञान से कर्म का फल कई गुणा बढ़ जाता है, जो सिद्धान्त सुकर्म और विकर्म दोनों में लागू होता है।

* बिना कारण के कोई कार्य नहीं हो सकता। इसलिए बिना जाने मन्सा-वाचा किसी सम्बन्ध में कोई गलत निर्णय करने से आत्मा का पाप का खाता बढ़ता है। इसलिए ड्रामा की अटल भावी और जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है के अटल सत्य सिद्धान्त को जानकर साक्षी होकर हर आत्मा के कर्म को देखो और सर्व के प्रति कल्याण की भावना रखकर अपना पुण्य का खाता जमा करो। दूसरे के कर्मों का चिन्तन कर, उसके विषय में

निर्णय कर अपना समय और शक्ति व्यर्थ न गँवाओ।

* समर्थ होकर पाप कर्म का प्रतिरोध न करना भी पाप कर्म है। पाप कर्म या पापी की सराहना करना भी पाप कर्म है। असमर्थ होते भी समय पर या यथा स्थान सत्य को प्रगट न करना भी पाप कर्म है। इस विषय में महाभारत में द्रोपदी के चीर हरण के समय का वृतान्त भी इसकी सत्यता को स्पष्ट करता है, जिससे ये स्पष्ट होता कि दुनिया में भी मनुष्यों की ऐसी मान्यता है।* पाप कर्म से अर्जित धन-सम्पत्ति या साधन का उपभोग भी पाप कर्म है,
उससे आत्मा का पाप का खाता बढ़ता है और पुण्य का खाता क्षीण होता है।

* जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आप ही अपना शत्रु है अर्थात् हर आत्मा को अपने ही कर्म का फल सुख या दुख के रूप में मिलता है। श्रेष्ठ कर्म से मित्र बनती है और पाप कर्म से शत्रु बनती है। सुख और दुख दोनों में ही दूसरे तो केवल निमित्त कारण होते हैं, मूल कारण तो अपने ही पूर्व कर्म होते हैं।

* अज्ञानवश किये गये कर्म के फल और जानकर किये गये कर्म के फल में महान अन्तर होता है।

"अगर बाप (परमात्मा) का बनकर कोई पाप कर्म किया तो सौगुणा दण्ड पड़ जायेगा।"

सा.बाबा 3.10.97 रिवा.

"बुरा कर्म करने से सौगुणा दण्ड हो जाता है। ज्ञान नहीं तो एक पाप का एक दण्ड। ज्ञान में आने के बाद फिर ऐसे कोई विकर्म करते हैं तो सौगुणा पाप लगता है।"

सा.बाबा 24.11.69 रिवा.

इस सम्बन्ध में कर्म के विधि-विधान के ज्ञाता परमात्मा के महावाक्य हैं - ट्रिबुनल ब्राह्मण बच्चों के लिए बैठेगी, अज्ञानी आत्माओं के लिए नहीं।

* यदि हम कोई अच्छा या बुरा कर्म करते हैं और उसे देखकर या सुनकर दूसरे भी करते हैं तो उनके द्वारा किये गये कर्म के फल में भी हम भागीदार बनते हैं।

* कल्प का संगमयुग ही सुकर्म करने का युग है, जो सारे कल्प के भाग्य का आधार है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा पिता की याद में किये गये कर्म ही सुकर्म हैं और आत्मा की चढ़ती कला का आधार हैं।

बाबा ने कहा है यदि ब्राह्मण आत्मा किसी ब्राह्मण आत्मा के प्रति कुदृष्टि रखता या कुदृष्टि जाती तो ये महापाप के खाते में जमा होता है।

"अन्य आत्माओं के प्रति संकल्प में भी किसी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है। किसी अन्य आत्माओं के प्रति व्यर्थ बोल भी पाप के खाते में जमा होता है। ... शुभ भावना

के बजाये और कोई भी भावना है तो यह पाप का खाता जमा होता है क्योंकि यह भी दुख देना है।"

अ.बापदादा 3.12.78

* इस विश्व-नाटक में कर्म के अनादि-अविनाशी, अटल सिद्धान्त के अनुसार हर आत्मा को अपने अच्छे-बुरे कर्म का फल अवश्य मिलता है।

* हम दूसरे के लिए अशुभ या बुरा सोचते हैं, हीन भावना रखते तो ये भी पाप-कर्म है और उसका असर हमारे ऊपर भी अवश्य होगा।

* विश्व-नाटक में किसी आत्मा को उतना ही उपभोग करने का अधिकार है, जिससे उसकी कार्य क्षमता बढ़ती है, कार्यक्षमता की रक्षा होती है या अति आवश्यक है, उससे अधिक उपभोग पाप के खाते में ही जमा होता है, जिसका पश्चाताप रोग-शोक के रूप में मनुष्य को करना ही पड़ता है। दूसरे के संसाधनों का उपयोग-उपभोग भी कर्मों का हिसाब-किताब बनाता है और कर्म-बन्धन का कारण बनता है। बुद्धिमान ज्ञानी पुरुष इस सत्य को जानकर जीवन में इसका अवश्य ध्यान रखते हुए ही हर कर्म करते हैं।

"बाबा हमेशा कहते मांगो मत। ... दाता के बच्चे हो... और किससे लेंगे तो उनकी याद आती रहेगी। ... औरों से मांगो मत। नहीं तो देने वाले को भी नुकसान पड़ जाता है क्योंकि वह शिव बाबा के भण्डारे में नहीं दिया। देना चाहिए शिव बाबा के भण्डारे में।"

सा.बाबा 25.1.72 रिवा.

"बाप (परमात्मा) कर्म-अकर्म-विकर्म की गुह्य गति का ज्ञान देते हैं। अगर बाप की श्रीमत पर चलते रहें तो कब विकर्म न हो।"

सा.बाबा 1.10.97 रिवा.

* कारण के बिना कोई कार्य नहीं होता है परन्तु कारण का चिन्तन न कर एकाग्रता से कार्य में बुद्धि लगाने वाले के कार्य अवश्य ही सफल होते हैं।

"जो बात अच्छी न लगे वह करनी नहीं चाहिए। अच्छे-बुरे को तो अब समझते हो, आगे नहीं समझते थे। ... अब अच्छी रीति पुरुषार्थ कर कर्मातीत बनना है।"

सा.बाबा 11.12.2000 रिवा.

* कर्मातीत बनने के बाद कोई आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती है।

* सर्वशक्तिवान, दाता-विधाता, सर्वज्ञ परमात्मा का बनकर अल्पज्ञ यथाशक्ति सम्पन्न मनुष्यात्माओं से किसी प्रकार की अपेक्षा रखना, मांगना भी परमात्मा की निन्दा कराना है, उसका दण्ड भी आत्मा को पश्चाताप के रूप में भोगना पड़ता है क्योंकि ये भी परमात्मा और ज्ञान की निन्दा कराना है। सेवा के लिए प्रेरणा देना अलग बात है परन्तु उसमें भी स्वार्थ भावना रखी तो दण्ड भोगना ही पड़ेगा।

* बिना सोचे-विचारे कोई कर्म कर लेना, जिससे किसी आत्मा को दुख हो तो वह भी पाप है और उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना ही पड़ता है। रामायण के पात्र राजा दशरथ और श्रवण कुमार का वृतान्त इसका उदाहरण है, जिससे अनुभव होता कि दुनिया वालों में भी इस तरह की मान्यतायें हैं।

* दूसरों को शिक्षा देना और स्वयं न करना भी पाप-कर्म है, उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना पड़ता है क्योंकि इससे स्वत: सिद्ध होता है कि वह उस कर्म की गति और उसके शुभाशुभ परिणाम को जानता है परन्तु करता नहीं है।

"बुरा काम हुआ तो फौरन बताओ तो आधा माफ हो जायेगा। ऐसे नहीं कि मैं कृपा करूँगा। क्षमा वा कृपा पाई की भी नहीं होगी। सबको अपने आपको सुधारना है। बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे और पास्ट का भी योगबल से कटता जायेगा।"

सा.बाबा 5.5.05 रिवा.

Q. ट्रिबुनल में सबके लिए कोई निश्चित आत्मायें ही होंगी या हरेक के लिए ट्रिबुनल में अलग-अलग कोई विशेष आत्मायें होंगी ? अन्त समय अपने विकर्मों का साक्षात्कार उन निमित्त बनी हुई आत्माओं के समक्ष होना ही ट्रिबुनल की सजा है या धर्मराज पुरी में कोई अलग से ट्रिबुनल होगी ? जैसे श्रवणकुमार की मृत्यु के विषय में अन्त समय राजा दशरथ का पश्चाताप।

* परमात्मा पिता से प्रतिज्ञा करके तोड़ना भी परमात्मा और ज्ञान का अपमान करना है, ये भी विकर्म है, जिसका दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना ही पड़ता है।

* तन-मन-धन परमात्मा बाप को समर्पित करके वापस लेना या लेने का संकल्प करना भी विकर्म है, उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना पड़ता है।

* जानकर या अलबेलेपन से यज्ञ की साधन-सम्पत्ति का नुकसान करना भी विकर्म है, उसका भी दण्ड आत्मा को भोगना पड़ता है।

* यज्ञ के Behalf पर किसी व्यक्ति से व्यक्तिगत लाभ उठाना भी यज्ञ की चोरी है और उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना ही पड़ता है।

* बाबा के महावाक्यों के अनुसार हम जो पुरुषार्थ कर सकते हैं और वह नहीं करते तो यह भी एक प्रकार से पाप के खाते में जमा होता है और उसका दण्ड भी आत्मा को पश्चाताप के रूप में भोगना पड़ता है।

आत्मायें जो सामूहिक रूप से भोगना भोग रही हैं, उसके भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कारण अवश्य हैं क्योंकि बिना कारण के कर्म नहीं होता है और बिना कर्म के किसी आत्मा को कोई दुख नहीं मिल सकता है।

"कर्म और कर्म के फल के बन्धन में फंसने के कारण कर्म-बन्धनी आत्मा अपनी ऊंची स्टेज को पा नहीं सकती है।... ज्ञानस्वरुप होने के बाद वा मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान होने के बाद अगर कोई ऐसा कर्म जो योगयुक्त नहीं है वह कर लेते हो, तो इस कर्म का बन्धन अज्ञान काल के कर्मबन्धन से पदमागुणा ज्यादा है।... इसलिए इसमें भी अन्जान नहीं रहना है कि यह छोटी-छोटी गल्तियां हैं। यह तो होंगी ही।"

अ.बापदादा 20.5.72

"जो विकर्म किये हैं, उनकी सजा कर्मभोग के रूप में भोगनी ही पड़ती है। कर्मभोग अन्त तक भोगना ही है, उसमें माफी नहीं मिल सकती है। ड्रामा अनुसार सब होता है। क्षमा आदि होती ही नहीं। सब हिसाब-किताब चुक्तू करना ही है।"

सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

ये तो नाम-मात्र या अंश-मात्र ही बातें हैं, कर्म का विधि-विधान तो अति गुह्य है, जो परमात्मा ही जानता है।

* ड्रामा अनुसार कोई भी कर्म फल के बिना नहीं होता अर्थात् हर कर्म का फल अवश्य होता है और कोई भी फल कर्म के बिना नहीं मिलता अर्थात् किसी भी आत्मा को कोई भी अच्छा या बुरा फल मिल रहा है, वह उसके पूर्व कर्मों का परिणाम है। इसलिए किसी की प्राप्तियों से न ईर्ष्या हो, न घृणा हो और न आलोचना हो। ये भी एक प्रकार से विकर्म हो जाता है। इस सत्य को जानकर श्रेष्ठ कर्म करने का पुरुषार्थ ही श्रेष्ठ फल की आधार शिला है। फल की इच्छा करने से फल नहीं मिलेगा, कर्म करने से ही फल मिलेगा।

"यह निश्चित है कि यह कार्य हुआ ही पड़ा है। सिर्फ कर्म और फल के, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के, निमित्त और निर्माण के, कर्म फिलॉसाफी के, अनुसार निमित्त बन कार्य कर रहे हैं। भावी अटल है लेकिन सिर्फ आप श्रेष्ठ भावना द्वारा, भावना का फल अविनाशी प्राप्त करने के निमित्त बने हुए हैं।"

अ.बापदादा 20.1.86

* विश्व-नाटक के विधि-विधान के अनुसार सर्व जीवात्मायें पृथ्वी-पुत्र हैं और प्रकृति उनकी पालना करती है। कोई भी मनुष्य किसी निरीह प्राणी को दुख देता है, उनको मारकर खाता है तो उनको प्रकृति से उस कर्म के फलस्वरूप दुख अवश्य भोगना पड़ता है। जैसे राजा समर्थ होता है, प्रजा की रक्षा करना राजा का धर्म है, ऐसे ही निरीह प्राणियों को दुख देने के बदले उनको मारने वाले को दण्ड देना प्रकृति का धर्म है और वह दण्ड अवश्य देती है।

निष्काम कर्म का राज़

निष्काम कर्म का बहुत महत्व है, इसलिए निष्काम कर्मयोग का भी गायन है परन्तु प्रश्न है - क्या कोई कर्म निष्काम होता है ? यदि होता है तो कब और कैसे ? इसका राज़ अभी परमात्मा ने बताया है।

"राइट हेण्ड सेवाधारी अर्थात् सदा निष्काम सेवाधारी। ... गुप्त सेवाधारी अर्थात् निष्काम सेवाधारी। तो एक हैं निष्काम सेवाधारी, दूसरे हैं नामधारी सेवाधारी। ... जो निष्काम सेवाधारी हैं, वे अविनाशी नाम कमाने वाले सेवाधारी हैं, उनके दिल का आवाज दिल तक पहुँचता है।"

अ.बापदादा 22.2.86

"सभी आत्माओं का बाप एक है, वह अभी आया हुआ है परन्तु सब तो मिल भी नहीं सकेंगे। इम्पॉसिबुल है। ... याद फिर भी पतित-पावन को ही करते हैं।... एक बाप ही है जो तुम बच्चों को पढ़ाकर विश्व का मालिक बनाते हैं, खुद नहीं बनते हैं। इसलिए उनको कहा जाता है - निष्काम सेवाधारी। मनुष्य कहते हैं - हम फल की आश नहीं रखते, निष्काम सेवा करते हैं परन्तु ऐसे होता नहीं है।... कर्म का फल अवश्य मिलता है।"

सा.बाबा 21.5.05 रिवा.

"ड्रामा में विजयमाला की नूँध है तो जरूर एक-दो के नज़दीक आयेंगे तब तो माला बनेंगी।... जो श्रेष्ठ कर्म की पूँजी जमा होती है, तो वह समय पर काम आती है। कोई न कोई विशेष पुण्य की पूँजी जमा होने के कारण विशेष पार्ट है (गुल्जार दादी का)।"

अ.बापदादा 23.3.88 दादियों से

विश्व-नाटक और विकर्म और विकर्म विनाश की प्रक्रिया

विश्व-नाटक में समयानुसार विकर्मों का विधि-विधान भी नूँधा हुआ है तो विकर्म विनाश का विधि-विधान भी नूँधा हुआ है, जिस विधि-विधान को ज्ञान सागर परमात्मा आकर बताते हैं, जिसको जानकर आत्मायें विकर्मों का संचित खाता खत्म करके पावन बनती हैं और अगले कल्प के लिए सुकर्मों का खाता जमा करती हैं।

"बेहद का बाप कहते हैं - बच्चे, मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम्हें इस दादा वा मम्मा को भी याद नहीं करना है। ... गायन है - सतगुरु मिला दलाल। सतगुरु कोई दलाल नहीं है। सतगुरु तो निराकार है। ... वर्सा तो बाप से ही मिलना है।"

सा.बाबा 9.2.05 रिवा.

"एक होता है डायरेक्ट विकर्म विनाश की स्टेज में स्थित हो फुल फोर्स से विकर्मों का नाश करना, दूसरा तरीका है जितना-जितना शुद्ध संकल्प वा मनन की शक्ति से अपनी बुद्धि को बिजी रखते हो, … बुद्धि में यह भरने से वह पहले वाला स्वयं ही निकल जायेगा।"

अ.बापदादा 4.7.71

"विकर्म विनाश और शक्ति भरने की दो विधियां हैं। एक होता है पहले सारा निकाल कर फिर भरना, दूसरा होता है भरने से निकालना। अगर खाली करने की हिम्मत नहीं है तो दूसरा भरते जाने से पहला आप ही खत्म हो जायेगा।" अ.बापदादा 4.7.71

सुकर्म करने का विधि-विधान

सुकर्म करने का विधि-विधान भी परमात्मा ही आकर बताते हैं, जिसको समझकर आत्मायें सुकर्म करती हैं और सुकर्मों का खाता जमा करती है। दुनिया में बहुत से कर्म ऐसे हैं, जिनको आत्मायें सुकर्म समझती हैं परन्तु वे विकर्म ही होते हैं। यथा किसी कन्या की शादी कराना आदि। वास्तविकता तो ये है कि सुकर्म पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही होते हैं, जिससे आत्माओं की चढ़ती कला होती है।

"जो कर्म स्व के या सर्व के कल्याणार्थ किया जाता है और जिससे आत्मायें एवं प्रकृति पावन बनती है, उस कर्म को सुकर्म कहा जाता है।" सुकर्म करने के लिए कर्म का ज्ञान अर्थात् कर्म और कर्म-फल (Cause and effect) का ज्ञान और कर्म करने की शक्ति का होना अति आवश्यक है, जो संगमयुग पर परमात्मा ही देते हैं।

ये सुकर्म की प्रक्रिया संगम पर ही चलती है, जब ज्ञान सागर परमात्मा इस धरा पर आते हैं और आत्माओं को अकर्म-विकर्म-सुकर्म की गहन गति का ज्ञान देते हैं और कर्मयोग की शिक्षा देते हैं। इस योग की प्रक्रिया से आत्मायें और प्रकृति दोनों पावन होते हैं। आत्माओं में आत्मिक भावना जाग्रत होती है, जिससे आत्मायें विश्व-कल्याण की भावना से कर्म करते हैं।

"यह सब ड्रामा में नूँध है, फिकर की कोई बात नहीं है। नहीं तो स्थापना कैसे होगी। दूसरी बात यह भी है कि जो करेगा, वह पायेगा।… किसको दान नहीं करेंगे तो फल भी कैसे मिलेगा।… किसी न किसी को सन्देश सुनाकर फिर भोजन खाना चाहिए।"

सा.बाबा 18.5.05 रिवा.

"अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाना है क्योंकि यह कर्म-क्षेत्र है, कर्म-भूमि है, इसमें जो बोयेंगे सो पायेंगे। यह भी इसका नियम है। बाप कहते हैं - इस लॉ को तो मैं भी ब्रेक नहीं कर सकता हूँ भल मैं वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी हूँ।" मातेश्वरी 24.6.65

"दूसरी तरफ बाप सुप्रीम जस्टिस के रूप में कल्याणकारी होने के कारण बच्चों के कल्याणार्थ ईश्वरीय लॉज भी बताते हैं। सबसे बड़े ते बड़ा संगम का अनादि लॉ कौन सा है ? ड्रामा प्लॉन अनुसार एक का लाख गुणा प्राप्ति और पश्चाताप वा भोगना - यह ऑटोमेटिकली लॉ अर्थात् नियम चलता ही रहता है। बाप को स्थूल रीति-रस्म के माफिक कहना वा करना नहीं पड़ता कि इस कर्म का यह लेना (प्राप्ति) वा इस कर्म की ये सजा है। लेकिन यह ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी है। .. इसलिए गाया हुआ है - "कर्मों की गति अति गुह्य है।"

अ.बापदादा 3.5.77

"हर कर्म त्रिकालदर्शी बन करने से कभी भी कोई कर्म विकर्म नहीं हो सकता। सदा सुकर्म होगा। ... ऐसे ही साक्षी-दृष्टा बन कर्म करने से कोई भी कर्म के बन्धन में कर्म-बन्धनी आत्मा नहीं बनेंगे।"

अ.बापदादा 30.1.79

"पॉवरफुल योग वाले के सामने मुश्किल हो ही नहीं सकती। ... ब्राह्मण जीवन है मजे की जीवन, संगमयुग है मजे का युग, बोझ उठाने का युग नहीं है। बोझ उतारने का युग है।"

अ.बापदादा 30.11.99

"बाप रास्ता बताते हैं। अपने ऊपर कृपा, रहम करना है। टीचर तो पढ़ाते हैं, आशीर्वाद तो नहीं करेंगे। आशीर्वाद, कृपा, रहम आदि माँगने से मरना भला। कोई से पैसा भी नहीं माँगना चाहिए। बच्चों को सख्त मना है। कोई से पैसा मांगना, यह भी पाप है। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार, जिन्होंने कल्प पहले बीज बोया है, वर्सा पाया है, वे आप ही करेंगे। कोई भी काम के लिए मांगो नहीं। न करेगा तो न पायेगा। ... जिसको करना होगा, वह आपेही करेगा। तुमको माँगना नहीं है। कल्प पहले जितना जिन्होंने किया है, ड्रामा उनसे करायेगा। मांगने की क्या दरकार है। कई बुद्धू बच्चियाँ हैं, जो मांगती हैं। बाबा तो हुण्डी भरते रहते हैं सर्विस के लिए।"

सा.बाबा 29.10.69 रिवा.

"बाप को याद करने से थक जाते हैं तो विकर्म विनाश भी नहीं होंगे। विकर्म रह जायेंगे तो फिर सजा खानी पड़ेगी, पद भी कम हो जायेगा। दिन प्रतिदिन इनका भी बहुतों को साक्षात्कार होता रहेगा। बाप को किसी भी बात का ख्याल नहीं रहता है। जानते हैं यह तो ड्रामा है।"

सा.बाबा 26.11.69 रिवा.

"जब कुछ ऐसी बात हो जाती है तो मनुष्य पिछाड़ी में कह देते हैं जो ईश्वर की इच्छा। अब तुम थोड़ेही ऐसे कहेंगे। तुम कहेंगे - भावी ड्रामा की। तुम ईश्वर की भावी नहीं कहेंगे। ईश्वर का भी ड्रामा में पार्ट है। यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है - यह बाप ही समझा सकते हैं। नॉलेजफुल भी बाप है। मनुष्य समझते हैं कि वह सभी के दिलों को जानते होंगे। परन्तु हम जो पाप कर्म करते

हैं, उसका दण्ड तो जरूर हमको ही मिलेगा ना। बाप थोड़ेही बैठ दण्ड देगा। यह तो ऑटोमेटिक ड्रामा बना हुआ है, जो चलता ही रहता है।"

सा.बाबा 19.2.69 रिवा.

"कोई पाई-पाई जमा करते हैं तो लाख हो जाता है। तो पाई की चोरी भी लाखों की हो जाती है। सभी कायदे बाप समझा देते हैं। ईश्वर का राइट हेण्ड है धर्मराज। यह हिसाब-किताब ऑटोमेटिकली चलता रहता है। जो जैसा कर्म करते हैं, वह भोगते हैं। ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 14.12.69 रिवा.

"63 जन्मों के हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। अपने पिछले संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज हो सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं - इस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं। ... याद रखो - सच्चे बाप को अपने जीवन की नैया दे दी तो सत्य के साथ की नाँव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती।" अ.बापदादा 3.5.77

ड्रामा की अनादि-अविनाशी नूँध और कर्म का विधान इस विश्व-नाटक रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं, जो साथ-साथ चलते हैं। हर कर्म से आत्मा के आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब पूरे भी होते हैं तो नये बनते भी हैं। कल्पान्त में जन्म-जन्मान्तर के हिसाब-किताब चुक्ता करके आत्मायें घर जाती हैं। इसलिए अभी सभी आत्माओं को अपने सर्व विकर्मों के हिसाब-किताब पूरे करने हैं और श्रेष्ठ कर्म करके सतयुग के लिए सुखदायी हिसाब-किताब बनाने हैं। कर्म के विधि-विधान को जानने वाली ज्ञानी आत्मा को कब किसके पार्ट, हिसाब-किताब, सुख-दुख को देखकर आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए और किसी घटना को देखकर अपने संकल्प को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। किसके कर्म को देखकर किसके प्रति घृणा-राग-द्वेष की भावना भी नहीं होना चाहिए क्योंकि भावना से भी आत्मा का आत्माओं के साथ हिसाब-किताब बन जाता है।

"हिम्मते बच्चे मदद दे खुदा" - इस राज भूल जाते हैं। यह एक ड्रामा की गुह्य कर्मों की गति है। अगर यह विधि और विधान नहीं होता तो सभी विश्व के पहले राजा बन जाते। ... नम्बरवार बनने का विधान इस विधि के कारण ही बनता है। ... निमित्त मात्र यह विधान ड्रामा में नूँधा हुआ है।" अ.बापदादा 22.11.87

"अगर किसी की कोई बुराई चित्त पर है तो उसका चित्त सदा प्रसन्नचित्त नहीं रह सकता और चित्त पर धारण की हुई बातें वाणी में जरूर आयेंगी। ... लेकिन कर्मों की गति का गुह्य रहस्य सदा सामने रखो।... कर्मों का यह पक्का नियम है अथवा कर्मों की फिलॉसाफी है कि आज

आपने किसकी ग्लानि की तो आपकी कल कोई दुगुनी ग्लानि करेगा।"

अ.बापदादा 21.11.92

"कर्मों का यह पक्का नियम है अथवा कर्मों की फिलॉसाफी है कि आज आपने किसकी ग्लानि की तो आपकी कल कोई दुगुनी ग्लानि करेगा। ... तो कर्मों की गति क्या हुई ? बुराई लौटकर कहाँ आई ?"

अ.बापदादा 21.11.92

"कर्मों की गहन गति क्या हुई ? ... कई कहते हैं - हमने किसको कहा नहीं लेकिन वे कह रहे थे तो मैंने भी हाँ में हाँ कर दिया। ... हाँ में हाँ मिलाना, यह भी कर्मों की गति के प्रमाण पाप में भागी बनना है।"

अ.बापदादा 21.11.92

"फौरन फल नहीं निकलता है तो अधीर्य नहीं होना है कि फल तो निकलता ही नहीं। सभी फल फौरन नहीं मिलते हैं। कोई-कोई बीज फल तब देता है जब नेचुरल वर्षा होती है। पानी देने से भी नहीं निकलता है। यह भी ड्रामा की नूँध है। ... कोई नेचुरल केलेमिटीज होंगी, जब ड्रामा का सीन बदलने वाला होगा तो वह नेचुरल वायुमण्डल, वातावरण उस बीज का फल निकालेगी।"

अ.बापदादा 11.7.71

"हर एक का वही पार्ट बजता है, जो कल्प-कल्प बजता है। उसमें कोई फर्क नहीं हो सकता। यह सारा बना-बनाया खेल है। कोई पूछते हैं - पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध बड़ी ? अब पुरुषार्थ बिगर प्रालब्ध मिलती नहीं है। ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ से ही प्रालब्ध मिलती है।"

सा.बाबा 27.12.04 रिवा.

"देवताओं को वहाँ पता थोड़ेही रहता है कि हमने यह राज्य कैसे पाया ? ... ये बड़ी समझने की गुह्य बातें हैं। समझदार ही समझें। बाकी जो बूढ़ी मातायें हैं, उनमें इतनी बुद्धि तो है नहीं। यह भी ड्रामा प्लेन अनुसार हर एक का अपना पार्ट है। ऐसे तो नहीं कहेंगे - हे ईश्वर बुद्धि दो। हम सबको एक जैसी बुद्धि दें तो सब नारायण बन जायें।"

सा.बाबा 18.9.04 रिवा.

"अज्ञान काल में मनुष्य समझते हैं कि ईश्वर ही दुख-सुख देते हैं। परन्तु बाप ईश्वर यह धन्धा नहीं करते हैं। यह तो कर्मों अनुसार ड्रामा बना हुआ है। जो जैसा कर्म करता है, ऐसा फल पाता है। इस समय कर्म बनाने की बात है, कर्म कूटने की बात नहीं।"

सा.बाबा 4.8.71 रिवा.

"कब पतित भी यहाँ छिपकर आते हैं। वे अपना ही नुकसान कर लेते हैं। अपने को ठगते हैं। बाप को तो ठगने की बात ही नहीं। ... कहेंगे ड्रामा अनुसार इनकी तकदीर में नहीं है तो भगवान भी क्या करे।"

सा.बाबा 20.8.71 रिवा.

"दुनिया में रिकार्ड रखने के कई साधन हैं। बाप के पास साइन्स के साधनों से भी रिफाइन साधन हैं, जो स्वत: ही कार्य करते रहते हैं।... अव्यक्त वतन के साधन प्रकृति से परे हैं, इसलिए वे परिवर्तन में नहीं आते हैं।... बापदादा याद और सेवा दोनों का ही रिकार्ड देखते हैं।" अ.बापदादा 20.2.88

"बाप आकर समझाते हैं कि यह ड्रामा बना-बनाया है परन्तुकिस नियम से बना हुआ है, वह समझने की बात है। ... हमको अपना आधार रखना है अपने कर्म के ऊपर। अगर कोई बात समझ में नहीं आती है तो उसमें अटकना नहीं है। ... इसमें बाप को भी आकर कर्म करना पड़ता है।" मातेश्वरी 23.4.65

"हमको अपना आधार अपने कर्म के ऊपर रखना है। ... इसमें बाप को भी आकर कर्म करना पड़ता है। बाप भी कहते हैं - मैं भी इसमें बांधा हुआ हूँ, मुझे भी नई दुनिया रचने के लिए काम करना पड़ता है। ... इसी तरह हम भी अपने कर्म करने में बंधे हुए हैं। इसलिए किसी बात में मूंझने के बजाये, अपने कर्मों को स्वच्छ बनाना है।"

मातेश्वरी 23.4.65

"बाकी यह तो जानते हैं कि यह ड्रामा है, यह खेल है, आदि से अन्त तक कैसे चलता है, उसकी जो नॉलेज है, उसको समझना है। ... गीता में भी है - जीवात्मा अपना आपही मित्र है, आपही अपना शत्रु है। इसलिए हमको पुरुषार्थ तो करना ही है। पहले पुरुषार्थ पीछे प्रालब्ध। जो करेंगे सो पायेंगे।" मातेश्वरी 23.4.65

"भल कहेंगे ड्रामा अनुसार ही हम गिरे और ड्रामा अनुसार ही हम चढ़ेगे परन्तु ड्रामा में भी कोई नियम है, तो उन नियमों को भी समझना है। ... जब हमने अपने कर्म उल्टे बनाये तभी हम गिरे, अब हम ऊंचा उठेंगे भी कर्म से। ... अगर नहीं करेंगे तो समझा जायेगा कि इनका ड्रामा में पार्ट नहीं है।" मातेश्वरी 23.4.65

"ऐसे नहीं कि ड्रामा में होगा तो हमारे से अपने आप होगा। अपने आप कैसे होगा, वह भी हम सोचेंगे कि हमको यह करना है, यह रांग है, यह राइट है, यह करना है, यह नहीं करना है। ... कहे जो होना होगा, वह अपने आप होगा, फिर तो सबमें बैठ जाओ, कोई धन्धा आदि भी नहीं करो। ... जैसे उसमें सोच-समझकर चलना पड़ता है ... वैसे ही इसमें भी अपने कर्मों को श्रेष्ठ रखकर चलना है।" मातेश्वरी 23.4.65

"यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, उसको अभी हम जानते हैं। कैसे यह नीचे आता है फिर कैसे ऊंचा उठता है, वह जानते हैं। अभी ऊंचा उठने का टाइम है, इसलिए हमको ऊंच कर्म करना ही चाहिए। ड्रामा अनुसार अभी हमारी चढ़ती कला का टाइम है तो हमको चढ़ना ही

चाहिए। ... बाकी ऐसे नहीं कि अपने आप होगा। अपने आप कुछ होता नहीं है।"

मातेश्वरी 23.4.65

"समझो हम पूरा अटेन्शन से मोटर चलाते हैं, परन्तु उसके आगे अचानक कोई बच्चा आ गया और वह कट गया तो इसको क्या कहेंगे ? जरूर उसका कोई अगले जन्मका हिसाब रहा हुआ होगा। ... हमने कभी किसको दुख दिया है तो फिर हमको दूसरे जन्म में उससे लेना है। यह है कर्मों के लेन-देन का हिसाब।" मातेश्वरी 23.4.65

"अभी हम सोचकर अच्छा चलें, फिर भी हमारे से किसको दुख पहुंचा... यह है सारी कर्मों की फिलासॉफी। अनेक जन्मों का हमारा खाता चलता है। ऐसे नहीं अभी हम जो करते सो अभी ही पाते हैं। नहीं, अभी हम जो करते हैं, वह हमारा खाता रिजर्व में कई जन्मों तक चलता रहता है। ... हमारा कई जन्मों का खाता स्टॉक में रहता है, इसलिए हम उसको भोगते हैं। इसलिए सिर्फ इस जीवन को नहीं देखना है।" मातेश्वरी 23.4.65

"एक होता है जान-बूझ कर किसका खून करना, एक होता है अन्जाने में हो जाना। ... अचानक हमारी मोटर से कोई बच्चा मर गया, इसको क्या कहेंगे ? ड्रामा में पिछले कर्मों का कोई हिसाब-किताब था। अब उसके लिए जितना हम अच्छा कर सकते हैं या जितना हमारे से बन सके, सो हम करें।" मातेश्वरी 23.4.65

"हमको अपने कर्म पर अटेन्शन तो देना ही पड़े। ऐसे नहीं कि जो होना होगा, सो होगा। नहीं, अपने कर्म के ऊपर ध्यान हो। ड्रामा और कर्म, पुरुषार्थ और प्रालब्ध का यह खेल बना हुआ है। इन सब बातों को अच्छी तरह से समझना है। अगर ड्रामा की बात समझ में नहीं आती है तो इसको छोड़ दो। परमात्मा को जानना जरूरी है क्योंकि उससे योग लगाना है।"

मातेश्वरी 23.4.65

विश्व-नाटक का सत्यता, न्यायपूर्णता और कल्याणकारिता का सिद्धान्त

ये विश्व-नाटक बहुत अद्भुत और दिव्य रहस्यों से परिपूर्ण है। यद्यपि ये नाटक चेतन नहीं है परन्तु इसके नियम और सिद्धान्त पूर्णतया न्यायपूर्ण, सत्य और कल्याणकारी (Just-Accurate-Auspecious) हैं। कोई देखे या न देखे परन्तु वे नियम और सिद्धान्त ड्रामा के विधान अनुसार समय पर अपना कार्य करते ही हैं, उसमें किसी भी प्रकार की कोई भूलचूक नहीं हो सकती। ये अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक सुख-दुख, हार-जीत का होते हुए भी सत्यता, न्यायपूर्णता, कल्याणकारिता से परिपूर्ण है। सत्यता, न्यायपूर्णता, कल्याणकारिता इसके मूल गुण हैं।

विश्व-नाटक के ज्ञान को यथार्थ रीति समझने वाले किसी भी व्यक्ति को इसके नियम और सिद्धान्तों में कोई भी सन्देह नहीं हो सकता है। जैसे परमात्मा की महिमा न्यायकारी, समदर्शी, कल्याणकारी के रूप में गाई जाती है, वैसे ये विश्व-नाटक भी पूर्णतया न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। इस विश्व-नाटक में जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा। विश्व-नाटक का ये राज़ संगमयुग पर ही परमात्मा द्वारा पता पड़ता है, तब ही हम अतीन्द्रिय सुख पाते हैं।

"यह ड्रामा बना हुआ है, इसका आदि वा अन्त नहीं है। हाँ, जब इस झाड़ की जड़जड़ीभूत अवस्था होती है अर्थात् तमोप्रधान बन जाता है तब यह झाड़ चेन्ज होता है। ... पार्टधारी सब इकट्ठे कैसे आयेंगे! इकट्ठे आयें तो खेल ही बिगड़ जाये। यह खेल बड़ा एक्यूरेट बना हुआ है, इसमें कोई चेन्ज नहीं हो सकती।" सा.बाबा 20.12.04 रिवा.

"ड्रामा बड़े कायदे अनुसार चलता रहता है। इस ड्रामा में कोई भूल नहीं है। अनादि-अविनाशी बना हुआ है। अभी जो एक्ट चलती है, फिर 5 हजार वर्ष के बाद रिपीट होगी। ... हू-ब-हू रिपीट होता रहता है। इसको समझने की भी ब्रेन चाहिए। ... वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी है ना।"

सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

"वे तुमको विष के लिए मार देकर शिवबाबा की याद दिलाते हैं। तुम बाप से वर्सा पाते हो, पाप कट जाते हैं। यह भी ड्रामा में तुम्हारे लिए गुप्त कल्याण है।"

सा.बाबा 16.5.05 रिवा.

"जैसे सूर्य की किरणों की सकाश स्वत: ही चारो ओर फैलती है, ऐसे ही ज्ञानसूर्य बापदादा की सर्व शक्तियों की किरणें सर्व आत्माओं के ऊपर पड़ रही थी और सभी आत्माओं में प्रसन्नता का वायुमण्डल फैल रहा था।"

अ.बापदादा का सन्देश 26.5.05 दादी गुल्जार के द्वारा

"जब एक के ही द्वारा, एक ही जैसा, एक ही समय, एक ही विधि से सबको खज़ाने प्राप्त हैं फिर नम्बरवार क्यों? क्योंकि प्राप्त हुए खजाने को हर समय कार्य में नहीं लगाते हैं अर्थात् स्मृति में नहीं रखते, मुख से खुश होते लेकिन दिल से खुश नहीं होते, दिमाग की खुशी है लेकिन दिल की खुशी नहीं है।" अ.बापदादा 5.10.87

विश्व-नाटक की न्यायपूर्णता

इसमें कर्म और फल अर्थात् पुरुषार्थ और प्रालब्ध तथा ड्रामा के पार्ट का अद्वितीय सन्तुलन है, जिससे किसी आत्मा को इसके विषय में अंशमात्र भी प्रश्न उठाने की गुंजाइश नहीं

है। जो इसके राज़ को समझ लेता है, उसे यह शत-प्रतिशत न्यायपूर्ण प्रतीत होता है और वह इसके परम आनन्द को अनुभव करता है। पहले आने वाली और बाद में आने वाली हर आत्मा के प्रति इसमें पूर्ण न्याय है। इसलिए इसके यथार्थ राज़ को जानने वाले के मन में कभी भी ये संकल्प नहीं उठ सकता कि हम गरीब दूसरे साहूकार क्यों, हम दुखी दूसरे सुखी क्यों, कोई हमारे साथ अन्याय कर रहा है, कोई हमको दुख दे रहा है .... आदि आदि। यदि किसके मन में ऐसा कोई संकल्प उठता है तो वह उसकी अज्ञानता का परिचायक है और ये भी उसका पार्ट है। फिर भी हर आत्मा अपने पार्ट के समय अनुसार आधा समय सुख और आधा समय दुख भोगती है। इस विश्व-नाटक में कर्म और फल, अधिकार और कर्तव्य, सुख और दुख का नियम समान रूप से सर्वात्माओं के ऊपर प्रभावित होता है। सभी आत्मायें परमात्मा की अविनाशी प्रिय सन्तान हैं और इस विश्व नाटक के अनादि पार्टधारी हैं। हर आत्मा के साथ परमात्मा का समान प्यार है। परमात्मा की दृष्टि में हर आत्मा विशेष है, इसलिए उनकी किसी भी आत्मा के प्रति कब घृणा नहीं होती और वे सर्वात्माओं का कल्याण करते हैं। हर आत्मा की अन्त में कर्मातीत स्थिति होती है अर्थात् हर आत्मा 'सुख - दुख = 0' स्थिति अर्थात कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करती है। आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों का हिसाब-किताब भी अन्त तक बराबर हो जाता है। यद्यपि कर्मभोग आत्मा को दुखी करता है परन्तु वास्तविकता ये है कि उससे आत्मा के ऊपर का बोझा हल्का होता है और आत्मा उसके बाद विशेष सुख का अनुभव करती है।

इस नाटक में सभी आत्मायें पार्टधारी हैं और परमात्मा की प्रिय सन्तान हैं। इसमें किसको राजा का पार्ट मिला या किसको भिखारी का पार्ट मिला, उसका महत्व नहीं है परन्तु वह उसको किस स्थिति में बजाता है, वह महत्वपूर्ण है। यदि वह अपने पार्ट को आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर बजाता और उसी स्थिति में अपने एवं सर्व के पार्ट को देखता है तो उसको कब हीनता या अहंकार की फीलिंग नहीं आ सकती क्योंकि सभी आत्मायें एक परमात्मा की अविनाशी सन्तान हैं। स्वरूप में स्थित आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होती ही है। किसी भी ड्रामा में महिमा उस एक्टर की होती है, जो अपने पार्ट को अच्छी रीति बजाता है। अनेक दुनियावी नाटकों को देखें तो उनमें ऊंचे पार्ट की अपेक्षा नीचे पार्ट बजाने वाले को नम्बरवन पार्ट बजाने का पुरुस्कार मिलता है। रामायण के सीरियल में रावण का पार्ट बजाने वाले को नम्बरवन एक्टर का पुरस्कार मिला।

हर आत्मा को अपने कल्प-कल्प के पार्ट में ही रुचि है और वही उसको अच्छा लगता है। एक गन्द के कीड़े को फूलों के बीच में बिठाओ तो भी उसको फूल पसन्द नहीं

आता, गन्द में ही रहना अच्छा लगता है क्योंकि वही उसका नैसर्गिक संस्कार है, इसलिए उसमें ही उसको सुख मिलता है।

विश्व-नाटक के न्यायकारिता के मुख्य पक्ष

इस विश्व-नाटक के गुण-धर्मों को देखें तो देखेंगे :-

1. इस विश्व-नाटक में कर्म और फल का विधान, अधिकार और कर्तव्य, सुख और दुख का विधान सर्व आत्माओं पर समान रूप से प्रभावित होता है। उससे कोई भी आत्मा बच नहीं सकती और किसी के साथ भी अन्याय या पक्षपात नहीं है।

2. इस ड्रामा में सभी आत्मायें पार्टधारी हैं और परमपिता परमात्मा की प्रिय सन्तान हैं तथा हरेक आत्मा में कोई न कोई विशेषता अवश्य है, जिसके कारण वह प्रभु प्रिय है और इस विश्व-नाटक में उसका महत्व है। जिस तरह एक बाप को सभी बच्चे प्रिय होते हैं, उसी तरह आत्माओं के बाप परमपिता परमात्मा को भी सर्व आत्मायें समान रूप से प्रिय हैं, इसलिए वह सबके कल्याणार्थ पुरुषार्थ कराता है और करा रहा है। परमात्मा के इस प्यार के कारण ही सर्व आत्मायें भी उसको प्यार करती हैं। इस ड्रामा में किसी भी एक ही आत्मा को सर्व प्राप्तियाँ नहीं है परन्तु हरेक को कोई न कोई विशेष प्राप्ति अवश्य है। स्व-स्थिति में स्थित होकर अपनी प्राप्तियों को देखे तो हर आत्मा उसी देश, काल और परिस्थिति में सुख-शान्ति का अनुभव करेगी।

3. हर आत्मा को अपने पार्ट के समय अनुसार आधा सुख और आधा दुख का पार्ट बजाना ही पड़ता है और अन्त में हरेक की स्थिति सुख - दुख = 0 अर्थात् सुख-दुख दोनों से परे कर्मातीत हो जाती है और हर आत्मा कर्मातीत स्थिति से ही इस धरा पर आती है और सबको कर्मातीत होकर ही घर परमधाम वापस जाना है।

4. ये हार-जीत का खेल है। ये संगमयुग हर आत्मा के जीत का समय है परन्तु हरेक के अपने पार्ट के समय अनुसार उसके लिए ये संगम का समय आता है, जब वह भी अपने समय अनुसार अतीन्द्रिय सुख का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार अनुभव करती है। हमारा अभी जीत का समय है तो जीत के समय जीत का सुख लेने में ही बुद्धिमानी है।

5. यदि हम आत्माभिमानी अर्थात् साक्षी अर्थात् तटस्थ होकर नाटक को देखेंगे तो ये बहुत सुखदायी अनुभव होगा और हम अपने को मान-अपमान .. सुख-दुख में समान अनुभव करेंगे। जब अज्ञानता के कारण इसमें लिप्त हो जाते अर्थात् देहाभिमान में आ जाते तब सुख अथवा दुख का प्रभाव होता है और ऊंच-नीच, मेरा-तेरा .. का प्रश्न उठता और ये श्रृंखला

कल्पान्त तक चलती रहती है, जब तक ज्ञान-सागर परमपिता परमात्मा न आये और पावन बनाकर घर वापस न ले जाये। जब परमपिता परमात्मा आकर ज्ञान देते तब ये श्रृंखला समाप्त होती है और सभी आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा पाती हैं। विश्व-नाटक का ये क्रम और सिद्धान्त सर्व आत्माओं पर समान रूप से लागू होता है।

6. हरेक आत्मा परमपिता परमात्मा की सन्तान है, इसलिए हर आत्मा का बाप के वर्से पर अधिकार है और इसीलिए बाबा हरेक को उसके पार्ट के अनुसार मुक्ति - जीवन मुक्ति का वर्सा अवश्य ही देता है।

7. यदि हम ड्रामा के पट्टे पर खड़े होकर इस नाटक को देखेंगे तो हम निर्संकल्प और निर्विकल्प अवस्था में सहज स्थित हो सकेंगे और ये अवस्थायें परमशान्ति और परम सुख या अतीन्द्रिय सुख देने वाली हैं। इस स्थिति में कोई व्यक्ति किसके लिए न बाधक बन सकता है, न साधक। इसके लिए हर आत्मा को अपना पुरुषार्थ करना ही पड़ता है, जिसके लिए हर आत्मा स्वतन्त्र है और हर आत्मा पुरुषार्थ करती ही है। इस विश्व-नाटक में सबको इसके लिए समान अधिकार है।

8. ड्रामा के यथार्थ ज्ञान को समझने से हमको हर आत्मा के पार्ट का ज्ञान होता है, जिसके कारणकिससे राग-द्वेष न होकर सम-भाव जाग्रत होता है, विश्व-बन्धुत्व की भावना जाग्रत होती है।

9. क्या किसी ड्रामा में किसी राजा का एक बच्चा गरीब का पार्ट बजाये और दूसरा बच्चा राजा का पार्ट बजाये तो उनको राजाई या गरीबी की फीलिंग होगी ? ड्रामा के पार्ट को देख खुशी और वाह-वाह उसी की होगी जिसका अभिनय उसके पार्ट के अनुरूप सही होगा, चाहे वह गरीबी का हो या राजा का। किसी नाटक में गरीब का बच्चा अमीर का और अमीर का बच्चा गरीब का पार्ट बजा सकता है परन्तु दोनों को अपने जीवन की मूल अनुभूतियां रहेंगी ही परन्तु इस विश्व-नाटक के हम सभी पार्टधारी आत्मायें PPP के प्रिय बच्चे हैं और एक बाप को अपने सभी बच्चे प्रिय होते हैं।

10. यदि हम देह और देह की दुनिया से शत प्रतिशत न्यारे होकर इस विश्व-नाटक को देखेंगे तो ये शत प्रतिशत न्यायपूर्ण और परम आनन्दमय अनुभव होगा परन्तु इसके लिए आत्मा में शत प्रतिशत पवित्रता चाहिए। ये भी नाटक का विधि-विधान है कि जब आत्मा शत प्रतिशत पवित्र बन जाती है तो कर्मातीत अवस्था हो जाती और वह घर चली जाती है। परमपिता परमात्मा ही शत प्रतिशत सदा आत्माभिमानी स्थिति में पार्ट बजाते क्योंकि वे सदा पावन हैं और जन्म-मरण से न्यारे हैं। इसलिए शिवबाबा ब्रह्मा बाबा के साकार तन या गुल्जार

दादी के तन में बीमारी अर्थात् दुख की परिस्थितियाँ होते हुए भी उससे निर्लिप्त रहते हैं। ऐसे ही हम को भी उस अवस्था तक पहुँचने तक पुरुषार्थ करना होगा और ड्रामानुसार हर आत्मा ये पुरुषार्थ अवश्य ही करेगी या सर्व आत्माओं को ड्रामा ये पुरुषार्थ अवश्य ही करायेगा।

11. इस ड्रामा में जिसका जो पार्ट है, वही उसको अच्छा लगता है और उस तरफ खींचता रहता है, उसी में उसको सुख अनुभव होता है। अधिकांश मनुष्य शान्ति मांगते हैं, उसके लिए ही पुरुषार्थ करते हैं क्योंकि वे अधिक समय तक शान्तिधाम में रहते हैं, इसलिए वे शान्तिधाम में जाते हैं और जो आत्मायें स्वर्ग में अधिक समय रहती हैं, वे स्वर्ग में जाती हैं।

12. ड्रामा में कोई भी पार्टधारी का ध्यान अपने पार्ट पर केन्द्रित रहता तब ही वह अपने पार्ट को अच्छी रीति बजा सकता है। अगर आगे-पीछे का चिन्तन या दूसरों के पार्ट की ओर ध्यान जाता है तो सफलतापूर्वक पार्ट नहीं बजा सकता है। इसलिए हर आत्मा को परचिन्तन में न जाकर ड्रामा की न्यायपूर्णता को जानकर, स्वीकार कर अपनी प्राप्तियों को देखते हुए, उनका लाभ उठाने में ही उसका कल्याण है।

13. अतीन्द्रिय सुख बाप का वर्सा है, जो हर आत्मा को स्वतन्त्रता से प्राप्त होता है परन्तु ड्रामा के विधान अनुसार हर आत्मा अपने समय अनुसार ही उसे प्राप्त करती है। गायन है योगानन्द, परमानन्द, जो परमात्मा के साथ सम्बन्ध और उसके प्रति श्रृद्धा के द्वारा ही प्राप्त होता है। इसलिए आत्मा, परमात्मा और ड्रामा की नॉलेज को यथार्थ रीति समझ, इस शरीर से न्यारा होकर ही उसका अनुभव कर सकते हैं। इसके लिए सभी आत्मायें पूर्ण स्वतन्त्र हैं, किसी को कोई बन्धन नहीं है और न ही किसी के साथ कोई पक्षपात है।।

14. आत्म स्थिति, परमपिता परमात्मा के साथ का अनुभव, सत्य ज्ञान से प्राप्त होने वाले सुख का अनुभव जो बेहद के बाप का वर्सा है, वह सभी आत्मायें समान रूप से अनुभव कर सकती हैं और सबको प्राप्त करने का समान अधिकार है। ड्रामा का पार्ट अलग बात है और उससे सुख-शान्ति की प्राप्ति अलग बात है। वैरायटी ड्रामा है तो उसमें हरेक का पार्ट भी वैरायटी अवश्य ही होगा, समान नहीं। इस विविधता में ही ड्रामा की सुन्दरता है।

15. इस विश्व-नाटक को हम ध्यान से देखें तो देखते हैं कि कोई भी आत्मा किसी भी परिस्थिति में है, किसी भी योनि में है परन्तु वह शरीर छोड़कर जाना नहीं चाहती - भले वह गरीब है, बीमार है .. जो इस बात को सिद्ध करता है कि वह उस पार्ट से सन्तुष्ट है।

16. इस विश्व-नाटक में सब पूर्व निश्चित है, जो समय पर पुनरावृत्त होता है परन्तु पुरुषार्थ और प्रालब्ध, कर्म और फल के विधान का पूर्ण सन्तुलीन है, जो हर आत्मा के साथ समान रूप से लागू होता है। कहाँ भी किसी नियम-सिद्धान्त और न्याय की मर्यादा और गरिमा का उलंघन

नहीं है।

17. विश्व-नाटक की न्यायपूर्णता के विधि-विधान का ये भी एक पक्ष है कि जिस आत्मा को जितना ऊंचा पार्ट मिला हुआ है, उसके अनुसार ही उसको परीक्षाओं से भी अवश्य ही पार करना होता है, जिन परीक्षाओं को हर आत्मा पार नहीं कर सकती है, जो उसके सुख-दुख को सन्तुलित करता है।

"पार्ट से छूटना नहीं हो सकता। ड्रामा अनुसार आयेंगे जरूर।... इतना दुख देखा तो फिर इतना सुख भी देखना चाहिए। ड्रामा में बाबा ने वज़न ठीक रखा है।... जिनका पार्ट ही थोड़ा है (उनको सुख भी कम तो दुख भी कम)।"

सा. बाबा 21.9.98 रिवा.

"कोई दूसरे को उल्हना तो दे नहीं सकते कि इसने यह ठीक नहीं किया, इसलिए ऐसे हुआ। हर एक को अपनी तस्वीर आपही बनानी है। ... बाप का सहयोग हर आत्मा को है। किन्हों को ज्यादा, किन्हों को कम है। नहीं, बाप का सहयोग हर आत्मा के प्रति एक के रिटर्न में पदमगुणा है ही है।" अ.बापदादा 15.3.88

"इस ड्रामा में विशेष इस संगमयुग की ये विशेषता है कि कोई भी नया हो या पुराना हो, हर एक को गोल्डन चान्स है नम्बर आगे लेने का।... फर्स्ट नम्बर नहीं, फर्स्ट डिवीज़न। फर्स्ट नम्बर तो ब्रह्मा निश्चित हो गये ना।"

अ.बापदादा 17.11.94

विश्व-नाटक की सत्यता और कल्याणकारिता

ये अनादि-अविनाशी ड्रामा है, जो सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। इस विश्व-नाटक की हर घटना सत्य और कल्याणकारी है। विश्व-नाटक की कोई घटना जो वर्तमान में अकल्याणकारी भी दिखाई देती है परन्तु उसको ज्ञानयुक्त अन्तर्दृष्टि से देखें और अध्ययन करें तो उसमें भी कल्याण समाया हुआ दिखाई देगा, जो समय पर प्रत्यक्ष होता है।

ये ड्रामा एक्यूरेट बना हुआ है, जिसमें कोई परिवर्तन हो नहीं सकता। जड़-चेतन सब अपने समय पर अपना पार्ट रिपीट करते हैं। समय अनुसार जड़, चेतन को और चेतन, जड़ को प्रभावित करता है। समय पर हर आत्मा को अपने कर्म का फल आप ही मिलता है। ये ड्रामा अपने समय पर हू-ब-हू पुनरावृत्त होगा। इसके किसी भी दृश्य में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता है परन्तु समय परिवर्तन के साथ हर पल-विपल परिवर्तन अवश्य होता है, जो हू-ब-हू कल्प पहले की तरह पुनरावृत्त होता है और ये परिवर्तन ही इसकी शोभा है।

इस ड्रामा में नियमानुसार हर आत्मा को अपने कर्म एवं पुरुषार्थ अनुसार अच्छा या बुरा फल अवश्य मिलता है और हर आत्मा अपने स्वभाव-संस्कार अनुसार ऐसे माता-पिता और परिस्थिति में जाकर जन्म लेती है।

ये ड्रामा क्रिया-प्रतिक्रिया, पुरुषार्थ-प्रालब्ध-पुरुषार्थ, कर्म-फल-कर्म पर आधारित अनादि-अविनाशी नाटक है, जो बिल्कुल एक्यूरेट कार्य करते हैं।

इस ड्रामा का यथार्थ ज्ञान हमको परमपिता परमात्मा के द्वारा इस संगम युग पर ही मिलता, जिसके कारण संगमयुग चढ़ती कला का युग है। अभी हमको आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक का ज्ञान मिलता है, जिसके आधार पर आत्मा को अपने स्वरूप में स्थित होने से परम सुख अनुभव होता है।

कोई भी आत्मा सदा काल के लिए परमधाम में रहना चाहे तो रह नहीं सकती। जैसे कोई सदा काल सोता नहीं रह सकता, उसी प्रकार कोई सदाकाल परमधाम में नहीं रह सकता। आत्मा को खाना-पीना, खेलना, मनोरंजन आदि सब क्रियाओं में रुचि है, जिसके लिए हरेक को पार्ट में आना ही है। ड्रामा अनुसार ही हमको परमपिता परमात्मा से मिलन का अवसर मिलता है और तब ही आत्मा को परमानन्द का अनुभव सम्भव है, जो परमधाम की शान्ति से कहीं अधिक श्रेष्ठ है और उस अनुभव के कारण ही भक्तिमार्ग में आत्मायें परमात्मा को याद करती हैं।

नाटक, खेल-कूद आदि को देखने, करने और देखकर खुश होने की आत्मा में नेचुरल प्रवृत्ति है, जो हर योनि की आत्माओं में देखने में आती है। इस नाटक को भी हम साक्षी होकर नाटक के रूप में देखते हैं तो अति हर्ष होता है।

पतित-दुखी होना भी कल्याणकारी है, उससे एक तो आत्मा का बोझा हल्का होता है और दूसरे जब पतित और दुखी होते तब ही परमात्मा को दुख हरने और सुख देने आना होता है। जब परमात्मा आकर हम आत्माओं को मिलता है और विश्व-नाटक का ज्ञान देता है, तो वह मिलन अति सुखदायी होता है।

विस्मृति इस विश्व नाटक का एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसके कारण ये विश्व-नाटक नित्य नया और सदा रुचिकर प्रतीत होता है। विस्मृति भी आत्मा में पुन: स्फूर्ति जाग्रत करती है। विस्मृति के अनेक कारणों में पांच प्रमुख स्वभाविक और प्राकृतिक कारण हैं - एक समय के साथ विस्मृति, दूसरा निद्रा के बाद विस्मृति, तीसरा मृत्यु के कारण विस्मृति, जिसे चिर-निद्रा कहा जाता है, चौथा योग के द्वारा विस्मृति, पाँचवां कल्पान्त में विनाश के बाद परमधाम में जाकर चिर-विश्राम के बाद पूर्ण विस्मृति। इसके अतिरिक्त विस्मृति के लिए कुछ अप्राकृतिक

साधन भी अपनाये जाते हैं, जिसको चिकित्सक प्रयोग करते हैं, जैसे इलेक्ट्रिक शॉक आदि। जब किन्हीं बातों से मनुष्य परेशान होता है, उनको इलेक्ट्रिक शॉक के द्वारा भी भुलाते हैं। इन सबके बाद आत्मा को ताजगी अनुभव होती है, आत्मा अपने में राहत अनुभव करती है। इसलिए ये विस्मृति भी कल्याणकारी है।

बाबा ने भी कहा है - ये स्मृति-विस्मृति का खेल है। विस्मृति भी कल्याणकारी है क्योंकि विस्मृति से ही स्मृति का महत्व है। परमधाम जाने से आत्मा को सारे कल्प की संचित स्मृतियां विस्मृत हो जाती हैं और पुन: वह जब परमधाम से से इस धरा पर आती है तो पूर्ण ताजगी, पूर्ण सुख का अनुभव करती है।

देही अभिमानी स्थिति और परमपिता परमात्मा की याद में स्थित आत्मा का कब अहित हो नहीं सकता और न कोई अहित कर सकता है। अहित होता है तो पहली गलती हमारी है, जो देही-अभिमानी स्थिति में नहीं रहे और परमात्मा की याद नहीं रखी। साक्षी होकर देखें तो इस विश्व-नाटक का हर दृष्य कल्याण्मय और सुखकर प्रतीत होगा। कर्मभोग का आना भी ड्रामा की कल्याणकारिता है क्योंकि ये कर्मभोग पूरा होने से ही आत्मा पावन बनती है और भविष्य में सुख को पाती है। कर्मभोग भी आत्मा के अपने पुराने विकर्मों के हिसाब-किताब को पूरा करके हल्का करता है, जिसको आत्मा जाने-अन्जाने में अनुभव अवश्य करती है।

ये विश्व-नाटक परम कल्याणकारी है। जैसे हद के नाटक मनोरंजन के लिए ही होते हैं, वैसे ही इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानने और नाटक की दृष्टि से देखने वाले को ये नाटक बहुत आनन्दमय प्रतीत होता है। अर्न्तदृष्टि से देखें तो इसमें दुख-कर्मभोग भी कल्याणमय है क्योंकि कर्मभोग से आत्मा का बोझा हल्का होता है और भविष्य के लिए सुख का मार्ग प्रशस्त होता है। जैसे खेल में जीत भी होती तो हार भी होती है परन्तु खिलाड़ी और खेल भावना से खेलने और देखने वाला दोनों में आनन्द का अनुभव करता है क्योंकि हार भी जीत के लिए प्रोत्साहित करती है, हार से ही जीत का सुख अनुभव होता है। इस प्रकार जो इसके यथार्थ रहस्य को जानकर खेल की भावना से देखता, उसे यह बड़ा ही कल्याणमय अनुभव होता है। इस विश्व नाटक में दुख भी कल्याणकारी है क्योंकि दुख की अनुभूति के बाद ही सुख की यथार्थ अनुभूति होती है। बिना दुख की अनुभूति के सुख की अनुभूति हो नहीं सकती। इसीलिए कल्याणकारी शिवबाबा ने कहा है - जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा। किसी चिन्तक ने भी कहा है - जिसके पैर न गई विवाई, वह क्या जाने पीर पराई।

एक परमपिता परमात्मा ही है, जो ज्ञान का सागर, त्रिकालदर्शी होते भी सब बच्चों से पुरुषार्थ कराता है, कब किससे घृणा आदि नहीं करता। मनुष्यों में ये ताकत नहीं है, इसलिए इस विश्व-नाटक में अज्ञानता अर्थात् अनभिज्ञता अर्थात् न जानना भी एक वरदान है और ड्रामा का कल्याणकारी नियम है, तब ही आत्मा का अभिनय (Act) यथार्थ होता है और 5 हजार वर्ष तक सुख-दुख का ये विश्व-नाटक सफलतापूर्वक चलता है।

"महाभारत लड़ाई सामने खड़ी है। ... यह है कल्याणकारी संगमयुग। इस लड़ाई को ही कल्याणकारी कहा जाता है। इस विनाश के बाद ही फिर स्वर्ग के गेट्स खुलते हैं।"

सा.बाबा 14.7.06 रिवा.

"अगर कोई भी परिस्थिति व व्यक्ति विघ्न लाने के निमित्त बनता है तो उसके प्रति घृणा-दृष्टि, व्यर्थ संकल्पों की उत्पत्ति नहीं होनी चाहिए लेकिन उसके प्रति वाह-वाह निकले।... हर बात में कल्याण दिखाई दे। कोई भी अकल्याण की बात हो नहीं सकती। यह निश्चय और स्मृति-स्वरूप हो जाओ तो आप कभी डगमग नहीं होंगे।"

अ.बापदादा 20.6.73

"बाप तो सबको एकरस पढ़ाते हैं परन्तु कइयों की बुद्धि बिल्कुल जड़ है, कुछ भी समझ नहीं सकते। यह भी ड्रामा में नूँध है। बाप कहते हैं इनकी तकदीर में नहीं है तो हम भी क्या कर सकते हैं। हम तो सबको एकरस पढ़ाते हैं।"

सा.बाबा 30.6.05 रिवा.

"बाबा अभी नहीं बता सकते। फिर तो यह भी आर्टीफिशियल नाटक हो जाये। इसलिए बताते कुछ नहीं हैं। ड्रामा में बताने की नूँध ही नहीं है। बाप कहते हैं मैं भी पार्टधारी हूँ।"

सा.बाबा 21.7.69 रिवा.

"अनेक बार स्थापना की है और करते रहेंगे। कितनी वण्डरफुल बात है। यह ख्याल और कोई की बुद्धि में हो न सके। इस समय जो पार्ट बजा रहे हैं, वह ड्रामा प्लॉन अनुसार बिल्कुल एक्यूरेट है। बाबा कहते हैं मैं भी ड्रामा में बाँधा हुआ हुआ हूँ।"

सा.बाबा 18.1.72 रिवा

"यह है ड्रामा। आश्चर्य नहीं खाना है। मकान बना है सो फिर टूटेगा, फिर बनेगा। हाँ यह तो होना ही है। ड्रामा को समझना है।" सा.बाबा 1.4.72 रिवा.

"ड्रामा में जो शूट किया हुआ है, उसमें जरा भी फर्क नहीं हो सकता। यह भी बेहद का ड्रामा है। कोई में 84 जन्मों का, कोई में कितने जन्मों का पार्ट नूंधा हुआ है। कोई में सिर्फ 2-3 जन्म का भी पार्ट है। यह भी गुह्य बातें नयों की बुद्धि में बैठना बड़ा मुश्किल है। बनी बनाई बन रहीं

...। कोई नई बात नहीं। किसी भी बात में दिल अन्दर दुख नहीं हो सकता। कोई को दुख है तो समझना चाहिए कि ड्रामा को नहीं समझा है। समझो मम्मा का आपरेशन होता है। समझते हैं कल्प-कल्प आपरेशन होता आया है, होता रहेगा। हर एक का बना बनाया पार्ट है। इसको कहा जाता है परमपिता परमात्मा की गति-मति न्यारी।"

सा.बाबा 24.4.73 रिवा.

"अब श्रीमत मिलती है ड्रामा अनुसार। जो कुछ कहा सो ड्रामा अनुसार। उसमें जरूर कल्याण ही होगा। नुकसान होता है, उसमें भी कल्याण ही है। हर बात में कल्याण है। शिवबाबा है ही कल्याणकारी। उनकी मत अच्छी है, उसमें कल्याण ही है, अगर उस पर कोई चलता रहे तो।"

सा.बाबा 24.10.73 रिवा.

"ये अनादि ड्रामा है। हार-जीत का खेल है, जो होता है वह ठीक है। क्रियेटर को ड्रामा पसन्द नहीं होगा! जरूर पसन्द होगा, तो क्रियेटर के बच्चों को भी पसन्द होगा। हम घृणा कोई से नहीं कर सकते ... ड्रामा सारा अच्छा है, बुरा क्यों कहेंगे! ड्रामा का राज़ बुद्धि में है, जो तुमको समझाते हैं। .. बहुत ही सुन्दर नाटक बना हुआ है। ड्रामा में दुख-सुख का पार्ट नूँधा हुआ है, जिसे देख बहुत खुशी होती है। ये बेहद का खेल बड़ा फाइन बना हुआ है।... दिन भी अच्छा तो रात भी अच्छी। खेल है ना! जानते हैं अब रात पूरी होनी है।... बहुत अच्छा ड्रामा है, इसको खराब कह नहीं सकते। बहुत फर्स्ट क्लास खेल है, इसको जानने से बुद्धि भरपूर हो गई है। जैसे बाप नॉलेजफुल है वैसे बच्चे भी नॉलेजफुल हैं। ... प्रभु की रचना जरूर अच्छी ही होगी। ... इसको जानने में मजा ही मजा आता है। ... सारा दिन बुद्धि में ख्याल चलना चाहिए - कैसा वण्डरफुल खेल है। ... इस नाटक को जानने से हम विश्व के मालिक बन जाते हैं - कितनी वण्डरफुल बात है। ये ड्रामा बड़ा सत्य और एक्यूरेट बना हुआ है।"

सा.बाबा 19.4.97 रिवा.

"जब ड्रामा का ज्ञान मिल गया तो जो भी दृश्य सामने आता है, उसमें कल्याण भरा हुआ है क्योंकि वर्तमान समय कल्याणकारी युग है,। वर्तमान में न भी जान सको लेकिन भविष्य में समाया हुआ कल्याण प्रत्यक्ष हो जायेगा। 'वाह ड्रामा वाह" याद रहे तो सदा खुश रहेंगे। पुरुषार्थ में कभी भी उदासी नहीं आयेगी। स्वत: ही आप द्वारा अनेकों की सेवा हो जायेगी।"

A.B.D. 1.1.79 पार्टी 2

"जो कुछ भी ड्रामा में होता है, उसमें कल्याण ही भरा हुआ है। अगर ये स्मृति में सदा रहे तो कमाई जमा होती रहेगी। ... साक्षीपन की सीट शान की सीट है, इससे परे न हो तो परेशानी खत्म हो जायेगी। .. नॉलेजफुल बाप के बच्चे बन गये, त्रिकालदर्शी बन गये तो परेशान कैसे

हो सकते हैं।" अ. बापदादा 7.3.81

जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता परन्तु जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा। विश्व-नाटक को यथार्थ रीति से न जानने वाले को भले ही ये कटु लगे परन्तु ये विश्व-नाटक का अति मधुर सिद्धान्त है। कटुता ही मधुरता का आभास कराती है, दुख ही सुख के आभास होने का आधार है इसलिए इसमें सुख के साथ दुख का भी महत्वपूर्ण स्थान है, इस सत्य को जानकर विश्व-नाटक का सुख अनुभव करो और कराओ - यही जीवन का परम सुख है।

"कोई भी शरीर छोड़कर जाते हैं तो हम कहेंगे कि यह भी भावी है। कल्प पहले भी हुआ था क्योंकि ड्रामा के ऊपर भी तो चलना पड़े ना, जिससे कोई फिकर नहीं रहे। ... आगे चलकर और भी बहुत कुछ वण्डरफुल बातें देखने की हैं। ... कोई जाता है, उसे जाकर और कहाँ पार्ट बजाना है। कोई न कोई कल्याण के कारण यह सब कुछ होता है क्योंकि बाप कल्याण-कारी है और यह संगमयुग ब्राह्मणों का है ही कल्याणकारी। हर एक बात में कल्याण समझकर फखुर में ही रहना है क्योंकि हम ईश्वरीय सन्तान हैं। ... अहो सौभाग्य, जो हमारा ही पार्ट है कल्प पहले मुआफिक बाप के मददगार बनने का। ... फिकर उनको होगा, जो बाप को और नॉलेज को भूलेगा।" सा.बाबा 25.6.1965

"बाप भी तो ड्रामा के कारण आया ना। तो ड्रामा भी शक्तिशाली हुआ। अगर ड्रामा में पार्ट नहीं होता तो बाप भी क्या करता। बाप भी शक्तिशाली है और ड्रामा भी शक्तिशाली है।"

अ.बापदादा 22.11.87 पार्टी 2

"ड्रामा कायदे अनुसार चलता रहता है। इस ड्रामा में कोई भूल नहीं है। अनादि-अविनाशी बना हुआ है। अभी जो एक्ट चलती है, फिर 5 हजार वर्ष के बाद रिपीट होगी। ... हू-ब-हू रिपीट होता रहता है। इसको समझने की भी ब्रेन चाहिए। ... वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी है ना।"

सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

"बाप को और घर को भूल जाते हैं, यह भी ड्रामा में नूँध है। ... यह खेल ही 5 हजार वर्ष का है। ड्रामा अनुसार हर एक पुरुषार्थ करते हैं। राजधानी स्थापन हो रही है। सब एक जैसा तो नहीं पढ़ेंगे। यह पाठशाला है। ... मूल वतन में आत्माओं की संख्या एक्यूरेट होगी।... नाटक में जितने भी एक्टर्स हैं, उतने एक्यूरेट हैं फिर भी वे आकर पार्ट बजायेंगे। ... यह अविनाशी बना-बनाया ड्रामा है, कब बना - यह पूछ नहीं सकते।"

सा.बाबा 5.8.04 रिवा.

"यह 5 हजार वर्ष के बाद चक्र रिपीट होता है। ... अब बाप समझाते हैं - मौत सामने खड़ा

है। यह वही गीता का एपीसोड चल रहा है। ... अब हम जाते हैं सुखधाम। बाप को ले जाना पड़े। उसके लिए बाबा युक्तियाँ बतलाते रहते हैं। ... निश्चित टाइम पर ही जाना है। ऐसे नहीं कि जल्दी-जल्दी करने से जल्दी जाकर पहुँचेंगे। नहीं, जल्दी-जल्दी करना अपने हाथ में नहीं है। यह तो है ही ड्रामा की नूँध। महिमा सारी ड्रामा की है।"

सा.बाबा 17.7.04 रिवा.

"यह ड्रामा बड़ा एक्यूरेट है। ... ड्रामा अक्षर बहुत अच्छा है, शोभता है। चक्र हू-ब-हू फिरता ही रहता है। बाप आकर पावन बनने की युक्ति बताते हैं, जो 5 हजार वर्ष पहले बताई थी। बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो। इतना तुमको याद कराता हूँ फिर भी तुम भूल जाते हो। भूलते ही रहेंगे, जब तक ड्रामा का अन्त आये। अन्त में जब विनाश होगा, तब पढ़ाई पूरी होगी।"

सा.बाबा 2.6.04 रिवा.

"ये बड़ी समझने की बातें हैं, जो बाप बैठ समझाते हैं। समझाते तो बहुत अच्छा हैं परन्तु कल्प-कल्प जो जितना पढ़े हैं, उतना ही पढ़ते हैं। ... भाई-भाई समझना है, भाई-बहन की दृष्टि भी नहीं। ड्रामा अनुसार जो कुछ चलता है, बिल्कुल एक्यूरेट। ड्रामा बहुत एक्यूरेट है। बाप तो बेफिकर है, इनको तो फिकर जरूर रहेगा। बेफिकर तब रहेंगे जब कर्मातीत अवस्था होगी, तब तक कुछ न कुछ होता है।"

सा.बाबा 6.2.04 रिवा.

"कल्प पहले जिसने जो पद पाया होगा, जो रिजल्ट निकली होगी, वही निकलेगी। ऐसे नहीं कि पिछाड़ी में आने वाले माला के दाने नहीं बन सकते हैं। वे भी बनेंगे। जैसे नौधा भक्ति वाले रात-दिन भक्ति में लगे रहते हैं, तब उन्होंको साक्षात्कार होता है, ऐसे यहाँ भी निकलेंगे। रात-दिन मेहनत कर पतित से पावन बनेंगे। चांस सबको है। ऐसे नहीं कि पिछाड़ी में कोई रह जाये। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है, जो कोई रह नहीं सकता।"

सा.बाबा 29.1.04 रिवा.

"बाबा पहले से ही सब कैसे बता दे। बाप कहते हैं - मैं भी ड्रामा के वश हूँ। जो ज्ञान अब तक मिला है, वही ड्रामा में नूँध है।... कल की बात मैं आज नहीं सुनायेंगे।... इस ड्रामा को समझने की भी हिम्मत चाहिए।"

सा.बाबा 19.4.06 रिवा.

विश्व-नाटक और विश्व-परिवर्तन / विश्व-नाटक और विश्व-कल्याण

विश्व-नाटक में आत्माओं की प्रकृति का परिवर्तन और विश्व की जड़ प्रकृति के परिवर्तन का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है अथवा ऐसे कहें कि आत्माओं के परिवर्तन पर विश्व की जड़ प्रकृति का परिवर्तन आधारित है। जिसके लिए बाबा ने अनेक बार कहा है कि जैसा व्यक्ति वैसा फर्नीचर होता है अर्थात् जैसी आत्मायें होती हैं, वैसी ही प्रकृति होती है।

बाबा ने कहा है - तुम आत्मायें सतोप्रधान बनती हो तो तुम्हारे लिए प्रकृति भी सतोप्रधान चाहिए, इसलिए ही कल्पान्त में विनाश होता है, प्रकृति में उथल-पुथल होती है और जब आत्मायें तमोप्रधान बनती हैं तो प्रकृति भी तमोप्रधान बन जाती है। इस सन्दर्भ में बाबा ने बताया है कि द्वापर आदि में जब आत्मायें विकार में जाती हैं तो भी प्रकृति में उथल-पुथल होती है।

कल्पान्त में विश्व-परिवर्तन की जो लीला होगी, वह कल्पनातीत है क्योंकि उस समय करोड़ों मनुष्यात्मायें, अरबों-खरबों जीव जन्तुओं के शरीरों का विनाश होगा और जड़ प्रकृति में भी आमूलभूत परिवर्तन होगा। प्राकृतिक आपदायें आयेंगी, एटॉमिक वार और सिविल वार होगी। सारे विश्व में हाहाकार होगा। जिसके लिए बाबा ने कहा है - प्रकृति की ये लीला देखने के लिए भी बहादुर चाहिए, कमजोर तो देखकर ही हार्ट फेल हो जायेंगे। परिवर्तन के बाद जो नई दुनिया होगी, वह कितनी छोटी और सुन्दर सुखमय होगी, उसके विषय में भी बाबा ने सब बताया है।

वास्तव में विनाश भी कल्याणकारी है, इससे ही पुरानी दुनिया विनाश होकर नई दुनिया बनती है, पुराना चक्र पूरा हो, नया चक्र चालू होता है। वैसे भी ये विश्व-नाटक एक खेल है और इसकी हर घटना आगे आने वाली घटता का आधार होता है।

"अज्ञानी लोग जिसको अकल्याण समझते हैं लेकिन आपका उस अकल्याण में ही कल्याण समाया हुआ है। जैसे लोग विनाश को अकल्याण समझते हैं लेकिन आप समझते हो कि इससे ही गति-सद्गति के गेट्स खुलेंगे।" अ.बापदादा 20.6.73

"ड्रामा की रिपीटीशन का ज्ञान है तो कुछ संशय नहीं होगा ... यह है ही कल्याणकारी युग। जो कुछ होता है, कल्याण के लिए ही होता है। यहाँ फथकने की दरकार नहीं। भक्ति मार्ग वाले कलियुगी मनुष्य फथकते हैं, मोह है। यहाँ तो मोह निकल जाता है।"

सा. बाबा 25.4.69 रिवा.

"जब ड्रामा का ज्ञान मिल गया तो वर्तमान समय कल्याणकारी युग है, जो भी दृश्य सामने आता है, उसमें कल्याण भरा हुआ है। वर्तमान में उसे न भी जान सको लेकिन भविष्य में

समाया हुआ कल्याण प्रत्यक्ष हो जायेगा। "वाह ड्रामा वाह" याद रहे तो सदा खुश रहेंगे। पुरुषार्थ में कभी भी उदासी नहीं आयेगी। स्वत: ही आप द्वारा अनेकों की सेवा हो जायेगी।"

A.B.D. 1.1.79 पार्टी 2

"फिर बहुत साक्षात्कार होंगे। जिसने नाटक की पिछाड़ी की सीन न देखी, उसने कुछ न देखा। क्योंकि जीत होती है अन्त में। वह सीन नहीं देखी तो कुछ नहीं देखा। योगी ही देखेंगे, बाकी तो मर जायेंगे, भोगियों मुआफिक।"

सा.बाबा 29.11.73 रिवा.

"विनाश न हो, ऐसा हो नहीं सकता। ... ये ड्रामा में नूँध है। इसलिए तुमको बहुत खुशी होनी चाहिए। ... तुम बच्चों में ड्रामा का ज्ञान होने के कारण हिलते नहीं हो, साक्षी होकर देखते हो।... आत्मा को पता है, तब तो एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। सर्प में भी आत्मा है ना।"

सा.बाबा 22.2.99 रिवा.

"तुम जितना याद करेंगे, उतना ही पाप कटेंगे। ऐसा नहीं कि हम जितना याद करेंगे, उतना बाबा भी याद करेंगे। ... बाप कहते हैं - मुझे याद करने से बहुत फायदा है, बाकी तो नुकसान ही नुकसान है। 84 जन्म देहधारियों को याद कर घाटा ही पाया। एक-एक दिन होकर 5000 वर्ष बीत गये, घाटा ही हुआ। अभी बाप की याद में रह फायदा करना है।"

सा.बाबा 12.1.69 रात्रि क्लास

"सभी बच्चों को नथिंग न्यू का पाठ हर परिस्थिति में सदा स्मृति में रहे। ... ब्राह्मण जीवन में हर कदम में कल्याण है, घबराने की बात नहीं है। ... निश्चय बुद्धि विजयी आत्मायें हैं, ऐसा अनुभव करते हो ? ... कल्प पहले का पाण्डवों का यादगार दिखाते हैं कि जहाँ भगवान है, वहाँ विजय है। ... कल्प-कल्प की इस भावी को कोई टाल नहीं सकता।"

अ.बापदादा 18.1.91 पार्टी 1

"ड्रामा की हर सीन को प्यारा देखते हुए चलो। हर सीन प्यारी है। दुनिया के लिए जो अप्यारी सीन है, वह आपके लिए प्यारी है। जो भी होता है, उसमें कोई न कोई राज़ भरा हुआ होता है। राज़ को जानने वाले नाराज़ नहीं होते।" अ.बापदादा 13.2.91

"सतयुग में साइन्स से बहुत सुख मिलता है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। ... बॉम्बस आदि सब विनाश के लिए बनाते रहते हैं। ... यह भी सब ड्रामा में नूँध है। बनाने बिगर रह नहीं सकते। ... विनाश की भी ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 14.1.05 रिवा.

"कल्प पहले मुआफिक जो विघ्न पड़ने होंगे, वे पड़ेंगे। पहले से थोड़ेही पता पड़ता है। ... अब

कल्याण तो सबका होना है। गोया हम मनुष्य मात्र का कल्याण कर रहे हैं। भारत खास और दुनिया आम। सबका हम श्रीमत पर कल्याण कर रहे हैं।"

सा.बाबा 4.02.06 रिवा.

"बाप अकेला कुछ नहीं कर सकता और आप भी अकेले कुछ नहीं कर सकते हो।... सिवाए बाप के सफलता नहीं मिलती। ... बाप और बच्चों को साथ-साथ विश्व परिवर्तन करना और साथ-साथ अपने स्वीट होम में जाना - ये ड्रामा की अविनाशी नूँध है।"

अ.बापदादा 9.3.94

विश्व-नाटक और हीरो पार्ट

यद्यपि इस विश्व-नाटक में सर्वश्रेष्ठ पार्ट तो परमात्मा का ही है और इस चक्र में हीरो पार्टधारी लक्ष्मी-नारायण ही हैं, जिनका सारे सृष्टि-चक्र में पार्ट है परन्तु इसमें समय-समय के भी हीरो होते ही हैं अर्थात् भिन्न-भिन्न समय ऐसी विशेष आत्मायें सृष्टि-रंगमंच पर आती हैं और विशेष पार्ट बजाती हैं, उनको मनुष्य याद करते हैं और यथार्थ हीरो-हीरोइन को भूल से जाते हैं। देश-काल और परिस्थिति के अनुसार उनको स्वीकार करना ही पड़ता है और करना ही चाहिए।

"तुम बच्चों को अभी यह ज्ञान मिला है। तुम सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा है, वे ही अब पढ़ेंगे। जिसने जो पुरुषार्थ किया होगा, वही करने लगेंगे और वैसा ही पद भी पायेंगे। ... हर एक्टर को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है -
किस समय किसको क्या पार्ट बजाना है। यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है, जिसका राज़ बाप समझाते हैं।"

सा.बाबा 29.12.04 रिवा.

"ये बेहद का खेल है, जिसको कहते हैं ड्रामा और इस ड्रामा के आप सभी हीरो एक्टर हो।... डबल लाइट का अर्थ ही है सबकुछ बाप हवाले करना। तन-मन-धन सब तेरा। ... तो कितने लकी हो, जो परमात्म प्यार के पात्र बन गये।"

अ.बापदादा 23.12.93 पार्टी 2

"चलते-फिरते, खाते-पीते बेहद वर्ल्ड ड्रामा की स्टेज पर विशेष पार्टधारी अनुभव करते हो?... इस सारे ड्रामा का आधार आप हो ना। ... तो सदा यह स्मृति रहे कि मैं विशेष पार्टधारी हूँ, इसलिए हर कर्म विशेष हो, हर कदम विशेष हो, हर सेकेण्ड, हर संकल्प श्रेष्ठ हो।"

अ.बापदादा 25.11.93 पार्टी 5

"जैसे कर्तव्य साथ है तो हर कर्तव्य कराने वाला भी सदा साथ है। इसलिए गाया हुआ है करन-करावनहार।... अनेक आत्माओं के आगे सेम्पल हो, सिम्पल करने के। ... यही है

फॉलो फादर।... विशेष पार्टधारी विशेष पार्ट बजाने के सिवाए रह नहीं सकते। यह ड्रामा की नूँध है।... ड्रामा की भावी खींचती जरूर है। आप रहना चाहो लेकिन ड्रामा में नहीं है तो क्या करेंगे।" अ.बापदादा 2.12.93 दादी जानकी के साथ

"यह बेहद का ड्रामा है। खेल बना हुआ है। इस खेल की समझानी बाप ही देते हैं। बाप शुरू से लेकर सारी दुनिया की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाते हैं। अभी तुम स्थूल वतन, सूक्ष्म वतन, मूल वतन के राज़ को भी अच्छी रीति जानते हो। ... सीढ़ी चढ़ना और उतरना यह खेल बच्चों की बुद्धि में बैठ गया है। ... इसमें हमारा हीरो-हीरोइन का पार्ट है। हम ही हार खाते हैं और हम ही फिर जीत पाते हैं, इसलिए नाम रखा है हीरो-हीरोइन।"

सा.बाबा 18.4.06 रिवा.

विश्व-नाटक में सतोप्रधानता और तमोप्रधानता का सिद्धान्त

इस विश्व-नाटक सतत परिवर्तनशील है और उसके नियमानुसार हर चीज पहले सतोप्रधान होती है और फिर वह तमोप्रधान भी अवश्य बनती है। यह नियम आत्माओं और जड़ प्रकृति तथा उससे बनी हर चीज पर प्रभावित होता है। विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियमानुसार जो आत्मायें सतोप्रधान बनती हैं, वे ही तमोप्रधान भी बनती हैं और फिर उनको ही सतोप्रधान बनना है। उनकी बुद्धि में ही सतोप्रधान बनने इच्छा या संकल्प जाग्रत होता है और उस अनुसार पुरुषार्थ करने की हिम्मत और शक्ति भी उसमें ही आती है। देश, काल और पार्ट के अनुसार हर आत्मा सतोप्रधान और तमोप्रधान बनती है क्योंकि परमधाम में आत्मा सतोप्रधान बनकर ही जा सकती है भले ही सतोप्रधानता की कलायें अपनी-अपनी होंगी।

जड़ तत्वों में अभी जो इतनी परस्पर मिलावट हो गई है, वह अपने सतोप्रधान मूल स्वरूप में आना भी एक आश्चर्य जनक परिवर्तन है।

"जिनको ये निश्चय नहीं कि हमने 84 जन्म लिए हैं, उनकी बुद्धि में ये बातें बैठेंगी नहीं। जो सतोप्रधान दुनिया में आये थे, वे ही अब तमोप्रधान में आये हैं और वे ही आकर जल्दी निश्चयबुद्धि बनेंगे।" सा.बाबा 28.11.04 रिवा.

हम समझते हैं, यहाँ बाबा का भाव दुनिया की सतोप्रधान और तमोप्रधान स्थिति से है।

"बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। तमोप्रधान बनने में आधा कल्प लगा है, बल्कि सारा ही कल्प कहें क्योंकि कला तो सतयुग से ही कम होती जाती है।"

सा.बाबा 25.7.05 रिवा.

"कोशिश कर अन्तर्मुखी होकर बाप को याद करेंगे तब ही पाप कटेंगे। जन्म-जन्मान्तर के

पाप सिर पर हैं। सबसे जास्ती पाप ब्राह्मणों के हैं, उनमें भी नम्बरवार हैं। जो बहुत ऊंच बनते हैं, वे ही बिल्कुल नीच भी बनते हैं। जो प्रिन्स बनते हैं, उनको ही फिर बेगर भी बनना है। ड्रामा को अच्छी रीति समझना है।... यह पुरुषोत्तम संगमयुग भी याद रखना चाहिए।"

सा.बाबा 17.3.04 रिवा.

"रास्ता ठीक न होने के कारण नीचे-ऊपर होते रहते हैं। ड्रामा अनुसार कल्प पहले जिन्होंने पूरा इम्तिहान पास किया है, वही करेंगे।... इस ड्रामा के राज़ को भी समझना है। हरेक चीज एक्यूरेट है।... जब बाप की याद में रहते हो, चक्र फिराते हो, औरों को समझाते हो तो जमा होता है। वही पूरा वर्सा पाते हैं। यह ख्याल नहीं करना चाहिए कि चढ़ेंगे जास्ती तो फिर गिरेंगे भी जास्ती। गिरे तो हैं, अब तो चढ़ना ही है। ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ भी होता ही रहता है।"

सा. बाबा 27.4.72 रिवा.

"बाप कहते हैं तुम पसन्द करो न करो मैं आया हूँ, तुमको वापस घर ले जाने। जबरदस्ती भी ले जाऊंगा, छोड़ेंगे किसको भी नहीं। न चलेंगे तो सजा देकर, मार-पीट कर भी ले चलूँगा। जैसे बच्चों को सजा दी जाती है ना। तुम बच्चों को भी ऐसे ले चलेंगे क्योंकि ये ड्रामा है ना। ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है। इसलिए अपनी कमाई कर चलो तो अच्छा है।"

सा.बाबा 18.1.72 रिवा

विश्व-नाटक और जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा अच्छा होगा

ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है इसमें जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह अच्छा होगा क्योंकि जैसे और नाटक मनोरंजन के लिए होते हैं वैसे ही ये विश्व-नाटक भी बहुत ही मनोहारी है परन्तु जिस आत्मा को इस सत्य का ज्ञान होता है और वह अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इसे देखती और पार्ट बजाती, उसको ही ये सदा अच्छा लगता है। विश्व-नाटक के इस सत्य को जानने से आत्मा निश्चिन्त और निर्भय हो जाती है।

"अगर कोई भी बात को देखते या सुनते हुए आश्चर्य अनुभव होता है तो यह फाइनल स्टेज नहीं है। ऐसा तो होना नहीं चाहिए, अच्छा जो हुआ वह होना ही चाहिए, अगर ऐसा संकल्प ड्रामा के होने पर भी उत्पन्न होता है तो इसको भी अंश मात्र की हलचल का रुप कहेंगे।"

अ.बापदादा 15.4.74

"बाप कहते हैं - मैं ब्रह्मा मुख कमल द्वारा रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ बताता हूँ। ड्रामा में क्या है - यह मनुष्यों की बुद्धि में आना चाहिए। यह है बेहद का ड्रामा, हम एक्टर्स हैं। ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का राज़ बुद्धि में रहना चाहिए।"

सा.बाबा 22.11.71 रिवा.

"एक-दो को मारते ही रहते हैं। ड्रामा में देखो कैसा राज़ है। एक-दो से लड़ेंगे तो बाप पर थोड़ेही पाप लगेगा। हम साक्षी होकर देखते हैं। ... तुमको विनाश का भी दुख नहीं होता है।... यहाँ कोई मरे तो तुमको थोड़ेही दुख होगा। तुम तो साक्षी होकर देखते हो, इसने जाकर दूसरा शरीर लिया, अपना पार्ट बजाने के लिए। तुम्हारे में भी सब निश्चयबुद्धि नहीं हैं।"

सा.बाबा 1.09.03 रिवा.

"ब्राह्मणों की जन्मपत्री में लिखा हुआ है कि हर सदा श्रेष्ठ से श्रेष्ठ होना है। ... जो हो रहा है वह भी अच्छा और जो होने वाला है, वह और भी अच्छा होगा।"

अ.बापदादा 31.12.92

"प्रसन्नचित्त आत्मा के संकल्प में हर कर्म को करते, देखते, सुनते, सोचते यही रहता है कि जो हो रहा है, वह मेरे लिए अच्छा है और सदा अच्छा ही होना है। ... किसी की बुरी बात को समझना अलग चीज है लेकिन स्वयं में वा अपने चित्त पर, अपनी बुद्धि में, अपनी वृत्ति में, अपनी वाणी में दूसरे की बुराई को बुराई रूप में धारण नहीं करना है।"

अ.बापदादा 21.11.92

"जब भी क्यों का क्वेश्चन आता है - क्यों हुआ, क्यों किया तो इससे सिद्ध है कि चक्र का ज्ञान पूरा नहीं है। अगर ड्रामा के राज़ को जान जाये तो क्यों क्या का क्वेश्चन उठ नहीं सकता। जब स्वयं भी कल्याणकारी और समय भी कल्याणकारी तो यह क्या-क्यों का क्वेश्चन उठ सकता है? तो ड्रामा का ज्ञान और ड्रामा में भी समय का ज्ञान इसकी कमी है तो क्यों और क्या का क्वेश्चन उठता है।"

अ.बापदादा 18.12.91

"जो हो रहा है, वह बहुत अच्छा है। यह कड़ा हिसाब शक्तिशाली बना देता है, सहनशक्ति को बढ़ा देता है। ... और बातों में जाना, औरों को देखना माना गिरना और बाप को देखना, बाप का सुनना अर्थात् उड़ना। ... अगर प्रकृति की तरफ भी देखते हैं तो भी परदर्शनधारी हो गये। बॉडी कॉन्शस होना माना परदर्शन और आत्माभिमानी होना माना स्वदर्शन।"

अ.बापदादा 18.12.91

"क्या हुआ, यह क्यों हुआ, यह आश्चर्य की निशानी नहीं होगी, कब कोई क्वेश्चन भी नहीं उठेगा। सदैव इस निश्चय में पक्का होगा कि जो हो रहा है, उसमें कल्याण छिपा हुआ है क्योंकि

कल्याणकारी युग है, कल्याणकारी बाप है और आप सबका काम भी विश्व कल्याण का है।"

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 3

"ख्याल करो - यह है बेहद का नाटक। गायन है - बनी बनाई बन रही .. होये।... बाप ऐसे नहीं कहते कि भक्ति खराब है। नहीं, यह तो ड्रामा जो अनादि है, वह समझाया जाता है।"

सा.बाबा 08.9.04 रिवा.

"गीता में कृष्ण का नाम लिख दिया है, वह तो हो नहीं सकता। अभी ड्रामा अनुसार तुम्हारी बुद्धि में बैठा है। ... तुमने कितनी बड़ी भूल की है। बाप समझाते हैं - ड्रामा में ऐसा है। जब ऐसे बनो तब तो मैं आऊं।" सा.बाबा 16.8.04 रिवा.

"पास्ट इज़ पास्ट। यह तो ड्रामा में नूँध है, सृष्टि को सतोप्रधान बनना ही है। यह ड्रामा की भावी है। ईश्वर की भावी नहीं, ड्रामा की भावी ऐसी बनी हुई है।... जब रात पूरी हो दिन शुरू होता है तब ही मैं आता हूँ।"

सा.बाबा 19.7.06 रिवा.

विश्व-नाटक और चिन्ता एवं चिन्तन

गायन है - बनी बनाई बन रही, अब कछु बननी नाहिं। चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होये।

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझने वाला भविष्य की चिन्ता और भूतकाल के चिन्तन दोनों से परे होकर वर्तमान में ही जीता है अर्थात् वर्तमान में अपने मन-बुद्धि को एकाग्र कर श्रेष्ठ कर्म करने का पुरुषार्थ करता है, वही इस विश्व-नाटक के सच्चे सुख को अनुभव करता है। भूतकाल हमारे हाथों से निकल गया है, इसलिए उसके चिन्तन से कोई लाभ नहीं है, उसके लिए चिन्तन करना अपने समय-शक्ति को व्यर्थ नष्ट करना है और भविष्य हमारे वर्तमान कर्मों पर आधारित है, इसलिए उसकी चिन्ता में अपने समय-शक्ति को व्यर्थ नष्ट न करके श्रेष्ठ कर्मों में लगाना ही बुद्धिमत्ता है। जिसके वर्तमान कर्म श्रेष्ठ हैं, उसका भविष्य अवश्य ही सुखद होगा।

"इस ड्रामा का किसको भी पता नहीं है। सतयुग से लेकर कलियुग तक यह ड्रामा का चक्र है। ... यह सब ड्रामा में नूँध है। इस भावी को कोई टाल नहीं सकता है। ... कल्प पहले जो फीचर्स मिले थे, वे ही मिलते रहेंगे। इसमें फर्क नहीं हो सकता है।"

सा.बाबा 1.3.04 रिवा.

"ड्रामा कैसा वण्डरफुल बना हुआ है, यह भी बड़ी महीन समझने की बातें हैं। जो अच्छे बुद्धिवान हैं और सर्विस में तत्पर रहते हैं, वे ही अच्छी रीति समझा सकते हैं। ... यह तो बना-

बनाया ड्रामा है। कहते भी हैं - "बनी बनाई ... जो अनहोनी होये।" जो पास्ट हो गया, वह फिर होना ही है। चिन्ता की बात ही नहीं।" सा.बाबा 3.3.04 रिवा.

"कितनी वेल्यूबुल पढ़ाई है। बाप के पास ही एक्यूरेट नॉलेज है, जो बच्चों को देते हैं। ... सारी सृष्टि ऐसे चक्र में फिरती रहती है। यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया ड्रामा है, इसमें नई एडीशन हो नहीं सकती। गायन भी है - बनी-बनाई ... चिन्ता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होये। जो कुछ होता है, वह ड्रामा में नूँध है। साक्षी होकर देखना पड़ता है। ... इसमें रोने-रूसने की कोई बात नहीं। अफसोस उनको होता है, जो ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को रियलाइज नहीं करते। ... ऐसी-ऐसी बातों पर विचार कर पक्का कर लेना चाहिए।"

सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

"कल्प पहले मिसल ही तुम खर्चा करेंगे। कम-ज्यादा ड्रामा करने नहीं देगा। ड्रामा पर बाबा को अटल निश्चय है। जो पास्ट हुआ ड्रामा। ... बाबा कहते हैं - बीती को चितवो नहीं, आगे के लिए पुरुषार्थ करो कि ऐसी भूल फिर न हो।"

सा.बाबा 28.1.04 रिवा.

विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी शूटिंग के रि-शूटिंग का राज

यद्यपि इस विश्व-नाटक की शूटिंग अनादि-अविनाशी है, जो कल्प-कल्प पुनरावृत्त होती है परन्तु आत्माओं को यथार्थ ज्ञान और स्मृति न होने के कारण जो पार्ट बजाते हैं, वह उनके पार्ट की रि-शूटिंग ही है अर्थात् रि-शूटिंग के समान ही प्रतीत होती है, जिससे बीते कल्प और आगे आने वाले कल्प में उनके पार्ट का साक्षात्कार होता है। इसलिए बाबा कहते हैं - अभी जो पार्ट बजा रहे हो, वह तुम्हारी कल्प-कल्प के लिए नूँध हो रही है। ये भी बाबा का बच्चों को पुरुषार्थ कराने का एक ढंग है और बाबा के महावाक्यों के अनुसार पुरुषार्थ करना भी हमारा कर्तव्य है। पुरुषार्थ आत्मा का स्वभाविक स्वभाव है और उसके आधार पर ही उसके जीवन का सुख और दुख का पार्ट आधारित है।

"हरेक आत्मा में अपना-अपना पार्ट भरा हुआ है। सब एक्टर्स हैं, उनको अपना पार्ट बजाना ही है। जैसे कि नये सिर शूटिंग होती जाती है परन्तु यह अनादि शूटिंग हुई पड़ी है। वर्ल्ड की यह हिस्ट्री-जाग्राफी रिपीट होती रहती है। ... भारत वाइसलेस था, अभी विशश है, फिर वाइसलेस कैसे बनेगा?" सा.बाबा 11.8.04 रिवा.

"यह बना-बनाया ड्रामा है, इससे कोई छूट नहीं सकता। जो कुछ देखते हो, मच्छर उड़ा, कल्प बाद भी उड़ेगा। इसे समझने में बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए। यह शूटिंग होती रहती है। ... यह ड्रामा जूँ मिसल धीरे-धीरे चलता रहता है।"

सा.बाबा 11.5.05 रिवा.

"जब अनेक कल्प, अनेक बार विजयी बन विजय माला में पिरोने वाले, पूजन होने वाले बने हो तो अब वह रिपीट नहीं करेंगे! वही बना हुआ कर्म दुबारा रिपीट करना है। इसलिए कहा जाता है कि बना बनाया ड्रामा।" अ.बापदादा 24.5.71

"बाप भी जानते हैं कि हर कल्प आप बच्चों ने यह बाप की आशा पूर्ण कर विजय माला का यादगार कायम किया है और अब भी करना ही है। बना हुआ ड्रामा सिर्फ रिपीट करना है।"

अ.बापदादा का सन्देश 26.5.05 दादी गुल्जार के द्वारा

"ड्रामा को भी अच्छी रीति समझना है। सभी प्वाइन्ट्स में डिफीकल्ट से डिफीकल्ट और वण्डरफुल प्वाइन्ट है आत्मा स्टार में कितनी बड़ी इम्पेरिशेबुल नॉलेज है, 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। न ड्रामा पूरा हो सकता है, ना पार्ट पूरा हो सकता है। ... इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए।" सा.बाबा 25.3.72 रिवा.

"यह बना बनाया अविनाशी ड्रामा है। हरेक आत्मा में अपना अपना पार्ट नूँधा हुआ है, जो हरेक अपना पार्ट फिर रिपीट करते रहते हैं। इसमें जरा भी फर्क नहीं रहेगा। अविनाशी पार्ट है। फिल्म में जो पार्ट एक बार रिपीट हुआ, वही फिर रिपीट होगा।"

सा.बाबा 14.3.72 रिवा.

"यह बेहद का ड्रामा है तो ड्रामा के एक्टर्स को ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का मालूम होना चाहिए। ... अभी पुरानी दुनिया से नई दुनिया बननी है, यह भी बुद्धि में रहना चाहिए। ... पुरानी दुनिया से नई दुनिया बनने की युक्ति देखो कैसी अच्छी है। भल यह है अनादि-अविनाशी बना-बनाया ड्रामा परन्तु बना बहुत अच्छा है।"

सा.बाबा 10.1.05 रिवा.

"यह भी ड्रामा का सकेण्ड-सेकेण्ड रिपीट होता रहता है। शूट होता रहता है। है बना-बनाया ड्रामा। तुम एक्टर्स हो। सारे ड्रामा को साक्षी होकर देखते हो। एक-एक सेकेण्ड ड्रामा अनुसार पास होता है। पत्ता हिला, ड्रामा पास हुआ। ऐसे नहीं पत्ता-पत्ता भगवान के हुकुम पर चलता है। यह भी ड्रामा की नूँध है। इनको अच्छी रीति समझना पड़ता है। बाप ही आकर राजयोग सिखाते हैं और ड्रामा की नॉलेज देते हैं।"

सा.बाबा 22.5.73 रिवा.

"निश्चय रखकर चलो कि यह हुआ पड़ा है, सिर्फ प्रैक्टिकल में लाना है। यह रिपीट होना है। बना हुआ है, बने हुए को बनाना अर्थात् रिपीट करना है। सहज सफलता का आधार है दृढ़ संकल्प के खजाने को सफल करो।" अ.बापदादा 18.2.93

विश्व-नाटक की परमानन्दमयता

ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है, परम सुखदायी है। जो आत्मा इसके यथार्थ रहस्य को जानती है, वह इसके परमानन्द को अनुभव करती है और जो विश्व-नाटक के यथार्थ रहस्य को नहीं जानती है वह भी इससे मुक्त होना नहीं चाहती है। कुछ थोड़ी सी आत्मायें ही मुक्ति में जाने का संकल्प रखती हैं। वास्तव में वे भी जाना नहीं चाहती हैं क्योंकि देखने में आता है कोई भी आत्मा दुख-दर्द की स्थिति में होते हुए भी शरीर को छोड़ कर जाना नहीं चाहती। हर आत्मा यहाँ ही रहना चाहती है परन्तु दुख-दर्द से छूटना चाहती है। यद्यपि मृत्यु-शैय्या पर लेटी आत्मा भी देह का त्याग नहीं करना चाहती है। विश्व-नाटक की इस यथार्थता पर विचार करें तो अनुभव करेंगे कि आत्मा को सुख-दुख होते हुए भी ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है।

वैसे भी देखें तो मोक्ष की स्थिति या परमधाम की स्थिति का कोई विशेष महत्व नहीं है। महत्व तो यहाँ पार्ट बजाने का है। यहाँ भी किसी व्यक्ति को शान्त में बिठा दिया जाये और कोई काम न करने दिया जाये तो वह उसको सजा के समान अनुभव करता है। कोई भी व्यक्ति सदा सोते रहना नहीं चहता है। जैसे एक एक्टर को पार्ट बजाने में ही आनन्द का अनुभव होता है, ऐसे ही इस विश्व-नाटक को जानने वाला इसमें पार्ट बजाना ही अच्छा समझता है, उसमें ही सुख का अनुभव करता है।

"यह बना-बनाया नाटक है। ... हम इस नाटक के एक्टर हैं। नाटक को एक्टर्स खराब थोड़ेही मानेंगे। इसको देखकर खुश होते हो, निन्दा नहीं कर सकते। बाकी मनुष्यों को माया के फंदे से छुड़ाने के लिए समझाते हैं।"

सा.बाबा 28.1.69 रात्रि क्लास रिवा.

विश्व-नाटक और सुख-दुख

भगवानोवाच्य - यह सुख-दुख, स्वर्ग-नर्क, दिन-रात, जीत-हार का खेल है, जो आधा-आधा चलता है अर्थात् सुख-दुख इस विश्व-नाटक में एक ही सिक्के के दो पहलू के समान हैं। परमात्मा इसका पूर्ण ज्ञाता है, जो सुख-दुख दोनों से न्यारा सच्चिदानन्द सागर है। परमात्मा कब भी सुख या दुख का अनुभव नहीं करता है। वह न किसको दुख देता है और न ही सुख देता है परन्तु सुख का रास्ता अवश्य बताता है, इसलिए उनको सुख का सागर, दुखहर्ता-सुखकर्ता कहा जाता है। जो जितना उनके बताये रास्ते पर चलता है, वह उतना सुख पाता है परन्तु इस विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियमानुसार समयान्तर में आत्मा उस रास्ते को भूल ही जाती है और उसके परिणाम स्वरूप दुख भी अवश्य पाती है।

वैसे तो ये विश्व-नाटक दो भागों में विभाजित है परन्तु इसको तीन भागों में विभाजित करके विचार करें तो और अच्छा होगा, वे तीन भाग हैं - सुख, दुख और आनन्द अर्थात् दिन, रात और अमृतवेला अर्थात् स्वर्ग-नर्क और संगमयुग। जब आत्मा को ज्ञान सागर परमात्मा द्वारा आत्म-ज्ञान, परमात्म-ज्ञान, विश्व-नाटक और इसके विधि-विधान का ज्ञान मिलता है तो आत्मा अपने यथार्थ आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस विश्व-नाटक के परमानन्द को अनुभव करती है और दुख तथा दुख के कारणों को भूलकर सुख के साधनों का निर्माण करती है, जिसके फल स्वरूप दुख की दुनिया परिवर्तन होकर सुख की बन जाती है। परन्तु विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी विधि-विधान के अनुसार दुख का समय भी आना ही है, इसलिए आत्मा परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान अर्थात् आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक और इसके विधि-विधानों के यथार्थ ज्ञान को भूल ही जाती है, जिससे समयान्तर में दुख का पार्ट भी चलता ही है।

परमधाम से इस धरा पर आते ही आत्मा आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक और विश्व-नाटक के विधि-विधान को भूल जाती है और भूलने के कारण पहले आत्मा में देह-भान जन्म लेता है, जो ही बढ़ते-बढ़ते समयान्तर में देहाभिमान का रूप ले लेता है, जो दुख का मूल कारण है। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को जानने वाला कभी भी इस सुख, दुख के खेल को देखकर भ्रमित नहीं होता है। जो इस सुख-दुख के खेल को यथार्थ रीति जानकर साक्षी होकर इसे देखता है, वह इसके परमानन्द को अनुभव करता है और इसके विधि-विधान को जानने वाला इस सत्य को भी अवश्य अनुभव करता है कि बिना दुख के आत्मा को सुख की अनुभूति नहीं हो सकती और न ही सुख की अनुभूति के बिना दुख की कोई अनुभूति होती, इसलिए इसमें दोनों का समान महत्व है।

एक कवि की भावना है - "जाहि विधाता दारुण दुख देही, ताकी मति पहले ही हर लेही।" कवि की इस इन पन्तियों पर विचार करें तो इसमें कुछ सत्य भी है और कुछ असत्य है अर्थात् यथार्थ नहीं है क्योंकि विश्व-नाटक के नियमानुसार दुख का समय आता ही है, आत्मा की मति भ्रमित हो ही जाती है और आत्मा विकर्मों में प्रवृत्त हो ही जाती है परन्तु विधाता न किसको दुख देता है और न किसकी मति को हरता है। वह तो दुख से छूटने और सुख को पाने का रास्ता बताता है।

उपर्युक्त सत्य पर विचार करें तो ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है परन्तु उस परमानन्द को अनुभव करने के लिए विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान अति आवश्यक है। आनन्द संगमयुग की ही अनुभूति है, जब परमात्मा द्वारा विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान मिलता है।

"सतयुग में दुख का नाम नहीं, त्रेता में दो कला कम हो जाती है तो थोड़ा कुछ होता है, फिर

भी हेविन कहा जाता है ना। तुम बच्चों को तो अथाह अतीन्द्रिय सुख में रहना चाहिए।"

सा.बाबा 28.7.05 रिवा.

"ड्रामा में जो शूट किया हुआ है, उसमें जरा भी फर्क नहीं हो सकता। यह भी बेहद का ड्रामा है। ... किसी भी बात में दिल अन्दर दुख नहीं हो सकता। कोई को दुख है तो समझना चाहिए कि ड्रामा को नहीं समझा है।" सा.बाबा 24.4.73 रिवा.

Q. विश्व-नाटक में दुख बना ही क्यों ? और बना ही है तो उसका क्या महत्व है ?

ये बना-बनाया अनादि-अविनाशी नाटक है, इसलिए क्यों बना, यह प्रश्न ही नहीं उठ सकता परन्तु इसमें जो भी बना है, वह व्यर्थ नहीं बना है। जो आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इसके विधि-विधान पर विचार करता है, वही इसके यथार्थ रहस्य को अनुभव करता है और निश्चयबुद्धि होकर इसके यथार्थ सुख को अनुभव करता है। ये अटल सत्य है कि बिना दुख के सुख का कोई अस्तित्व नहीं अर्थात् कोई अनुभव नहीं होता है। इसलिए सुख के सही अनुभव के लिए दुख का अनुभव होना भी अति आवश्यक है। इसलिए ही इस विश्व-नाटक में सुख-दोनों की समान नूँध है। भले ही किसी आत्मा को प्रत्यक्ष में कोई दुख न होते हुए भी सुख का अनुभव करती है परन्तु हमको ये भूलना नहीं चाहिए कि आत्मा में जन्म-जन्मान्तर के संस्कार संचित हैं और ऐसा भी नहीं कि दुख होने पर ही दुख का अनुभव हो लेकिन देखकर, सुनकर भी दुख का अनुभव होता है। वह अनुभव भी सुख की अनुभूति में काम करता है।

"ऐसे नहीं कि ड्रामा बनाया ही क्यों ? ... यह तो अनादि ड्रामा है ना। चक्र में न आओ तो फिर दुनिया ही न रहे।... 5 हजार साल बाद फिर ऐसे ही चक्र लगायेंगे।"

सा.बाबा 5.7.05 रिवा.

"इसमें एक सेकण्ड भी आगे-पीछे नहीं हो सकता। यह राज़ भी बच्चे ही समझ सकते हैं। हम ड्रामा के एक्टर्स हैं, इसमें हमारा मुख्य पार्ट है। ... अब तुम्हारे सुख के दिन आते हैं ड्रामा प्लेन अनुसार।" सा.बाबा 4.4.06 रिवा.

"आधा कल्प सुख का पार्ट, आधा कल्प दुख का पार्ट है। बाप कहते हैं - जब दुख का अन्त होता तब मैं आता हूँ। यह ड्रामा बना हुआ है। ड्रामा पर बाबा ने मुरली में बहुत अच्छा समझाया है, वह मुरली बच्चों को पढ़नी चाहिए।" सा.बाबा 22.02.06 रिवा.

"कहते हैं ना - दे दान तो छूटे ग्रहण। इस समय सारे भारत को 5 विकारों का ग्रहण लगा हुआ है। ... जब बहुत पापात्मा बन जाते हैं, तब मैं आता हूँ पुण्यात्मा बनाने। यह ड्रामा बना हुआ है। ... इस ड्रामा को भी जानना है। ... जब तक मनुष्य ड्रामा को नहीं समझें तब तक दुखी ही रहते हैं।" सा.बाबा 28.4.06 रिवा.

विश्व-नाटक और पवित्रता, प्रेम, शक्ति, शान्ति एवं आनन्द

विश्व-नाटक को देखें तो विश्व-नाटक के नियमानुसार विधि-विधान अनुसार विश्व-नाटक के क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर परमात्मा पवित्रता, प्रेम, शक्ति, शान्ति, आनन्द आदि सर्व गुणों के भण्डार हैं, इसलिए उनको सच्चिदानन्द सागर कहा जाता है। आत्मायें भी इस नाटक के अविनाशी एक्टर्स हैं और परमात्मा की सन्तान हैं, इसलिए वे भी उन सर्व गुणों से सम्पन्न हैं। जो आत्मा विश्व-नाटक की इस यथार्थता को जानकर अपने स्वरूप में स्थित होती है, वह उन सभी गुणों और शक्तियों का अनुभव अवश्य करती है। इस सत्य का ज्ञान, अनुभव और अभ्यास कराने के लिए ही परमात्मा का इस धरा पर अवतरण होता है।

"तुम्हें बाप ने अपना और सारे सृष्टि-चक्र का परिचय दिया है, जो और कोई दे न सके।... यह कितना बड़ा ड्रामा है, उसमें सब एक्टर्स अविनाशी पार्ट बजाते हैं।... ज्ञान कितना रमणीक है। तुमको कितनी खुशी रहती है। ज्ञान में कितना सुख है।... आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है, एक न मिले दूसरे से।" सा.बाबा 29.6.04 रिवा.

विश्व-नाटक और मुक्ति-जीवनमुक्ति
विश्व-नाटक और मोक्ष

ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है। परमात्मा अविनाशी, आत्मा अविनाशी, उनमें पार्ट भी अविनाशी, इसलिए सदाकाल के लिए मुक्ति किसी भी आत्मा को नहीं मिल सकती अर्थात् आवागमन से कोई भी आत्मा छूट नहीं सकती परन्तु देश, काल और पार्ट के अनुसार हर आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति अवश्य मिलती है क्योंकि ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी, सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। जब तक आत्मा का इस नाटक में पार्ट नहीं है, तब तक वह मुक्ति में रहती है। इस नाटक के पार्ट में हर आत्मा आधा समय जीवनमुक्ति में और आधा समय जीवनबन्ध में पार्ट बजाती है।

शान्तिधाम है मोक्ष का स्थान, सभी आत्मायें वहाँ की रहने वाली हैं, इसलिए हर आत्मा दुख के समय मोक्ष की इच्छा करती है परन्तु ड्रामा अनुसार सदा काल का मोक्ष किसको मिल नहीं सकता क्योंकि हर आत्मा में अनादि-अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है, जो हर आत्मा को अपने समय पर बजाना ही है।

"कल्प-कल्प हम बाप से वर्सा लेते हैं, फिर माया बिल्ली छीन लेती है। इसलिए इसको हार-जीत का खेल कहा जाता है। ...कई समझते हैं मोक्ष पाना तो अच्छा है, फिर आयेंगे ही

नहीं।... एक्टर तो एक्ट जरूर करेगा। जो घर बैठ जाये, वह कोई एक्टर थोड़ेही हुआ। मोक्ष होता नहीं है। यह ड्रामा अनादि बना हुआ है। ... तुम ड्रामा में बंधायमान हो। ... कर्म बिगर कोई रह नहीं सकता।" सा.बाबा 25.5.05 रिवा.

"हम आत्मायें इस ड्रामा में एक्टर हैं, इनसे हम निकल नहीं सकते, मोक्ष पा नहीं सकते। बाप कहते हैं ड्रामा से कोई निकल जाये, दूसरा कोई एड हो जाये - यह हो नहीं सकता। इतना सारा ज्ञान सबकी बुद्धि में रह नहीं सकता। सारा दिन ऐसे ज्ञान में रमण करना है।"

सा.बाबा 26.4.05 रिवा.

"बहुत दुख देख कर ही मनुष्य कहते हैं - इससे तो मोक्ष पा लें। जब तुम सुख में, शान्ति में होंगे तो वहाँ थोड़ेही ऐसे कहेंगे। यह सारी नॉलेज अभी तुम्हारी बुद्धि में है। ... बच्चे पुरुषार्थ करते रहते हैं और करते रहेंगे। ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 17.7.04 रिवा.

"ऐसे भी नहीं कि सब नई दुनिया में चलेंगे, सब मुक्तिधाम में बैठ जायें, यह भी कायदा नहीं है, प्रलय हो जाये। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया और नई दुनिया का बहुत ही कल्याणकारी संगमयुग है। अब चेन्ज होनी है, फिर शान्तिधाम में जायेंगे। वहाँ सुख की भासना की भी कोई बात नहीं।" सा.बाबा 28.1.04 रिवा.

"सभी जो पिछाड़ी में आते हैं पार्ट बजाने तो वे इतना समय मुक्ति में होंगे ना। कितनी शान्ति मिल जाती है। साढ़े चार हजार वर्ष या पौने पाँच हजार वर्ष भी शान्त में रहते हैं। फिर उनका पार्ट ही ऐसा है। तुम आकर फिर सुख और शान्ति दोनों में रहते हो। ऐसे नहीं कि मनुष्य चाहे बस हमको उन जैसे शान्ति ही चाहिए, वहाँ बैठे रहें। कहने से नहीं मिल सकती। अनादि ड्रामा बना हुआ है। जिनका जो पार्ट है, वह बजाना है।... सभी को एक जैसा पार्ट तो नहीं मिल सकता है। कोई को कहने से मिल नहीं सकता। शुरू से लेकर जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी को अपना-अपना अनादि-अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। इसमें फर्क भी नहीं पड़ सकता।"

सा.बाबा 6.4.72 रिवा.

"यह बना-बनाया खेल है ... बाकी ड्रामा के खेल से ही निकल जायें, यह हो नहीं सकता। ... बुद्धि में तब बैठे जब पवित्र होकर समझें। अच्छी रीति समझने के लिए ही 7 राज़ की भट्ठी है।... ऊंच पद पाना नहीं होगा तो बुद्धि में बैठेगा नहीं।"

सा.बाबा 4.02.06 रिवा.

"वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी हू-ब-हू रिपीट कहा जाता है ... यह अनादि-अविनाशी ड्रामा है। कोई कहे यह पार्ट आने-जाने का हमको पसन्द नहीं है, परन्तु इसमें कुछ कर न सकें। एक भी

मोक्ष को पा नहीं सकते।" सा.बाबा 26.01.06 रिवा.

"ये ज्ञान की एक-एक बात याद करने लायक है। एक बात भी अच्छी रीति बुद्धि में बैठ जाये तो सब बातें आ जायेंगी। ... तुम जानते हो हम सब ड्रामा के एक्टर्स हैं, इससे कोई भी निकल नहीं सकता। विवेक से काम लेना होता है।"

सा.बाबा 3.5.06 रिवा.

"एक्टर बिगर पार्ट बजाये घर में थोड़ेही बैठ जायेगा। नाटक में जरूर आना पड़ेगा। वहाँ से सब चले आते हैं, तब फिर बाप आकर सबको वापस ले जाते हैं।"

सा.बाबा 27.6.06 रिवा.

"तुमको मुक्तिधाम में बैठ नहीं जाना है। तुम्हारा आलराउण्ड पार्ट है। ... यह सब ड्रामा में तुम्हारा पार्ट पहले से ही नूँधा हुआ है। ये बेहद का ड्रामा है, जो हू-ब-हू रिपीट होता है।"

सा.बाबा 3.6.06 रिवा.

विश्व-नाटक और सृष्टि-चक्र का आदि-मध्य-अन्त

विश्व-नाटक और स्थापना-विनाश अर्थात् सृष्टि-चक्र का परिवर्तन

परमात्मा ज्ञान का सागर है, वही इस विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देता है। इसका आदि काल में कैसा स्वरूप होता है, कैसा जीवन होता है, भूमण्डल की क्या स्थिति होती है, प्रकृति कैसी होती है और मध्य काल में इस सबकी क्या स्थिति होती है, क्या-क्या परिवर्तन होता है तथा अन्त में क्या स्थिति हो जाती है। फिर कैसे इसका पुनर्नवीनीकरण होता है अर्थात् कैसे नाटक का नया चक्र चालू होता है। यह सब राज़ अभी परमात्मा ने बताये हैं। इस विश्व-नाटक को अनादि-अविनाशी कहते हुए भी मनुष्य इसकी अनादि-अविनाश्यता को नहीं समझते हैं, इसीलिए प्राय: सभी धर्मों में सृष्टि की रचना के विषय में अनेकानेक मनगढ़ंत बातें लिखी हैं और मनुष्य उन्हीं पर विश्वास करके चलते रहते हैं।

यह विश्व-नाटक चक्रवत चलता है। एक चक्र आदि से अन्त तक चलता आता है, फिर इसकी आदि कैसे होती है, इस सत्य का ज्ञान भी अभी परमात्मा से मिला है कि पुनरावृत्ति के सिद्धान्त के अनुसार ज्ञान सागर परमात्मा पिता आकर यथार्थ ज्ञान देकर इस नाटक के चक्र के आदि की पुनरावृत्ति करते हैं और सृष्टि के नियमानुसार कलियुगी दुनिया का विनाश होता है। फिर आदि से अन्त तक स्वत: चलता रहता है। सृष्टि के नियमानुसार इसका आदि काल सतोप्रधान होता है, मध्य काल सतो सामान्य और रजोप्रधान तथा अन्त काल तमोप्रधान होता है। सतोप्रधान समय पर आत्मायें और प्रकृति दोनों सतोप्रधान होती हैं।

"ड्रामा में एक पार्ट दो बार बज न सके। सारी दुनिया में जो पार्ट बजता है, वह एक-दो से नया। तुम विचार करो सतयुग से लेकर अब तक कैसे दिन बदलता जाता है। ... अभी तुम इस ड्रामा के पास्ट, प्रजेन्ट और फ्युचर को जानते हो।"

सा.बाबा 1.12.04 रिवा.

"यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया खेल है। ... एक ही बार बाप आकर बेहद ड्रामा का राज़ समझाते हैं। ... यह बेहद का ड्रामा कैसे चलता है, अभी तुम समझते हो।"

सा.बाबा 10.12.04 रिवा.

"बाप कहते हैं तुमने वेद-शास्त्र तो बहुत सुने हैं। अभी तुम यह सुनो और जज करो कि शास्त्र राइट हैं या गुरु लोग राइट हैं या जो बाप सुनाते हैं वह राइट है? ... सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनकर फिर औरों को सुनाते हो। इसे ही शंख-ध्वनि कहा जाता है।"

सा.बाबा 9.12.04 रिवा.

"अभी नाटक पूरा होता है। जो भी एक्टर्स हैं सभी चले जायेंगे। बाकी थोड़े रहेंगे। राम गयो रावण गयो .. बाकी बचेंगे कौन? दोनों तरफ के थोड़े बचेंगे।... सभी कुछ बनाने वाले, सफाई करने वाले भी रहते हैं।"

सा.बाबा 28.4.72 रिवा.

"अच्छे डाक्टर की बुद्धि में बहुत दवाइयों के नाम रहते हैं। यहाँ भी यह नई-नई प्वाइन्ट्स बहुत निकलती रहती है। जिन्होंकी अच्छी प्रैक्टिस होगी, वे नई-नई प्वाइन्ट्स धारण करते होंगे।... सारा मदार बुद्धि पर है और तकदीर की भी बात है। यह भी ड्रामा में है ना।... ड्रामा को भी कोई नहीं जानते हैं। यह समझते हैं कर्मक्षेत्र पर हम पार्ट बजाते हैं परन्तु ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते तो गोया कुछ भी नहीं जानते। तुमको तो सबकुछ जानना है।... कोई काम नहीं कर सकते हैं तो गोया ताकत नहीं है, योग नहीं है। कहाँ-कहाँ बाबा भी मदद करते हैं। ड्रामा में जो नूँध है, वह रिपीट होती है। यह भी हम समझते हैं और कोई ड्रामा को समझते ही नहीं।... जो बहुत सुख देखते हैं, वे दुख भी बहुत देखते हैं।"

सा.बाबा 28.11.03 रिवा.

"ड्रामा के ज्ञान से माथा ठण्डा हो जाता है, ईर्ष्या-द्वेष सब मिट जाता है।"

दादी जानकी 16.10.03

"यह बेहद का ड्रामा है, इसके हम एक्टर हैं। ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का राज बुद्धि में रहना चाहिए। जिनकी बुद्धि में यह रहता है, उन्हें बहुत नशा रहता है। ... ड्रामा के एक्टर्स की बुद्धि में ड्रामा का राज तो रहना चाहिए ना।"

सा.बाबा 16.11.03 रिवा.

"चक्र को फिरना जरूर है। बुद्धि में यह रखना है - अब ये नाटक पूरा हुआ है, हम जा रहे हैं। चलते-फिरते, उठते-बैठते भी यह याद रहे - अब हमको वापिस जाना है। ... इसमें अफसोस नहीं किया जाता। कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। ड्रामा के पट्टे पर खड़ा रहना चाहिए, हिलना नहीं चाहिए।" सा.बाबा 20.11.03 रिवा.

"छोटी सी आत्मा में कितना भारी पार्ट भरा हुआ है। साइन्सदान भी इस बात पर बड़ा वण्डर खायेंगे। साइन्सदान भी समझते हैं कि कोई हमको प्रेरता है। विनाश तो होना है जरूर। यह ड्रामा में नूँध है। शंकर की कोई बात नहीं, यह तो निमित्त करके नाम रखा है। ... बरोबर अब नाटक पूरा हुआ, अब बाबा आये हैं ले जाने।"

सा.बाबा 23.10.03 रिवा.

"बाप है करन-करावनहार। बाप कहते हैं - हम कोई कहते नहीं है कि विनाश करो। यह सारा ड्रामा में न्रूंधा हुआ है। शंकर कुछ करता है क्या? कुछ भी नहीं। यह सिर्फ गायन है कि शंकर द्वारा विनाश। बाकी विनाश तो वे आपही कर रहे हैं। यह अनादि बना हुआ ड्रामा है, जो समझाया जाता है। ... बाप को रचयिता कहते हैं। बाप कहते हैं मैं क्रियेट नहीं करता हूँ, मैं चेन्ज करता हूँ, कलियुग को सतयुग बनाता हूँ। ... बाबा कोई निन्दा नहीं करते हैं। यह तो खेल बना हुआ है। यह तो सिर्फ समझाने के लिए कहा जाता है। खेल की निन्दा नहीं कर सकते हैं।" सा.बाबा 5.2.05 रिवा.

"यह ड्रामा बना-बनाया है। ड्रामा के क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर्स और ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को न जाने तो उनको बेअकल कहेंगे ना। ... जैसे बाप परमधाम से उतरते हैं, वैसे तुम आत्मायें भी उतरती हो, पार्ट बजाने के लिए। यह तुम समझते हो कि यह सुख और दुख का खेल है।" सा.बाबा 23.4.04 रिवा.

"यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, यह तुम्हारे सिवाए और कोई नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। ... ज्ञान की धारणा सबको एकरस हो नहीं सकती है। इसमें ज्ञान चाहिए, याद चाहिए, धारणा बड़ी अच्छी चाहिए।... पिछाड़ी में तुमको एकदम भाई-भाई होकर रहना है। नंगे आये हैं, नंगे जाना है।" सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

"प्रेरणा अक्षर रांग है। भल कहा जाता है - शंकर बॉम्बस आदि बनाने के लिए प्रेरते हैं परन्तु ये तो सारी ड्रामा में नूँध है।" सा.बाबा.8.3.71 रिवा.

"जो भारी-भारी भूलें हैं, उन पर जोर देना है। एक तो ईश्वर को सर्वव्यापी कहना, दूसरा फिर गीता का भगवान श्रीकृष्ण को कहना, कल्प लाखों वर्ष का कहना। ... भल कहा जाता है - शंकर की प्रेरणा से बॉम्बस आदि बनाते हैं परन्तु यह सारी ड्रामा में नूँध है। इस यज्ञ से ही यह

विनाश ज्वाला निकली है।" सा.बाबा 10.03.06 रिवा.

"वर्ल्ड की सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होगी। यह विनाश है ही इसके लिए। कहते हैं ब्रह्मा की आयु शास्त्रों में 100 वर्ष है। यह जो ब्रह्मा है, जिसमें बाप बैठ वर्सा देते हैं, उनका भी शरीर छूट जायेगा। ... यह भी ड्रामा बना हुआ है, बाप उसका राज़ समझा रहे हैं।"

सा.बाबा 21.02.06 रिवा.

"शंकर द्वारा विनाश - यह भी ड्रामा में नूँध है। विनाश सामने खड़ा है। ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्ज्वलित हुई ... इसको कहा जाता है - खूने नाहेक खेल।"

सा.बाबा 14.02.06 रिवा.

"बॉम्बस बनाकर अपने ही विनाश के लिए तैयारी कर रहे हैं। तुम बच्चों के लिए यह कोई नई बात नही है। जानते हो ड्रामा अनुसार उन्होंका भी पार्ट है। वे भी ड्रामा के बन्धन में बंधे हुए हैं। ... यह भी जानते हो कि बरोबर महाभारत लड़ाई लगी थी।"

सा.बाबा 1.02.06 रिवा.

"दुनिया यह नहीं जानती कि यह विनाश तो अच्छा है ना। पीस के लिए प्रयत्न करते हैं परन्तु आखरीन विनाश तो होना ही है। ... विनाश तो सबका होना है। इसमें डरने की बात नहीं। ... एक चक्र पूरा होता है, फिर नया चक्र लगाना है। इस चक्र को जानना चाहिए ना।"

सा.बाबा 17.01.06 रिवा.

"अभी सारा झाड़ तुम बच्चों की बुद्धि में है। यह वण्डरफुल झाड़ है।... पूरे 5 हजार वर्ष का एक्यूरेट झाड़ है। एक सेकेण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता है।... नॉलेज देने वाला है वृक्षपति। ... इस सृष्टि-चक्र का ज्ञान तुम बच्चों की बुद्धि में चलते-फिरते रहना चाहिए। तुम चेतन्य लाइट हाउस हो।" सा.बाबा 13.01.06 रिवा.

"अब ड्रामा अनुसार पुरानी दुनिया खत्म होनी है। ... ड्रामा में भी यह पार्ट है तब तो बुलाते हैं। ड्रामा प्लेन अनुसार बाबा आयेंगे भी तब जब पुरानी दुनिया से नई बननी है। जरूर संगम पर ही आयेंगे।" सा.बाबा 07.01.06 रिवा.

"यह ज्ञान और अज्ञान का खेल है। ज्ञान है ही एक परमपिता परमात्मा के पास। उस ज्ञान से नई दुनिया स्थापन होती है। ... पुरानी दुनिया बदलकर नई बन रही है।"

सा.बाबा 20.9.05 रिवा.

"यह सारा ड्रामा बना हुआ है, इसकी एण्ड होती नहीं। बाप आते हैं चक्र के अन्त में, तब सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज सुनाते हैं।" (ड्रामा का आदि-अन्त नहीं होता लेकिन चक्र का आदि-अन्त होता है) सा.बाबा 2.01.06 रिवा.

"विनाश का टाइम नूँधा हुआ है। फिर पिछाड़ी में मच्छरों सदृश्य शरीर छोड़ेंगे। ... विनाश का बड़ा भारी सीन है। यह ड्रामा में सारी नूँध है। ... सिर्फ बॉम्बस नहीं लेकिन नेचुरल केलेमिटीज भी मदद करती है।" सा.बाबा 2.5.06 रिवा.

"मौत सामने खड़ा है, अचानक लड़ाई लग सकती है। ... बाबा कहते हैं - बच्चे अजुन योगबल में होशियार हुए नहीं हैं। ... परन्तु ड्रामा अनुसार ऐसा होगा ही नहीं। बच्चों ने पूरा वर्सा लिया नहीं है, इसलिए निश्चय होता है कि यह लड़ाई करके लगेगी भी, तो भी बन्द हो जायेगी क्यों अभी राजधानी स्थापन नहीं हुई है।"

सा.बाबा 7.8.06 रिवा.

"ड्रामा प्लेन अनुसार यह दुनिया पावन होनी जरूर है और पावन दुनिया बनने के लिए आग भी लगनी है। ... विनाश की तैयारी भी हो रही है। स्थापना हो गई तो विनाश भी जरूर होना है। ... परन्तु तुम किसको भी दोष नहीं दे सकते हो। सब ड्रामा के बन्धन में बांधे हुए हैं।"

सा.बाबा 8.8.06 रिवा.

"तुमको थोड़ेही पता पड़ता है कि आगे क्या होगा। जो कल्प पहले हुआ होगा, वही होगा। तुमको टोटल बताया जाता है कि स्थापना और विनाश होना है। विनाश कैसे होगा ? वह तो जब होगा, तब देखेंगे।" सा.बाबा 2.8.06 रिवा.

"बच्चों को ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान मिल रहा है ... इन बातों को अच्छी रीति समझो। तुम्हारे सिवाए यह ज्ञान और कोई में है नहीं।... वह अभी थोड़ेही दिखा देंगे। जब होगा तब उसको भी साक्षी होकर देखेंगे।"

सा.बाबा 22.7.06 रिवा.

"जो होगा, वह तुम भी प्रैक्टिकल में देखेंगे। पहले से ही तो नहीं दिखायेंगे। ... विनाश होगा जरूर। सब तैयारी हो रही है। वह ड्रामा में पहले से ही नूँध है।"

सा.बाबा 22.7.06

विश्व-नाटक और पुरुषोत्तम संगमयुग

विश्व-नाटक और गीता अर्थात् गीता-ज्ञान

पुरुषोत्तम संगमयुग कल्प-वृक्ष का फूल है। वर्तमान समय कल्प का पुरुषोत्तम संगमयुग है। वैसे तो हर दो युगों के मध्य कुछ समय संधिकाल के रूप में होता है परन्तु सभी युगों के संधिकाल कल्याणकारी नहीं होते हैं, इसलिए उसको पुरुषोत्तम संगमयुग नहीं कहा जा सकता है। सभी संधिकाल में न आत्माओं का कल्याण होता है और न ही आत्माओं की चढ़ती

कला होती है। कलियुग और सतयुग के संधिकाल को ही कल्याणकारी संगमयुग कहा जाता है जब इस धरा पर परमात्मा का अवतरण होता है और उनके द्वारा दिये गये कल्प-वृक्ष के ज्ञान और परमात्मा से योगयुक्त होने से आत्माओं की चढ़ती कला होती है और इस धरा पर नये चक्र के प्रथम युग सतयुग अर्थात् स्वर्ग का शुभारम्भ होता है। संगमयुग सारे कल्प में सर्वोत्तम युग है, जो इसके महत्व को समझ लेता है, वह इस समय और विश्व-नाटक के सच्चे सुख को अनुभव करता है और भविष्य के लिए सुखों के भण्डार का संचय कर लेता है।

इस विश्व-नाटक में पुरुषोत्तम संगमयुग का विशेष महत्व है क्योंकि सारे विश्व-नाटक में यही एक समय ऐसा है, जब आत्माओं की चढ़ती कला होती है, आत्मायें निकृष्ट से पुरुषोत्तम बनती है और आत्माओं की चढ़ती कला के साथ विश्व की भी चढ़ती कला होती है। और तो सारे कल्प में आत्माओं की और विश्व की उतरती कला ही होती है भले वह सतयुग हो या कलियुग। इस पुरुषोत्तम संगमयुग की घटनाओं का सभी वेद-शास्त्रों में वर्णन है, सभी धर्म की आत्मायें इसे किसी न किसी रूप में याद करती हैं क्योंकि अभी आत्माओं का परमात्मा से मिलन होता है, आत्मायें घर जाती हैं।

इस पुरुषोत्तम संगमयुग को ही गीता और महाभारत का युग भी कहा जाता है क्योंकि गीता ज्ञान-दाता निराकार परमात्मा शिव इस समय ही आकर विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देते हैं, जिससे ही विश्व-परिवर्तन होता है अर्थात् विश्व-नाटक पुराने से नया बनता है। बिना गीता ज्ञान के सतयुग में सर्वगुण सम्पन्न ... सम्पूर्ण निर्विकारी होते भी हमारी उतरती कला होती है और समग्र विश्व की उतरती कला ही होती है।

संगमयुग ही सर्व संस्कारों को भरने का युग है, दैवी संस्कारों का बीज बोने का समय है। अभी के संस्कारों का बीज ही सारे कल्प में फलित होता है। ड्रामा के ज्ञान से इस सत्य का ज्ञान होता है और आत्मा दैवी संस्कारों को भरने के पुरुषार्थ में प्रवृत्त होता है। पुरुषोत्तम संगमयुग सारे कल्प के संस्कारों का बीज भी है और आत्मा के सारे कल्प के संस्कारों का दर्पण भी है। वर्तमान के संस्कारों से सारे कल्प के संस्कारों और पार्ट का पता चलता है और अभी जो संस्कार भरते हैं, उस अनुसार ही सारे कल्प के संस्कार होते हैं।।

"यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, जो एक ही बार आता है। मनुष्य पुरुषोत्तम संगमयुग का अर्थ भी नहीं समझते हैं तो यह भी लिखना है - कलियुग अन्त और सतयुग आदि का संगम। तो संगमयुग सबसे सुहावना, कल्याणकारी हो जाता है। बाप भी कहते हैं - मैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही आता हूँ।"

सा.बाबा 10.9.04 रिवा.

"इस संगमयुग को पुरुषोत्तम संगमयुग व सर्वश्रेष्ठ युग क्यों कहते हो क्योंकि आत्मा के हर प्रकार के धर्म की, राज्य की, श्रेष्ठ संस्कारों की, श्रेष्ठ सम्बन्धों की और श्रेष्ठ गुणों की सर्वश्रेष्ठता अभी रिकार्ड के समान भरता जाता है। 84 जन्मों की चढ़ती कला और उतरती कला दोनों के संस्कार इस समय ही आत्मा में भरते हो।"

अ.बापदादा 30.5.73

"ड्रामा में बाबा का पार्ट बिल्कुल एक्यूरेट है। सेकण्ड की भी देरी नहीं हो सकती। यह ड्रामा अनादि बना हुआ है। ... भारतवासी ही 100 परसेन्ट सतोप्रधान और फिर 100 परसेन्ट तमोप्रधान बनते हैं। बाप तो बड़ा एक्यूरेट है।"

सा.बाबा 19.1.05 रिवा.

"यह है हाइएस्ट बाप की रिइन्कारनेशन। फिर सब नम्बरवार आते हैं, कम ताकत वाले। ... तुम विश्व के मालिक बनते हो। तुम्हारे में फुल फोर्स की ताकत आती है। ... मुख्य है ड्रामा, जिसकी नॉलेज तुमको अभी मिलती है। ... तुम बच्चे भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो और उस अनुसार ही पद पाते हो।"

सा.बाबा 25.1.05 रिवा.

"मुख्य बात है पावन बनने की। जितना पावन बनेंगे, उतना नॉलेज धारण होगी और खुशी भी होगी। बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए - हम सबका उद्धार करें। बाप ही आकर सबकी सद्गति करते हैं। बाप को तो गम और खुशी की बात ही नहीं। यह ड्रामा बना हुआ है। तुमको भी कोई गम नहीं होना चाहिए। बाप मिला और क्या चाहिए।... सतयुग में तो ज्ञान की बात ही नहीं। यहाँ तुमको बेहद का बाप मिला है तो तुमको स्वर्ग से भी जास्ती खुशी होनी चाहिए।"

सा.बाबा 16.8.04 रिवा.

"ड्रामा कितना विचित्र बना हुआ है, इसको जानने के लिए भी समझ चाहिए। जैसे तुम नीचे उतरे हो, अब फिर चढ़ना है। नम्बरवार ही पास होंगे, फिर नम्बरवार नीचे आयेंगे।... ड्रामा के प्लॉन अनुसार इनको गीता का युग कहा जाता है क्योंकि बाप आकर ज्ञान सुनाते हैं, जिससे ऊंच बनते हो।"

सा.बाबा 2.8.04 रिवा.

"यहाँ मनुष्य बद्-चलन भी बहुत चलते हैं। बाप कहते हैं इन बिचारों का दोष नहीं है। ... कोई की बुद्धि में धारणा नहीं होती है, यह भी ड्रामा में उनका ऐसा पार्ट है। ... राजधानी स्थापन हो रही है, उसमें सब चाहिए। ऐसा समझकर शान्त में रहना चाहिए।"

सा.बाबा 29.7.04 रिवा.

"सभी ने पाप किये जरूर हैं। जो पुण्यात्मा थे, वे ही फिर पापात्मा भी बनते हैं। हिसाब-किताब

बाप बैठ समझाते हैं। ... यह सारा ड्रामा चल रहा है। आत्मा शरीर धारण कर पार्ट बजाती है।...जब बाप आकर पढ़ायें तब ही ज्ञान मिले। टीचर ही नहीं तो ज्ञान कहाँ से आये।..सम्पूर्ण दुख और सम्पूर्ण सुख का यह है संगमयुग।"

सा.बाबा 13.7.04 रिवा.

"हम इस संगम के समय की ही बातें करते हैं। सतयुग में तो यह बातें होंगी नहीं, न कलियुग में होंगी। ... यह सारी वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होगी। जैसे ड्रामा की शूटिंग होती है। मक्खी उड़ी, वह भी शूट हो गई तो फिर रिपीट होगी।... बाप खुद कहते हैं - हम कल्प-कल्प कल्प के संगमयुगे इस भाग्यशाली रथ पर आता हूँ।"

सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

"विद्वान, आचार्य, पण्डित ... लक्ष्मी-नारायण आदि कोई को जानते नहीं हैं तो विमुख हो गये ना! यह भी ड्रामा में नूँध है। ऐसा जब हो तब तो बाप महावाक्य उच्चारे कि कोई भी विद्वान-पण्डित नहीं जानते कि कलियुग पतित दुनिया को पावन बनाने वाला कौन है।"

सा.बाबा 20.4.73 रिवा.

"बाप कब उल्टी मत नहीं देंगे। सम्मुख आकर श्रीमत देते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि रावण कोई चीज है, जो कोई की बुद्धि में बैठ मत देते हैं। यह सभी ड्रामा में नूँध है। मनुष्य बिल्कुल ही पतित बन जाते हैं माया के कारण। तुम जानते हो - हम देवता बनेंगे, फिर पतित बनना शुरू करेंगे।"

सा.बाबा 20.4.73 रिवा.

"बरोबर यह सुख-दुख का खेल है। यूँ तो तुम बच्चों को सतयुग में जाने से भी जास्ती फायदा यहाँ है क्योंकि जानते हो कि इस समय हम ईश्वरीय गोद में हैं, ईश्वरीय औलाद हैं। ... इस जन्म को जानने से कुछ न कुछ पास्ट जन्म को भी समझ सकते हैं।... सुख में तो दुख का पता नहीं चलता है। अभी संगम पर तुम दोनों को जान सकते हो कि अभी हम दुख से सुख में जा रहे हैं। मुख है दिन की तरफ और लात है रात की तरफ।"

सा.बाबा 4.4.06 रिवा.

"सतयुग में इन देवी-देवताओं को भी रचता-रचना का ज्ञान नहीं था, रचना के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते थे। अगर उन्होंको यह ज्ञान हो कि हम सीढ़ी उतरते रसातल में जायेंगे तो बादशाही का सुख भी न रहे, चिन्ता लग जाये। ... एक्टर्स को ड्रामा का पता होना चाहिए।"

सा.बाबा 9.8.06 रिवा.

विश्व-नाटक और स्वास्तिका अर्थात चार युगों की दिशा और दशा

विश्व-नाटक और कल्प की आयु

भारत में हर शुभ कार्य में स्वास्तिका का पूजन होता है। व्यापारी लोग भी अपने हिसाब-किताब के चोपड़ों पर स्वास्तिका को अंकित करते हैं। इसका राज़ क्या है, यह बात किसी को पता नहीं है, स्वास्तिका का यथार्थ राज़ अभी बाबा ने बताया है कि यह सृष्टि-चक्र के ज्ञान की दशा और दिशा को सिद्ध करता है। स्वास्तिका के चारो भाग बराबर बनाते हैं, जो चारो युगों की समान आयु के प्रतीक हैं। विश्व के सबसे बड़े आतंकवादी हिटलर के झण्डे पर भी स्वास्तिका का चिन्ह अंकित था परन्तु उसकी दिशा उल्टी थी अर्थात् वह दाई ओर से बाई ओर को थी, इसलिए उसके सभी कार्य विश्व के लिए उल्टे ही हुये। भारत में जो स्वास्तिका अंकित करते हैं, उसकी दिशा बाई ओर से दाई ओर को होती है, जो शुभ भाव का प्रतीक है। स्वास्तिका के रहस्य और गहराई में जायें तो उसमें अनेक गुह्य रहस्य हैं। कैसे आधे कल्प तक सतोप्रधान से सतो सामान्य तक आते हैं और सतो सामान्य से रजो तक आते-आते उसकी दिशा विपरीत हो जाती है, जो रजो और फिर रजो से तमो की ओर मुड़ जाती है, जो बढ़ते-बढ़ते तमोप्रधान तक जाती है।

सृष्टि तो अनादि-अविनाशी है परन्तु यह विश्व-नाटक कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है परन्तु यह पुनरावृत्त कैसे होता है और कितने समय के बाद पुनरावृत्त होता है, इसके विषय में अनेकानेक मत-मतान्तर हैं और जो भी इसके विषय में बताते हैं, उनके ही मत में अनेकानेक विराधाभास (Contradiction) हैं परन्तु अभी बाबा ने इसका यथार्थ ज्ञान दिया है कि ये विश्व-नाटक 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। दुनियां में प्रचलित मत-मतान्तरों के विषय में विचार करें तो भी यह बात स्पष्ट होती है। जैसे महाभारत को हुए 5000 वर्ष बताते हैं और अभी फिर महाभारत की स्थिति सामने आ गई है। कलयुग की आयु 4 लाख 32 हजार वर्ष दिखाते हैं और देवताओं और मनुष्यों के वर्ष के सम्बन्ध में कहते - एक दिन और एक वर्ष का अन्तर है। उस हिसाब से 4 लाख 32 हजार को 360 से विभाजित करें तो 1200 वर्ष का अंक आ जाता है और 50 वर्ष सन्धिकाल में आ जाते हैं। इस प्रकार और भी अनेक बातें हैं, जो कल्प की आयु 5000 सिद्ध करती हैं।

"ये सब चित्र (झाड़, त्रिमूर्ति, गोला) बाप ने दिव्य दृष्टि द्वारा बनवाये हैं। ये सब श्रीमत से बने हुए हैं, किसी मनुष्य मत से नहीं बने हैं। ये सब भी खलास हो जायेंगे, कुछ भी इनका नाम निशान नहीं रहेगा। नई दुनिया में सब कुछ नया होगा।"

सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

"बच्चों को समझाया गया है- आत्मा भिन्न नाम-रूप धारण करते नीचे उतरती है। जब से काम चिता पर चढ़ती है तब से काला बनती है।... मुख्य बात है पवित्रता की।"

सा.बाबा 20.10.04 रिवा.

"तुम अखबार में लिख सकते हो - यह प्रदर्शनी आज से 5000 वर्ष पहले इस तारीख, इस ही स्थान पर इसी रीति हुई थी। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट हो रही है। ... तुम श्रीमत से पाप कर्मों को जीत कर विकर्माजीत बन जाते हो।"

सा.बाबा 19.4.06 रिवा.

विश्व-नाटक और विश्व की हिस्ट्री-जाग्राफी एवं विश्व की जन-संख्या

विश्व-नाटक और विभिन्न धर्म-मठ-पंथ अर्थात् कल्प-वृक्ष

विश्व-नाटक और तीन लोक

बाबा ने विश्व-नाटक के ज्ञान के साथ इस विश्व के इतिहास-भूगोल और जनसंख्या का भी ज्ञान दिया है। सतयुग आदि में जनसंख्या 9 लाख 16 हजार एक सौ आठ होती है, जो त्रेता के आदि तक दो-ढाई करोड़ हो जाती है और त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि में 33 करोड़ के लगभग हो जाती है। इसलिए 33 करोड़ देवताओं का गायन है तथा कल्प के अन्त में 700 करोड़ के लगभग हो गई है। द्वापर के बाद विश्व में अनेकानेक धर्म, मठ, पंथ स्थापित होते हैं और उनके धर्मवंश की आत्मायें परमधाम से नीचे आती रहती हैं। अभी फिर से वही 9 लाख 16 हजार एक सौ आठ होने वाली है और सब आत्मायें मुक्ति धाम में चली जायेंगी, फिर अपने समय पर अपने धर्म वंश में पार्ट बजाने आयेंगी। विश्व इतिहास को देखें तो परमात्मा के अवतरण के पहले विश्व की जनसंख्या 160-170 करोड़ के लगभग ही थी। इस हिसाब से साढ़े पांच सौ करोड़ मनुष्यात्मायें परमात्मा के अवतरण के बाद ही परमधाम से इस रंगमंच पर आई हैं।

विश्व-नाटक में कब कैसे राज्य कारोबार और क्रिया-कलाप होते हैं, उसका भी ज्ञान परमात्मा ने दिया है। आज विश्व में प्राय: सभी देशों में प्रजातन्त्र हो गया परन्तु विश्व-नाटक के आदि और मध्य में राजतन्त्र ही था। परमात्मा अभी फिर से उस राजतन्त्र की स्थापना कर रहे हैं, उस राजतन्त्र में राजा प्रजा का शोषक नहीं लेकिन पालक होगा। राजा की प्रजा के प्रति पुत्र के समान भावना होती है और प्रजा की राजा के प्रति पिता के समान श्रृद्धा-भावना होती है। वह सुखदायी राजतन्त्र सतयुग-त्रेता तक चलता है। बाद में मध्य काल के राजतन्त्र में राजा-प्रजा

के सम्बन्धों में कुछ कटुता आती है। सृष्टि-चक्र के आदि में सारा विश्व ही भारत होता है, जिसके थोड़े से भाग में स्वर्ग होता है।

विश्व-नाटक के साथ बाबा ने विश्व के भूगोल का भी ज्ञान दिया है, जिससे पता पड़ा है कि इस सृष्टि में तीन लोक क्या हैं, उनकी स्थिति और गति-विधि क्या है। परमधाम हम आत्माओं का घर है और यह साकार लोक एक ड्रामा स्टेज है। सतयुग-त्रेता में इस विश्व रंगमंच पर सदा-बहारी मौसम होता है, जो समय की गति और ड्रामा के पार्ट अनुसार परिवर्तन होता रहता है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर प्राकृतिक आपदायें आती हैं, अणु-युद्ध होता है, जिससे अभी जो पृथ्वी अपनी धूरी पर साढ़े तेईस अंश झुकी हुई है, वह 90 अंश सीधी हो जाती है। द्वापर के आदि में जब देवतायें वाम-मार्ग में जाते हैं अर्थात् विकारी बनते हैं तब भी भूकम्प आदि होते हैं, जिससे पृथ्वी साढे तेइस अंश झुक जाती है, जिससे विश्व में अनेक प्रकार परिवर्तन होते हैं और दैवी सभ्यता के अवशेष भूगर्भ में विलीन हो जाते हैं। वही पृथ्वी कलियुग के अन्त में फिर एटमिक वार और प्राकृतिक आपदाओं में पुन: 90 अंश पर सीधी हो जाती है। पृथ्वी के इस परिवर्तन से सागर, नदियों का बहाव में परिवर्तन होने से पृथ्वी के अस्तित्व में अनेक परिवर्तन होते हैं।

विश्व-नाटक में विभिन्न धर्म, मठ-पंथ हैं। कब कौनसा धर्म स्थापन होता है और विभिन्न धर्मों की स्थापना, आत्माओं के धर्म-परिवर्तन का विधि-विधान भी बड़ा रोचक है। ड्रामानुसार विभिन्न धर्मों की कलम या धर्म स्थापना में आत्माओं का धर्म-परिवर्तन होता ही है और अन्त में जो जिस धर्म की आत्मा होती है, वह समय पर अपने मूल धर्म में परिवर्तन अवश्य होती है, उसको कोई भी रोक नहीं सकता है। ये भी विश्व-नाटक का एक अनादि-अविनाशी विधि-विधान है और बड़ा रोचक भी है तो कटुतापूर्ण भी है क्योंकि इसके आधार पर विश्व में अनेक रक्तपात भी होते हैं।

विश्व-नाटक में जैसे मूलवतन में आत्मायें रहती हैं, साकार वतन का पार्ट हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, वैसे ही सूक्ष्म वतन का जो पार्ट अभी चलता है, वह भी हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है और सतयुग-त्रेता में भी सूक्ष्मवन का क्षेत्र रहता ही है अर्थात् तीनों लोकों का कोई क्षेत्र कभी विनाश नहीं होता है परन्तु उस समय सूक्ष्मवतन में कोई पार्ट नहीं चलता है और न ही आत्माओं को उसका कोई ज्ञान होता है। सूक्ष्मवतन की कार्य-विधि का ज्ञान तो परमात्मा संगमयुग पर ही देते हैं परन्तु भक्ति मार्ग में तीन लोकों का गायन तो है ही है।

"सबको अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को भी अपना सूक्ष्म शरीर है, उनको भगवान नहीं कहेंगे। ... ब्रह्मा-विष्णु-शंकर सूक्ष्मवतन की रचना हैं।"

सा.बाबा 15.4.06 रिवा.

"तुमको झाड़ को भी याद करना है तो चक्र को भी याद करना है। बाप कल्प-कल्प आकर कल्प-वृक्ष का सारा राज़ समझाते हैं।... यह मनुष्य-सृष्टि रूपी झाड़ छोटे से बड़ा और बड़े से छोटा कैसे होता है, यह बाप समझाते हैं।"

सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

"कल्प-वृक्ष का मिसाल बड़ के झाड़ से देते हैं। सारा झाड़ खड़ा है, फाउण्डेशन है नहीं। यहाँ भी आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउण्डेशन है नहीं। ... अभी तुम बाप को भी जान गये हो और सारे ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त, ड्युरेशन आदि को भी जान गये हो।"

सा.बाबा 15.10.04 रिवा.

"नई दुनिया से पुरानी और पुरानी से नई कैसे बनती है, यह कोई नहीं जानते हैं। ... सतयुग-त्रेता में देवी-देवता धर्म के सिवाए और कोई भी धर्म होता नहीं।"

सा.बाबा 15.10.04 रिवा.

"बाप ने हमको एडॉप्ट किया है। ज्ञान सागर बाप आया है और हमको सृष्टि-चक्र का राज़ समझाते हैं, दूसरा कोई समझा न सके। ... कहाँ इतनी करोड़ों मनुष्यात्मायें और कहाँ फिर 9 लाख। और सब कहाँ जायेंगे ? अब तुम्हारी बुद्धि में है कि हम सब आत्मायें ऊपर ब्रह्मलोक में रहती हैं, फिर यहाँ आई हैं पार्ट बजाने। आत्मा को ही एक्टर कहेंगे।"

सा.बाबा 1.9.04 रिवा.

"इस समय दुनिया में इतने करोड़ों मनुष्य हैं, वहाँ तुम 9 लाख होंगे। सो भी एबाउट कहा जाता है। ... बुद्धि कहती है - सतयुग में बहुत छोटा झाड़ होता है। ... बुद्धि में यह सारा चक्र फिरता रहे।"

सा.बाबा 9.5.05 रिवा.

"विचार करो कितनी आत्मायें हैं, सबका सिजरा है। सब आत्मायें फिर नम्बरवार जाकर बैठेंगी। ... फिर नम्बरवार आयेंगी पार्ट बजाने। ... कैसे यह ड्रामा चलता है, वह तुम जानते हो।"

सा.बाबा 3.6.05 रिवा.

"ब्राह्मणों का झाड़ बढ़ना ही है। इतना ही बढ़ेगा, जितना देवताओं का झाड़ है। .. जितना कल्प पहले पुरुषार्थ किया है, उतना करेंगे जरूर। साक्षी होकर अपना और औरों का भी देखना है।"

सा.बाबा 7.7.05 रिवा.

"इस सारे झाड़ का राज़ और कोई समझा न सके। यह है वैरायटी धर्मों का झाड़। ... तुम बच्चों को ड्रामा का राज़ भी बाप ने समझाया है। यह है बेहद का ड्रामा।"

सा.बाबा 8.1.05 रिवा.

"यह ड्रामा बना हुआ है, इसका आदि वा अन्त नहीं है। हाँ, जब झाड़ की जड़जड़ीभूत अवस्था होती है अर्थात् तमोप्रधान बन जाता है तब यह झाड़ चेन्ज होता है। ... पार्टधारी सब इकट्ठे कैसे आयेंगे! इकट्ठे आयें तो खेल ही बिगड़ जाये। यह खेल बड़ा एक्यूरेट बना हुआ है, इसमें कोई चेन्ज नहीं हो सकती।" सा.बाबा 20.12.04 रिवा.

"यह है वैराइटी धर्मों का झाड़। (विभिन्न धर्मों की कलम लगती जाती है) ... सब धर्म कैसे नम्बरवार आते हैं, यह भी तुम जानते हो। सबको जाना है, फिर आना है। यह ड्रामा बना हुआ है। है भी कुदरती ड्रामा।" सा.बाबा 10.9.04 रिवा.

"तुमको सब धर्म वालों का कल्याण करना है। ... यह सबको समझाना पड़ता है। भल ड्रामा अनुसार होता है परन्तु तुम पतित तो बन गये ना। ... यह भी ड्रामा बना हुआ है, जो बाप आकर समझाते हैं। यह ज्ञान सब धर्मों के लिए है।"

सा.बाबा 16.8.04 रिवा.

"यहाँ जीवात्माओं का खेल होता है, वहाँ स्वीट होम में सिर्फ आत्मायें रहती हैं। उस स्वीट होम में जाने के लिए सारी दुनिया पुरुषार्थ करती है। ... अभी तुम बच्चों को सिर्फ बाप और घर ही याद है। बाप से तुम वर्सा लेते हो शान्तिधाम और सुखधाम का।... ड्रामा अनुसार मैं अपने समय आया हूँ।" सा.बाबा 24.7.04 रिवा.

"अब तुम बच्चों को ही सारी नॉलेज मिलती है। परन्तु समझते कोई मुश्किल से हैं। तब कहते हैं कोटों में कोई ही ज्ञान को आकर लेंगे और देवता धर्म वाले बनेंगे। इसमें आश्चर्य नहीं खाना चाहिए। ... तुम बच्चों को कोई भी बात में मूँझना नहीं है। यह ड्रामा बना-बनाया है, जो रिपीट होता रहता है। तुम्हारी सर्विस भी कल्प पहले मिसल होती है। ड्रामा ही तुमको पुरुषार्थ कराते हैं, वह भी तुम करते हो कल्प पहले मिसल।"

सा.बाबा 14.1.04 रिवा.

"यह शास्त्र आदि सब ड्रामा में नूँध हैं। इस ड्रामा की आदि तो कह न सकेंगे। जो कुछ पास्ट होता आया है, वह ड्रामा में नूँधा हुआ है। उसको रिपीट जरूर करना है।"

सा.बाबा 14.12.73 रिवा.

"सर्वव्यापी समझ लेते हैं ... ड्रामा में वह भी नूँध है। ड्रामा अनुसार सबको पार्ट मिला हुआ है। यह शास्त्र आदि बनाने का भी ड्रामा में पार्ट है। बनायेंगे वही, जिन्होंने आगे बनाये थे।"

सा. बाबा 10.8.98 रिवा.

"ये ड्रामा बड़ा वण्डरफुल बना हुआ है। ये बात किसको पहले नहीं समझानी है। ... बाकी सभी तो ये ज्ञान नहीं लेंगे। भक्त सभी हैं भगवान के बच्चे, तो सभी को क्यों नहीं देता? क्या

कोई कम प्रिय है ? फिर कहा जाता है - यह ड्रामा बना हुआ है। क्राइस्ट आदि का स्वर्ग में पार्ट ही नहीं है। क्यों नहीं है ? यह प्रश्न तो उठ नहीं सकता। ड्रामा में सभी का अपना-अपना पार्ट है।"

सा. बाबा 12.1.73 रिवा.

"मनुष्य कहते हैं - परमात्मा सबको भेजने वाला है। यह भी समझने की बात है। ड्रामा तो अनादि बना हुआ है। मुझे कहते हैं ज्ञान का सागर, सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानने वाला ... इस कल्प वृक्ष की उत्पत्ति, पालना, विनाश कैसे होता है, वह कोई भी नहीं जानते।"

सा.बाबा 31.3.06 रिवा.

"अभी तुमको देही-अभिमानी बनना है। आत्मा कहती है - अभी हमने 84 जन्म पूरे गिये, अब नाटक पूरा होता है। अब वापस घर जाना है। अभी कलियुग का अन्त और सतयुग की आदि का संगम है। ... यह हिस्ट्री-जॉग्राफी बाप ही बता सकते हैं।"

सा.बाबा 28.4.06 रिवा.

"देवता धर्म वाले जो और धर्मों में कन्वर्ट हो गये हैं, ड्रामानुसार फिर भी ऐसे ही कन्वर्ट हो जायेंगे और फिर अपने-अपने धर्म में लौटकर आयेंगे। ... समझाने से जो समझते हम बाप से वर्सा जरूर लेंगे, इससे सिद्ध होता है कि यह हमारे धर्म पर है।"

सा.बाबा 9.8.06 रिवा.

विश्व-नाटक और परमधाम से आत्माओं के आने-जाने का विधि-विधान /

विश्व-नाटक और विभिन्न योनि की आत्माओं की गति-विधि

जिस समय जो आत्मा का, जड़-चेतन का, अणु-परमाणु का जिस समय जो पार्ट होता है, वह उसको आकर्षित करता है। जीवात्मा में उसका संकल्प उठता है और वह वातावरण उसको आकर्षित करता है - इसी तरह जब इस धरा पर पार्ट बजाने का समय आता है तो आत्मा को ये विश्व-नाटक का पार्ट आकर्षित करता है और आत्मा परमधाम से इस धरा पर आ जाती है। आत्माओं को परमात्मा या कोई इस सृष्टि रंगमंच पर पार्ट बजाने के लिए भेजता नहीं है बल्कि ड्रामा अनुसार आत्मायें पंच तत्वों और इस धरा के मनुष्यों के आकर्षण से आकर्षित होकर यहाँ पार्ट बजाने आती हैं। इसी तरह ड्रामानुसार समय पर परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं और आत्मा को घर जाने की आकर्षण होती है, जिससे आत्मा यहाँ से उपराम हो जाती है और आत्मा पुन: वापस घर जाती है।

जैसे मनुष्यात्माओं का इस विश्व नाटक में पार्ट है ऐसे ही अन्य योनि की आत्माओं का भी पार्ट है और वे भी अपने पार्ट के अनुसार ऐसे ही पार्ट बजाती हैं। जैसे बाबा कहता है मच्छर उड़ा, कल्प बाद फिर ऐसे ही उड़ेगा।

जैसे मनुष्य आत्मायें परमधाम जाती हैं, वैसे ही अन्य योनि की आत्मायें भी परमधाम जाती हैं। जैसे मनुष्य-आत्माओं में विभिन्न धर्मों का अलग-अलग वर्ग है, वैसे ही अन्य योनि की आत्माओं का भी परमधाम में वर्ग होता है। भले बाबा ने कहा है कि तुमको इस विषय में जाने की दरकार नहीं, तुम अपनी आत्मा को पावन बनाने का पुरुषार्थ करो परन्तु देश-काल-परिस्थिति को देखते हुए विचार करते हैं तो विवेक कहता है कि वे भी आत्मायें हैं तो

उनको भी अवश्य परमधाम जाना ही है। बाबा ने भी कहा है कि परमधाम सभी आत्माओं का घर है, इससे स्पष्ट है कि परमधाम घर में सभी आत्मायें अवश्य जायेंगी, भले ही वे किसी योनि की क्यों न हों।

विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार मनुष्य के द्वारा किसी भी योनि की आत्मा को उसके अच्छे-बुरे कर्म से जो सुख या दुख मिलता है, उसके परिणाम स्वरूप उस सुख या दुख से प्रभावित होकर उन आत्माओं में जो भी दुआ या श्राप की भावना जाने-अन्जाने पैदा होती है, वह मनुष्य को अवश्य प्रभावित करती है।

"सतयुग-त्रेता में मेरा पार्ट ही नहीं है। ड्रामा में नूँध ही ऐसी है। सृष्टि ड्रामा अनुसार चलती है। मेरा भी ड्रामा अनुसार पार्ट नूँधा हुआ है। मैं ड्रामा के बन्धन में बाँधा हुआ हूँ। सतयुग-त्रेता में मेरा पार्ट ही नहीं है। जैसे क्राइस्ट-बुद्ध आदि का सतयुग-त्रेता में पार्ट नहीं है। इन सभी की आत्मायें मुक्तिधाम में रहती हैं। ऐसे नहीं कि देवी-देवता धर्म के भी सभी उसी समय आ जाते हैं। 33 करोड़ ही सतयुग में थोड़ेही आ जाते हैं।"

सा.बाबा 1.6.73 रिवा.

"वहाँ शान्तिधाम में जब तुम रहते हो तो वहाँ तुम्हें पता नहीं पड़ता कि हमने 84 का पार्ट बजाया है, फिर जाना है। कुछ भी पता नहीं रहता है। वहाँ तुम आत्मायें शान्त में रहती हो। पीछे पार्ट इमर्ज होता। वहाँ कुछ भी पता नहीं रहता। ... प्रेरणा की कोई बात नहीं। सृष्टि तो रची हुई थी ना। इतना समय कोई के ख्याल में नहीं आयेगा कि जाना है, सृष्टि रचनी है। जिस समय रचनी है, उस समय ड्रामा में पार्ट इमर्ज हो जाता है और एक्ट में आता है।"

सा.बाबा 21.2.72 रिवा.

"जिन बच्चों को बाप पहले-पहले मिलते हैं, फिर उन्होंको ही पहले-पहले सतयुग में आना है। ... झाड़ की उत्पत्ति, पालना और विनाश कैसे होता है, वह नॉलेज बीज में ही होगी। ... अभी

है संगमयुग, अभी पुरानी दुनिया का विनाश और नई दुनिया की स्थापना होती है।"

सा.बाबा 22.02.06 रिवा.

विश्व-नाटक और सूर्य, चांद, तारे

बाबा ने बताया है - ये सूर्य, चांद और तारे इस विश्व-नाटक को, जो इस भूमण्डल पर चलता है, इसको प्रकाशित करने वाली बत्तियाँ हैं और ये सब आकाश तत्व में स्थित हैं। सूक्ष्म वतन और मूल वतन में इनकी गम नहीं है क्योंकि वहाँ न कोई नाटक चलता है और न ही रात-दिन होते हैं तथा न ही इनकी वहाँ कोई आवश्यकता है। इनका राज़ भी बाबा ने अभी ही बताया है।

बाबा ने ये भी बताया है कि इस विश्व-नाटक में स्थूल सूर्य, चांद और तारों तथा ज्ञान-सूर्य, ज्ञान-चन्द्रमा और ज्ञान लकी सितारों का आपस में घनिष्ट सम्बन्ध है। दोनों का एक-दूसरे पर क्या प्रभाव होता है, उसका राज़ भी बाबा ने बताया है।

"धरती के सितारे तुम बच्चे हो। आसमान के सितारे जड़ हैं, तुम चेतन्य हो। ... पार्ट बजाते-बजाते तुम्हारी चमक डल हो जाती है। ... अब फिर बाप द्वारा ताकत भरते हो। तुम अपनी बैटरी चार्ज कर रहे हो।... जिसकी जितनी बैटरी चार्ज हुई होगी, उस अनुसार पद पायेंगे।"

सा.बाबा 29.12.04 रिवा.

"भारतवासी अपने धर्म को ड्रामा प्लेन अनुसार भूल गये हैं। ... यह भी खेल है। वह है हद का ड्रामा, यह है बेहद का ड्रामा। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी आदि से अन्त तक तुम अभी ही जानते हो। ... ये सूर्य-चाँद आदि रोशनी करने वाले हैं।"

सा.बाबा 30.3.06 रिवा.

विश्व-नाटक और सुखधाम, दुखधाम, शान्तिधाम

शान्तिधाम, सुखधाम और दुखधाम का यथार्थ ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है। शान्तिधाम है विश्व-नाटक के एक्टर्स आत्माओं की दुनिया, जहाँ आत्मायें साकार वतन के पार्ट से मुक्त स्थिति में रहती हैं। शान्तिधाम शान्ति का धाम है क्योंकि वहाँ कोई पार्ट नहीं होता है। उसको स्वीट-साइलेन्स होम भी कहा जाता है। कल्पान्त में फिर से सभी आत्मायें नम्बरवार उस धाम में जाती हैं। फिर नम्बरवार वहाँ से इस धरा पर पार्ट बजाने आती हैं। सुखधाम है जीवात्माओं की दुनिया, स्वर्ग, जहाँ जीवनमुक्त जीवात्मायें ही रहती हैं। वहाँ देहाभिमान अर्थात् पांच विकार अर्थात् रावण होता नही, इसलिए दुख-अशान्ति का नाम-निशान नहीं होता, इसलिए ही उसको सुखधाम कहा जाता है। सतयुग-त्रेता को सुखधाम कहा जाता है क्योंकि

वहाँ किसी भी आत्मा को कोई दुख नहीं होता है। द्वापर-कलियुग दुखधाम कहलाता है क्योंकि वहाँ आत्माओं को दुख-सुख दोनों की अनुभूति होती है परन्तु सुख की तुलना में दुख की अनुभूति अधिक होती है। भल द्वापर-कलियुग में भी नई आत्मायें, जो ऊपर से उस समय आती हैं, वे कुछ समय सुख में ही होती हैं। इसका यथार्थ ज्ञान भी अभी ही परमात्मा के द्वारा मिला है।

विश्व-नाटक में अभी का संगमयुग है दुखधाम-सुखधाम-शान्तिधाम का संगम, जहाँ तीनों का ज्ञान है और तीनों से श्रेष्ठ सुख की अनुभूति होती है, जिसको परमानन्द कहा जाता है।

"सतयुग में बैरिस्ट्री आदि तो पढ़ते नहीं हैं। वहाँ तो सिर्फ हुनर सीखना होता है। हुनर न सीखें तो मकान आदि कैसे बनें। एक-दो को हुनर सिखलाते हैं।"

सा.बाबा 15.11.04 रिवा.

"अभी तुम जानते हो बरोबर 5000 वर्ष पहले पावन दुनिया थी, यह भारत ही था, बाकी सब धर्म शान्ति में थे। हम भारतवासी सुखधाम में थे। ... वह है निराकारी दुनिया, जहाँ से हम आते हैं। बाकी सतयुग है सुखधाम, उसको शान्तिधाम नहीं कहें।"

सा.बाबा 13.03.06 रिवा.

विश्व-नाटक और पुरुषार्थ

विश्व-नाटक में पुरुषार्थ और प्रालब्ध का विधि-विधान अनादि-अविनाशी नूँधा हुआ है। बिना पुरुषार्थ के कोई प्रालब्ध नहीं मिल सकती। पुरुषार्थ आत्मा का स्वभाविक स्वभाव है, इसलिए कोई भी आत्मा पुरुषार्थ के बिना रह नहीं सकती, परन्तु हर आत्मा का कर्तव्य है कि वह अच्छे के लिए संकल्प रखकर पुरुषार्थ करे। ड्रामा हर आत्मा से उसके पार्ट अनुसार पुरुषार्थ अवश्य कराता है।

"संगमयुग पर पुरुषार्थ ही प्रालब्ध है" अर्थात् विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान बुद्धि में है और बुद्धियोग परमात्मा साथ है तो संगमयुग का पुरुषार्थ भी सतयुग की प्रालब्ध के अधिक सुखदायी है। परमानन्द संगमयुग की ही प्राप्ति है, सतयुग की नहीं, जो परमात्मा के साथ और विश्व-नाटक के ज्ञान से ही अनुभव होता है।

इस विश्व-नाटक में पुरुषार्थ आत्मा का स्वभाव है, उसके वर्तमान और भविष्य जीवन के सुख का आधार है। कोई भी आत्मा पुरुषार्थ अर्थात् कर्म के बिना इस सृष्टि रंगमंच पर रह नहीं सकती परन्तु जो कर्म आत्म-कल्याण के लिए किया जाता है, उसको आध्यात्मिक भाषा में पुरुषार्थ की संज्ञा दी जाती है।

विश्व-नाटक के ज्ञान का पुरुषार्थ में क्या महत्व है, इसका ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है। विश्व-नाटक का ज्ञान हमारे पुरुषार्थ में बहुत सहयोगी है। कुछ लोगों की यह भ्रान्ति है कि किसको ड्रामा राज़ बताने से या जानने से आत्मा पुरुषार्थहीन बन सकती है। परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि ये विश्व-नाटक ही पुरुषार्थ-प्रालब्ध-पुरुषार्थ पर आधारित एक घटना-चक्र है। विश्व-नाटक का ज्ञान तो हमको निर्संकल्प होकर बाबा को याद करने में बहुत सहयोगी बनता है। इसको जानकर यदि कोई आत्मा पुरुषार्थहीन हो जाये तो ये उसका पार्ट ही कहा जायेगा या उसका पुरुषार्थ का इतना ही पार्ट है। नहीं तो विचारणीय है कि यदि उसका ड्रामा में पुरुषार्थ का पार्ट हो तो वह उस पार्ट से पीछे कैसे हट सकता है, उससे मुक्त कैसे हो सकता है। विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानना और उस ज्ञान को धारण करना भी बहुत बड़ा पुरुषार्थ है। ड्रामा के ज्ञान से पुरुषार्थहीन वही बनता है, जो ड्रामा के यथार्थ राज़ को नहीं समझता है।

Q. पुरुषार्थ है क्या ?

देहाभिमान को छोड़कर देही-अभिमानी बनने का प्रयत्न ही पुरुषार्थ है, इसके लिए निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति का अभ्यास अति आवश्यक है। यथार्थ ज्ञान अर्थात् आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का ज्ञान पुरुषार्थ में परम सहयोगी है। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझना भी एक पुरुषार्थ है।

Q. क्या विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानने वाली आत्मा पुरुषार्थहीन हो सकती है ?

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को जानने वाली आत्मा कब पुरुषार्थहीन हो नहीं सकती।

"कहाँ-कहाँ पुरुषार्थ अच्छा करने के बाद प्रालब्ध को यहाँ ही भोगने की इच्छा रखते हैं।... प्रालब्ध की इच्छा को खत्म कर सिर्फ अच्छा पुरुषार्थ करो। ... सम्पूर्णता की समीपता की निशानी है सफलता।" अ.बापदादा 30.11.70

Q. ड्रामा पूर्व-निश्चित (Pre-ordained) होते हुए पुरुषार्थ का क्या महत्व है और अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है ? क्या विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को जानने, समझने और निश्चय करने वाला पुरुषार्थहीन हो सकता है ?

इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से आत्मा को अभूतपूर्व शान्ति, शक्ति और सुख की अनुभूति होती है, उस सुख को अनुभव करने और परमात्मा पिता की याद से आत्मा को जो अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति होती है तथा आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से आत्मा को जो शान्ति और सुख की प्राप्ति होती है, उस सुख के अनुभव को चिर-स्थाई बनाने के लिए पुरुषार्थ करना ही पड़ता है और करना ही होगा तथा ड्रामा करायेगा ही। उस सुख को अनुभव करने वाली आत्मा पुरुषार्थ के बिना रह नहीं सकती। परन्तु इस सत्य को भी भूलना नहीं चाहिए कि

सबका पुरुषार्थ एक समान नहीं हो सकता। विश्व-नाटक के यथार्थ राज़ को यथार्थ रीति जानने और अन्य आत्माओं को भी समझाने के लिए भी पुरुषार्थ तो करना ही पड़ेगा। विश्व-नाटक को समझने का प्रयत्न भी बहुत बड़ा पुरुषार्थ है।

"तुम बच्चों को अभी यह ज्ञान मिला है। तुम सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा है, वे ही अब पढ़ेंगे। जिसने जो पुरुषार्थ किया होगा, वही करने लगेंगे और वैसा ही पद भी पायेंगे। ... हर एक्टर को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है - किस समय किसको क्या पार्ट बजाना है। यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है, जिसका राज़ बाप समझाते हैं।"

सा.बाबा 29.12.04 रिवा.

"ड्रामा बिगर बाप कुछ भी नहीं कर सकते हैं। कई बच्चे कहते हैं - ड्रामा में होगा तो पुरुषार्थ कर लेंगे, वे कभी ऊंच पद पा नहीं सकते। ... कल्प पहले मुआफिक ड्रामा तुमको पुरुषार्थ कराता है। कोई ड्रामा पर ठहर जाते हैं कि जो ड्रामा में होगा। तो समझा जाता है कि इनकी तकदीर में नहीं है।"

सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

"ड्रामा की लकीर खींची हुई है, नई लकीर नहीं लगा रहे हो, जो सोचो कि पता नहीं सीधी होगी वा नहीं। कल्प-कल्प की बनी हुई प्रारब्ध को सिर्फ बनाते हो क्योंकि कर्मों के फल का हिसाब है। ... हर संकल्प में दृढ़ता माना तपस्या।"

अ.बापदादा 11.4.86

"अगर कोई रचना की नालेज में पूरा नॉलेजफुल नहीं हैं, कमजोर है तो स्थिति डगमग होती है। रचता की भी पूरी नॉलेज को जानना है। जानना सिर्फ सुनने को नहीं कहते। जानना अर्थात् मानना और चलना। इसको कहते है नॉलेजफुल।"

अ.बापदादा 20.8.71

"ड्रामा के अनुसार निश्चित होते हुए भी निमित्त बनी हुई आत्माओं को पुरुषार्थ करना ही पड़ता है। इसी प्रकार अब इस मुक्ति और जीवनमुक्ति के गेट्स खोलने की जिम्मेदारी बाप के साथ-साथ आप सबकी है। यह विनाश सर्व-आत्माओं की सर्व-मनोकामनाएं पूर्ण करने का निमित्त साधन है। यह साधन आपकी साधना द्वारा पूरा होगा।"

अ.बापदादा 3.2.74

"हम मम्मा-बाबा को पूरा फॉलो कर गद्दी पर बैठेंगे। यह शुभ कामना अच्छी है। फिर इतना पुरुषार्थ भी करना चाहिए। इस समय का पुरुषार्थ कल्प-कल्प का बन जायेगा, गॉरन्टी हो जायेगी। अब के पुरुषार्थ से पता पड़ेगा कि कल्प पहले भी ऐसे किया था और कल्प-कल्प ऐसा पुरुषार्थ चलेगा। ... होगा तो सब ड्रामा अनुसार। महल आदि जो कल्प पहले बनाये होंगे,

वही बनेंगे। यह ज्ञान दूसरा कोई समझ न सके परन्तु जिसकी तकदीर में है, उनकी बुद्धि में ही बैठता है। बच्चों को पुरुषार्थ करना है, पूरा योग में रहना है।"

सा.बाबा 12.12.03 रिवा.

Q. स्वर्ग अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुख हम आत्माओं का भाग्य है, ड्रामा में हमारा ही पार्ट है या हमारे पुरुषार्थ की बलिहारी है?

इस विश्व नाटक में ड्रामा का पार्ट और पुरुषार्थ का बड़ा सुन्दर और वण्डरफुल सन्तुलन है। दोनों साथ-साथ चलते हैं। अंशमात्र भी अन्तर नहीं हो सकता है। बिना पुरुषार्थ के प्रालब्ध नहीं हो सकती और बिना भाग्य अर्थात् ड्रामा के पार्ट के पुरुषार्थ नहीं हो सकता।

"बच्चों को यह याद रखना है, टाइम बहुत कम है। कल भी शरीर छूट सकता है। अन्त समय बाप की याद नहीं होगी तो ... ये गुप्त बातें हैं, नॉलेज भी गुप्त है। बाप यह भी जानते हैं - कल्प पहले जिसने जितना पुरुषार्थ किया है, वही कर रहे हैं। बाप भी ड्रामा अनुसार कल्प पहले मुआफिक समझाते रहते हैं, इसमें फर्क नहीं पड़ सकता है।"

सा.बाबा 10.6.04 रिवा.

"सब धर्म वाले शान्तिधाम जायेंगे। बुद्धि में यह ड्रामा का चक्र रखना है। ... कल्प पहले मुआफिक ड्रामा चलता रहता है। ड्रामा जरुर पुरुषार्थ करायेगा। ... पुरुषार्थ बिगर कभी कोई रह न सके।"

सा.बाबा 3.6.05 रिवा.

"कल्प पहले जिसने जितना खजाने में डाला है, उतना ही अब डालेंगे। न जास्ती और न कम डाल सकते हैं। यह बुद्धि में ज्ञान है, इसलिए फिक्र की कोई बात नहीं रहती। ... तुम दो पैसे इस राजधानी स्थापन करने में लगाते हो, वह भी जो करते हो हू-ब-हू कल्प पहले मिसल। ... कल्प पहले जिन्होंने वर्सा लिया होगा, वे ही अपने-अपने समय पर लेंगे। अदली-बदली कुछ हो नहीं सकता।"

सा.बाबा 31.3.05

"कल्प पहले जिन्होंने समझा होगा, उनकी बुद्धि में ही यह ज्ञान बैठेगा।... अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा झाड़, ड्रामा, 84 का चक्र आ गया है। अभी पुरुषार्थ करना है। वह भी ड्रामा अनुसार ही होता है। ऐसे भी नहीं कि ड्रामा में पुरुषार्थ करना होगा तो करेंगे, यह कहना रांग है।"

सा.बाबा 31.3.05

"ड्रामा बिगर बाप कुछ भी नहीं कर सकते हैं। कई बच्चे कहते हैं - ड्रामा में होगा तो पुरुषार्थ कर लेंगे, वे कभी ऊंच पद पा नहीं सकते। ... कल्प पहले मुआफिक ड्रामा तुमको पुरुषार्थ कराता है। कोई ड्रामा पर ठहर जाते हैं कि जो ड्रामा में होगा। तो समझा जाता है कि इनकी तकदीर में नहीं है।"

सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

"ड्रामा में जो कल्प पहले हुआ है, वह रिपीट होता है। ऐसे नहीं कि ड्रामा पर रुक जाना है। ... हर एक चीज के लिए मनुष्य का पुरुषार्थ तो चलता ही है। ... यह बेहद का पुरुषार्थ करना है बेहद के सुख के लिए।" सा.बाबा 15.1.05 रिवा.

"मेहनत बिगर फल थोड़ेही मिल सकता है। बाप तो पुरुषार्थ कराते रहते हैं। भल होता ड्रामा अनुसार ही है परन्तु पुरुषार्थ तो करना होता है। ... पुरुषार्थ तो तुमको करना ही है। पुरुषार्थ और प्रालब्ध होती है। मनुष्य पूछते हैं - पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध ? अब बड़ी तो प्रालब्ध है परन्तु पुरुषार्थ को बड़ा रखा जाता है, जिससे प्रालब्ध बनती है।"

सा.बाबा 6.8.04 रिवा.

"यह अविनाशी ड्रामा है, इसमें कुछ भी बदली नहीं हो सकता है।... तुम्हारा पार्ट तो बहुत ऊंच है। ... कल्प पहले भी तुमने पुरुषार्थ किया था, अपने पुरुषार्थ अनुसार प्रालब्ध पाई है। पुरुषार्थ बिगर तो प्रालब्ध पा न सके। पुरुषार्थ जरूर करना है। बाप कहते हैं - यह भी ड्रामा बना हुआ है। तुम्हारा भी पुरुषार्थ चल पड़ेगा।... बैठ जाते हैं, जो ड्रामा में होगा। ऐसा उल्टा ज्ञान बुद्धि में नहीं बिठाना है। यह भी माया विघ्न डालती है।"

सा.बाबा 22.6.04 रिवा.

"कई बच्चे तो अपने धन्धे आदि में फँसे रहते हैं, कुछ भी पुरुषार्थ ही नहीं करते। यह भी ड्रामा में नूँध है। कल्प पहले जिन्होंने जितना पुरुषार्थ किया है, उतना ही करेंगे।"

सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

"जो कल्प पहले हुआ है, वह होगा। ऐसे नहीं कि अभी 4 घण्टा याद करते हो तो दूसरे कल्प में जास्ती याद करेंगे। नहीं। शिक्षा दी जाती है। अभी अच्छा पुरुषार्थ करेंगे तो कल्प-कल्प अच्छा पुरुषार्थ होगा।" सा.बाबा 12.1.69 रात्रि क्लास

"बच्चे यह जानते हैं कि हमको ड्रामा पुरुषार्थ कराता है। हम जो पुरुषार्थ करते हैं, वह ड्रामा में नूँध है। पुरुषार्थ करना भी जरूर है। ड्रामा पर बैठ न जाना है। हर बात में पुरुषार्थ जरूर करना ही है।" सा.बाबा 15.8.71 रिवा.

Q. ड्रामा में सब अनादि-अविनाशी नूँध है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होती है, फिर पुरुषार्थ क्यों और क्या ?

यद्यपि ड्रामें अनादि-अविनाशी नूँध है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होती है परन्तु भविष्य में क्या होने वाला है, उसका हमको अभी पूर्ण ज्ञान नहीं है, इसलिए हर आत्मा को अपने तन-मन-धन की श्रेष्ठता के लिए शुभ संकल्प रखकर श्रेष्ठ पुरुषार्थ करना ही चाहिए और करेगा ही परन्तु ये भी भूलना नहीं चाहिए कि हर आत्मा को श्रेष्ठ पुरुषार्थ करते हुए भी अपने पूर्व अशुभ कर्मो के

फलस्वरूप कुछ न कुछ कर्मभोग भोगना ही पड़ेगा। ड्रामा ही सुख-दुख का बना हुआ है, इसलिए कलियुग के अन्त में कुछ न कुछ दुखदायी घटनायें न चाहते भी होंगी अवश्य। "समय तो समीप आना भी है और लाना भी है। ड्रामानुसार आना तो है ही लेकिन लाने वाले कौन हैं? आप ही हो ना!" अ.बापदादा 31.12.94

विश्व-नाटक और योग अर्थात् निर्संकल्प एवं निर्विकल्प समाधि

विश्व-नाटक और रुहानी ड्रिल

विश्व-नाटक का ज्ञान और योग का घनिष्ट सम्बन्ध है। योग के सफल अभ्यास के लिए आत्मा का संकल्पों और विकल्पों से मुक्त होना अति आवश्यक है। विश्व-नाटक के ज्ञान से आत्मा की निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति सहज हो जाती है क्योंकि विश्व-नाटक के विधि-विधान और हू-ब-हू पुनरावृत्ति के यथार्थ ज्ञान से आत्मा निर्भय, निश्चिन्त, निर्मान, राग-द्वेष से मुक्त हो जाती है, जो योग की सिद्धि के लिए परमावश्यक है। इसलिए योग के सफल अभ्यास के लिए विश्व-नाटक का ज्ञान बहुत सहायक और परमावश्यक है, इसीलिए ही बाबा आकर विश्व-नाटक का ज्ञान देते हैं।

योग के सफल अभ्यास के लिए विश्व-नाटक का ज्ञान अति आवश्यक है और योग के सफल अभ्यास से ही विश्व-नाटक के विधि-विधान समझ में आते हैं और उनकी धारणा होती है। इस प्रकार हम विचार करें तो दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। योग के लिए जैसे परमात्मा का महत्वपूर्ण स्थान है, वैसे ही विश्व-नाटक के ज्ञान का भी महत्व है। योग का अभ्यास और विश्व-नाटक का ज्ञान आध्यात्मिक जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं, जिन पर गाड़ी सफलतापूर्वक चलती है।

विश्व-नाटक का ज्ञान आत्मा को व्यर्थ चिन्तन से भी मुक्त कर समर्थ बनाता है, जो योग के सफल अभ्यास के लिए अति आवश्य है। इसीलिए परमात्मा सदा ही व्यर्थ से मुक्त हो समर्थ स्थिति के लिए प्रेरित करते हैं। साथ-साथ बाबा सेकेण्ड में देह से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के अभ्यास के लिए श्रीमत देते, जो विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान से ही सम्भव है। यदि कोई हठ से इस स्थिति में स्थित भी हो जाता है, तो भी वह स्थिति सदा काल के लिए नहीं रह सकती। सदा काल और सहज इस स्थिति में स्थित होने के लिए विश्व-नाटक का ज्ञान ही समर्थ है।

बाबा जो रुहानी ड्रिल सिखलाता है और बार-बार अभ्यास करने की श्रीमत देता है

कि यह ड्रिल बार-बार करते रहो। वास्तविकता को देखें तो विश्व-नाटक के ज्ञान की प्रैक्टिकल धारणा ही इस ड्रिल में प्रभावी भूमिका निभाती है अर्थात् विश्व-नाटक के ज्ञान की धारणा वाला ही इस ड्रिल को सफलतापूर्वक कर सकता है।

पतन्जलि योग में जिस अष्टांग योग अर्थात् यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का वर्णन है, उसकी सफलता में विश्व-नाटक का ज्ञान परमावश्यक है। निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि ही योग का अभीष्ट लक्ष्य है। जब आत्मा को विश्व-नाटक का ज्ञान होता है, उस पर यथार्थ निश्चय होता है तो ये समाधि सहज सिद्ध हो जाती है क्योंकि ये आत्मा के अनादि-आदि मूलभूत गुण हैं। व्यर्थ संकल्प इसमें मूल बाधा है, जिसका निराकरण विश्व-नाटक के ज्ञान से सहज हो जाता है। बिन्दु रूप में स्थित होकर बिन्दुरूप परमात्मा की याद ही निर्संकल्प स्थिति है और विश्व-नाटक को जानकर साक्षी स्थिति में स्थित होकर पार्ट बजाना ही निर्विकल्प स्थिति अर्थात निर्विकल्प समाधि है।

"यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। ड्रामानुसार उनको इस समय जाना ही था, इसमें कर ही क्या सकते हैं। जरा भी दुखी होने की बात नहीं। यह है योगबल की अवस्था। लॉ कहता है कि जरा भी धक्का नहीं आना चाहिए। सब एक्टर्स हैं, अपना-अपना पार्ट बजाते रहते हैं। ... ऐसी अवस्था वाले ही जाकर निर्मोही राजा बनते हैं।"

सा.बाबा 9.2.05 रिवा.

"बाप कहते हैं एक सेकेण्ड में सभी अभी-अभी विदेही बन सकते हो ? तो अभी एक सेकेण्ड में विदेही स्थिति में स्थित हो जाओ (ड्रिल), अच्छा अभी देह में आ जाओ। .. तो बार-बार यह अभ्यास करते रहो।" अव्यक्त बापदादा 12.12.98

"बापदादा ने जो आज देखा तो वर्तमान समय के अनुसार अपने ऊपर, हर कर्मेन्द्रियों के ऊपर कन्ट्रोल रखना अर्थात् स्वयं की स्वयं प्रति कन्ट्रोलिंग पॉवर, वह और ज्यादा चाहिए। .. स्टॉप तो स्टॉप हो जाये, यह है कर्मातीत अवस्था तक पहुँचने की विधि।"

अ.बापदादा 15.3.99

"ब्राह्मणों के कार्य में विघ्न न पड़ें तो लगन भी लग न सके। नहीं तो अलबेले हो जायें। इसलिए ड्रामा अनुसार लगन बढ़ाने के लिए विघ्न पड़ते हैं।" अ.बापदादा 21.2.83

"सदा निश्चयबुद्धि सभी बातों में निश्चिन्त रहते हैं। निश्चय की निशानी है निश्चिन्त। ... ज्ञान की शक्ति से सब जान गये। ज्ञान है - जो होगा वह अच्छे ते अच्छा होगा। तो सदा शुभचिन्तक, सदा चिन्ताओं से परे निश्चयबुद्धि, निश्चिन्त आत्मायें - यही तो जीवन है।"

अ.बापदादा 19.4.83 पार्टी 1

"अगर 15 दिन भी अटेन्शन रखने का पुरुषार्थ करोंगे तो यह अभ्यास आगे भी काम में आयेगा। ... अभी एक सेकेण्ड में अपने मन से सब संकल्प समाप्त कर एक सेकेण्ड में बाप के साथ परमधाम में ऊंचे ते ऊंचे स्थान, ऊंचे ते ऊंचे बाप, उनके साथ ऊंची स्थिति में बैठ जाओ और बाप समान मास्टर सर्वशक्तिवान बन विश्व की आत्माओं को सर्व शक्तियों की किरणें दो।" अ.बापदादा 14.3.06

"एकदम सब-कुछ भूल जाओ अथवा जो कुछ है काम में लगा दो, तब ही याद टिकेगी। शरीर भी याद न रहे। अशरीरी आये थे, अशरीरी होकर जाना है। ... ड्रामा को न जानने के कारण कुछ भी समझते नहीं हैं। ... ऐसे नहीं कहेंगे कि सतयुग में तुम देही-अभिमानी रहते हो। यह तो अब बाप सिखलाते हैं - ऐसे देही-अभिमानी बनो। ... ड्रामा कितना वण्डरफुल है, जिसको तुम ही नम्बरवार जानते हो।"

सा.बाबा 11.3.04 रिवा.

विश्व-नाटक और ब्राह्मण जीवन की सफलता / विश्व-नाटक के ज्ञान का जीवन परिवर्तन में महत्व

परमात्मा और परमात्मा से परमानन्द की प्राप्ति, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति इस ब्राह्मण जीवन की परम प्राप्ति है, जो सतयुग में नहीं हो सकती। आध्यात्मिक जीवन की सफलता का सारा आधार और मदार विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा और परमात्मा की याद पर ही है। इसके लिए ही परमात्मा ने इस विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है।

इस जीवन की प्राप्तियों को भूलकर भविष्य की आश लगाकर बैठना भी भूल है। बाबा ने कहा है - जो यहाँ स्वराज्य अधिकारी बनेंगा, वही विश्व का राज्य अधिकारी बनेगा; जो अभी आत्मिक सुख का अनुभव करेगा, वही भविष्य सतयुग में भौतिक सुखों का अनुभव करेगा; जो अभी ज्ञान-रतनों से सम्पन्न होगा, वही भविष्य में स्थूल धन से सम्पन्न होगा; जो अभी अपनी प्रकृति अर्थात् पंच तत्वों से बनी देह को दासी बनायेगा, उसकी ही सतयुग में प्रकृति दासी होगी आदि-आदि। इन सब बातों पर विचार करें तो इस सबके अभ्यास और अनुभूति के लिए निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति की परमावश्यकता है और उस स्थिति में स्थित होने के लिए विश्व-नाटक की उपर्युक्त बातों का ज्ञान और अनुभव अति आवश्यक है अर्थात् जब हमारी बुद्धि में विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति का ज्ञान, विश्व-नाटक की खेल-भावना का ज्ञान, विश्व-नाटक की अनादि-अविनाश्यता अर्थात् सर्वात्माओं के अनादि-अविनाशी पार्ट के नूँध का ज्ञान, विश्व-नाटक की सत्यता, न्यायपूर्णता, कल्याणकारिता का ज्ञान, कर्म

और फल के विधि-विधान का ज्ञान होगा तब ही हमारी स्थिति निर्संकल्प और निर्विकल्प आत्मिक स्वरूप में स्थित हो सकेगी।

इस अनुभूति के भी दो सिद्धान्त हैं। एक देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों से नष्टोमोहा और परमात्मा से अटूट प्यार, जिसके बाद विश्व-नाटक की सारी बातें बुद्धि में आ ही जाती हैं तथा दूसरा विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा, जिस धारणा के बाद परमात्मा के साथ अटूट प्यार स्वत: जुट जाता है क्योंकि ज्ञान और योग एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

विचारणीय विषय है कि सतयुग की आदि में लक्ष्मी-नारायण और सारी राजधानी सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी थी फिर भी विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण वे उतरती कला में आये और सारे विश्व की उतरती कला हुई। कल्प के इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर जब परमात्मा से विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान मिलता है, तब ही आत्माओं का परमात्मा से योग जुटता है और विश्व की चढ़ती कला होती है। इस सत्य से ही विश्व-नाटक के ज्ञान के महत्व और ब्राह्मण जीवन की सफलता के उसकी उपयोगिता का अनुमान लगा सकते हैं।

"ब्राह्मणों का मुख्य स्थान कौनसा है, जहाँ बुद्धि को सहज स्थिर कर सको। वह स्थान है - साक्षी दृष्टा। ड्रामा की ढाल व ड्रामा के पट्टे पर हर कर्म और संकल्प चलने के लिए यह साक्षी व दृष्टापन की अवस्था होनी चाहिए।"

19.4.73 अव्यक्त बापदादा

"रिचेस्ट बनने का साधन क्या है? .. सिर्फ छोटी सी बिन्दी .. आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा फुल स्टॉप लगाना, वह भी बिन्दी है। .. बिन्दी लगाना अर्थात् खजाना जमा होना।"

अव्यक्त बापदादा 30.3.99

"पॉवरफुल योग वाले के सामने मुश्किल हो ही नहीं सकती।... ब्राह्मण जीवन है मजे की जीवन, संगमयुग है मजे का युग, बोझ उठाने का युग नहीं है। बोझ उतारने का युग है।"

अ.बापदादा 30.11.99

"ड्रामा के रहस्य अनुसार आप ब्राह्मण जगे तो सब जगे। ब्राह्मण जगे तो दिन, रोशनी हो जाती है और ब्राह्मणों की ज्योति बुझी तो विश्व में अन्धकार, रात हो जाती है। ... इतनी जिम्मेवारी हर एक पर है।"

अ. बापदादा 2.1.82

"सदा अमृतवेले स्वयं को तीन बिन्दियों का तिलक देते हो?... जैसी स्मृति, वैसी स्थिति होती है। अगर स्मृति श्रेष्ठ है तो स्थिति भी श्रेष्ठ होगी। ... सिर्फ आत्मा की स्मृति नहीं लीकिन आत्मा के साथ बाप की स्मृति है ही है और बाप के साथ ड्रामा की स्मृति भी अति आवश्यक

है। अगर ड्रामा का ज्ञान नहीं है तो भी कर्म में नीचे-ऊपर होंगे। ... ड्रामा का ज्ञान है तो अचल-अडोल हैं, नहीं तो हलचल में आ जाते हैं।"

अ.बापदादा 9.12.93 पार्टी 3

विश्व-नाटक और आत्माओं एवं जड़ प्रकृति की चढ़ती कला एवं उतरती कला का विधि-विधान

(Upward and Downward Tendency of Souls and Matter)

इस विश्व में कोई भी चीज स्थिर नहीं है। हर वस्तु या व्यक्ति की हर क्षण उतरती कला है या चढ़ती कला अवश्य होती है। ऐसे ही आत्माओं और जड़ प्रकृति की भी गति-विधि है। संगमयुग पर जो आत्मायें परमात्मा को पहचान कर पुरुषार्थ में लग जाती, उनकी गति कलियुग में होते भी उत्थानोन्मुख हो जाती है और उनका प्रभाव जड़ प्रकृति पर भी पड़ता है। भगवानोवाच्य - जब आत्मायें पावन बनती हैं तो उनके लिए प्रकृति भी सतोप्रधान चाहिए। इसलिए जब आत्मायें पूर्ण पावन बनकर घर वापस जाती और फिर इस धरा पर आती हैं उनके लिए सतोप्रधान प्रकृति चाहिए, इसलिए प्रकृति की उत्थानोन्मुख स्थिति होती है और लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने तक प्रकृति में पूर्ण सतोप्रधानता आ जाती है क्योंकि विनाश के बाद ही प्रकृति की उत्थानोन्मुख स्थिति होती है। इसलिए संगमयुग का समय कलियुग और सतयुग दोनों ही तरफ गिना जाता है। ये विधि-विधान विश्व-नाटक में अनादि-अविनाशी नूँधा हुआ है।

ये विश्व-नाटक जड़ और चेतन के सहयोग से चलता है, इसलिए जड़ का चेतन पर और चेतन का जड़ प्रकृति पर साथ-साथ अनुरूप प्रभाव पड़ता है।

"ड्रामा प्लेन अनुसार तुम सब वर्सा लेकर फिर धीरे-धीरे सीढ़ी उतरते हो। ... भक्ति करते तुम सीढ़ी नीचे उतरते ही आये हो, ऊपर तो चढ़ नहीं सकते। लॉ नहीं कहता कोई बीच में सीढ़ी चढ़ सके। ... अभी तुम बच्चों ने ड्रामा को समझ लिया है।"

सा.बाबा 25.4.06 रिवा.

विश्व-नाटक और हमारा कर्तव्य

बाबा ने अभी विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है, उसकी धारणा करना हमारा परम कर्तव्य है और धारणा करके साक्षी होकर इसे देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाना हमारा कर्तव्य है। किसी भी प्रिय-अप्रिय घटना को देखते हुए भी अंशमात्र भी हमारे मन-बुद्धि में क्यों,

क्या, कैसे, ईर्ष्या-घृणा, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति का संकल्प उत्पन्न नहीं होना चाहिए क्योंकि ये सब घटनायें ड्रामा में अविनाशी नूँधी हुई हैं परन्तु आत्मिक स्वरूप इन सबसे मुक्त है। ड्रामा के यथार्थ ज्ञान की पूर्ण धारणा, आत्मा की कर्मातीत स्थिति और विनाश तीनों साथ-साथ होनी हैं, इसलिए अभी कोई यह नहीं कह सकता कि हमने ड्रामा के ज्ञान को पूर्ण रीति धारण कर लिया है या हमारे में पूरा ज्ञान है। यदि कोई ऐसा कहता है तो ये भी ऐसे ही होगा, जैसे कोई बच्चा कहता कि हम तो निरन्तर योग में रहते हैं और बाबा उसके लिए कहता है - उसने योग का अर्थ ही नहीं समझा है। योग में तो सुनना-देखना भी बन्द हो जाता है। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान वाला न इस जीवन से ऊबेगा और न ही इसमें उसका लगाव होगा। जब तक अंशमात्र भी ये बातें हैं तब तक विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की कमी है और हमको उस कमी को पूरा करने के लिए विश्व-नाटक के गुण-धर्मों का चिन्तन कर, उनको समझने और धारण करने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

बाबा से विश्व-नाटक का ज्ञान पाकर हमको अपने वर्तमान कर्तव्य का भी ज्ञान हुआ है। ड्रामा की अनादि-अविनाशी नूँध के अनुसार हमारा कर्तव्य है - जैसे परमात्मा इसका साक्षी-दृष्टा है, वैसे हम भी बनें, बनने का पुरुषार्थ करें और इसका राज़ सर्वात्माओं को भी बतायें, जिससे वे भी इसका सुख अनुभव कर सकें अर्थात् हम भी परमात्मा के समान साक्षी-दृष्टा होकर इसे देखें और ट्रस्टी होकर पार्ट बजायें।

विश्व-नाटक के राज़ को देखें तो वर्तमान समय की छत्रछाया हमारे ऊपर है और बाप का वरदानी हाथ हमारे ऊपर है, इसलिए हमको किसी प्रकार के व्यर्थ चिन्तन में न जाकर आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमशान्ति, परम आनन्द और विश्व-नाटक के परम सुख को अनुभव करना और कराना हमारा परम कर्तव्य है।

विश्व कल्याण के लिए क्या हो या क्या न हो - ये निर्णय करने का अधिकार हमको नहीं है। ये सब ड्रामा में पूर्व निश्चित है। हमारा कर्तव्य इतना ही है कि हम निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प, निर्विकारी, निरासक्त होकर अपने मूल स्वरूप में स्थित हो शान्ति का अनुभव करें और बाप के साथ सर्व आत्माओं के कल्याण की भावना और कामना रखें और साक्षी होकर विश्व नाटक को देखते हुए सच्चे सुख का अनुभव करें। यही ज्ञानी आत्मा के जीवन का परम कर्तव्य है। जब हमारी सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना होगी तो उनकी हमारे प्रति भी शुभ भावना अवश्य होगी।

निराकार और साकार बाप दोनों को सामने रखने से हम इस शरीर से न्यारे होने की प्रक्रिया सहज सीख सकते हैं क्योंकि दोनों ही देह में प्रवेश और देह से न्यारे होकर कर्म करने

और साक्षी होकर इस विश्व नाटक को देखने के प्रतिरूप हैं। हम भी बाप समान देह से न्यारा होकर इस विश्व-नाटक को देखें और इसका सुख लें।

विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है। किसी भी आत्मा के कल्प2 के पार्ट में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता है परन्तु ये ड्रामा हर क्षण परिवर्तनशील है और हर आत्मा का पार्ट और इस नाटक का हर दृश्य हर क्षण परिवर्तन होता है। परन्तु ड्रामा में कर्म प्रधान है, ड्रामा का पार्ट, कर्म और फल का अद्वितीय सन्तुलन है। इसलिए पुरुषार्थ करना हर आत्मा का परम कर्तव्य है।

अब प्रश्न उठता है कि जब सुख-दुख दोनों का समान महत्व है और सुख-दुख दोनों का पार्ट चलना ही है तो हमारा कर्तव्य क्या है? यद्यपि समय अनुसार सुख और दुख का पार्ट चलना ही है परन्तु संगमयुग पर जिन आत्माओं को परमात्मा द्वारा इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान मिला है, उनका ये परम कर्तव्य है कि वे इसको यथार्थ रीति जानकर भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता में समय न लगाकर वर्तमान समय के इस जीवन के परमानन्द का अनुभव करें, जो त्रिलोक्य और त्रिकाल में कहाँ और कब भी सम्भव नहीं है और इस सत्य का ज्ञान अपने अन्य आत्मिक भाइयों को भी अवश्य दें, जिससे वे भी इसके परमानन्द को अनुभव कर सकें और भविष्य सुख के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकें।

"अभी तुम बच्चों की बुद्धि में ड्रामा का सारा राज़ बैठा हुआ है। ... बाप का है ही एक मन्त्र। बाप ने भारत में ही आकर ये मन्त्र दिया था, जिससे तुम देवी-देवता बने थे। ... कोई कहते बाबा पहले क्यों नहीं ये राज़ सुनाया। अरे, पहले कैसे सुनायेंगे। कहानी शुरू से लेकर नम्बरवार सुनायेंगे ना। ... सभी आत्माओं का पार्ट ड्रामा में नूँधा हुआ है। ... यह सारा ड्रामा में नूँध है, तुमको सिर्फ पैगाम पहुँचाना है।"

सा.बाबा 31.5.04 रिवा.

"सेवा बढ़ना ड्रामा की भावी बनी हुई है ... आप सबको निमित्त बन करनी ही है। यह भावी कोई बदल नहीं सकता। ... जैसे याद ब्राह्मण जीवन की खुराक है, ऐसे सेवा भी जीवन की खुराक है। ... लेकिन बैलेन्स जरूरी है। ... न बोझ हो और न अलबेलापन हो, इसको कहते हैं बैलेन्स।"

अ.बापदादा 20.2.88

"आगे जब वृद्धि होगी तो स्वत: ही विधि भी परिवर्तन होती रहेगी। ... वृद्धि होनी ही है और परिवर्तन भी होना ही है। ... सभी ड्रामा के हर दृश्य को देख-देख हर्षित रहने वाले हो ना! वा कभी अच्छे-बुरे के आकर्षण में आ जाते हो? न अच्छे में और न बुरे में, किसी में भी आकर्षित नहीं होना है, सदैव हर्षित रहना है।"

अ.बापदादा 11.11.89

"इस ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का राज़ अब बुद्धि में बैठा है। यह ड्रामा है ना, यह मनुष्यों को जरूर जानना है क्योंकि हम एक्टर्स हैं। ... मूल वतन से हम आत्मायें आई हैं, इस टॉकीधाम में शरीर धारण कर पार्ट बजाने।"

सा.बाबा 2.8.06 रिवा.

"अब इसमें नाराज़ होने की तो बात ही नहीं है।... तुम भी ड्रामा के वश हो, ड्रामानुसार बाप भी आया हुआ है। ... यह बेहद का नाटक है, जिसको अच्छी रीति समझना है।... यह ज्ञान तुमको वहाँ नहीं रहेगा।" सा.बाबा 3.8.06 रिवा.

विश्व-नाटक और निश्चयबुद्धि विजयन्ति

विश्व-नाटक के गुण-धर्मों के यथार्थ ज्ञान पर निश्चयबुद्धि आत्मा की विजय निश्चित होती है परन्तु निश्चय की परीक्षा अवश्य होती है। इस सत्य को भी भूलना नहीं चाहिए। यदि परमात्मा, ड्रामा और स्व पर यथार्थ निश्चय नहीं तो समर्पित जीवन दासतामय हो जायेगा अर्थात् वह सदा ही भयभीत रहेगा और जिसको इन पर निश्चय होगा, वह सदा स्वमान से निर्भय-निश्चिनत होकर जियेगा और सेवा करेगा।

"निश्चय की पहचान ऐसे परिस्थिति के समय पर ही होती है। परिस्थिति सामने आये और परिस्थिति के समय निश्चय की स्थिति स्थिर रहे, तब कहेंगे निश्चयबुद्धि विजयी। तीनों में निश्चय पक्का चाहिए। बाप में, अपने आप में और ड्रामा में। ... विजय का तिलक सदा मस्तक पर लगा हुआ है।" अ.बापदादा 13.10.92 पार्टी 4

"बाप भी जानते हैं कि हर कल्प आप बच्चों ने यह बाप की आशा पूर्ण कर विजय माला का यादगार कायम किया है और अब भी करना ही है। बना हुआ ड्रामा सिर्फ रिपीट करना है। बापदादा तो बच्चों का सदा साथी है ही, एवर-रेडी बनाने वाला है और बनना ही है।"

अ.बापदादा का सन्देश 26.5.05 दादी गुल्जार के द्वारा

"बाप आकर सारे सृष्टि चक्र की नॉलेज देते हैं। ... यह चक्र फिरता रहता है। ये बड़ी सूक्ष्म बातें हैं समझने की। यह बना-बनाया खेल है। ... देही-अभिमानी बनें तब खुशी का पारा चढ़े। ... बाबा से कोई बात पूछते हैं तो बाबा कहते हैं - ड्रामा में जो कुछ बताने का है, वह बता देते हैं। ड्रामा अनुसार जो उत्तर मिलना था सो मिल गया, बस उस पर चल पड़ना है।"

सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

"वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्राफी रिपीट होती है, यह निश्चय तो पक्का होना चाहिए। ... यह खेल बना हुआ है पूज्य और पुजारी का।" सा.बाबा 27.5.04 रिवा.

"यहाँ भी बाबा ने 15 दिन का प्रोग्राम दिया था ढोढा और छाछ खाने का। और कुछ भी नहीं बनता था। बीमार आदि सबके लिए यही बनता था। किसको कुछ भी हुआ नहीं, और ही बीमार बच्चे भी तन्दुरुस्त हो गये। देखते थे आसक्ति टूटी हुई है! यह नहीं होना चाहिए या यह होना चाहिए। चाहना को चुहरा कहा जाता है। यहाँ तो बाप कहते हैं - मांगने से मरना भला। बाप ही जानते हैं - बच्चों को क्या देना है। जो कुछ देना होगा, वह खुद ही देंगे। यह सब ड्रामा बना हुआ है।" सा.बाबा 8.5.04 रिवा.

"जो पक्के निश्चयबुद्धि हैं, उनको कब कोई संशय नहीं उठ सकता है। ... जो बाबा में नॉलेज है, वह तुम बच्चों में भी है। जब ऊपर में जाते हो तो नॉलेज का पार्ट भी पूरा हो जाता है। फिर जो पार्ट मिला है, वह सुख का पार्ट बजाते हो और यह नॉलेज भूल जाती है। ... यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती रहती है। कल्प पहले भी ऐसे हुआ था, जो अब फिर रिपीट हो रहा है। यह रिपीटीशन का राज़ भी बाप ही समझाते हैं।"

सा.बाबा 5.5.04 रिवा.

"यह पढ़ाई वण्डरफुल है। ड्रामा का आदि-मध्य-अन्त का राज़ बाप के सिवाए कोई बता न सके।... यह तो निश्चय रहना चाहिए कि बरोबार बाप के बिगर कोई इतनी नॉलेज दे नहीं सकता।... ड्रामा तो अनादि है परन्तु एक्टिविटीज जो ड्रामा में होती हैं, उनकी तिथि-तारीख तो होनी चाहिए।... क्या तुम उनको थैंक्स देंगे। नहीं, बाबा कहते हैं यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। मैं कोई नई बात नहीं करता हूँ, ड्रामा अनुसार तुमको पढ़ाता हूँ।"

सा.बाबा 30.4.04 रिवा.

"यह जो बेहद की लीला रूपी नाटक है, उनकी लीला के आदि-मध्य-अन्त को तुम बच्चे जानते हो। ... मनुष्य उन एक्टर्स को देखने के लिए उनके पिछाड़ी भागते हैं। तुम समझते हो कि यह बेहद का ड्रामा है। ... ड्रामा देखने जो पहले जायेंगे तो जरूर आदि-मध्य-अन्त सारा देखेंगे और बुद्धि में रहेगा कि हमने यह-यह देखा है। वह तो हुआ हद का नाटक, तुम तो बेहद के नाटक को जान गये हो। सतयुग में प्रालब्ध जाकर पायेंगे, फिर यह नाटक भूल जायेगा। फिर समय पर यह ज्ञान मिलेगा। ... संशय की कोई बात नहीं। यह कैसे हो सकता है? अरे तुम साक्षी होकर देखो। ड्रामा में जो नूँध है, सो पार्ट चलना है। ड्रामा की पट्टी से गिर पड़ते हैं। जिनको समझ में आता है, वे नहीं गिरते हैं। ... यह सब ड्रामा का खेल समझने का है, इसमें संशय की बात नहीं हो सकती है।" सा.बाबा 14.8.02 रिवा.

"तुम जो कुछ सुनते आये हो, वह भी ड्रामा में नूँध है। जो पास्ट हुआ वह भी ड्रामा में था। निश्चय बुद्धि कहेंगे - यह ठीक है। संशय बुद्धि कहेंगे - यह ठीक नहीं है। ऐसा क्यों हुआ, यह

होता है। अरे ड्रामा है ना। जो जिसने किया, जो पास हुआ, ड्रामा। बहुतों को अनेक प्रकार के संकल्प उठते हैं, ड्रामा को ही झूठा बना देते हैं।"

सा. बाबा 3.3.69 रिवा.

"परमात्मा की बात तो आंख बन्द कर माननी चाहिए, भल उसमें नुकसान हो वा फायदा हो। परन्तु ऐसे निश्चयबुद्धि हैं नहीं। ... हमेशा समझो कि शिवबाबा ही कहते हैं, रेस्पान्सिबुल शिवबाबा है। ... ड्रामा में नूँधा हुआ है, इस निश्चय वाला कभी हिलेगा नहीं।"

सा.बाबा 8.4.06 रिवा.

"निश्चय की निशानी है सहज विजय। अगर मेहनत लगती है तो समझो कुछ मिक्स है। ... निश्चयबुद्धि की दूसरी निशानी है - निश्चिन्त। ... निश्चयबुद्धि निश्चिन्त आत्मा का स्लोगन है - अच्छा हुआ, अच्छा है और अच्छा ही होना है।"

अ.बापदादा 9.12.93 पार्टी 5

"पुरुषार्थ करना भी ड्रामा में नूँध है और सफलता प्राप्त होना भी निश्चित है। सिर्फ निश्चय को देखने के लिए बीच-बीच में हलचल होती है। ... यज्ञ की हिस्ट्री को देखो - आदि से सेवा की हिस्ट्री में जब भी कोई हलचल हुई है तो सफलता योग के प्रयोग की विशेषता से ही हुई है।"

अ.बापदादा 9.3.94 दादियों से

"जो अच्छे निश्चयबुद्धि हैं, वे बाप की याद कभी भूलते नहीं हैं।... ड्रामा में ऐसी युक्ति रची हुई है, जो श्रीमत पर चलते हैं, वे ही ऊंच पद पा सकते हैं। बाकी सब सजायें खाकर शान्तिधाम अथवा पावन दुनिया में जायेंगे। ... ड्रामा अनुसार फिर भी गीता के भगवान का नाम ऐसे ही बदलना है।"

सा.बाबा 16.6.06 रिवा.

"ब्राह्मण जीवन में सिर्फ जानना नहीं है कि 'मैं यह हूँ और बाप यह है", लेकिन जानने का अर्थ है जो जानते हैं, वह मानना और चलना। ... निश्चयबुद्धि विजयी ... चारो प्रकार का निश्चय अर्थात् बाप में, आप में, ड्रामा में और ब्राह्मण परिवार में निश्चय।"

अ.बापदादा 9.1.95

विश्व-नाटक और "नथिंग न्यू"

विश्व-नाटक और शुभ-चिन्तन एवं व्यर्थ चिन्तन

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान वाले के लिए विश्व की कोई भी घटना नई नहीं है, सब कल्प पहले वाली हैं और सब कल्याणकारी हैं, इसलिए उसको किसी भी घटना को देखते हुए प्रश्न या आश्चर्य नहीं होना है। अंशमात्र भी प्रश्न या आश्चर्य का संकल्प न आना ही "नथिंग न्यू"

की स्थिति है, विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की पहचान है। परन्तु ये बात भी विचारणीय सत्य यह है कि कल्प के अन्त में आत्मा विकारों के वशीभूत इतनी कमजोर हो गई है कि ड्रामा का ज्ञान बुद्धि में होते हुए भी व्यर्थ चिन्तन आत्मा को छोड़ता नहीं है और नथिंग न्यू की स्थिति में स्थित होकर विश्व-नाटक का आनन्द नहीं अनुभव होने देता है। इस व्यर्थ चिन्तन से मुक्त हो विश्व-नाटक का यथार्थ आनन्द अनुभव करने के लिए विश्व-नाटक के इस सत्य का यथार्थ ज्ञान, उसका अनुभव और उसकी धारणा अति आवश्यक है और उसके लिए विश्व-नाटक के ज्ञान का गहराई से चिन्तन करना ही होगा।

हर वर्तमान घटना भविष्य घटना का आधार है और ड्रामा के सफल मंचन के लिए अति आवश्यक है, इसलिए उसको टाला नहीं जा सकता है। परमात्मा भी उसके लिए कुछ नहीं कर सकता है क्योंकि वह ड्रामा का पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए वह ड्रामा का साक्षी-दृष्टा है। वही आकर इस विश्व-नाटक का ज्ञान देता है और आत्माओं को व्यर्थ चिन्तन से मुक्त कर, चढ़ती कला का रास्ता दिखाता है। इसलिए किसी भी घटना के लिए चिन्तन करना, दुखी होना व्यर्थ है।

"विघ्न आना आवश्यक है और जितना विघ्न आना आवश्यक है अगर उतना यह बुद्वि में रहेगा तो उतना ही ऐसा महारथी हर्षित रहेगा। 'नर्थिंग न्यू" यह है फाइनल स्टेज।"

अ.बापदादा 15.4.74

"सभी तरफ अति दिखाई पड़ रही है। अन्त की निशानी अति है। तो जैसे प्रकृति समाप्ति की तरफ अति में जा रही है वैसे ही सम्पन्न बनने वाली आत्माओं के सामने अब परीक्षायें व विघ्न भी अति के रुप में आयेंगे।" अ.बापदादा 15.4.74

"चित्र आदि दिव्य दृष्टि से निकाले हुए हैं फिर बाप खुद ही आकर करेक्ट करते हैं। यह भी बाप ने समझाया है कि जो सेकेण्ड पास होता है, उसको ड्रामा समझते चलो, मूंझो मत। पास्ट हुआ .. टाइम पास्ट हो गया फिर वह बातें याद क्यों करते हो। ड्रामा को भूल जाते हो। बीती को चितवो नहीं, आगे की कोई आश न रखो। बाप को याद करने से तुम्हारी सभी आशायें पूरी हो जायेंगी।" सा.बाबा 15.11.69 रिवा.

व्यर्थ चिन्तन का प्रवाह चाहे भूतकाल का चिन्तन हो या भविष्य के सम्बन्ध में चिन्तन हो, उसको बन्द करके स्व-चिन्तन, शुभ-चिन्तन या आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुखद अनुभव करने के लिए ड्रामा के इस सत्य का यथार्थ ज्ञान परम प्रभावशाली है।

"नथिंग न्यू, होना ही है ... मास्टर सर्वशक्तिमान कभी घबराते नहीं हैं ... बाप के साथ हैं तो

विजयी बनने की गारन्टी है।" अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 1

"अचल-अडोल स्थित के लिए कुछ भी हो जाये परन्तु नथिंग न्यू। कोई नई बात नहीं है। ... ब्राह्मण जीवन में बुरा होता ही नहीं है। ... इसलिए ही तो ब्राह्मण जीवन मौजों की जीवन है।"

अ.बापदादा 31.12.90 पार्टी 1

"ड्रामा में हर एक के पुनर्जन्म का चित्र बिल्कुल न्यारा होता है। कुदरत का ड्रामा है। बनी-बनाई बन रही ... हू-ब-हू रिपीट होता है ना। ... अब बाप कहते हैं - बीती को चितवो नहीं।"

सा.बाबा 24.4.04 रिवा.

"कब कोई मरे हुए से जिन्दा हो जाता है तो यह भी भावी ही कहेंगे। वह भी ड्रामा में नूँध है। आत्मा कहाँ छिप जाती है, फिर जिन्दा हो जाता है।... बाबा ने मुरली जो चलाई, एक्यूरेट कल्प-कल्प ऐसे ही चलाई होगी। ड्रामा में नूँध है। प्रश्न नहीं उठ सकता कि ऐसे क्यों ? ड्रामा अनुसार जो समझाना था, वह समझाया और समझाता रहता हूँ।"

सा.बाबा 27.4.04 रिवा.

"बाप सब आपही देते रहते हैं। मांगने से मरना भला। कोई भी चीज मांगनी नहीं होती है।... एक तो बाप कहते हैं - बीती को कभी चितवो नहीं, ड्रामा में जो कुछ हुआ पास्ट हो गया, उसका विचार नहीं करो।... अन्दर में सिर्फ बेहद के बाप को याद करना है। दूसरा डायरेक्शन क्या देते हैं ? 84 के चक्र को याद करो क्योंकि तुमको देवता बनना है।"

सा.बाबा 3.4.04 रिवा.

"बाप कहते हैं बच्चे, बीती को चितवो नहीं। आगे के लिए खबरदार रहना है, जो कोई भी भूल न हो। अभूल बनना है। बीती सो बीती। पछताने से कुछ भी होता नहीं। कहते हैं बाबा भूल हो गई, आप आशीर्वाद करो। बाप कहते हैं - मैं आशीर्वाद नहीं करने आया हूँ। मैं तो सिर्फ रास्ता बताता हूँ, पुरुषार्थ तुमको करना है।"

सा.बाबा 23.6.69 रिवा.

"बापदादा ने इस वर्ष में पूरा रात को दिन बनाकर सेवा दे दी।... इस वर्ष आने की नूँध नहीं है। सकाश तो बाप की सदा ही साथ है। जो ड्रामा की नूँध है, वह बता दी। ड्रामा की मन्जूरी को मन्जूर करना ही पड़ता है।" अ.बापदादा 31.3.88

"सारा दिन यह ज्ञान बुद्धि में सुमिरण करना है। ... अब नाटक पूरा होता है, अब फिर घर वापस चलना है ... अपनी कमाई जमा करते रहो और दूसरों को भी निमन्त्रण दे बाप का रास्ता बताते रहो। तुम बच्चों को भी कल्याणकारी बनना है।"

सा.बाबा 8.8.06 रिवा.

"असुल में हम आत्मायें हैं, फिर लौकिक सम्बन्ध में आकर सुख का और दुख का जीवन बिताया। अभी तुम आत्मायें त्रिकालदर्शी बनी हो। ... अभी सारे ड्रामा की नॉलेज तुम्हारी बुद्धि में है। ... तुम बच्चों को सारा दिन इन्हीं ख्यालातों में रहना चाहिए।"

सा.बाबा 25.7.06 रिवा.

विश्व-नाटक और भगवान एवं भाग्य

विश्व-नाटक में आत्माओं का पार्ट, भाग्य और भगवान का सहयोग तीनों का बड़ा अच्छा सन्तुलन है। भगवान भाग्य विधाता है परन्तु वह भाग्य बनाता है, वह ड्रामा अनुसार अर्थात् ड्रामा में आत्माओं का भाग्य बनाने का पार्ट उनको मिला हुआ है।

"बाप भारत में ही आते हैं। यह भी ड्रामा अनादि बना हुआ है। कब बना, कब पूरा होगा - यह प्रश्न नहीं उठ सकता है। ... तुम अपने को आपेही राजतिलक देते हो। ... मन्मनाभव, जिससे अपने को आपही राजतिलक मिलता है, बाप नहीं देते हैं।"

सा.बाबा 14.1.05 रिवा.

"किसकी तकदीर में होता है तो सरकमस्टान्सेस भी ऐसे बनते हैं, जो लिफ्ट का रूप बन जाते हैं। यहाँ भी जिनके कल्प पहले की तकदीर वा ड्रामा की नूँध है, भल अपना भी पुरुषार्थ रहता है लेकिन साथ-साथ यह लिफ्ट भी दैवी परिवार द्वारा मिलती है और बापदादा द्वारा भी गिफ्ट मिलती है।" अ.बापदादा 29.6.71

"ऊंच ते ऊंच कर्तव्य बाप का है। ऐसे नहीं कि ईश्वर तो समर्थ है तो जो चाहे सो करे। नहीं, यह तो ड्रामा अनादि बना हुआ है। सब कुछ ड्रामा अनुसार ही चलता है। लड़ाई आदि में कितने मरते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। इसमें भगवान क्या कर सकते हैं। ... इसमें बचाने आदि की तो बात ही नहीं है।" सा.बाबा 12.1.05 रिवा.

"बाप बुद्धिमानों की बुद्धि है तो क्या किसी अरब-खरबपति की बुद्धि को नहीं पलटा सकता लेकिन ड्रामा का बहुत कल्याणकारी नियम बना हुआ है कि परमात्म कार्य में फुरी-फुरी से तलाव होना है, अनेक आत्माओं का भविश्य बनना है।"

अ.बापदादा 16.12.2000

"भगवान के नाम, रूप, देश, काल को भूलने के कारण भगवान से किसका भी इतना लव नहीं रहता है। बाबा किसको दोष नहीं देते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है।... हर एक की कल्प पहले वाली तकदीर का अभी साक्षात्कार हो रहा है। ... अन्त तक हर एक की तकदीर को समझ जायेंगे, फिर कहेंगे कल्प-कल्प ऐसे ही हर एक की तकदीर रहेगी।"

सा.बाबा 7.4.06 रिवा.

"जो जितना आवश्यकता के समय कार्य में आये हैं, उनको विशेष वरदान मिला हुआ है। ... जो जितना आवश्यकता के समय सहयोगी बने हैं - चाहे जीवन से, चाहे सेवा से ... उनको ड्रामा अनुसार विशेष बल मिलता है। अपना पुरुषार्थ तो है ही लेकिन एक्स्ट्रा बल भी मिलता है।"

अ.बापदादा 24.2.88 महारथी भाइयों से

"सेवा का प्रत्यक्ष फल "खुशी" मिलती है और सेवा से विशेष बल भी मिलता है और सेवा में बिजी रहने के कारण निर्विघ्न बनने में भी सहयोग मिलता है। ... यह भी ड्रामा अनुसार विशेष लिफ्ट मिली हुई है।... इसलिए ड्रामा अनुसार किसी भी आत्मा का यह उल्हना नहीं रह सकता है कि हम पीछे आये हैं।"

अ.बापदादा 28.2.88

"सच्ची दिल वालों को सच्चाई की शक्ति से समय प्रमाण उनका दिमाग युक्तियुक्त, यथार्थ कार्य स्वत: ही करेगा। दुआओं के कारण यथार्थ कर्म, बोल वा संकल्प ड्रामानुसार समय प्रमाण उनके दिमाग़ में वही टचिंग आयेगी क्योंकि बुद्धिवानों की बुद्धि बाप को राज़ी किया हुआ है।"

अ.बापदादा 15.11.89

"तुम ब्राह्मण हो ईश्वरीय सन्तान। सतयुग में ईश्वरीय सन्तान नहीं कहेंगे।... यह है तुम्हारा अति दुर्लभ अमूल्य जीवन। सबका तो हो नहीं सकता। यह ड्रामा ऐसा ही बना हुआ है। कल्प पहले जिन्होंने पढ़ा है, वे अब पढ़ रहे हैं।"

सा.बाबा 29.6.06 रिवा.

Q. विश्व-नाटक की यथार्थता, परमात्मा का हाथ और साथ तथा अपने कर्म और फल पर विचार करें तो क्या हमको किसी प्रकार के संचय की, अपने भविष्य के चिन्ता की आवश्यकता है? यदि है तो क्यों और यदि नहीं है तो क्यों?

द्वितीय अध्याय (II Chapter)

विश्व-नाटक और साक्षी स्थिति

साक्षी स्थिति जीवन की सर्वश्रेष्ठ स्थिति है और पुरुषार्थी जीवन के लिए परमावश्यक स्थिति है। प्राय: सभी धर्म-मठ-पंथ वाले किसी न किसी रूप में इसका वर्णन करते ही हैं परन्तु यथार्थ साक्षी स्थिति क्या है और उस स्थिति को कैसे पाया जा सकता है अर्थात् साक्षी स्थिति में कैसे स्थित हों, उसका राज़ आज तक किसी ने भी नहीं बताया, जो परमात्मा ही अभी बताते हैं।

परमात्मा इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए वह इस नाटक के यथार्थ रहस्य को जानता है और इसका साक्षी-दृष्टा है क्योंकि उसको इस अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान है। परमात्मा निराकार है और इस विश्व-नाटक के गुण-धर्मों को यथार्थ रीति समझने के कारण वह इसकी किसी घटना से प्रभावित नहीं होता है, सदा ही साक्षी-दृष्टा रहता है। जो आत्मायें परमात्मा के द्वारा इस विश्व-नाटक के यथार्थ रहस्य को समझ लेती हैं, वे ही साक्षी होकर इसको देख सकती हैं अर्थात् इस नाटक को यथार्थ रीति समझने से ही आत्मा साक्षी स्थिति में स्थित हो सकती है और साक्षी स्थिति के सुख का अनुभव कर सकती है।

ज्ञान सागर परमात्मा ने अभी इस विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का जो ज्ञान, विश्व-नाटक के विधि-विधानों का ज्ञान हम आत्माओं को दिया है और हू-ब-हू पुनरावृत्ति का जो राज़ समझाया है, यह राज़ ही साक्षी स्थिति को धारण करने के लिए एकमात्र आधार अर्थात् सक्षम है। बिना इस राज़ को जाने कोई भी आत्मा यथार्थ रूप में साक्षी नहीं बन सकती है। "साधना के आधार पर जो आत्मायें साक्षी बनते भी हैं, उनकी वह स्थिति अस्थाई ही होती है क्योंकि समयान्तर में वह परिवर्तित हो जाती है। सृष्टि-चक्र के नियमानुसार पतनोन्मुख स्थिति होने के कारण सभी आत्मायें सतोप्रधानता से तमोप्रधानता की ओर जाते ही हैं।

साक्षी होकर इस विश्व-नाटक का अवलोकन करें तो आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होगी और दिन-रात, मास, वर्ष और जीवन भी बीत जाये तो भी इसका आनन्दमय रहस्य कम होने वाला नहीं है परन्तु आत्मा देहाभिमान के वश इस आनन्दमय रास्ते से इतना भटक गई है कि जहाँ से उसका लौटना ही असम्भव है। सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा ही इस असम्भव को सम्भव करने में समर्थ है, जिसके लिए ही उसका अवतरण होता है। इसलिए ही गायन है - ''तमसो मां ज्योतिर्गमय, असतो मां सद्गमय, मृत्योर्मा अमृत गमय"।

साक्षी स्थिति इस विश्व नाटक में संगमयुग की विशेष प्राप्ति है और आत्माओं को परमात्मा का परम वरदान है, जो परम सुख का आधार है।

"आत्मा तो कभी विनाश नहीं होती। आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है, वह कभी विनाश नहीं हो सकती। ... यह अनादि-अविनाशी ड्रामा है। इस ड्रामा की आयु 5 हजार वर्ष है। सेकेण्ड भी कम-जास्ती नहीं हो सकता। ... देही-अभिमानी होकर साक्षी होकर खेल को देखना है।... परमात्मा का भी ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है। जो नूँध है, वह बदल नहीं सकता।"

सा.बाबा 2.10.04 रिवा.

"हर एक आत्मा अपना-अपना पार्ट बजा रही है। तुम साक्षी होकर देखते रहो। सारा नाटक तुमको साक्षी होकर देखना है और एक्ट भी करना है।... बाप कहते हैं - तुम जो कुछ देखते हो, यह सब विनाशी है। अभी तुमको तो घर जाना है। ... ये सब काग-विष्टा के समान सुख है।"

सा.बाबा 13.10.04 रिवा.

"साक्षीपन के तख्त की मुख्य निशानी...वह सदैव हर कदम, हर संकल्प में बापदादा को सदा साथी अनुभव करेंगे, ...दूसरा बाप के दिल-तख्तनशीन वह होगा, जो सपूत होगा अर्थात् बापदादा को मनसा-वाचा-कर्मणा व तन-मन-धन सब बातों में फॉलो करने का सबूत देगा। तीसरा है विश्व-महाराजन् बन विश्व के राज्य के तख्तनशीन बनने का। वह न सिर्फ कर्मेन्द्रीयजीत लेकिन वह साथ-साथ प्रकृतिजीत भी होगा।"

अ.बापदादा 11.7.74

"तुमको कोई आंसू न आना चाहिए, सब साक्षी होकर देखना चाहिए। जानते हो ड्रामा है। इसमें रोने की क्या दरकार। पास्ट-प्रेजेन्ट का कब विचार भी न करना चाहिए। तुम आगे बढ़ते बाप को याद करते रहो और सभी को रास्ता बताते रहो।"

सा.बाबा 25.9.71 रिवा.

"जो कुछ भी ड्रामा में होता है, उसमें कल्याण ही भरा हुआ है। अगर ये स्मृति में सदा रहे तो कमाई जमा होती रहेगी।... साक्षीपन की सीट शान की सीट है, इससे परे न हो तो परेशानी खत्म हो जायेगी।... नॉलेजफुल बाप के बच्चे बन गये, त्रिकालदर्शी बन गये तो परेशान कैसे हो सकते हैं।"

अ. बापदादा 7.3.81

"एक होता है नॉलेज के आधार पर प्वाइन्ट देना, दूसरा होता है - अनुभवी मूर्त होकर प्वाइन्ट देना। ड्रामा की प्वाइन्ट के जो अनुभवी होंगे, वह सदा साक्षीपन की स्टेज पर स्थित होंगे। एकरस, अचल और अडोल होंगे।"

अ. बापदादा 11.3.81

"ब्राह्मणों का मुख्य स्थान कौनसा है, जहाँ बुद्धि को सहज स्थिर कर सको। वह स्थान है -

साक्षी दृष्टा। ड्रामा की ढाल व ड्रामा के पट्टे पर हर कर्म और संकल्प चलने के लिए यह साक्षी व दृष्टापन की अवस्था होनी चाहिए।"

अव्यक्त बापदादा 19.4.73

"वाह बाबा और वाह ड्रामा के गीत गाते रहो तो सदा लगन में मगन रहेंगे। क्योंकि लगन में मगन वही रह सकता है जो साक्षी होकर हर पार्ट बजाता है।"

अव्यक्त बापदादा 20-6-77

"जो साक्षी होगा वह कभी भी किसी पार्ट में चलायमान नहीं होगा। ... इस साक्षीपन की सीट पर बैठकर ड्रामा देखो तो बहुत मजा आयेगा।" A.B.D. 15.4.81 पार्टी 1

"सफलता का आधार है साक्षी और साथीपन का अनुभव। सदा अपने को बाप के साथी समझकर चलते हो। अगर साथीपन का अनुभव होगा तो साक्षीपन का भी अनुभव होगा। क्योंकि बाप का साथ होने के कारण जैसे बाप साक्षी हो पार्ट बजाते हैं वैसे आप भी साथी होने के कारण साक्षी हो पार्ट बजायेंगे।" A.B.D. 7.12.78 (पार्टी 2)

"बाबा बोले, बच्ची, दुनिया की भिन्न-भिन्न विनाश लीला देख बच्चे आश्चर्यवत तो नहीं होते हैं? बहादुर, निर्भय बन साक्षीपन की सीट पर सेट होकर ड्रामा देख रहे हैं ना! क्योंकि वह तो समय प्रति समय भिन्न-भिन्न रूप से हलचल बढ़नी ही है। 'नथिंग न्यू" का पाठ पक्का है। जब होना ही है तो त्रिकालदर्शी स्थिति से देखते चलो, उड़ती कला से आगे बढ़ते चलो और दुखी, अशान्त आत्माओं को रहमदिल बनकर सुख-शान्ति की अन्चलि देते रहो। वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को शान्ति करने का वायब्रेशन फैलाते रहो। इस सेवा में बिजी रहो।"

अ.बापदादा का मधुर सन्देश 2.3.2002

"सदा अपने को साक्षीपन की सीट पर स्थित आत्मायें अनुभव करते हो? यह साक्षीपन की स्थिति सबसे बढ़िया श्रेष्ठ सीट है। इस सीट पर बैठ कर्म करने या देखने में बहुत मजा आता है।" अ.बापदादा 12.12.84 पार्टी 1

"ऐसे ड्रामा को ज्यों का त्यों साक्षी होकर देखना है। यह नॉलेज तुमको अब ही मिलती है, फिर कभी नहीं मिलनी है। आगे यह नॉलेज थोड़ेही थी कि यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया ड्रामा है, इसको अच्छी रीति समझकर और धारण कर किसी को समझाना है। तुम ब्राह्मण ही इस ज्ञान को जानते हो।" सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

"हर कर्म त्रिकालदर्शी बन करने से कभी भी कोई कर्म विकर्म नहीं हो सकता। सदा सुकर्म होगा। ... ऐसे ही साक्षी-दृष्टा बन कर्म करने से कोई भी कर्म के बन्धन में कर्म-बन्धनी आत्मा नहीं बनेंगे।" अ.बापदादा 30.1.79

विश्व-नाटक और अचल-अडोल, निर्विघ्न, बेफिकर बादशाह अर्थात् एकरस स्थिति

विश्व-नाटक के गुण-धर्मों का यथार्थ ज्ञान बुद्धि में रहे तो आत्मा को किसी भी प्रकार का भय, चिन्ता, दुख-अशान्ति हो नहीं सकती, उसकी स्थिति अचल-अडोल, एकरस अवश्य होगी। वह बेफिकर बादशाह भी अवश्य होगा। इसीलिए गायन है - बनी-बनाई बन रही ... अनहोनी होये। परन्तु वास्तविकता ये है कि विश्व-नाटक में जो बना है, वह कल्याणकारी है, इस सत्य का ज्ञान होगा, अनुभव होगा तब ही स्थिति अचल-अडोल होगी।

"सदा स्मृति में रखो कि विघ्न का काम है आना और हमारा काम है विघ्न-विनाशक बनना।... सदा ड्रामा के ज्ञान की स्मृति से हर विघ्न को 'नथिंग न्यू" समझना।... अगर ड्रामा की प्वाइन्ट बुद्धि में क्लीयर है कि हू-ब-हू रिपीट होता है ... ड्रामा बना हुआ है और बना रहे हैं अर्थात् रिपीट कर रहे हैं। ऐसा निश्चयबुद्धि अचल-अडोल रहता है।"

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 4

"बापदादा तपस्या द्वारा साक्षीपन की स्थिति के आसन पर अचल-अडोल स्थित रहने का विशेष अभ्यास करा रहे हैं। ... प्रकृति के भी पांच खिलाड़ी हैं और माया के भी पांच खिलाड़ी हैं। ... खिलाड़ी खेल के बिना रहेंगे क्या ? ... संगमयुगी ब्राह्मण आत्माओं के लिए तो खेल देखना इन्ज्वाय करना है।" अ.बापदादा 16.3.92

"मूसलाधार बरसात, अर्थ-क्वेक आदि सब होना है। अभी तुम बच्चों ने ड्रामा का सब राज़ समझा है। ... तुम बच्चों को अच्छी रीति समझकर औरों को भी समझाना है, खुशी में भी रहना है। ... भल कितने भी दुख, मौत आदि होंगे, तुम उस समय खुशी में होंगे। तुम जानते हो मौत तो होना ही है। कल्प-कल्प का यह खेल है, फिकरात की कोई बात नहीं।"

सा.बाबा 24.7.04 रिवा.

"सदैव समझो शिवबाबा ही तुम्हें सुनाते हैं। कभी बीच में यह बच्चा भी बोल देते हैं। बाप तो बिल्कुल एक्यूरेट ही कहेंगे। इनको तो सारा दिन बहुत ख्यालात करने होते हैं।... बाबा का भी ड्रामा, इनका भी ड्रामा और तुम्हारा भी ड्रामा। ड्रामा बिगर कोई चीज होती ही नहीं। ड्रामा को याद करने से हिलेंगे नहीं, अचल-अडोल, स्थेरियम रहेंगे।"

सा.बाबा 7.5.04 रिवा.

"हू-ब-हू कल्प पहले मिसल यह राजधानी स्थापन हो रही है। अनेक बार हुई है। यह तो ड्रामा का चक्र चलता रहता है, इसमें फिकर की भी कोई बात नहीं रहती है। बाप के साथ हैं ना तो

संग का रंग लगता है। फिकर कम होती जाती है। यह तो ड्रामा बना हुआ है।"

सा.बाबा 8.5.04 रिवा.

"बहुत हैं, जो फारकती भी दे देते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। बाप कहते हैं - मुझे कोई फिकर नहीं है, मैं तो फिकर से फारिग हूँ। तुमको भी बना रहा हूँ। गायन है - फिकर से फारिग कींदा स्वामी सतगुरु।"

सा.बाबा 10.3.04 रिवा.

"बेफिकर, क्या होगा, कैसा होगा, इसका भी फिकर नहीं। त्रिकालदर्शी स्थिति में रहने वाले जानते है - जो हो रहा है वह सब अच्छा है और जो होने वाला है वह और अच्छा होगा क्योंकि सर्वशक्तिवान बाप के साथी हो, साथ रहने वाले हो।"

अ.बापदादा 28.3.06

"ज्ञान और भक्ति। भक्ति सबके लिए है, ज्ञान भी सबके लिए है। ... ड्रामा में सबको दुर्गति को पाना ही है, इसलिए ऐसी बातें बताते हैं। ... ज्ञान मार्ग में बड़ी फर्स्टक्लास अवस्था चाहिए। ऐसी-ऐसी बातों को याद कर सदा हर्षित रहना होता है।"

सा.बाबा 3.4.06 रिवा.

"कोई चोरी करते तो अन्दर दिल में खाना चाहिए कि हम पाप करते रहते हैं तो क्या पद पायेंगे।... कोई देहाभिमान के कारण नाम-रूप में फँस पड़ते हैं।... फिकरात तो रहती है। फिर भी यहाँ दुख की कोई बात नहीं है। जानते हैं कल्प पहले भी ऐसे ही हुआ था।"

सा.बाबा 18.03.06 रिवा.

"बाप पुरुषार्थ भी कराते हैं और बेफिकर भी रहते हैं। समझते हैं ड्रामा की नूँध ऐसी है। ... सब ड्रामा में इकट्ठे थोड़ेही आयेंगे। आयेंगे फिर भी नम्बरवार ही। ड्रामा में कोई एक्टर बिगर समय थोड़ेही स्टेज पर आ जायेंगे।"

सा.बाबा 13.9.05 रिवा.

"कोई मर गया तो भी साक्षी होकर देखा जाता है। कल्प पहले भी ऐसे ही हुआ था। अपनी अवस्था को पक्का रखना चाहिए। ... कोई पर ग्रहचारी बैठती है तो राहू की दशा बैठ जाती है, फिर ट्रेटर बन पड़ते हैं तो बड़ा नुकसान करते हैं। इन बातों में भी कभी अफसोस नहीं करना चाहिए।"

सा.बाबा 31.5.06 रिवा.

Q. ज्ञान की हर प्वाइन्ट्स को शक्ति या शस्त्र के रूप में धारण करने के लिए क्या पुरुषार्थ है?

विश्व-नाटक और दैवी गुण

हर आत्मा का आत्मिक स्वरूप सर्व ईश्वरीय गुणों से सम्पन्न है और हर आत्मा का आदि स्वरूप दैवी गुण-संस्कारों से सम्पन्न है परन्तु विश्व-नाटक सफल मंचन के लिए और उसके विधि-विधान अनुसार हर आत्मा में पार्ट बजाने के लिए अज्ञानता और अज्ञानता जनित आसुरी गुण-संस्कार आते ही हैं। जो आत्मा विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास करती है, उसमें ईश्वरीय और दैवी गुण पुन: जाग्रत अवश्य होते हैं।

विश्व-नाटक और राग-द्वेष, निन्दा-स्तुति, ईर्ष्या-घृणा

राग-द्वेष, निन्दा-स्तुति, ईर्ष्या-घृणा का कारण विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान अर्थात् उसके विधि-विधान से अनभिज्ञता है। जो किसी व्यक्ति की महिमा से अविभूत होता है, उसको सारे कल्प में कभी न कभी उनकी निन्दा से भी प्रभावित होना ही पड़ता है। परमात्मा न किसकी महिमा से अविभूत होता है, न निन्दा से प्रभावित होता है। वह ज्ञान का सागर है, इसलिए वह सदा साक्षी-दृष्टा होकर इस विश्व-नाटक को देखता और पार्ट बजाता है। बुद्धिवान ज्ञानी पुरुष का कर्तव्य है कि वह साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखे और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाये, किसी की निन्दा-स्तुति से प्रभावित न हो। परमात्मा ने भी कहा है कि इस विश्व में किसी की कोई महिमा नहीं है क्योंकि कोई किसका कुछ भी भला कर नहीं सकता। एक मैं ही आकर सारे विश्व का कल्याण करता हूँ।

ड्रामा का ज्ञान अर्थात् न किसकी निन्दा और न ही किसकी स्तुति। बाबा मुरली में कहते हैं - तुम मेरी क्या महिमा करेंगे, मेरा भी ड्रामा में पार्ट है, उस पार्ट के अनुसार ही मैं आता हूँ और अपना पार्ट बजाता हूँ। परन्तु ये भी कटु-सत्य है कि जो किसको मदद करता, सुख देता... वह सुख देने वाले की महिमा किये बिना रह नहीं सकता है और जो दुख देता है, उसकी निन्दा करता ही है - ये भी ड्रामा में पार्ट है। ज्ञानी पुरुष वह है जो निन्दा-स्तुति, मान-अपमान ... सबमें में समान रहे, उसके विषय में कोई संकल्प भी उत्पन्न न हो। दोनों ही विपरीत स्थितियों में साक्षी और समान होकर रहे।

वास्तव में एक परमात्मा को छोड़कर इस विश्व-नाटक में और किसी व्यक्ति की महिमा नहीं है साथ ही इस विश्व-नाटक में किसी की ग्लानि या दोष भी नहीं है। कोई भी आत्मा किसके सुख-दुख का निमित्त भी ड्रामा और उसके अपने कर्मों अनुसार ही बनता है, कर्म भी

ड्रामा अनुसार ही होता है। कोई भी किसके सुख-दुख का निमित्त बनता है तो जब तक उसकी स्मृति रहती है तब तक ही उसकी महिमा या ग्लानि करते हैं। स्मृति-विस्मृति के आधार पर आज जिसकी महिमा करते हैं, कल उसकी ही ग्लानि करने लग पड़ते हैं।

इस विश्व-नाटक में हर आत्मा का पार्ट अपना है और हर आत्मा की चढ़ती कला और उतरती कला होती है परन्तु हर एक की चढ़ने-उतरने की गति और विधि-विधान अपना है क्योंकि ये वैराइटी ड्रामा एक का पार्ट न मिले दूसरे से। इसलिए किसी आत्मा की प्राप्ति-अप्राप्ति को देखकर ईर्श्या-द्वेष नहीं होना चाहिए, ये अज्ञानता जनित विकार हैं। अच्छे पुरुषार्थी को सदा अपने को देखना है और अपना पुरुषार्थ करना है। हर आत्मा का आत्मिक स्वरूप सर्व प्राप्तियों से भरपूर है, सम्पन्न है। हर आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में सच्चिदानन्द स्वरूप है, इसलिए सर्व देहधारियों से और सब बातों को बुद्धि से निकाल कर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का दृढ़ता से पुरुषार्थ करना चाहिए, यही हर आत्मा का अभीष्ठ कर्तव्य है।

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझकर और धारण करने वाली साक्षी आत्मा कब राग-द्वेष के वशीभूत नहीं हो सकती। वह परमात्मा के समान साक्षी-दृष्टा होकर पार्ट बजाती है परन्तु ये भी कटु सत्य है कि कोई देहधारी आत्मा सदाकाल पूर्ण साक्षी स्थिति में नहीं रह सकती है। परन्तु जो जितना पुरुषार्थ कर इस स्थिति को धारण करता है, वह उतना ही इस विश्व-नाटक का सुख पाता है। परमात्मा तो सुख-दुख दोनों से न्यारा है क्योंकि निराकार है। सुख-दुख की अनुभूति तो शरीरधारी ही करते हैं।

साक्षी स्थिति वाला ही राग-द्वेष, भय-चिन्ता से उत्पन्न अनेक विकर्मों से मुक्त हो अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकता है। इस विश्व-नाटक की सत्यता पर हम विचार करें तो जो हुआ, वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ, वह हो नहीं सकता परन्तु जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा। इस विश्व-नाटक में न कोई हमारा मित्र है और न कोई शत्रु है। सभी आत्मायें इसमें अनादि-अविनाशी पार्टधारी हैं। जो आज मित्र है, वही कल शत्रु होगा और जो आज शत्रु कल मित्र होगा। फिर कौन किसका मित्र और कौन किसका शत्रु है। यहाँ न कोई अपना है और न कोई पराया है। जो आज अपना है वही कल पराया होगा और पराया कल अपना हो जायेगा। इस सत्य को जानने वाले ज्ञानी पुरुष कब राग-द्वेष के वशीभूत होकर विकर्म में प्रवृत्त नहीं होते हैं। वे सदा ही साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखते और पार्ट बजाते हैं तथा अपने आत्म-कल्याण के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करते हैं।

ड्रामा अनुसार समय और ड्रामा का पार्ट ऐसा बन्धन है, जिसको टाला नहीं जा सकता और आत्मा उसको करने के लिए बाध्य है। इसलिए किसी भी आत्मा के प्रति राग-द्वेष, घृणा की भावना जाग्रत न होना ही यथार्थ ज्ञान है।

"कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाये लेकिन वह स्वयं सदा न्यारा और प्यारा रहेगा। नॉलेज द्वारा जानेगा कि इसका यह पार्ट चल रहा है। घृणा वाले से स्वयं भी घृणा कर ले, यह हुआ कर्म का बन्धन। ऐसा कर्म के बन्धन में आने वाला एकरस नहीं रह सकता।... इसलिए अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी होकर देखो।"

अ. बापदादा 18.4.82

"कितना वण्डरफुल ड्रामा है। यह बेहद का नाटक है, जो सिवाए तुम्हारे और कोई की बुद्धि में नहीं है। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है।... तुम बच्चे जानते हो कि यह हार जीत का वण्डरफुल खेल बना हुआ है, इसको देखकर खुशी होती है, घृणा आ नहीं सकती। तुम ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो, इसलिए घृणा की बात ही नहीं।"

सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

"भारत जो शिवालय था, वही अब वेश्यालय बना है ना। इसमें ग्लानि की तो बात ही नहीं। यह खेल है, जो बाप समझाते हैं।... यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, वह नॉलेज देते हैं।"

सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

"हम सब बेहद के बाप के बच्चे हैं, फिर सब ब्रदर्स सतयुग में क्यों नहीं हैं? परन्तु ड्रामा में पार्ट ही नहीं है। यह अनादि-ड्रामा बना हुआ है, इसमें निश्चय रखो, और कोई बात बोलो नहीं।... बाप कोई की निन्दा नहीं करते हैं, यह तो समझाया जाता है।"

सा.बाबा 10.7.04 रिवा.

"तुम बच्चे जानते हो बाप बहुत रहमदिल है। बाप जानते हैं कि इन हमारे बच्चों को माया ने बहुत दुखी पतित बना दिया है। यह बच्चे नहीं जानते। बाप जानते हैं तो बाप को बच्चों पर तरस पड़ता है ना। कभी नफरत नहीं आयेगी।... तुम बच्चों को भी बड़ा रहमदिल प्यार का सागर बनना है, किसके प्रति नफरत नहीं लानी है।... बाप बहुत अच्छी रीति समझाते हैं, इसमें घृणा की कोई बात नहीं है। यह तो ड्रामा बना हुआ है। ... तुम जानते हो कि पाप करेंगे तो दण्ड भोगना पड़ेगा परन्तु बाप किसको दण्ड कभी नहीं देता है। वह करनकरावनहार है। धर्मराज द्वारा सजा दिलाते हैं।"

सा.बाबा 26.06.03 रिवा.

"कोई किसको डिफेम करते हैं तो उन पर केस करते हैं। परन्तु यह है ड्रामा, इसमें कोई की

बात नहीं चल सकती। बाप जानते हैं कि तुम दुखी हुए हो, फिर भी यह होगा। ... बच्चे कहते बाबा हम आपकी कितनी शुक्रिया मानें। ड्रामा अनुसार आपको वर्सा तो देना ही है, हमको आपका बच्चा बनना ही है। इसमें शुक्रिया क्या करें।... बाप को तो अपनी फर्ज अदाई करनी ही है। ... जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उस अनुसार स्वर्ग में आयेंगे। ऐसे नहीं कि बाबा भेज देंगे। ऑटोमेटिकली जितना पुरुषार्थ करेंगे, उस अनुसार स्वर्ग में आ जायेंगे। बाकी इसमें शुक्रिया की कोई बात नहीं है। अब हम वण्डर खाते हैं कि बाबा ने क्या खेल दिखाया है। आगे तो हम जानते नहीं थे, अब जाना है। क्या बाबा फिर हम ये ज्ञान भूल जायेंगे ? हाँ बच्चे, हमारी और तुम्हारी बुद्धि से ज्ञान प्राय: लोप हो जायेगा। फिर समय पर इमर्ज होगा, जब ज्ञान देने का समय होगा।" सा.बाबा 11.5.02 रिवा.

"बाप तुमको इन सब बातों से छुड़ाने के लिए समझाते हैं, किसकी ग्लानि नहीं करते हैं। बाप ड्रामा का राज़ समझाते हैं। यह सृष्टि-चक्र कैसे बना हुआ है। जो कुछ तुमने देखा, वह फिर होगा। ... बाप की याद से ही पाप कटेंगे। पतित-पावन एक बाप ही है। कल्प पहले जिन्होंने पुरुषार्थ किया है, वे करके ही दिखायेंगे।" सा.बाबा 3.8.04 रिवा.

"तुम बच्चों को कितनी खुशी होती है। जैसे बाप की बुद्धि में सारा ज्ञान है, वैसे तुम्हारी बुद्धि में भी है। बीज और झाड़ को समझना है। ... ड्रामा अनुसार यह सब होना ही है, इसमें घृणा नहीं आती। नाटक में एक्टर्स को कभी किससे घृणा आयेगी क्या! ... यह एक ही पुरुषोत्तम संगमयुग है, जब तुम पुरुषोत्तम बनते हो। सत्य बनाने वाला, सतयुग की स्थापना करने वाला एक ही सच्चा बाबा है।" सा.बाबा 29.6.04 रिवा.

"गायन है - निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोये। ... बेहद का बाप कहते हैं - हमारी निन्दा तुम बच्चों ने सबसे जास्ती की है, सबसे नजदीक वाले मित्र भी तुम बच्चे ही बनते हो। अपकारी भी तुम बच्चे बनते हो, बाप उपकार भी तुम पर ही करते हैं। यह ड्रामा कैसा बना हुआ है। यह बिचार सागर मंथन करने की बातें हैं।"

सा.बाबा 2.7.04 रिवा.

"यह भी ड्रामा में जिनका जो पार्ट है, वह चलता ही रहता है। इसमें हम किसी की महिमा थोड़ेही करेंगे। बाप भी कहते हैं - तुम मेरी क्या महिमा करेंगे ? मेरी तो ड्युटी है पतित से पावन बनाने की। ... मैं भी ड्रामा के वश हूँ, इसमें ताकत फिर काहे की। यह तो मेरी ड्युटी है। कल्प-कल्प संगम पर आकर पतित से पावन बनाने का रास्ता बताता हूँ। मैं पावन बनाने बिगर रह नहीं सकता हूँ।" सा.बाबा 23.2.04 रिवा.

"चलन बड़ी अच्छी चाहिए। कोई पर भी घृणा न रहे। बाप कहते हैं मुझे थोड़ेही किसके लिए

घृणा आती है। जानते हैं तुम पतित हो। यह ड्रामा बना हुआ है। जानता हूँ उनकी चलन ही ऐसी बन्दरों मिसल है।"

सा. बाबा 30.6.72 रिवा.

विश्व-नाटक और निर्दोष दृष्टि

निर्दोष दृष्टि व्यर्थ चिन्तन से बचने, सम्बन्धों में मधुरता और जीवन की सफलता के लिए परमावश्यक है। ये अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। इसमें हर आत्मा का अनादि-अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है, जो उसको बजाना ही है। हर आत्मा अपना पार्ट बजाने के लिए बाध्य है। इसमें किसी आत्मा का दोष नहीं है। इस विश्व-नाटक में ड्रामा का पार्ट और परस्पर के हिसाब-किताब का गहरा सम्बन्ध है, जिसके आधार पर ही आत्मायें एक-दूसरे के सुख या दुख का कारण बनती हैं। कोई आत्मा किसी दूसरी आत्मा के सुख या दुख का मूल कारण नहीं है, वह केवल निमित्त कारण है। मूल कारण तो हर आत्मा का अपना कर्म ही है और वह कर्म भी ड्रामा में नूंधा हुआ है क्योंकि यह नाटक ही जीत-हार, सुख-दुख का अनादि-अविनाशी बना हुआ है। इसलिए किसी आत्मा को दोषी समझना अज्ञानता का परिचायक है। विश्व-नाटक की यथार्थता को जानने वाली आत्मा किसी को दोष नहीं दे सकती। परमात्मा ज्ञान का सागर, विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए उनकी दृष्टि में हर आत्मा निर्दोष है। परमात्मा का सर्वात्माओं से प्यार है और परमात्मा से सर्वात्माओं का प्यार है। परमात्मा हमको भी आप समान बनाते हैं। विश्व-नाटक की यथार्थता को जानने वाला निर्दोष दृष्टि वाले को कब किस आत्मा के प्रति घृणा-द्वेष, क्रोध आ नहीं सकता, उसको तो और ही ऐसी आत्माओं के प्रति रहम आयेगा कि उनका भी कल्याण हो, वे भी सत्य को जानकर इस विश्व-नाटक का सुख अनुभव करें। जिस सीमा तक हमको किसका दोष दिखाई देता है और उसके प्रति द्वेषभाव उत्पन्न होता है, उस सीमा तक ड्रामा का यथार्थ ज्ञान नहीं है।

"ये ड्रामा है, इसमें किसी का भी दोष नहीं है। किसकी निन्दा करते तो ज्ञान पूरा बुद्धि में नहीं बैठा है।"

सा. बाबा 27.9.97 रिवा.

"यह है ही न्यारा मार्ग। कोई भी समझते नहीं। कोई ने कब सुना नहीं है।... उन बिचारों का भी कोई दोष नहीं है। कल्प पहले भी ऐसे ही विघ्न डाले थे। यह है भी रुद्र ज्ञान यज्ञ।"

सा.बाबा 8.6.72 रिवा.

"ड्रामा के हर दृश्य को ड्रामा-चक्र में संगमयुगी टॉप प्वाइन्ट पर स्थित होकर देखेंगे तो स्वत: ही अचल-अडोल रहेंगे।... चक्र में संगमयुग ऊंचा युग है।... इसी ऊंची प्वाइन्ट पर, ऊंचे स्थान पर, ऊंची स्थिति पर, ऊंची नॉलेज में, ऊंचे ते ऊंचे बाप की याद में, ऊंचे ते ऊंची सेवा

स्मृति स्वरूप होंगे तो सदा समर्थ होंगे। जहाँ समर्थ है, वहाँ व्यर्थ सदा के लिए समाप्त हो जाता है। ... ड्रामा का विचित्र पार्ट है, विचित्र का चित्र पहले नहीं खींचा जाता है। हलचल का पेपर अचानक होता है। ... जो हुआ परिवर्तन के पर्दे को खोलने के लिए बहुत ही अच्छे ते अच्छा हुआ। न भगवती (डा.) का दोष है, न भगवान का दोष है। यह तो ड्रामा का राज़ है। इसमें न भगवती कुछ कर सकता, न भगवान। यह तो ड्रामा का खेल है।"

अ.बापदादा 30.7.83

"बाप किसी को दोष नहीं देते हैं। वह यह जानते हैं - तुमको पावन से पतित बनना ही है और हमको पतित से पावन बनाना ही है। यह बना-बनाया ड्रामा है, इसमें कोई की निन्दा की बात नहीं। ... बाप तुम बच्चों को कितना समझदार बनाते हैं।"

सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

"तुम किसके पास भी जाओ। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान तो क्या परन्तु हम आत्मा क्या चीज हैं, वह भी नहीं जानते हैं। ... ड्रामानुसार उन्होंका भी कोई दोष नहीं है। ... न आत्मा विनाश होने वाली है और न उनका पार्ट विनाश हो सकता है।"

सा.बाबा 12.5.05 रिवा.

"बच्चे अन्जान हैं, इसलिए उनका कोई दोष दिखाई नहीं पड़ता। ऐसे ही माया भी अगर किस आत्मा के द्वारा समस्या वा विघ्न वा परीक्षा-पेपर बनकर आती है तो उन आत्माओं को निर्दोष समझना चाहिए। ... इस दृष्टि से हर आत्मा को देखो तो फिर पुरुषार्थ की स्पीड कब ढीली नहीं हो सकती। 16 कला सम्पूर्ण बनने के लिए यह कला भी आनी चाहिए।"

अ.बापदादा 3.10.71

"प्रसन्नचित्त सदा निस्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेगा। किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेगा। न भाग्यविधाता के ऊपर, ... न ड्रामा के ऊपर ... न व्यक्ति पर ... न प्रकृति के ऊपर, ... न अपने शरीर के हिसाब-किताब के ऊपर। प्रसन्नचित्त अर्थात् सदा निस्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाले।"

अ.बापदादा 5.10.87

"ड्रामा अनादि बना हुआ है। न रावण का दोष है और न मनुष्यों का दोष है। चक्र को फिरना ही है।...बच्चे अन्तर्मुख होकर अपना चार्ट रखो तो जो भूलें होती हैं, उनका पश्चाताप कर सकेंगे। यह जैसे योगबल से अपने को माफ करते हो। बाबा कोई क्षमा या माफ नहीं करते। ड्रामा में क्षमा अक्षर ही नहीं है।... पाप का दण्ड भोगना ही पड़ता है। क्षमा की बात नहीं।"

सा.बाबा 7.7.05 रिवा.

"फिर भी कहते हैं आज दिन तक जो भी पास हुआ, वह ड्रामा अनुसार ही कहेंगे। इसमें हम

किसका बुरा-भला कह न सकें। जो कुछ होता है, ड्रामा में नूँध है। बाकी बाप आगे के लिए समझाते हैं।"

सा.बाबा 26.8.71 रिवा.

"मनुष्य कड़े पाप तब करते हैं, जब बिल्कुल ही तमोप्रधान बनते हैं।...परन्तु बाबा कहते हैं यह विनाश करते हैं, यह तो बाप के प्रेरे हुए हैं। इसलिए इन पर कोई दोष नहीं लगता। यह तो प्रेरे हुए हैं। नहीं तो विनाश कैसे हो ? बड़े कायदे कानून हैं।"

सा.बाबा 11.3.73 रिवा.

"ड्रामा में तो सभी बांधे हुए हैं, जिसको कोई नहीं जानते। यह न जानना भी ड्रामा में नूँध है, जो बाप ही आकर सुनाते हैं। ... भक्ति मार्ग की भी ड्रामा में नूँध है। पहले शिव की भक्ति करते फिर देवताओं की। भारत की ही तो बात है। ... सबको जो अनादि-अविनाशी पार्ट मिला हुआ है, सो बजाना है। इसमें कोई का दोष वा भूल नहीं कह सकते हैं। यह तो सिर्फ समझाया जाता है कि पापात्मा क्यों बने हैं।"

सा.बाबा 10.7.04 रिवा.

"ड्रामा अनादि बना हुआ है। न रावण का दोष है और न मनुष्यों का दोष है। चक्र को फिरना ही है। ...बच्चे अन्तर्मुख होकर अपना चार्ट रखो तो जो भूलें होती हैं, उनका पश्चाताप कर सकेंगे। यह जैसे योगबल से अपने को माफ करते हो। बाबा कोई क्षमा या माफ नहीं करते। ड्रामा में क्षमा अक्षर ही नहीं है। ... पाप का दण्ड भोगना ही पड़ता है। क्षमा की बात नहीं।"

सा.बाबा 7.7.05 रिवा.

"बाप की ग्लानि करते हैं ना। यह भी ड्रामा में नूँध है, कोई पर दोष नहीं रखते हैं। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। बाप जो तुमको ज्ञान से देवता बनाते हैं, तुम फिर उनको ही गालियाँ देने लग पड़ते हो। यह भी ड्रामा बना हुआ है। मैं फिर तुम पर भी उपकार करता हूँ। जानता हूँ तुम्हारा भी दोष नहीं है। यह खेल है।"

सा.बाबा 15.7.04 रिवा.

"बाप है मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का चेतन्य बीज। इसको उल्टा झाड़ कहा जाता है। बाप तो है नॉलेजफुल, उनको सारे झाड़ की नॉलेज है। यह है वही गीता की नॉलेज, कोई नई बात नहीं है। ... जो कुछ हुआ, वह हू-ब-हू रिपीट होगा। इसमें मूँझने की दरकार नहीं है।... बच्चों को सदैव हर्षित रहना है। यह तो ड्रामा बना हुआ है। मुझे इतनी गालियाँ देते हैं, फिर मुझे गुस्सा आता है क्या! ... बेचारे अज्ञान अन्धेरे में पड़े हैं। नहीं समझते हैं तो तरस भी पड़ता है।"

सा.बाबा 10.7.04 रिवा.

"इस समय सारी दुनिया पतित है, इसमें भी किसका दोष नहीं है। यह ड्रामा बना-बनाया है। जब तक मैं आऊं, उनको अपना पार्ट बजाना ही है।"

सा.बाबा 24.02.06 रिवा.

विश्व-नाटक और शुभ-भावना शुभ-कामना

ड्रामा अनुसार अभी हम परमात्मा के बनें हैं और उनके साथ विश्व-कल्याण के निमित्त बनें हैं। विश्व-कल्याण का कर्तव्य सर्वात्माओं के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखने वाला ही कर सकता है। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान से सर्वात्माओं के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना स्वत: ही हो जाती है क्योंकि इस विश्व-नाटक में किसी आत्मा के प्रति अशुभ-भावना और अशुभ-कामना का कोई स्थान ही नहीं है। अशुभ-भावना और अशुभ-कामना का कारण अज्ञानता और विश्व-नाटक के यथार्थ रहस्य की अनभिज्ञता है। नाटक में एक एक्टर का दूसरे एक्टर के प्रति सहयोग ही होता है, घृणा-ईर्ष्या नहीं और फिर हम तो इस अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक के एक्टर्स हैं तथा हम सभी एक्टर्स एक परमात्मा की सन्तान हैं फिर अशुभ भावना या अशुभ कामना का स्थान ही कहाँ है। विश्व-नाटक का अनादि-अविनाशी नियम है कि 'जो दूसरों के प्रति शुभ भावना शुभ कामना रखता है, दूसरे उसके प्रति अवश्य ही शुभ भावना शुभ कामना रखेंगे।" हम परमात्मा के बड़े बच्चे हैं, सर्व आत्माओं के पूर्वज हैं तो सर्वात्माओं के प्रति शुभ भावना शुभ कामना रखना हमारा परम कर्तव्य है।

"अब अपनी बुद्धि में है कि यह सुख-दुख, दिन-रात, हार-जीत का ड्रामा बना हुआ है। तो दुर्गति वालों पर रहम आता है क्यों न उन्होंको भी रचयिता और रचना का ज्ञान मिल जाये तो बाप से वर्सा पा सकें। जो खुशी अपने को मिलती है, वह दूसरों को भी देना चाहिए।"

सा. बाबा 21.4.72 रिवा.

"यह तुम जानते हो - हमने हू-ब-हू कल्प पहले जैसे राजधानी स्थापन की थी, अब कर रहे हैं। हमारे लिए यह पुरानी दुनिया खत्म होने वाली है। ड्रामा का चक्र फिरता रहता है।... तुम बच्चों को रहमदिल, कल्याणकारी बनना है। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। दोष किसको नहीं दे सकते। कल्प पहले जितनी पढ़ाई की होगी, उतनी ही होगी, जास्ती होगी नहीं, कितना भी पुरुषार्थ कराये, कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"

सा.बाबा 26.3.04 रिवा.

"बाप तो कभी किसी पर गुस्सा नहीं करता। बाप कभी किसी को और कोई दृष्टि से नहीं देखते। परन्तु चलन ऐसी देखते हैं तो समझते हैं यह आसुरी मत का है। माया एक ही घूँसे से एकदम खत्म कर देती है। कितना विघ्न डालते हैं। उनका जितना बड़ा पाप बनता है, उतना अज्ञानी मनुष्य का नहीं बनता। कोई नजदीक रहते हुए भी जरा भी नहीं पहचानते। बाप कहे - यह भी ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 2.5.73 रिवा.

विश्व-नाटक और मित्रता-शत्रुता

विश्व-नाटक में कोई आत्मा किसका मित्र-शत्रु नहीं है। 'जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आपही अपना शत्रु है" अर्थात् हर आत्मा का अपना कर्म ही उसके सुख या दुख का कारण बनता है अर्थात् वह अपने कर्म से अपना आप ही मित्र और आपही अपना शत्रु बनती है। विश्व-नाटक के इस सत्य को जानने से आत्मा राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा, दूसरों पर दोषारोपण आदि के कारण उत्पन्न होने वाले व्यर्थ चिन्तन और विकर्मों से बच जाती है। कोई भी आत्मा हमारे साथ सहयोग-असहयोग, सद्व्यवहार-दुर्व्यवहार उसी सीमा तक कर सकती है, जितना उसका ड्रामा में पार्ट है और हमारे साथ उसका कर्मों का हिसाब-किताब है। इस सत्य को जानकर राग-द्वेष के वशीभूत होकर हमको किसी भी आत्मा के साथ कोई नया हिसाब-किताब नहीं बनाना चाहिए, जो भविष्य में हमारे दुख का कारण बनें। अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए विश्व-नाटक के इस सत्य को जानकर श्रेष्ठ कर्म करके अपना मित्र बनकर जीवन में सच्चा सुख का निर्माण करना चाहिए। विश्व-नाटक के इस सत्य को जानकर अपनी मन-बुद्धि सदा सुकर्मों में लगानी चाहिए।

मन्सा-वाचा-कर्मणा हमारा कोई भी कर्म जो किसी आत्मा को जितना सुख देता है, उतना वह हमारे सुख का कारण अवश्य बनता है। परन्तु बिडम्बना ये है कि देहाभिमान के वश हमारी स्वार्थपरता, मृत्यु के भय से प्रभावित हमारे कर्म अनेक निरीह प्राणियों के दुख का ही कारण बनते हैं, जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप हमको भी दुख भोगना पड़ता है।

इस विश्व नाटक में आत्मा के 5000 वर्ष का पार्ट है और आत्मा का आत्माओं के साथ अनेक जन्मों का हिसाब-किताब है, जो सब पूरा होना है इसलिए किसी भी दृश्य या घटना को देखकर या सुनकर कभी आश्चर्य नहीं खाना, दुखी नहीं होना है बल्कि हर दृश्य और घटना को साक्षी होकर देखना है। साक्षी होकर देखने वाले को ये विश्व-नाटक परमानन्दमय अनुभव होगा।

विश्व-नाटक और परस्पर सम्बन्ध

ये विश्व एक नाटक है और सर्व आत्मायें इसमें पार्टधारी हैं। इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है, न कोई किसका मित्र है और न ही कोई किसका शत्रु है, न कोई किसको कुछ दे सकता और न ही कोई किसका कुछ ले सकता है, न किसी ने हमको कुछ दिया और न ही किसी ने हमारा कुछ लिया है। विश्व-नाटक में पार्ट बजाने के लिए विभिन्न

प्रकार के सम्बन्ध बनते हैं। विश्व-नाटक को जानने वाले ज्ञानी पुरुषों के लिए ये वसुधा एक परिवार है। इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण जीवात्मा का अज्ञानता अर्थात् देहाभिमान के वश किससे मोह और किससे घृणा या द्वेषभाव हो जाता है, जिसके कारण अनेक प्रकार के विकर्म करके परस्पर कटु सम्बन्धों का निर्माण करता है, जिनको कर्म-बन्धन कहा जाता है। परमात्मा आकर जब इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देते हैं तब ही आत्माओं के सुखदायी सम्बन्धों का निर्माण होता है।

विश्व नाटक में कोई वस्तु या व्यक्ति अपना-पराया, मित्र-शत्रु नहीं है, नाटक के पार्ट के अनुसार सब अपने-पराये बनते हैं इसलिए किसी को अपना या पराया समझना अज्ञानता जनित भ्रम है जो आत्मा के दु:ख का कारण बनता है।

* विचार करो - जिसे अपना कहते हो वह तुम्हारा है और जिसको पराया कहते हो वह पराया है ? जिसे तुम सुख समझते वह सुख है और क्या उससे भविष्य सुख होगा ? इस जगत में क्या तुम्हारा है और क्या पराया है ?

ये विश्व लेन-देन के परस्पर सम्बन्धों का एक बृहत नाटक है। आदि से अन्त तक हर आत्मा का आपस लेन-देन 5000 वर्ष तक चलता है और अन्त में सर्व आत्माओं का परस्पर का हिसाब-किताब पूरा अवश्य होता है और सर्व आत्मायें अपने सारे हिसाब-किताब पूरे करके कर्मातीत बनकर ही घर वापस जाती हैं। इसलिए अन्त में न चाहते भी एक-दूसरे के साथ अच्छे-बुरे व्यवहार हो जाते हैं परन्तु ज्ञानी पुरुष कब उनसे विचलित न होकर सदा उनसे निर्लिप्त रहते हैं।

वर्तमान जगत के सम्बन्धों, दृश्यों पर विचार करें तो प्रश्न उठता है कि आज जगत में बलात्कार और फिर हत्या जैसे घृणित सम्बन्ध, एक जीवात्मा का दूसरी जीवात्मा की दुर्दशा कर निर्दयता से हत्या करना, आदि-आदि कटु सम्बन्धों का निर्माण कैसे हुआ ? क्या अचानक ऐसे सम्बन्ध बन गये या विश्व-नाटक में ऐसे सम्बन्धों की बिना कारण के नूँध है ? अथवा क्या है ? विश्व-नाटक की यथार्थता पर विचार करें तो इस विश्व-नाटक में कोई भी बात अनायास नहीं होती है, उसका आधार अवश्य है। ये सब कटु सम्बन्ध भी अनायास निर्माण नहीं हुए हैं परन्तु विश्व-नाटक के क्रिया- प्रतिक्रिया और सतोप्रधानता-तमोप्रधानता के सिद्धान्त के अनुसार सतयुग आदि से ही सम्बन्धों में गिरावट आती है, जो द्वापर के बाद विकारों के वशीभूत कटु से कटुतर होती जाती है और अन्त में उनकी ये दशा हो जाती है। संगमयुग पर जब परमात्मा इस विश्व-नाटक का ज्ञान देते हैं तब ज्ञान और योग के आधार पर आत्माओं के पुराने कटु सम्बन्ध पूरे होते हैं और मधुर सम्बन्ध निर्माण होते हैं, उसमें भी विश्व-नाटक का ये

क्रिया और प्रतिक्रिया का सिद्धान्त ही काम करता है परन्तु ज्ञान-योग के आधार पर उनमें मधुरता आती है क्योंकि आत्मा का मूल स्वभाव मधुर है।
आत्मा का आत्मा के प्रति आकर्षण या प्यार स्वभाविक है, जो सारे कल्प चलता है।

सतयुग-त्रेता में आत्मा आत्मिक शक्ति से परिपूर्ण होती है, इसलिए आत्मा के प्रभावशाली होने के कारण यह आकर्षण पवित्र होता और प्यार कहलाता है, फिर वही आकर्षण द्वापर-कलियुग में आत्मा के शक्तिहीन हो जाने के कारण देहाभिमान में परिणित हो जाता है और देहाभिमान प्रभावशाली होने के कारण प्यार अपवित्र हो जाता है और काम तथा मोह का रूप ले लेता है, जिसके कारण आत्माओं के द्वारा अनेक प्रकार के विकर्म होते हैं, सम्बन्धों में कटुता आ जाती है और आत्मायें दुखी हो जाती हैं।
* ड्रामा अनुसार जब आत्माओं का परस्पर हिसाब-किताब बनने या पूरा होने का समय आता है तो उसी अनुसार देश, काल, परिस्थितियाँ बन जाती हैं और आत्मायें उस कार्य को न चाहते भी करने के लिए बाध्य हो जाती हैं। इसलिए हमको किसके प्रति कोई संकल्प नहीं उठना चाहिए। ज्ञानी पुरुष को तो साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखते हुए उसका आनन्द लेना है। इस विश्व-नाटक का ये नियम है - आत्माओं का हिसाब किताब साथ-साथ ड्रामा का पार्ट साथ-2 चलता है अर्थात् सुख-दुख के सम्बन्धों का बराबर हिसाब-किताब है।

किसी आत्मा की अच्छाई-बुराई का निर्णय उसके ड्रामा के पार्ट और किन्ही आत्माओं के साथ कर्मों के हिसाब-किताब पर निर्भर करता है। वही आत्मा हिसाब-किताब के कारण किसी आत्मा के लिए जान दे देती है और कब किसी आत्मा की जान ले भी लेती है। वही आत्मा आज किसके साथ प्यार से व्यवहार करती है तो किसी के साथ घृणा के कारण दुर्व्यहार करती है। किन्ही दो आत्माओं के मध्य आज घनिष्ट प्रेम है तो कल घृणा हो जाती है।

विश्व-नाटक ये इस कल्प का अन्तिम समय है, अभी हर आत्मा के व्यक्तिगत और आपसी हिसाब-किताब पूरे होने ही हैं, इसलिए ज्ञानी पुरुष को किसी भी प्रिय-अप्रिय घटना को देख या सुन कर अपने प्रति या दूसरे के प्रति न आश्चर्य चकित होना चाहिए, न दुखी। साक्षी दृष्टा होकर देखना और सहन करने वाला ही इस जीवन में सुखी और जीवन की अन्तिम परीक्षा में पास होगा।
"कोई कुछ भी करे, सदैव हर्षित रहना चाहिए। इसमें ग्लानि की बात नहीं। ... मेरी इतनी ग्लानि की, फिर मुझे गुस्सा आता है? ... ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है ... बेचारे अज्ञान अंधेरे में हैं। तरस पड़ता है ... सदैव मुस्कराते रहना चाहिए।"

सा. बाबा 21.8.68

विश्व-नाटक और स्वदर्शन चक्र एवं स्वदर्शन चक्रधारी

विश्व-नाटक और चिन्तन-धारा

शास्त्रों में स्वदर्शन चक्र को सबसे प्रभावी शस्त्र माना गया है, जिसके आगे कोई भी शस्त्र काम नहीं करता है अर्थात् जो सब पर विजय प्राप्त करता है। परन्तु स्वदर्शनचक्र क्या है और उसका उपयोग कैसे होता है, कौन कर सकता है, उसका ज्ञान किससे मिलता है, यह कोई नहीं जानता है। अभी ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको सृष्टि-चक्र का जो ज्ञान दिया है, वह ज्ञान ही यथार्थ में स्वदर्शन-चक्र है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर उस ज्ञान को बुद्धि में रखें अर्थात् हमारा स्वदर्शन-चक्र चलता रहे तो हमारे ऊपर किसी भी माया के अस्त्र-शस्त्र का वार नहीं होगा और हम सदा विजय का अनुभव करेंगे। जिससे हमारा ये संगमयुगी जीवन सदा सुखमय होगा। स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा पर किसी भी विकार का प्रभाव हो नहीं सकता। यदि होता है तो कहाँ न कहाँ स्वदर्शन चक्र के ज्ञान की धारणा में कमी है। धारणा का अर्थ केवल ज्ञान नहीं लेकिन उसका ज्ञान, उसका अनुभव, उस पर पूरा निश्चय और उस स्वरूप में स्थित हो अर्थात् वह ज्ञान जीवन की धारणा में हो। इसीलिए बाबा सदा कहते हैं - बच्चे स्वदर्शन चक्रधारी बनो, यह ज्ञान बुद्धि में सदा फिरता रहे तो तुम अपार खुशी में रहोगे। स्वदर्शन चक्र सदा फिरता रहे तो माया कब वार कर नहीं सकती।

"ब्राह्मणों को ही स्वदर्शन-चक्र मिलता है, देवताओं को इस शिक्षा की दरकार ही नहीं।... तुम समझते हो बाबा हर कल्प आकर पतित से पावन बनाते हैं, फिर यह नॉलेज खलास हो जायेगी।"

सा.बाबा 10.11.04 रिवा.

"स्वदर्शन-चक्र फिराना है। सबको वापस ले जाने वाला तो बाप ही है। ऐसे-ऐसे ख्यालात में रहना चाहिए। रात को सोते समय भी बुद्धि में यह नॉलेज घूमती रहे। सुबह उठते भी यही नॉलेज याद रहे। ... रात को बाबा की याद का नियम बनायेंगे तो तुमको खुशी का पारा चढ़ा रहेगा।"

सा.बाबा 4.12.04 रिवा.

"अन्दर विचार चलना चाहिए - अभी हम संगमयुग पर हैं, पावन बन रहे हैं, बाप से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। यह घड़ी-घड़ी सुमिरण करना है।... तुम ईश्वरीय मिशन हो ना। ईश्वरीय मिशन का काम है पहले तो शूद्र से ब्राह्मण और ब्राह्मण से देवता बनाना। ... तुमको सर्व आत्माओं का कल्याण करने का शौक होना चाहिए।"

सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

"तुम्हारा नाम ही स्वदर्शन चक्रधारी। तो उसका चिन्तन चलना चाहिए। स्वदर्शन चक्र कब

रुकता थोड़ेही है। तुम चेतन्य लाइट हाउस हो। ... बहुतों की बुद्धि में ये बातें रहती नहीं हैं, जो उनका चिन्तन करें।" सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

"आत्मा की ही दुर्गति और सद्गति होती है। ये सभी बातें विचार-सागर मंथन करने की हैं। ... बाप कहते हैं - बच्चे बुद्धि को सदा बिजी रखो तो सदा सेफ रहेंगे। इसको ही स्वदर्शन चक्रधारी कहा जाता है।" सा.बाबा 18.12.04 रिवा.

"बाप भी स्वदर्शनचक्रधारी है क्योंकि सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानता है। तुमको भी स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। ... ब्राह्मण ही स्वदर्शन चक्रधारी बनते हैं, देवता स्वदर्शन चक्रधारी कहला न सकें। ... बाप तुम बच्चों को स्वदर्शन चक्रधारी बना रहे हैं।"

सा.बाबा 15.6.05 रिवा.

"चक्र की निशानी लाइट का चक्र दिखाई देगा। ऐसा चक्रधारी सदैव माया के अनेक प्रकार के चक्रों से मुक्त होगा। अपनी देह की स्मृति के अनेक व्यर्थ संकल्पों के चक्र से, लौकिक और अलौकिक सम्बन्धों के चक्र से, अपने अनेक जन्मों के स्वभाव और संस्कारों के चक्र से और प्रकृति के अनेक प्रकार के आकर्षण के चक्र से वह सदैव मुक्त होगा। सिवाय स्वदर्शन चक्र के वह और कोई चक्र में आ नहीं सकेगा।"

अ.बापदादा 18.9.75

"कोई पूछे - शिव का चित्र किस चीज का बनाया हुआ है, तो वह झट बनायेंगे। परन्तु आत्मा-परमात्मा किस चीज का बना हुआ है, यह कोई बता न सके। ... जो पुरुषार्थी बच्चे हैं, वे ऐसी-ऐसी ख्यालात करते रहेंगे। ... जो कुछ सुनते हो, उन सबको छोड़ एक बात पक्की करो कि हमको सतोप्रधान बनना है। फिर सतयुग में जो कल्प-कल्प हुआ होगा, वही होगा, उसमें फर्क नहीं पड़ सकता।" सा.बाबा 8.4.04 रिवा.

"तुम बाप को जान गये हो, इसलिए सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त और ड्युरेशन को भी जान गये हो। एक-एक बात पर विचार सागर मंथन कर अपना आपेही फैसला करना होता है। ... जैसे बाप ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं, वैसे तुम एक्टर्स को भी ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानना है।" सा.बाबा 6.3.04 रिवा.

"वह सब ड्रामा में नूँध है। साक्षी होकर देखना पड़ता है। ... इसमें रोने-रूसने की कोई बात नहीं। अफसोस उनको होता है, जो ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को रियलाइज नहीं करते। यह भी तुम जानते हो कि इस समय जो हम इस ज्ञान से पद पाते हैं, चक्र लगाकर फिर वही बनेंगे। यह बड़ी आश्चर्यवत् विचार सागर मंथन करने की बातें हैं। ... यह बातें तुम बच्चे ही समझाते हो। तुम थोड़ेही कहेंगे कि हम नहीं जानते हैं। तुमको बाप इस समय सब समझाते हैं।"

सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

"ड्रामा बड़ा वण्डरफुल बना हुआ है, इसको समझने की बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए। विचार सागर मन्थन करने से सब कुछ समझ में आ जाता है। यह बना-बनाया अनादि ड्रामा है।"

सा.बाबा 8.03.06 रिवा.

"अभी तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनो तो तुम 21 जन्मों के लिए चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे। अनेक बार तुमने राज्य लिया है और गंवाया है।... यह चक्र बुद्धि में रखना है।"

सा.बाबा 22.02.06 रिवा.

"मेहनत तुमको करनी है। मेरा तो ड्रामा अनुसार जो समझाता आया हूँ, वह पार्ट चला आता है। जो बताने का था, वही आज बता रहा हूँ। पार्ट इमर्ज होता रहता है। ... मैं पहले से जानता नहीं था कि क्या सुनाऊंगा। भल इनकी सोल विचार-सागर मन्थन करती है। यह विचार सागर मन्थन कर सुनाते हैं या शिवबाबा सुनाते हैं - यह बड़ी गुह्य बातें हैं। ... जो सर्विस पर तत्पर होंगे, उनका ही विचार सागर मन्थन चलता रहेगा।"

सा.बाबा 19.01.06 रिवा.

"अब ड्रामा पूरा होता है, अब वापस घर जाना है। ... जिसको चक्र का ज्ञान है, उसको कहा जाता है स्वदर्शन चक्रधारी। ... सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज बाप ही देते हैं। यह है स्वदर्शन चक्र। बाकी कोई हिंसा की बात नहीं है।"

सा.बाबा 5.5.06 रिवा.

विश्व-नाटक और साइन्स के अविष्कार

विश्व-नाटक में साइन्स के अविष्कारों की भी अनादि-अविनाशी नूँध है, इसलिए समय आने पर उनकी बुद्धि को टच होता है और वैज्ञानिक नये-नये अविष्कार करते ही हैं, जिनको वे चाहते भी बन्द नहीं कर सकते हैं और समय से पहले अविष्कार करना चाहें तो भी नहीं कर सकते हैं। संसार में जो भी आश्चर्यजनक अविष्कार हुए हैं, वे सब शिवबाबा के अवतरण के बाद ही हुए हैं। शिवबाबा उन बच्चों को भी याद करते हैं और उनकी महिमा करते हैं।

"कितना भी माथा मारो कि यह बॉम्बस आदि बनाना बन्द हो जाये परन्तु ऐसे हो नहीं सकता क्योंकि यह ड्रामा में नूँध है। ... उन्होंका है साइन्स घमण्ड, जिससे विनाश होता है, फिर जीत होती है साइलेन्स घमण्ड की।"

सा.बाबा 15.10.05 रिवा.

विश्व-नाटक और भक्ति के कर्म-काण्ड, साक्षात्कार आदि

भक्ति मार्ग में जो भी कर्म-काण्ड चलते, शास्त्र आदि बनाये, साक्षात्कार आदि होते हैं, ये सब ड्रामा में पहले से ही नूँध है, जो संस्कार समय आने पर उन आत्माओं में जाग्रत हो जाते हैं। वैज्ञानिक आदि जो अनेक प्रकार के आश्चर्यजनक अविष्कार करते हैं, ये सब भी ड्रामा में पहले से ही नूँध है, जो समय पर उन आत्माओं में संस्कार जाग्रत हो जाता है और उसके करने बिगर वे रह नहीं सकते।

"यह सभी साक्षात्कार की रीति ड्रामा में बनी हुई है, जो रिपीट होती है। बाकी आत्मा कोई आती नहीं है। आगे टेबुल में भी बुलाते थे। बाबा को सभी अनुभव है। अब टेबुल में आत्मा तो आ नहीं सकती। जिसने जो कुछ किया, वह ड्रामा में था, सो हुआ। ड्रामा को कितनी अच्छी रीति पकड़ना पड़ता है। भोग लगाया जाता है, आत्मा को बुलाया जाता है - यह सभी ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 26.4.73 रिवा.

"प्रिन्स-प्रिन्सेज का भी साक्षात्कार करते हैं। ... यह है सभी साक्षात्कार। बाकी आत्मा कोई निकल नहीं जाती है। यह साक्षात्कार की भी ड्रामा में नूँध है। सोल को बुलाते हैं तो ऐसे थोड़ेही आत्मा शरीर से निकलकर आती है। फिर तो वह शरीर रह न सके।... नूँध है तब सोल आती है। यह ड्रामा का राज समझना नई बात है ना। तो क्लास में भी रेग्यूलर आना पड़े।"

सा.बाबा 31.3.73 रिवा.

"यह साक्षात्कार आदि की सब ड्रामा में नूँध है। जो जैसी भावना रखते हैं, उसका साक्षात्कार हो जाता है। ... इन गीतों आदि की भी ड्रामा में नूँध है। कब उदास हो जाते हो तो ये अच्छे-अच्छे गीत बजाओ तो खुशी में आ जायेंगे।"

सा.बाबा 15.10.05 रिवा.

विश्व-नाटक और स्वर्ग-नर्क, जीत-हार, दिन-रात, क्षीरसागर, विषयसागर

स्वर्ग-नर्क का वर्णन प्राय: सभी धर्मों में है परन्तु स्वर्ग और नर्क हैं क्या और कहाँ हैं, यह किसी ने भी नहीं बताया, इसलिए कई लोग स्वर्ग-नर्क को कल्पना की ही बातें मानते हैं। अभी ज्ञान सागर परमात्मा ने इस सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का यथार्थ ज्ञान दिया, जिससे स्पष्ट हुआ कि स्वर्ग-नर्क क्या है। इस सृष्टि-चक्र का प्रथम आधा भाग अर्थात् सतयुग-त्रेता स्वर्ग कहलाता है, जहाँ आत्मायें सदा सुख का अनुभव करती हैं और पीछे का आधा भाग अर्थात् द्वापर-कलियुग नर्क कहलाता है, जहाँ आत्मायें कर्मों अनुसार सुख-दुख दोनों को प्राप्त

करती हैं।

स्वर्ग में आत्मा में आत्मिक शक्ति होती है, इसलिए उसका देह और देह के धर्मों पर अधिकार होता है, जिससे आत्मा को न मृत्यु का भय होता है और न ही किसी विकार का प्रभाव आत्मा पर होता है इसलिए स्वर्ग में सदा सुख-शान्ति होती है। मृत्यु का नाम-निशान ही नहीं होता है। इसलिए ही स्वर्ग को अमरलोक और नर्क को मृत्यु लोक कहा जाता है। स्वर्ग में सन्तानोत्पत्ति भी योगबल से होती है। सृष्टि के नियमानुसार धीरे-धीरे आत्मिक शक्ति का ह्रास होता जाता है और त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि में आत्मा पर देहाभिमान प्रभावी हो जाता है, जिससे विकारों की प्रवेशता होती है। सन्तानोत्पत्ति के लिए भोगबल की प्रक्रिया आरम्भ होती है और ये सृष्टि नर्क बन जाती है। देहाभिमान के वशीभूत आत्मा को मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय सहन करना पड़ता है। स्वर्ग-नर्क में दिन और रात का अन्तर है, जिनका विस्तार से वर्णन करना यहाँ सम्भव नहीं है और आवश्यकता भी नहीं है। बाबा ने इस सम्बन्ध में विस्तार से बताया है।

विश्व-नाटक में सुखधाम-दुखधाम को ही क्षीरसागर-विषयसागर, स्वर्ग-नर्क आदि नामों से उनके गुण-धर्मों के आधार पर याद किया जाता है।

"बाप आते हैं नर्कवासी को स्वर्गवासी बनाने। स्वर्ग क्या होता है, यह भी किसको पता नहीं। और धर्म वाले तो स्वर्ग को देख भी नहीं सकते।"

सा.बाबा 21.7.05 रिवा.

"इस पाप की दुनिया से ... यह गीत भी सिद्ध करता है कि दो दुनिया हैं। एक है पाप की दुनिया और दूसरी है पुण्य की दुनिया अर्थात् दुख की दुनिया और सुख की दुनिया।"

सा.बाबा 8.1.05 रिवा.

"बाप आते ही हैं नई राजधानी स्थापन करने, इसलिए इसको राजयोग कहा जाता है। राजयोग का बहुत महत्व है। भारत का प्राचीन राजयोग सीखना चाहते हैं। ... समझते हैं - योग से ही पैराडाइज स्थापन हुआ था।"

सा.बाबा 14.1.05 रिवा.

Q. स्वर्ग और नर्क की सीमा रेखा क्या है?

पवित्रता अर्थात ब्रह्मचर्य अर्थात् योगबल ही स्वर्ग और नर्क की सीमा-रेखा है और देवताओं तथा असुरों की मुख्य पहचान है। जब तक आत्मा में योगबल से सन्तानोत्पत्ति की शक्ति होती है, तब तक यह दुनिया स्वर्ग कहलाती है और द्वापर आदि से जब यह शक्ति खत्म हो जाती है तो भोगबल अर्थात् विषय-भोग से सन्तानोत्पत्ति होना प्रारम्भ होती है तो यह दुनिया नर्क

कहलाती है।

"पतित उनको कहा जाता है, जो विकार में जाते हैं। पतित मनुष्य, पावन निर्विकारी देवताओं के आगे जाकर मन्दिर में उनकी महिमा गाते हैं। ... यह खेल ही पतित से पावन और पावन से पतित होने का है। ... पतित को अपने विकर्मों का दण्ड जरूर भोगना पड़ता है। पिछाड़ी में कोई जन्म देकर ही सजा देंगे। मनुष्य तन में ही सजा खायेंगे, इसलिए शरीर जरूर धारण करना पड़ता है।" सा.बाबा 28.1.05 रिवा.

"नम्बरवन है काम, उनको ही पतित कहा जाता है। क्रोधी को पतित नहीं कहेंगे।... सतोप्रधान को पुण्यात्मा और तमोप्रधान को पापात्मा कहा जाता है। विकार में जाना पाप है। बाप कहते हैं अब पवित्र बनो।" सा.बाबा 7.5.05 रिवा.

Q. स्वर्ग की आकर्षण और स्मृति किन आत्माओं को आयेगी ?

जो आत्मायें स्वर्ग के निर्माण में सहयोगी होंगी, उनको ही यह स्मृति आयेगी और यह स्मृति उसी सीमा तक आयेगी, जिस सीमा तक वे स्वर्ग के निर्माण में सहयोगी होंगी। ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा की प्रवेशता होते ही या ब्रह्मा के रूप में जन्म लेते ही अपना तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क, समय-शक्ति सब स्वर्ग की स्थापना में अर्पण कर दिया, इसलिए उनको सदा ही स्वर्ग की स्मृति इमर्ज रूप में रही, अपना स्वर्गिक स्वरूप याद रहा।

"स्वर्ग को कल्पना तो नहीं समझते हो। ... अभी जब दुख की दुनिया प्रैक्टिकल में है तो जरूर सुख की दुनिया भी प्रैक्टिकल में होनी चाहिए।... अपने विवेक और इस नॉलेज के बल से समझते हैं कि जब दुख की दुनिया है तो जरूर सुख की दुनिया भी होनी चाहिए।... उसका फाउण्डेशन अभी लग रहा है।" मातेश्वरी 24.6.65

"कैसा यह विचित्र ड्रामा बना हुआ है। कोई भी इसके राज को नहीं जानते। ... एक्टर होकर ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को न जानें तो उन्हें क्या कहेंगे।... सच से जीत, झूठ से हार। सच्चा बाप सचखण्ड की स्थापना करते हैं। रावण से तुमने हार खाई है। यह सब खेल बना हुआ है।" सा.बाबा 26.5.05 रिवा.

"हर 5000 वर्ष के बाद मैं यही आकर समझाता हूँ।... तुम बच्चे ही हार-जीत का पार्ट बजाते हैं, फिर मैं आता हूँ ले जाने के लिए।... बाबा भी ड्रामा अनुसार बंधायमान है, सबको वापस जरूर ले जायेंगे।" सा.बाबा 26.7.04 रिवा.

"बनी बनाई बन रही... जो कुछ होता है, सब ड्रामा में नूँध है, उसको साक्षी होकर देखो।... सब तो स्वर्ग में आ नहीं सकते हैं। यह ड्रामा बना हुआ है। भारत में ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था।" सा.बाबा 29.6.06 रिवा.

"अभी तुम रचयिता बाप और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। बाबा झाड़ का भी राज़ समझाते हैं और ड्रामा का राज़ भी समझाते हैं।... सब भगवान के बच्चे हैं तो सब स्वर्गवासी होने चाहिए परन्तु सब तो स्वर्गवासी होते नहीं हैं। सिर्फ देवतायें ही स्वर्गवासी होते हैं।"

सा.बाबा 10.7.06 रिवा.

विश्व-नाटक और स्वमान एवं सम्मान

विश्व-नाटक और ऊंच-नीच अर्थात् अहंकार-हीनता की भावना

(Feeling of Superiority and Inferiority)

वर्तमान जगत में प्राय: सभी जीवात्माओं में अहंकार या हीनता का भावना देखने में आती है और उनमें भी मनुष्य अहंकार की भावना से सबसे अधिक ग्रसित है। इसका मूल कारण अज्ञानता जनित देहाभिमान है। अन्तर्दृष्टि से देखें तो इस विश्व-नाटक में अहंकार-हीनता और ऊंच-नीच की भावना का कोई स्थान नहीं है क्योंकि इसमें हर आत्मा का अनादि-अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है, हर आत्मा परमात्मा की प्रिय सन्तान है, हर आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान बनती है, अपने समय अनुसार हर आत्मा सुखी-दुखी होती है फिर अहंकार और हीनता का भाव क्यों ? ये विश्व-नाटक पूर्ण न्यायपूर्ण है, इसलिए मन में ऊंच-नीच, अहंकार-हीनता की भावना लाने का कोई औचित्य नहीं है, फिर भी आत्मा में अज्ञानता के वश ये भाव जाग्रत होते हैं, जो उसके द्वारा अनेक विकर्मों का कारण बनते हैं, जिनके परिणाम स्वरूप आत्मा दुख भोगती है। विश्व-नाटक की वास्तविकता पर विचार करें तो हर आत्मा में कोई न कोई विशेष विशेषता अवश्य है, जिससे वह परमात्मा को प्रिय है।

हर आत्मा परमात्मा की प्रिय सन्तान है और इस विश्व-नाटक में पार्टधारी है, फिर अहंकार और हीनता का भाव क्यों ? क्या एक बाप के दो बच्चों में छोटा भाई, अपने बड़े भाई को देखकर हीनता अनुभव करेगा या बड़ा भाई, छोटे भाई के सामने अपने अहंकार को प्रगट करेगा ? भाइयों में तो परस्पर प्रेम होता है, अहंकार-हीनता की भावना नहीं। ऐसे ही क्या एक बाप के दो बच्चे एक नाटक में अच्छा-बुरा पार्ट बजायेंगे तो दोनों पार्ट बजाने वाले परस्पर अहंकार-हीनता का भाव रखेंगे ? वे तो अन्दर अहंकार-हीनता का भाव न रखकर नाटक में पार्ट मात्र बजायेंगे। क्या एक नाटक में पार्ट बजाने वाले विभिन्न एक्टर्स पार्ट के आधार पर किसी एक्टर को अहंकार-हीनता से देखेंगे ?

विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। इस विश्व-नाटक में जो आत्मा

आज सतोप्रधान ऊंच पार्ट बजा रही है, उसको तमोप्रधान नीचा पार्ट भी बजाना ही है। किसी एक्टर के ऊंच-नीच का मापदण्ड उसके बाह्य पार्ट से नहीं लेकिन उसके स्वभाविक आत्मिक गुणों पर आधारित होता है और आत्मिक गुण सभी में समान हैं, जो पार्ट में आने पर पार्ट के अनुसार भिन्न-भिन्न रूप धारण करते हैं। विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानने वाला व्यक्ति कब भी अहंकार और हीनता की भावना अपने में ला नहीं सकता।

अहंकार-हीनता दोनों आत्मा के बड़े वैरी हैं, जो आत्मा के द्वारा अनेक प्रकार के विकर्म कराकर, उसको श्रेष्ठ सुख से वंचित कर देते हैं। इनसे ग्रसित आत्मा श्रेष्ठ पुरुषार्थ से वंचित हो जाती है, जिसके परिणाम स्वरूप भविष्य श्रेष्ठ सुख से भी वंचित हो जाती है। जो आत्मा इस विश्व-नाटक की यथार्थता को समझ लेता है, उसको ये वैरी स्पर्श भी नहीं कर सकते हैं और वह कभी भी इस वैरी के चंगुल में नहीं आता है। वह सभी को समदृष्टि से देखता और सम व्यवहार करता है।

इस विश्व-नाटक में हर आत्मा को अपने-अपने वरदान मिले हुए हैं। शिवबाबा ने सभी आत्माओं को उनके समय और पार्ट के अनुसार वरदान दिये हैं, जो शब्दों में भी हो सकते हैं तो गुप्त रूप में भी हो सकते हैं। एक बुद्धिमान प्राणी मनुष्य को भी वरदान है तो एक चींटी, एक चिड़िया को भी वरदान है, जिसके आधार पर वह इस विश्व-नाटक का परम सुख अनुभव करती है। एक चिड़िया स्वछन्द आकाश में उड़ान भरते हुए परमानन्द का अनुभव करती है क्योंकि उसको उड़ने का वरदान मिला हुआ है, उस स्वच्छन्द उड़ान का सुख मनुष्य अनुभव नहीं कर सकता है। मनुष्यों में भी हरेक का अपना-अपना वरदान है। इस सत्य का अनुभव करने वाला व्यक्ति कब अहंकार या हीनता के वशीभूत नहीं हो सकता, उसमें ये अहंकार हीनता की बदबू नहीं आ सकती।

परमात्मा सर्व आत्माओं का बाप है, उसने सर्व आत्माओं को अपने पार्ट अनुसार सब कुछ दिया है। इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति समझने वाली आत्मा कभी भी ये अहंकार नहीं कर सकती है कि हम परमात्मा के अधिक प्यारे हैं, दूसरे कम या कोई आत्मा ये उल्हना नहीं दे सकता है कि परमात्मा ने किन्हीं आत्माओं को अधिक दिया है और हमको कम दिया है अर्थात् इस विश्व-नाटक में अहंकार और हीनता का कोई स्थान नहीं है। जीवन में अहंकार हीनता का आना आत्मा का अज्ञानता का प्रतीक है। परमात्मा पिता न्यायकारी समदर्शी है और ड्रामा भी न्यायपूर्ण है।

* ये वैरायटी ड्रामा है, वैरायटी पार्ट हैं। इसमें किसी के पार्ट को देखकर अपने में हीन-भाव नहीं लाना है और न ही अहंकार में आना है - ये सब परिवर्तनशील है। जो आज राजा है, वह

कल प्रजा बनेगा और जो प्रजा में है, वह कल राजा भी बन सकता है। इस सत्य को ध्यान में रखकर अहंकार और हीनता से परे होकर समत्वभाव धारण करना ही ज्ञानी आत्मा का लक्षण है और सुखी जीवन का आधार है।

बाबा के महावाक्य हैं - इच्छा अच्छा बनने नहीं देगी अर्थात् इच्छा वाला अच्छा बनने का पुरुषार्थ नहीं कर सकेगा। कामना सामना करने नहीं देगी अर्थात् कामना वाला माया का और मायावी मनुष्यों का सामना नहीं कर सकेगा।

स्वमान वाले में अपमान और अभिमान की फीलिंग हो नहीं सकती। ज्ञानी आत्मा ही आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक की यथार्थता एवं विधि-विधान को समझकर अहंकार और हीनता, भय और चिन्ता दोनों से मुक्त हो जाता है और स्वमान और स्वाभिमान से जीता है। उसके जीवन बड़े और छोटे की दृष्टि निकलकर समभाव जाग्रत हो जाता है।

जो किससे कुछ ले लेता है या लेने की इच्छा रखता है, उसको देने वाले के सामने सिर झुकाना ही पड़ता है अर्थात् उसमें स्वमान की कमी अवश्य आती है।

"इस ड्रामा में जिनका जो पार्ट है, वह चलता ही रहता है। हम किसकी महिमा थोड़े ही करेंगे। बाप भी कहते हैं तुम मेरी क्या महिमा करेंगे ? मेरी तो ड्युटी है पतित से पावन बनाने की। ... बाबा कहते हैं मैं भी ड्रामा के वश हूँ ... मैं पावन बनाने बिगर रह नहीं सकता ... सेकण्ड बाई सेकेण्ड जो पास होता है, वह ड्रामा मेरे से कराता है। मैं परवश हूँ, इसमें महिमा की बात नहीं।"

सा. बाबा 16.2.99 रिवा.

"अब बाबा आया है, कुछ तो नई दुनिया में ट्रान्सफर कर दें। मनुष्य दान-पुण्य आदि करते हैं दूसरे जन्म में पाने के लिए। तुमको भी नई दुनिया में मिलना है। यह भी करेंगे वे ही, जिन्होंने कल्प पहले किया होगा। कम जास्ती कुछ भी होगा नहीं। तुम साक्षी होकर देखते रहेंगे। कुछ कहने की भी दरकार नहीं रहती है। करने का भी अहंकार नहीं आना चाहिए।"

सा.बाबा 20.2.04 रिवा.

"अब यह पोप है क्रिश्चियन धर्म का बड़ा। समझो यहाँ आते हैं, तो ऐसे तो नहीं कि बाबा जाकर दरवाजे पर रिसीव करेंगे। यहाँ का कायदा है कि कोई भी आये, उनको विजिटिंग रूम में बिठाओ, फार्म भराओ। मनुष्य अचम्भे में हो जायेंगे। ... जो कल्प पहले ड्रामा में एक्ट चली होगी, वही चलेगी। इसमें बड़ा अच्छा बुद्धि का काम है। तुम बच्चों को कितना फकुर रहना चाहिए।"

सा.बाबा 16.11.73 रिवा.

"श्रीमत पर पढ़ना और पढ़ाना है, यही धन्धा है। बाकी कर्मभोग तो जन्म-जन्मान्तर का बहुत है ना। समझो कोई बीमार पड़ते हैं, कल हार्ट फेल हो जाता है तो समझा जाता है - भावी ड्रामा की। उनको शायद और पार्ट बजाना होगा, इसलिए दुख की बात नहीं रहती। ड्रामा अटल है। उनको दूसरा पार्ट बजाना है, फिकर की क्या बात है और ही भारत की अच्छी सेवा करेंगे क्योंकि संस्कार ही ऐसे ले जाते हैं, कोई के कल्याण अर्थ। तो खुश होना चाहिए।"

सा.बाबा 18.6.02 रिवा.

कहु रहीम भावी प्रबल ... लै जाये। कर्म और कर्मभोग इस विश्व-नाटक की अपरिहार्य घटनायें हैं। विश्व-नाटक में कर्म और कर्म-फल की अविनाशी नूँध है। सतयुग-त्रेता में कर्मफल सुखदायी होता है, द्वापर-कलियुग में विकारों के वशीभूत कर्म होने के कारण कर्म-फल दुखदायी हो जाता है, इसलिए उसको कर्मभोग कहा जाता है। कर्मभोग के निदान के लिए भी हर आत्मा के ड्रामा के पार्ट और कर्मों के हिसाब-किताब के अनुसार अपनी2 सीमायें हैं, जिनके आगे कोई जा नहीं सकता। उसके आगे मृत्यु ही अन्तिम सीमा रेखा है, जो सबके लिए समान है। कर्मभोग के निदान के लिए साहूकार अधिक खर्च कर सकता, जबकि गरीब कम खर्च कर सकता परन्तु ड्रामा अनुसार कर्मभोग की वेदना एक गरीब और साहूकार दोनों को ही कर्मानुसार सहन करनी होती है। विश्व-नाटक का ज्ञान कर्मभोग की वेदना को सहन करने में बहुत मदद करता है।

देह से न्यारा होकर अपने मूल स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ कर्मभोग से मुक्त होने के लिए सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ है और आत्मिक स्थिति सर्व कर्मभोगों से मुक्त होने का एकमात्र यथार्थ साधन है, जिसमें हर आत्मा पूर्ण स्वतन्त्र है और वह स्थिति हर आत्मा को ड्रामा के पार्ट और समय अनुसार अवश्य प्राप्त होती है। जो विश्व-नाटक के इस सत्य को और कर्म-कर्मफल के विधि-विधान को जानते हैं, वे कभी कर्मभोग के समय अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होते हैं। ऐसे धीर-वीर, ज्ञानी पुरुष ही अभीष्ट पुरुषार्थ करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में अवश्य सफल होते हैं। इसीलिए गायन है - धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी आपत्ति काल परखिये चारी। ज्ञान और धैर्य की परीक्षा कर्मभोग या आपत्ति काल में ही होती है और उसके आधार पर ही उसका भाग्य निश्चित होता है।

"दुनिया वाले डरते हैं और आप और ही निर्भय होते हैं। ... ड्रामा अनुसार यह सभी और ही मजबूत करते हैं। ... बीमारी बापदादा को तो खेल लगता है। जब ब्रह्मा बाप ने क्रास किया है तो आप सबको भी क्रास तो करना ही है। ... ये क्रास करेंगे तो क्रास पर नहीं चढ़ेंगे।"

अ.बापदादा 20.12.92 दादियों से

"विश्वकिशोर को ... जिस समय जाने का समय रहा, उस समय वह भी भूल गया था। यह भी ड्रामा में नष्टोमोहा बनने की विधि नूँधी हुई थी, जो रिपीट हो गई क्योंकि कुछ अपनी मेहनत, कुछ बाप ड्रामा अनुसार कर्मबन्धन मुक्त बनाने में सहयोग भी देता है।"

अ.बापदादा 18.1.86

"ड्रामा अनुसार स्वर्ग की स्थापना होनी है जरूर। जैसे दिन के बाद रात, रात के बाद दिन होता है वैसे ही कलियुग के बाद जरूर सतयुग होना है।... कर्मभोग की भोगना भी खुशी में हल्की हो जाती है। कुछ भोगना से, कुछ योगबल से हिसाब-किताब चुक्तू होना है।"

सा.बाबा 13.03.06 रिवा.

विश्व-नाटक और विनाश एवं कर्मातीत स्थिति

विश्व-नाटक में स्थापना और विनाश दोनों की अविनाशी नूँध है, जो अपने समय पर अवश्य होते हैं। विश्व-नाटक में आत्माओं की कर्मातीत स्थिति और विनाश का घनिष्ट सम्बन्ध है। जब आत्माओं की कर्मातीत स्थिति होगी तो विनाश होगा और जब विनाश होगा, उस समय सर्वात्माओं की न चाहते भी कर्मातीत स्थिति हो जायेगी क्योंकि सर्वात्मायें कर्मातीत बनकर ही परमधाम वापस जायेंगी। इसलिए बाबा कहते हैं तुमको विनाश कब होगा, यह नहीं सोचना है लेकिन हमारी कर्मातीत स्थिति कैसे हो, वह सोचना है।

सतयुग के आदि में 9 लाख आत्मायें सर्वगुण सम्पन्न... अहिंसा परमोधर्म की स्थिति वाली होंगी तो ड्रामानुसार 9 लाख ब्रह्मा कुमार-कुमारियां ऐसे कर्मातीत अभी बनेंगे जरूर।

"कोशिश करते, ऐसे बॉम्बस बनायें जो मनुष्य फट से मर जायें। बॉम्बस की इम्प्रूवमेन्ट करते रहते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। ड्रामा का बना-बनाया खेल है। कल्प-कल्प ऐसे विनाश होता है।"

सा.बाबा 11.7.06 रिवा.

"यह बना-बनाया अनादि-अविनाशी ड्रामा है। अभी है संगमयुग, जब सभी एक्टर्स हाजिर हैं। नाटक जब पूरा होता है तो सब एक्टर्स, क्रियेटर, डायरेक्टर आदि सब आकर हाजिर होते हैं। अब यह बेहद का ड्रामा भी पूरा होता है।"

सा.बाबा 18.7.06 रिवा.

विश्व-नाटक और पुण्य-पाप का खाता /
विश्व-नाटक और काम-विकार एवं पाप-पुण्य

पुण्य या पाप की परिभाषा क्या है, उसका निर्णय क्या है और उनका ड्रामा के साथ सम्बन्ध क्या है?

विश्व-नाटक में पाप-पुण्य की क्या गति-विधि है, वह भी अति गहन है और उस गहन गति का भी विधि-विधान विश्व-नाटक में अनादि नूँधा हुआ है। पाप-पुण्य अर्थात् आत्माओं के साथ सुख-दुख का हिसाब-किताब का खाता बढ़ना या घटना। साधारण रूप में हमारे जिस कर्म से किसी आत्मा को सुख मिले, वह है हमारा पुण्य-कर्म और जिससे किसको दुख मिले, वह है पाप-कर्म कहा जायेगा।

विश्व-नाटक के नियमानुसार पाप-कर्म या पुण्य-कर्म के फल को निर्णय करने में कर्म के साथ कर्ता की भावना का महत्वपूर्ण स्थान है। विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान हमको सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना रखना सिखाता है क्योंकि ड्रामा के ज्ञान से हम किसी आत्मा को दोषी नहीं ठहरा सकते और जब कोई आत्मा दोषी है ही नहीं तो किसके साथ दुर्भावना क्यों रखेंगे। ड्रामा में कर्म और फल का अटल विधान नूँधा हुआ है, इसलिए ड्रामा के यथार्थ ज्ञानी आत्मा कब ऐसा कर्म नहीं करेगी, जिससे उसके परिणाम स्वरूप उसे या किसी आत्मा को दुख मिले। इस प्रकार जब हमसे ऐसे विकर्म नहीं होंगे तो हमारा पाप का खाता नहीं बढ़ेगा और जब हमसे विकर्म नहीं होंगे तो जरूर सुकर्म होंगे, जिससे हमारा पुण्य का खाता वृद्धि को पायेगा।

ड्रामा के ज्ञान को भूलकर हम किसी आत्मा के प्रति दुर्भावना रखकर उसके अहित की कामना करते तो ये भी हम अपने पाप का खाता बढ़ाते हैं, उस आत्मा के साथ बुरा हिसाब-किताब बनाते हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम बुरा होते देखकर या तो साक्षी होकर निर्संकल्प रहें या बुरा करने वाले के प्रति भी शुभ भावना रख उसको उस बुराई से रोकने या मुक्त करने में सहयोगी बनें। व्यर्थ में उसके प्रति अशुभ भावना या दुर्भावना रखकर पाप के भागी नहीं बनें।

विश्व-नाटक की यथार्थता को विचार करें तो काम-विकार भी एक अति आवश्यक प्रक्रिया है, जो द्वापर से सन्तानोत्पत्ति का आधार बनती है। यह भी सत्य है कि जैसे सतयुग में साधन-सामग्री के उपभोग से आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है, उसी प्रकार द्वापर से विषय-भोग से भी आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है, उसमें भी काम-विकार के द्वारा सबसे अधिक आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है।

द्वापर से जब स्त्री-पुरुष स्वेच्छा से सन्तानोत्पत्ति की कामना से समयानुसार विषय-भोग करते हैं तो उसको पाप कर्म नहीं कहा जा सकता है क्योंकि सन्तोत्पत्ति विश्व-नाटक की एक अति आवश्यक क्रिया है परन्तु जब विषय-भोग असमय अर्थात् गर्भ-धारण के समय के अतिरिक्त में करते हैं , मनोरंजन के रूप में करते हैं, एक-दूसरे की इच्छा के विपरीत अर्थात् वलात्कार करते हैं, परमात्मा पिता का बनकर, उसकी आज्ञा का उलंघन अर्थात् संगमयुग पर

आकर करते हैं ... तो उसको पाप-कर्म कहा जायेगा और उसका दण्ड आत्मा को अवश्य भोगना पड़ेगा।

ये भी कटु-सत्य है कि किसी भी रीति से विषय-भोग किया जाये, वह आत्मिक शक्ति को अति ह्रासित करता ही है और परिणामत: पाप-कर्म में अवश्य ढकेलता है। इसीलिए कहा गया है - कामोपजायते क्रोध: ... अर्थात बुद्धि का नाश हो जाता है। बाबा ने विषय-भोग को सबसे बड़ा पाप-कर्म कहा है उससे आत्मा की शक्ति सबसे अधिक क्षीण होती है, जिसके फलस्वरूप आत्मा दुख पाती है।

यहाँ ये बात विशेष ध्यान योग्य है कि वर्तमान समय विश्व-नाटक का संगमयुग है और अभी कलियुग विनाश हो रहा है और सतयुग आने वाला है। अभी इस दिव्य कर्तव्य के परमपिता परमात्मा का अवतरण हुआ है और उनसे हमको ये ज्ञान मिल गया है कि सतयुग में विषय-भोग होता ही नहीं और हमको देवता बनना है, हमको ईश्वर की आज्ञा है कि पवित्र बनो, योगी बनो तो इस स्थिति में अगर कोई विषय-भोग करता है तो वह महापाप का भागी बन जाता है क्योंकि ईश्वराज्ञा का उलंघन करता है। इसलिए कलियुग के कर्मों और संगम के कर्मों का विधि-विधान अलग-अलग है, जिसका ज्ञान बाबा ने हमको विश्व-नाटक के ज्ञान के साथ दिया है।

"दूसरों पर भी मेहर करनी है रास्ता बताने की, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने की। बाबा ने तुम बच्चों को पुण्य और पाप की गहन गति भी समझाई है। पुण्य क्या है और पाप क्या है। सबसे बड़ा पुण्य है - बाप को याद करना और दूसरों को भी याद दिलाना। पाप है - संगदोष में आकर अपना और दूसरों का खाना खराब करना। सेन्टर खोलना, तन-मन-धन दूसरों की सेवा में लगाना - यह है पुण्य।" सा.बाबा 18.1.03 रिवा.

Q - जब ड्रामा में हरेक आत्मा का अनादि-अविनाशी पार्ट नूँणा हुआ है तो आत्मा पर पाप-पुण्य का प्रश्न क्यों ?

पाप-पुण्य के कारण आत्माओं को सुख-दुख की अनुभूति होती है। ये खेल ही पाप-पुण्य, हार-जीत, सुख-दुख का बना हुआ है, एक के अनुभव से ही दूसरे का अनुभव सम्भव है अर्थात् यदि आत्मा को दुख का अनुभव नहीं हो तो सुख का भी अनुभव हो नहीं सकता। पाप-पुण्य की स्थिति और आत्मा की कलायें - सतयुग-त्रेता में सुख भोगते आत्मा की शक्ति की कलायें (Digree) कम होती जाती परन्तु वहाँ पाप या पुण्य नहीं होता है।

"फूल बनने में कितने तूफान आते हैं। ... महान पुण्यात्मा भी यहाँ बनते हैं और फिर बिगड़ते हैं तो महान पापात्मा बन धमचक्कर मचा देते हैं। ड्रामा में ऐसा है। माया हैरान करती है।...

ड्रामा अनुसार सहन करना पड़ता है।" सा.बाबा 28.3.73 रिवा.

"विकार में जाने वाले को असुर कहा जाता है। वायुमण्डल को खराब करते हैं ... यह भी उनका पार्ट है। ऐसे असुर कल्प पहले भी थे।... वे अपना भी घात करते हैं और औरों को भी नुकसान पहुँचाते हैं।"

सा.बाबा 26.6.06 रिवा.

विश्व-नाटक और प्रेम

प्रेम इस विश्व-नाटक का एक मुख्य घटक है, इसलिए इसे एक प्रेम-कहानी कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि प्रेम ही इस विश्व-नाटक का मूलाधार है, जिसके कारण ये विश्व-नाटक विशेष रुचिकर है और ये विश्व-नाटक आदि से अन्त तक चलता है। सारे कल्प ही इन्द्रीय सुखों के कारण आत्माओं का आत्माओं से प्यार अर्थात् दैहिक प्यार रहता है, जिससे आत्मिक पतन होता और आत्मा की एवं कल्प की उतरती कला होती है। भले सतयुग-त्रेता युग में आत्मायें आत्मिक शक्ति से सम्पन्न होती हैं, जिसके कारण आत्मा में विकारों की प्रवेशिता नहीं होती है, जिससे ये प्रेम पवित्र-प्रेम कहा जाता है। द्वापर से देहाभिमान के कारण विकारों की प्रवेशिता होती तो ये प्रेम विकृत हो जाता है। संगम पर आत्माओं का परमात्मा से प्यार होता है, जिससे आत्मायें पवित्र बनती हैं, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती हैं और आत्मिक उत्थान होता है तथा आत्माओं एवं तत्वों सहित विश्व की चढ़ती कला होती है। परमात्म प्रेम से आत्मायें पावन बनती है और अपने घर परमधाम जाती है, जहाँ से नये कल्प का शुभारम्भ होता है। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान से आत्माओं में विश्व-प्रेम की भावना जाग्रत होती है और विश्व-बन्धुत्व की भावना बलवती होती है, जो भारतीय सभ्यता का प्राण है।

द्वापर से भक्तिमार्ग आरम्भ होता है, उसका आधार भी प्रेम ही है परन्तु वह प्रेम अन्धश्रृद्धा से परमात्मा के प्रति होता है। सारे धर्म-शास्त्र, रामायण, महाभारत आदि संगमयुग के इस प्रभु-प्रेम की कहानी के ही वृतान्त हैं। इसीलिए इस विश्व-नाटक को प्रेम-कहानी (Love-story) कहा जायेगा।

विश्व-नाटक में प्रेम के अनेकानेक रूप हैं, जो आत्मा का परमात्मा से, आत्माओं का आत्माओं से, मां-बाप और बच्चों का, स्त्री-पुरुष का, मनुष्यात्माओं का पशु-योनियों की आत्माओं से और पशु-योनियों की आत्माओं का मनुष्यात्माओं से आदि से अन्त तक चलता है। परमात्मा को भी प्यार का सागर कहा जाता है। सतयुग के लिए गायन है कि शेर और गाय एक घाट जल पीते थे अर्थात् उनमें भी इतना प्रेम था। संगमयुग पर आत्माओं का परमात्मा से जब प्रेम जुटता है, तब ही आत्मा पावन बनती है।

विश्व-नाटक और अधिकार एवं कर्तव्य

इस विश्व-नाटक में अधिकार और कर्तव्य का बड़ा सुन्दर सन्तुलन है, जिसके कारण कोई आत्मा किसके बीच में हस्तक्षेप नहीं कर सकती। विश्व-नाटक के नियमानुसार हर आत्मा स्वतन्त्र है। जिसको जितना अधिकार है, उस अनुसार उसका कर्तव्य भी है, जो उसको निभाना ही पड़ता है। विश्व-नाटक के अनुसार जिसको जितना कर्तव्य मिला है, उस अनुसार उसको अधिकार भी अवश्य मिला है। परन्तु ये भी एक बिडम्बना है कि विश्व-नाटक के सफल मंचन के लिए आत्मायें विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को भूल जाती हैं और विश्व में अधिकार आक्र कर्तव्य के बीच घमासान युद्ध होता है। परन्तु ये अधिकार और कर्तव्य का युद्ध भी ड्रामा में नूँधा हुआ है। अधिकार और कर्तव्य दोनों एक ही गाड़ी के दो चक्र हैं, जो साथ-साथ चलते हैं। जो आत्मा अपने अधिकार और कर्तव्य के सन्तुलन को भूल कर कार्य करती है, वह दुख को अवश्य प्राप्त करती है।

विश्व-नाटक के विधि-विधान को देखते हुए हमको किसी भी आत्मा को वरदान या अभिषाप देने का, निन्दा-घृणा का, किस पर दोषारोपण करने का अधिकार नहीं है, हमारा कर्तव्य है ड्रामा की यथार्थता को जानकर साक्षी होकर इस विश्व नाटक को देखना और सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखना।

"स्वतन्त्रता चाहते हैं परन्तु वास्तव में स्वतन्त्रता कहा किसको जाता है, यह कोई नहीं जानता है। रावण की जेल में तो सब फंसे हुए हैं। अभी सच्ची स्वतन्त्रता देने के लिए बाप आये हैं।... अभी तुम पुरुषोत्तम सुगमयुग पर हो। अभी तुम सच्ची स्वतन्त्रता को पा रहे हो। यह बात भी युक्ति से समझानी है। जिन्होंने कल्प पहले स्वतन्त्रता पाई है, वे ही मानेंगे।"

सा.बाबा 16.8.04 रिवा.

"बच्चे समझ गये हैं कि ड्रामा प्लॉन अनुसार सारा कार्य होना है। ... बाप ने तुमको जगाया है, तुमको फिर औरों को जगाना है। ड्रामा प्लॉन अनुसार तुम जगाते रहते हो।"

सा.बाबा 7.02.06 रिवा.

विश्व-नाटक और मान-अपमान, ... जीत-हार में समान स्थिति

विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान जीवात्मा को एकरस स्थिति बनाने में बहुत सहयोगी है। वास्तविकता तो ये है कि विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान ही एकरस स्थिति का एकमात्र आधार है क्योंकि विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान हमको संकल्प-विकल्पों से मुक्त करके एकरस स्थिति में

स्थित करता है। इसीलिए बाबा ने तीन बिन्दुओं की स्मृति की बात कही है। आत्मा बिन्दु, परमात्मा बिन्दु और ड्रामा बिन्दु। परमात्मा ज्ञान का सागर है, उसने इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देकर संकल्प-विकल्पों से मुक्त कर एकरस स्थिति में स्थित होकर परम सुख को अनुभव करने का वरदान दिया है। बिना विश्व-नाटक के ज्ञान के अगर कोई हठ से एकरस स्थिति में स्थित होने का पुरुषार्थ करे और हो भी जाये तो भी वह स्थिति सदाकाल नहीं रह सकती है। वह स्थिति अल्पकाल के लिए बनेगी और समयान्तर में परिवर्तन अवश्य हो जायेगी और वह परिवर्तन भी पतनोन्मुख ही होगी।

विश्व-नाटक और खेल-भावना

बाबा ने कहा है - ये विश्व-नाटक एक स्वर्ग-नर्क, जीत-हार, दिन-रात, राम-रावण का अनादि-अविनाशी खेल है इस खेल में जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह अच्छा होगा - ये एक सनातन सत्य है क्योंकि खेल सदा ही सुखदायी होता है, जो इसके यथार्थ रहस्य को जानकर इसको खेल भावना से देखता है, खेलता है, वही इसके परमानन्द को अनुभव कर सकता है और करता भी है। खेल में जीत भी सुखदायी होती है तो हार भी सुखदायी होती है क्योंकि हार ही जीत के लिए उत्साहित करती है, पुरुषार्थ कराती है। जो खेल की भावना से खेलते हुए हार से हतोत्साहित नहीं होते, वे ही जीत का अनुभव कर सकते हैं। जो हार से हतोत्साहित हो जाते वे कभी जीत का सुख अनुभव नहीं कर सकते। ऐसे ही इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानने वाले के लिए हार-जीत दोनों समान सुखदायी हो जाती हैं परन्तु जब हम अपने खिलाड़ी स्वरूप की विस्मृति होने के कारण देहाभिमान में आ जाते हैं तो मन में विकारों की प्रवेशता होती है, जिससे जीत में सुख और हार में दुख की अनुभूति होती है और हार-जीत के चक्कर में आकर अनेक विकर्म कर दुख का बीज बोते हैं।

वैसे तो खेल में खेलने वाले खिलाड़ी और दर्शक अलग होते हैं भले खिलाड़ी भी खेल खेलते हुए एक-दूसरे का खेल देखते हैं परन्तु इस विश्व-नाटक दर्शकों का देखना भी खेल है।

"यह अनादि-अविनाशी ड्रामा है। इसमें जीतते भी हैं और फिर हारते भी हैं। अब यह चक्र पूरा हुआ, अभी हमको घर जाना है। ... बाबा हमको रावण पर जीत पहनाते हैं। ऐसी-ऐसी बातें सवेरे-सवेरे उठकर अपने साथ करनी चाहिए।"

सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

"यह बहुत मजे का खेल है। खेल हमेशा मजे का ही होता है। खेल में सुख भी होता है तो दुख भी होता है। इस बेहद के खेल को तुम बच्चे ही जानते हो। इसमें रोने-पीटने आदि की बात ही नहीं है।... हम आत्मायें इसके एक्टर्स हैं।... तुम बच्चे जानते हो - यह ड्रामा कैसे फिरता है। इसके आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी बाप ही समझाते हैं।"

सा.बाबा 22.12.04 रिवा.

"यह सृष्टि एक खेल है।... अगर इसको खेल समझो तो खेल में कभी परेशान नहीं होंगे, हँसते रहेंगे। तो परीक्षायें भी एक खेल हैं। ... उन पार्टधारियों का इस बेहद के खेल में यह पार्ट अर्थात् खेल नूँधा हुआ है, यह स्मृति आने से कभी भी अवस्था डगमग नहीं होगी।"

अ.बापदादा 8.7.73

"जब नाम ही है वैरायटी ड्रामा। ... तो उसमें वैरायटी संस्कार व वैरायटी स्वभाव व वैरायटी परिस्थितियाँ देखकर कभी विचलित होंगे क्या ? ... साक्षीपन की सीट पर सेट होकर वैरायटी ड्रामा की स्मृति रखते हुए अगर एक-एक पार्टधारी का हर पार्ट देखो तो सदैव हर्षित रहेंगे।""

अ.बापदादा 8.7.73

"तुमको नशा है कि हम फिर से अपनी राजधानी स्थापन करेंगे, जैसे कल्प पहले की थी। ... तुम वहाँ जायेंगे तो ऑटोमेटिक तुम वह मकान आदि बनाने लग पड़ेंगे क्योंकि वह संस्कार आत्मा में भरा हुआ है। ...आत्मा में सब पहले से ही नूँध है। ...नई-नई प्वाइन्ट्स निकलती है, वह भी ड्रामा में नूँध हैं। ...यह भी खेल है ना। खेल में हमेशा खुशी होती है।"

सा.बाबा 2.7.05 रिवा.

"यह नॉलेज बड़ी वण्डरफुल है। ... बाप द्वारा सबको जीवनमुक्ति मिलती है परन्तु ड्रामा को भी जानना है। सब धर्म स्वर्ग में नहीं आयेंगे। ... ड्रामा का कैसा वण्डरफुल खेल है। तुम्हारे में भी बहुत थोड़े हैं, जो इस नशे में रहते हैं।"

सा.बाबा 17.1.05 रिवा.

"इसमें साक्षी रहने का भी बहुत अभ्यास चाहिए। ... यह अनादि ड्रामा है, हार-जीत का खेल है। जो होता है, वह ठीक है। क्रियेटर को ड्रामा जरूर पसन्द होगा ना। तो क्रियेटर के बच्चों को भी जरूर पसन्द होगा।"

सा.बाबा 18.1.05 रिवा.

"खिलाड़ी बनकर खेल देखने और खेल खेलने में मजा आता है, उसको आपदा भी मनोरंजन अनुभव होगी - ये है मास्टर रचता की स्टेज। जैसे महाविनाश को भी मनोरंजन का रूप दे दे दिया है।"

अ.बापदादा 27-11-78 दीदी और बृजेन्द्रा दादी से

"अनुभवी जरूर बनो। जितना अनुभवी मूर्त होंगे, उतना फाउण्डेशन पक्का होगा। माया हिला

नहीं सकेगी। किसी भी प्रकार का विघ्न व समस्या अभी खेल के समान अनुभव होनी चाहिए। वार नहीं है, खेल है। तो खेल समझने से खुशी-खुशी पार कर लेंगे। ... ड्रामा में पार्टधारी होने के कारण कोई भी सीन सामने आती है तो ड्रामा के हिसाब से सब खेल है। यह स्मृति रहे तो एकरस रहेंगे, हलचल नहीं होगी।"

अव्यक्त बापदादा 4.1.82 पार्टी

"माया के खेल खिलाड़ी बनकर देखते चलो। ... बाप का श्रीमत रूपी हाथ और दिव्य बुद्धियोग रूपी साथ सदा अनुभव कर समर्थ बन सदा पास विद् ऑनर बनते चलो।"

अ.बापदादा 18.1.92

"पुरुषार्थ की प्रालब्ध अवश्य मिलेगी। यहाँ सहज पुरुषार्थी हो और वहाँ सहज प्रालब्धी हो। ... यह भी बेहद ड्रामा के खेल में छोटे-छोटे खेल हैं।"

अ.बापदादा 13.2.92

"तपस्या वर्ष अर्थात् तपस्या के वायब्रेशन्स विश्व में और तीव्र गति से फैलाओ। ... विघ्नों का आना यह भी ड्रामा में आदि से अन्त तक नूँध है। यह विघ्न भी असम्भव से सम्भव की अनुभूति कराते हैं। ... फुटबाल के खेल में बाल आती है तब तो ठोकर लगाते हो। बाल ही न आये तो ठोकर कैसे लगायेंगे।"

अ.बापदादा 26.10.91

"यह भी फुटबाल का खेल है। खेल खेलने में मजा आता है।... नथिंग न्यू। ड्रामा खेल भी दिखाता है और सम्पन्न सफलता भी दिखाता है।"

अ.बापदादा 26.10.91

"यह बहुत मजे का खेल है। खेल हमेशा मजे का ही होता है। सुख भी होता है तो दुख भी होता है। इस बेहद के खेल को तुम बच्चे ही जानते हो। इसमें रोने-पीटने आदि की बात ही नहीं है। ... हम आत्मायें इसके एक्टर्स हैं। ... तुम बच्चे जानते हो - यह ड्रामा कैसे फिरता है। इसके आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी बाप ही समझाते हैं।"

सा.बाबा 22.12.04 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं भी ड्रामा अनुसार बंधायमान हूँ।... कितना हंगामा हो गया। ड्रामा में जो होने का था, वह हो गया। बाबा खुद वण्डर खाता था, यह क्या हो रहा है। यह भी ड्रामा में नूँध है। ... नाटक में यह सब होता है। ... यह तो दोनों बाप कहते हैं - हमने कुछ भी नहीं किया, यह तो ड्रामा का खेल चल रहा है।"

सा.बाबा 4.5.04 रिवा.

"जो पहलवान होता है, उनको पहलवान से लड़ने में ही मज़ा आता है ... माया को भी सर्वशक्तिवान के साथ खेल करना अच्छा लगता है।... नॉलेजफुल का अर्थ ही है बाप को जानना, रचना को जानना और माया को भी जानना।"

अ.बापदादा 20.2.88

"खेल में कुछ आयेगा, कुछ जायेगा, कुछ बदलेगा। अगर सीन बदली न हो तो खेल अच्छा ही नहीं लगेगा। ... माया के रूप को कैच करो और खेल समझकर उस दृश्य को साक्षी होकर देखो। आगे के लिए और स्व स्थिति को मजबूत बनाने की शिक्षा लेकर आगे बढते चलो।"

अ.बापदादा 16.2.88

"कराने वाला करा रहा है और आप कठपुतली के समान नाच रहे हो। यह सेवा भी एक खेल है। ... बाप के लिए तो सब हुआ ही पड़ा है, ... जैसे एक लकीर खींचना है, रिपीट कर रहे हैं। ... जैसे माया का विघ्न खेल है, ऐसे सेवा भी मेहनत नहीं लेकिन खेल है। खेल समझने से सदा ही सेवा में रिफ्रेशमेन्ट अनुभव करेंगे।"

अ.बापदादा 20.2.88

"सेवा भी मेहनत नहीं लेकिन खेल है। खेल समझने से सदा ही सेवा में रिफ्रेशमेन्ट अनुभव करेंगे। खेल किस लिए करते हैं? थकने के लिए नहीं लेकिन रिफ्रेश होने के लिए करते हैं। ... चाहे कितना भी थकाने वाला खेल हो लेकिन खेल समझने से थकावट नहीं है क्योंकि अपने दिल की रुचि से करते करते हैं।"

अ.बापदादा 20.2.88

"मनुष्य कहते हैं - भगवान को क्या पड़ी थी, जो सीड़ी चढ़ाते और उतारते हैं ... बाप समझाते हैं - यह अनादि खेल है ... अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 25.01.06 रिवा.

"आत्मायें जो पार्ट बजाती हैं, वह सब ड्रामा में नूँधा हुआ है। जैसे कठपुतलियां होती हैं ना, ऐसे नाचती रहती हैं। यह भी ड्रामा है, हर एक का इस ड्रामा में पार्ट है।"

सा.बाबा 28.9.05 रिवा.

"संगमयुग पर युद्ध कर माया से विजय प्राप्त करना भी एक खेल समझते हो, मेहनत नहीं। ... खेल लगता है। ... जब मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर स्थित होते हो तो खेल लगेगा।"

अ.बापदादा 27.12.87 पार्टी

"बापदादा तपस्या द्वारा साक्षीपन की स्थिति के आसन पर अचल-अडोल स्थित रहने का विशेष अभ्यास करा रहे हैं। ... प्रकृति के भी पांच खिलाड़ी हैं और माया के भी पांच खिलाड़ी हैं। ... खिलाड़ी खेल के बिना रहेंगे क्या? ... संगमयुगी ब्राह्मण आत्माओं के लिए तो खेल

देखना इन्ज्वाय करना है।" अ.बापदादा 16.3.92

"कैसा वण्डरफुल खेल है। अभी तुम साक्षी होकर खेल देखते हो ... ड्रामा अनुसार दुनिया की बुरी गति हो गई है, फिर बाप आकर सद्गति करते हैं। तुम बच्चों को नशा चढ़ा है।"

सा.बाबा 9.5.06 रिवा.

"अभी तुम जानते हो - यह भी खेल बना हुआ है। आधा कल्प है ज्ञान का दिन, आधा कल्प है भक्ति की रात। तुम बच्चों की बुद्धि में सीढ़ी की नॉलेज जरूर होना चाहिए।... यह भी ड्रामा में नूँध है। जिनका पार्ट होगा, वे कैसे भी आ जायेंगे। इसमें डरने की बात ही नहीं।"

सा.बाबा 12.6.06 रिवा.

विश्व-नाटक और समय एवं समय की विशेषता

विश्व-नाटक के गुण-धर्मों पर विचार करें तो अनुभव करेंगे कि यह बिल्कुल एक्यूरेट चलता है। इसमें हर घटना नियमानुसार अपने समय पर ही घटती है और जो घटना एक बार होती है, वह सारे कल्प में दुबारा रिपीट नहीं होती है, फिर कल्प बाद ही पुनरावृत्त होती है। इसलिए समय से भी शिक्षा लें, तो भी हमारा पुरुषार्थ बहुत तीव्र हो सकता है। साथ ही विश्व-नाटक में समय की ये भी विशेषता है कि समय अर्थात् कोई घटना अपने आप नहीं होती है, उसके लिए कोई न कोई आत्मा निमित्त अवश्य बनती है।

किसी कवि ने कहा है - मनुष्य बली नहीं होत है समय होत बलवान ... परन्तु विश्व-नाटक की वास्तविकता यह है कि मनुष्य को कर्म का संकल्प और समय दोनों चक्रवत हैं। जब समय आता है तो मनुष्य वह कर्म करने के लिए संकल्प उठता है और वह उसे करने के लिए बाध्य हो जाता है, ऐसे ही ड्रामानुसार समय पर मनुष्य को किसी कर्म को करने की टचिंग भी होती है, जिस आधार पर ही दुनिया में अनेक प्रकार के आश्चर्यजनक अविष्कार होते हैं।

"मंथन के लिए तो बहुत खजाना है, इसमें मन को बिजी रखना है। समय की रफ्तार तेज है या आपकी रफ्तार तेज है? ... समय की कौनसी तेजी देखते हो? समय बीती को बीती करने में तेज है। वही बात को समय फिर कब रिपीट करता है? तो पुरुषार्थ की जो कमियां हैं, उनमें बीती को बीती समझ आगे हर सेकण्ड में उन्नति को लाते जाओ। ... क्रियेटर के बच्चे क्रियेशन से ढीले क्यों? इसलिए एक बात का ध्यान रहे कि जैसे ड्रामा में हर सेकेण्ड अथवा जो बात बीती, जिस रूप से बीत गई, वह फिर रिपीट नहीं होगी। पांच हजार साल बाद ही रिपीट होगी।" अ.बापदादा 26.1.70

"साकार रूप में सम्पूर्णता का स्वरूप देखा। साकार सम्पूर्णता को प्राप्त कर चुके हैं। ... पहली सीटी बज चुकी है, दूसरी भी बज गई। पहली सीटी थी साकार में मां की और दूसरी बजी साकार रूप की। अब तीसरी सीटी बजनी है।"

अ.बापदादा 25.1.70

"अगर फौरन फल नहीं निकलता है तो अधीर्य नहीं होना है कि फल तो निकलता ही नहीं। सभी फल फौरन नहीं मिलते हैं। कोई-कोई बीज फल तब देता है जब नेचुरल वर्षा होती है। पानी देने से भी नहीं निकलता है। यह भी ड्रामा की नूँध है। ... कोई नेचुरल केलेमिटीज होंगी, जब ड्रामा का सीन बदलने वाला होगा तो वह नेचुरल वायुमण्डल, वातावरण उस बीज का फल निकालेगी।"

अ.बापदादा 11.7.71

"अभी समय समीप आना नहीं है, आपको लाना है। कई पूछते ... कितना समय लगेगा। ... समय को समीप लाने वाले कौन ? ड्रामा है लेकिन निमित्त कौन ? आपका एक गीत भी है - किसके रोके रुका है सवेरा। विनाशकारी तो तड़फ रहे हैं कि विनाश करें ... लेकिन नव-निर्माण करने वाले इतना रेडी हैं ? पुराना खत्म हो जाये परन्तु नया निर्माण नहीं हो तो क्या होगा।"

अ.बापदादा 28.3.06

"भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार की महिमा करते हैं। यह भी ड्रामा अनुसार अपना पार्ट बजाते रहते हैं। बाप कहते हैं - मैं कोई इन्हों के पुकारने पर नहीं आता हूँ। ड्रामा में मेरे आने का पार्ट नूँधा हुआ है। ... मैं अपने समय पर आपही आता हूँ।"

सा.बाबा 17.02.06 रिवा.

"आधा कल्प बच्चों ने याद किया - आओ-आओ। बाप तो अपने समय पर आये, आपके चिल्लाने पर नहीं आये।"

अ.बापदादा 31.3.95

विश्व नाटक और आत्मा की प्राप्तियाँ

विश्व-नाटक और साधन-सम्पत्ति, स्वामित्व परिवर्तन एवं सम्बन्ध-परिवर्तन

ये विश्व एक नाटक है, जहाँ सर्व आत्मायें परमधाम घर से अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजाने आती हैं और उस पार्ट बजाने के लिए साधन-सम्पत्ति एक साधन है। विश्व-नाटक में पार्ट के अनुसार आत्माओं के सम्बन्ध और साधन-सम्पत्ति पर स्वामित्व परिवर्तन भी स्वभाविक है अर्थात् जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। जो साधन-सम्पत्ति आज हमारी है, वह कल पराई होगी और पराई हमारी होगी। इस सम्बन्ध और स्वामित्व

परिवर्तन के लिए कोई न कोई निमित्त कारण अवश्य बनता है। विश्व-नाटक के इस सत्य को जानने, अनुभव करने और निश्चय करने वाला साधन-सम्पत्ति पर स्वामित्व परिवर्तन, संयोग-वियोग में प्रभावित न होकर, उसको ड्रामा की भावी समझकर सहज स्वीकार करता है, जिससे वह इसके परम-सुख को सदा अनुभव करता है। विश्व-नाटक में ये भी कटु सत्य है कि अज्ञानतावश देहाभिमान के कारण अपने-पराये का भेद उत्पन्न कर, साधन-सम्पत्ति पर स्वामित्व जमाकर उचित-अनुचित कर्मों में प्रवृत्त होता ही है और उसके फल स्वरूप परम-दुख को भी पाता ही है।

विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार विश्व में जो भी साधन-सम्पत्ति है, उस पर सदाकाल किसी एक का स्वामित्व न रहा है और न रहेगा। जो किसी साधन-सम्पत्ति को अपना समझ लेता है, वही दुखी होता है और जो अपना न समझकर पार्ट के लिए मिली समझकर प्रयोग करता, वह सदा हर्षित रहता है।

जीवन में सबसे श्रेष्ठ प्राप्ति परमात्मा और उनके द्वारा प्राप्त विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान है, जो आत्मा की सर्वश्रेष्ठ साधन-सम्पत्ति है और आत्मा को अविनाशी सुख देने वाली है। ये साधन-सम्पत्ति सर्व भौतिक प्राप्तियों का आधार है। परमात्मा ने इस साधन-सम्पत्ति का सर्वात्माओं को समान अधिकार दिया है और सबका अधिकार सुरक्षित है। इस अधिकार को कोई छीन नहीं सकता है।

इस विविधतापूर्ण, सत्य, न्यायपूर्ण कल्याणकारी नाटक में हर आत्मा को अपने पार्ट अनुसार अपनी-अपनी प्राप्तियां है, जिससे उसका इसमें विशेष महत्व है और वह उनके सुख का अनुभव करता है। जो आत्मा विश्व-नाटक के इस सत्य को जानकर दूसरे की प्राप्तियों का चिन्तन न कर अपनी प्राप्तियों को देखता है, उनका सुख अनुभव करता है, वही सच्चा ज्ञानी है और विश्व-नाटक का सच्चा सुख अनुभव कर सकता है। दूसरे की प्राप्तियों का चिन्तन करने वाला कभी भी इस विश्व-नाटक के सच्चे सुख का अनुभव नहीं कर सकता है।

"ड्रामा पर अटल रहना है। ... कोई के कल्याण अर्थ खुश होना चाहिए। हरेक को अपना एक्ट करना है। ड्रामा में नूँध है। एक शरीर छोड़ फिर दूसरा पार्ट बजाना है। यहाँ से जिस संस्कार से जायेंगे, वह गुप्त भी सर्विस ही करेगा। ... अरे आत्मा तो गई, जाकर दूसरा शरीर लिया। हम चाहें तो बाबा से पूछ सकते हैं कि कहाँ जन्म लिया। परन्तु एक-एक का कहाँ तक बैठ पूछेंगे। ... अवस्था बड़ी फर्स्ट क्लास चाहिए। ऐसे नहीं कि बाबा यह तो बहुत अच्छा बच्चा था, यह क्यों गया ? योग से तो आयु बढ़नी चाहिए थी। यह तो पार्ट था, इसमें कर ही क्या सकते हैं।"

सा. बाबा 15.6.72 रिवा.

"विनाशी साधनों की मौज अल्पकाल की होती है।... अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलो, अविनाशी प्राप्तियों के झूलों में झूलो। ड्रामा को देखो, माया का पार्ट भी विचित्र है, जो अभी ही ऐसे साधन निकले हैं। ... साधन जीवन की उड़ती कला का साधन नहीं हैं, आधार नहीं है। साधना आधार है।" अ.बापदादा 28.3.06

"बाप कहते हैं - तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो, मैं बताता हूँ ... देवतायें भी अपने जन्मों को जान नहीं सकते। अगर जान जायें तो दुखी हो जायें। क्या हम सीढ़ी उतरते जायेंगे। राजाई का सुख ही गुम हो जाये।" सा.बाबा 20.7.06 रिवा.

विश्व-नाटक और अनभिज्ञता (Ignorance)

विश्व-नाटक की यथार्थता को देखें तो अनुभव होगा कि हर वस्तु, आत्मा और घटना अच्छी है क्योंकि सभी इस विश्व-नाटक को 5000 वर्ष तक सफलतापूर्वक चलने में सहयोगी हैं। ज्ञान भी अच्छा है तो अन्भिज्ञता (Ignorance) भी अच्छी चीज है। यदि इस ज्ञान की विस्मृति न हो तो सारे कल्प में यह विश्व-नाटक सफलतापूर्वक चल नहीं सकता। अज्ञानता और अज्ञानता जनित विकारों की मारामारी में ही आधा कल्प तक ये नाटक चलता है। बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है - अगर लक्ष्मी-नारायण को ये ज्ञान हो तो सतयुग के सुख की महसूसता ही न हो। फिर कल्पान्त में विश्व-नाटक के नये चक्र के आरम्भ के लिए ज्ञान भी अति आवश्यक है।

हमको इस विश्व-नाटक की किसी भी घटना का पहले से ज्ञान नहीं है, यह भी एक वरदान है, जिसके कारण इसका हर दृश्य नया प्रतीत होता है और पार्ट बजाने वाला यथार्थ पार्ट बजाता है। यदि ड्रामा की हर घटना का पहले से ही ज्ञान हो जाये तो तो उसमें सही आनन्द ही नहीं आयेगा और पार्ट भी अच्छी तरह न बजा सकें - यह भी एक नियम है। इसलिए परमात्मा भी पहले से किसी घटना का पूरा ज्ञान नहीं देते और कहते हैं - अचानक ही सब होने वाला है।

"इतनी छोटी सी आत्मा शरीर से निकल जाती है तो शरीर कोई काम का नहीं रहता। बस कहेंगे मर गया, जाकर दूसरा शरीर लिया। एक शरीर छोड़ दूसरा ले पार्ट बजाती है। फिर उसमें रोने की क्या दरकार है। जब ड्रामा को जाने तब ऐसे कहे कि इसमें रोने पीटने की दरकार ही नहीं। अब तुमको ज्ञान है हम यह पुराना शरीर छोड़ अपने निर्वाणधाम में जायेंगे।"
सा.बाबा 24.7.72 रिवा.

"आगे चल ड्रामा क्या दिखलाता है, सो साक्षी होकर देखना है। पहले से ही बाबा साक्षात्कार नहीं करायेंगे कि यह होगा। फिर तो आर्टीफिशियल हो जाये। यह बड़ी समझ की बातें हैं।"

सा.बाबा 24.10.69 रिवा.

विश्व-नाटक और स्व-स्थिति

स्व-स्थिति में स्थित आत्मा ही इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति अर्थात् साक्षी-दृष्टा बनकर देख सकती और ड्रामा का ज्ञान आत्मा को स्व-स्थिति में स्थित होने में परम-सहयोगी है। ड्रामा के ज्ञान की यथार्थ धारणा आत्मा को सेकेण्ड में संकल्प-विकल्प से मुक्त कर देता है, जो स्व-स्थिति में स्थित होने के लिए परमावश्यक है। ड्रामा का ज्ञान आत्मा को सहज निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कराता है, जो आध्यात्मिक पुरुषार्थ का परम लक्ष्य है।

"जो दुख की परिस्थिति में भी अपने सुख के सागर से प्राप्त हुए अधिकार द्वारा दुख की परिस्थितियों को भी "वाह मीठा ड्रामा, वाह हरेक पार्टधारी का पार्ट" - इस नॉलेज की रोशनी द्वारा, अधिकार की खुशी द्वारा दुख को सुख में परिवर्तन कर देता।... इसको कहा जाता है नम्बरवन तकदीरवान।"

अ.बापदादा 1.12.83

विश्व-नाटक के नियमानुसार सर्व सम्बन्ध और साधन अपने निश्चित समय तक साथ रहने ही हैं और अपने निश्चित समय पर साथ छोड़ने वाले ही हैं फिर इनकी चिन्ता और ममत्व क्यों ? ये चिन्ता और ममत्व ही सर्व दुखों का कारण है, इनसे मुक्त होने वाला ही परमानन्द का अनुभव कर सकता है। गीत है - आज नहीं तो कल बिखरेंगे ये बादल, ओ रात के भूले हुए मुसाफिर सुबह हुई घर घर चल। विश्व-नाटक के इस सत्य को जानने वाला सहज ही स्व-स्थिति में स्थित होकर सच्चे सुख का अनुभव कर सकता है।

"बाप को तो खुशी और गम की दरकार नहीं। यह ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। तुमको भी न खुशी और न गम होना चाहिए।"

सा. बाबा 22.8.68

"बच्चों को ड्रामा पर पक्का रहना है। ड्रामा पर पक्के रहेंगे तो उस समय ही फिकर से फारिग हो जायेंगे।"

सा.बाबा 23.12.68 रात्रि क्लास

"बहुत फर्स्ट क्लास खेल है। इसको जानने से बुद्धि पूर हो गई है। हम इस खेल को जान गये तो समझते हैं मजा ही मजा है।... सारा दिन बुद्धि में यह ख्याल चलना चाहिए - कैसा वण्डरफुल खेल है।... मनुष्य इस वण्डरफुल ड्रामा को भी नहीं जानते। जो अच्छी रीति जानते हैं और समझाते हैं, उनको जरूर खुशी का पारा चढ़ता होगा। जो बहुत दान करते हैं, उनको नशा भी होगा ना।"

सा. बाबा 21.4.72 रिवा.

"बाप तो बिल्कुल एक्यूरेट ही कहेंगे। ... है तो यह सब ड्रामा। बाबा का भी ड्रामा, इनका भी ड्रामा, तुम्हारा भी ड्रामा। ड्रामा बिगर कोई चीज होती ही नहीं। सेकेण्ड-सेकेण्ड ड्रामा चलता रहता है। ड्रामा को याद करने से हिलेंगे नहीं।"

सा. बाबा 25.5.99 रिवा.

"ऐसा क्यों ? यह व्यर्थ संकल्प पत्थर तोड़ना है। लेकिन एक ही शब्द 'ड्रामा" याद आ जाता है तो व्यर्थ खत्म। एक ड्रामा शब्द के आधार से हाई जम्प दे देते हो। उसमें कुछ मास लग जाते हैं और उसमें एक सेकेण्ड लगता।" A.B.D. 17.3.81

"बापदादा ने जो आज देखा तो वर्तमान समय के अनुसार अपने ऊपर, हर कर्मेन्द्रियों के ऊपर कन्ट्रोल रखना अर्थात् स्वयं की स्वयं प्रति कन्ट्रोलिंग पॉवर वह और ज्यादा चाहिए। .. स्टॉप तो स्टॉप हो जाये, यह है कर्मातीत अवस्था तक पहुँचने की विधि।"

अव्यक्त बापदादा 15.3.99

"ड्रामा अनुसार जो कुछ चलता है, बिल्कुल एक्यूरेट। ड्रामा बहुत एक्यूरेट है। बाप तो बेफिकर है, इनको फिकर जरूर रहेगा। बेफिकर तब रहेंगे जब कर्मातीत अवस्था होगी। तब तक कुछ न कुछ फिकर होता है।"

सा. बाबा 27.2.99 रिवाइज

"थोड़ी सी चीज न मिलने से दुख होता है। पाई पैसे की चीज न मिलने से मुरझा जाते हैं। यह सब है देहाभिमान का रोला। बाप कहते हैं - मैं साक्षी होकर देखता हूँ। कितने बच्चे विनाश को पाते हैं। कहेंगे यह भी ड्रामा। हम अशरीरी हैं। जैसे मरे पड़े हैं, दुनिया भी मरी पड़ी है। हमारा इस दुनिया से कोई काम नहीं है, हमारा काम है स्वीट होम से। अपनी अवस्था को जमाना है।" सा.बाबा 1.11.73 रिवा.

"जो सदा ड्रामा के राज़ को और तीनों कालों को जानता है, वह राजी रहेगा ना। नाराज होने का कारण राज़ को नहीं जानना है। .. त्रिकालदर्शी अर्थात् नॉलेजफुल की स्टेज एक तख्त है, ऊंचाई है। जब इस तख्त को छोड़कर नीचे आते हो तब नाराज़ होते हो।"

A.B.D. 29.1.77

"सत्य बाप के सच्चे बच्चे बन, सत्य स्थान के निवासी बन जरा भी असत्य कर्म किया तो प्रत्यक्ष में दण्ड के साक्षात्कार अनेक वण्डरफुल रूप के होंगे। ब्राह्मण परिवार वा ब्राह्मणों की भूमि पर पाँव ठहर न सकेंगे, हर दाग स्पष्ट दिखाई देगा, छिपा नहीं सकेंगे।"

अ.बापदादा 3.5.77

"वाह बाबा और वाह ड्रामा के गीत गाते रहो तो सदा लगन में मगन रहेंगे। क्योंकि लगन में

मगन वही रह सकता है जो साक्षी होकर हर पार्ट बजाता है।"

A.B.D. 20-6-77

"सारे कल्प में ऐसे सम्पत्तिवान, भाग्यवान दिन, भाग्य विधाता के संग के दिन फिर नहीं आने वाले हैं। विनाश के समय भी यह प्राप्ति का समय याद करेंगे, इसलिए ड्रामा अनुसार कल्याण अर्थ जो ड्रामा का दृश्य चल रहा है, उसको त्रिकालदर्शी बन देखो। हिम्मत और उल्हास वाली समर्थ आत्मायें बन स्वयं भी समर्थ रहो और विश्व को भी समर्थ बनाओ।"

A.B.D. 14.12.78

"जो साक्षी होगा वह कभी भी किसी पार्ट में चलायमान नहीं होगा। ... इस साक्षीपन की सीट पर बैठकर ड्रामा देखो तो बहुत मजा आयेगा।"

A.B.D. 15.4.81 पार्टी 1

"बाप कहते हैं - मैं आता ही हूँ पतितों को पावन बनाने, सो पावन बना रहा हूँ। बाकी तो ड्रामा में जो होना है सो होगा ही। समझो अर्थक्वेक होती है, छत गिर जाती है, कहेंगे - भावी। कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। इसमें जरा भी हिलने की दरकार नहीं। ड्रामा पर पक्का खड़ा रहना है। इसको ही महावीर कहा जाता है। एक्सीडेण्ट आदि तो ढेर के ढेर होते रहते हैं। फिर किसकी रक्षा करते हैं क्या ? यह तो ड्रामा में नूँध है। ऐसा ही ड्रामा में पार्ट है। जो ड्रामा को नहीं जानते वह देह को याद कर आंसू बहाते हैं।"

सा.बाबा 1.6.2001 रिवा.

"अपनी मन्सा समर्थ स्थिति का प्रोग्राम सेट करेंगे तो स्वत: ही कभी भी अपसेट नहीं होंगे। ... आप विश्व के नव-निर्माण के आधारमूर्त हो, बेहद के ड्रामा में हीरो एक्टर हो और हीरे तुल्य जीवन वाले हो। यह शुद्ध नशा समर्थ बनाता है और देहाभिमान का नशा नीचे ले आता है।"

अ.बापदादा 17.12.89

विश्व-नाटक और विश्व की राज-व्यवस्था / विश्व-नाटक और विश्व की शासन-पद्धति / विश्व-नाटक और राजाई की स्थापना

विश्व-नाटक नाटक के समस्त और यथार्थ इतिहास को देखें तो विश्व में आदि से ही राजशाही व्यवस्था ही रही है और विश्व उसमें ही सुखी रहा है। प्रजातन्त्र की व्यवस्था तो कलियुग के अन्त की व्यवस्था है। परन्तु सतयुग-त्रेता की राजशाही में राजा-प्रजा के पिता-पुत्र के समान सम्बन्ध मधुर एवं सुखदायी थे और द्वापर-कलियुग में विकारों के कारण सम्बन्धों में कटुता आ जाती है। इस राजशाही की पुनर्स्थापना का विधि-विधान भी ड्रामा में

अनादि नूँधा हुआ है, जो काम परमात्मा आकर करते हैं। अभी संगमयुग पर परमात्मा आकर विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखाकर पुन: राजाई की स्थापना करते हैं। राजाई की स्थापना के लिए परमात्मा तो सबको समान रीति से ज्ञान देते और राजयोग सिखाते परन्तु विश्व-नाटक के विधि-विधान के अनुसार आत्मायें नम्बरवार ही पुरुषार्थ करके उस राजाई में अपना पद निश्चित करती हैं।

आज के विश्व में प्राय: समस्त देशों में प्रजातन्त्र का ही शासन है, इसमें परमात्मा कैसे विश्व में पुन: राजतन्त्र की स्थापन कर रहे हैं, ये विधि-विधान भी विश्व-नाटक में नूँधा हुआ है, जो अति आनन्दमय और गुप्त है। इसीलिए बाबा कहते हैं - मैं तुम बच्चों को गुप्त में बादशाही वर्से में देता हूँ। ये राजा-प्रजा, दास-दासी के संस्कारों की आत्मा में कैसे नूँध है और विश्व-नाटक में उसकी कैसे भूमिका है, वह भी बड़ी रहस्यमय है।

सर्वशक्तिवान ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा को पाकर भी कोई आत्मा उनकी स्मृति को भूलकर उनकी मुरली को छोड़कर किसी आत्मा विशेष को याद करती, उसके क्लास में अधिक रुचि रखती, उसके साहित्व को पढ़ने में विशेष रुचि रखती, उसके गुण-धर्मों से विशेष प्रभावित होती तो भी हमको कभी आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए, राग-द्वेष की भावना जाग्रत नहीं होनी चाहिए क्योंकि बाबा ने स्पष्ट ज्ञान दिया है कि ये विश्व एक ड्रामा है और अभी ये राजाई स्थापन हो रही है और वहाँ की राजाई में भी विभिन्न प्रकार की छोटी-छोटी राजाइयां होंगी और राजाई में भी विभिन्न पद और प्राप्तियों वाले व्यक्ति होंगे ही तो जरूर कोई ऐसे कारण बनेंगे, जिसके अनुसार वे पद और प्राप्तियाँ होंगी।

ये विविधतापूर्ण विश्व-नाटक है और अभी राजाई स्थापन हो रही है, जिसमें विभिन्न पद होंगे, विभिन्न कार्य व्यवहार और स्वभाव-संस्कार वाले व्यक्ति होंगे, उसकी स्थापना के लिए अभी भी ज्ञान में विभिन्न स्वभाव-संस्कार वाली आत्मायें अवश्य होंगी और उनका पुरुषार्थ भी अपने पद, कर्म और पार्ट अनुसार ही होगा। ड्रामानुसार वे चाहते भी ऊंच पद का पुरुषार्थ नहीं कर सकेंगे और जो ऊंच पद पाने वाले होंगे, उनका पुरुषार्थ स्वत: ही चल पड़ेगा। इसलिए हम किसी के पुरुषार्थ या स्वभाव-संस्कार को देखकर न आश्चर्यचकित होंगे और न प्रभावित होंगे तब ही हम अपना अभीष्ठ पुरुषार्थ कर सकेंगे और इस ईश्वरीय जीवन का सच्चा सुख अनुभव कर सकेंगे क्योंकि आश्चर्यचकित होने या प्रभावित होने से हमारा पुरुषार्थ भी अवश्य ही प्रभावित होगा। ये भी एक लॉ है।

वास्तव में इस विश्व-नाटक का खेल सुख-दुख, स्वर्ग-नर्क, दिन-रात का है, राजा-प्रजा का नहीं। राजा-प्रजा तो खेल खेलने के लिए बनते हैं। सुख-दुख, स्वर्ग-नर्क, दिन-रात

दोनों सभी आत्माओं अर्थात् राजा और प्रजा दोनों को आधा-आधा होते हैं। सुख-दुख की फीलिंग भी राजा-प्रजा बनने की नहीं है, लेकिन आत्मिक शक्ति पर आधारित है।

"तुम बच्चों को ताकत मिलती है - आधाकल्प के लिए। फिर भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। एक जैसी ताकत नहीं पा सकते, न एक जैसा पद पा सकते हैं। यह भी पहले से नूँध है। ड्रामा में अनादि नूँध है। .. यह सारा बना-बनाया खेल है। पूछते हैं पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध बड़ी ? अब पुरुषार्थ बिगर तो प्रालब्ध मिलती नहीं। पुरुषार्थ से प्रालब्ध मिलती है ड्रामा अनुसार। तो सारा बोझ ड्रामा पर आ जाता है। ... आत्मा में पहले से ही पार्ट नूँधा हुआ है आदि से अन्त तक।"

सा. बाबा 16.12.99 रिवा.

"बरोबर बाप हमारे द्वारा स्थापना करा रहे हैं, फिर हम ही राज्य करेंगे। ... यह भी ड्रामा में नूँध है। मैं भी इस ड्रामा के अन्दर पार्टधारी हूँ। ड्रामा में सबका पार्ट नूँधा हुआ है। शिवबाबा का भी पार्ट है, हमारा भी पार्ट है। थैंक्स देने की बात नहीं।"

सा.बाबा 2.11.04 रिवा.

"यह भी ड्रामा बना हुआ है। नॉलेज समझने में बहुत सहज है परन्तु नम्बरवार ही समझते हैं क्योंकि राजधानी स्थापन हो रही है। ... इस समय बाप तुमको कर्म-अकर्म-विकर्म की गति बैठ समझाते हैं। रावण राज्य में कर्म विकर्म बन जाते हैं, सतयुग में कर्म अकर्म हो जाते हैं। ... यह कितना वण्डरफुल ड्रामा है। ... अभी तुम संगमयुग पर बैठे हो, तुम्हारी माया के साथ युद्ध है।"

सा.बाबा 16.6.04 रिवा.

"तौबा-तौबा, ऐसी बुद्धि शल किसकी न हो। परमात्मा के यज्ञ की चोरी! उन जैसा महान पापात्मा कोई हो न सके। कितनी अधमगति हो जाती है। बाप कहते हैं, यह सब ड्रामा में पार्ट है। तुम राजाई करेंगे, वे तुम्हारे सर्वेन्ट बनेंगे। सर्वेन्ट बिगर राजाई कैसे चलेगी। कल्प पहले भी ऐसे ही स्थापना हुई थी। ... कोई झट बतलाते हैं - बाबा यह भूल हुई। बाबा खुश होते हैं। भगवान खुश हुआ तो और क्या चाहिए।"

सा.बाबा 31.3.04 रिवा.

"अभी तुम बच्चे बाप से वर्सा ले रहे हो परन्तु यह भी ड्रामा में नूँध है। ... तुम बच्चों को बहुत नशा चढ़ना चाहिए। जिन्होंने कल्प पहले पुरुषार्थ किया है, जो पद पाया है, वही पायेंगे। अनेक बार तुम बच्चों को माया पर जीत पहनाई है, फिर तुमने हार भी खई है। यह भी ड्रामा बना हुआ है।"

सा.बाबा 27.1.04 रिवा.

"ऐसे नहीं कि त्रेता में जो राजा होते हैं, वह त्रेता में ही आयेंगे। पढ़े के आगे अनपढ़े को भरी ढोनी पड़ेगी। यह ड्रामा राज़ बाबा ही जान सकते हैं।"

सा. बाबा 20.4.99 रिवा.

"बच्चों की बूँद-बूँद से तलाव भरता रहता है। बच्चे अपना सफल करते रहते हैं क्योंकि जानते हैं - यह सब कुछ मिट्टी में मिल जाना है। ... सुदामा का भी मिसाल है। बाप तो गरीब निवाज़ है। यह सब ड्रामा में नूँध है, फिर भी होगा।"

सा.बाबा 22.7.06 रिवा.

विश्व-नाटक और भारत-भूमि

विश्व-नाटक में भारत भूमि का विशेष महत्व है। भारत इस विश्व-नाटक की आधार भूमि है क्योंकि कल्पान्त में भारत में मानव जीवन बीज रूप में बचता है और कल्प के नये चक्र के इतिहास का यहीं से शुभारम्भ होता है। भारत ही ऊंच ते ऊंच स्वर्ग बनता है और भारत ही रौरव नर्क भी बनता है। भारत में ही घी-दूध की नदियां बहती हैं तो खून की नदियां भी भारत में ही बहती हैं अर्थात् भारत में ही सिविल वार होती है। भारत में ही भगवान आते हैं और पुन: भारत भूमि को स्वर्ग बनाते हैं। ज्ञान और अज्ञान का प्रचार-प्रसार भी भारत से ही होता है। इसीलिए बाबा ने कहा है कि ये विश्व-नाटक भारत के ही उत्थान और पतन की कहानी है।

"भारतवासी आत्मायें खास बुलाती हैं कि आकर पतितों को पावन बनाओ।... सतयुग-त्रेता में भक्ति मार्ग होता नहीं। ज्ञान मार्ग भी नहीं कहेंगे। ज्ञान तो मिलता ही है संगम पर, जिससे तुम 21 जन्म प्रालब्ध पाते हो।... तुमको अभी ज्ञान रत्न मिलते हैं, जिससे तुम नई दुनिया के मालिक बनते हो।" सा.बाबा 15.7.04 रिवा.

"भारत ही बहुत सुख पाता है तो दुख भी भारत ही पाता है। बीमारियाँ आदि भी भारत में अधिक हैं। ... विलायत से सारी इन्वेन्शन यहाँ आती है। ... बाप नई-नई बातें सुनाते रहेंगे। बाप कहते हैं - दिन-प्रतिदिन गुह्य से गुह्य बातें सुनाता हूँ। ... अभी तुम बच्चों को समझ पड़ती जाती है कि आधा कल्प है सुख, आधा कल्प है दुख।"

सा.बाबा 17.7.04 रिवा.

"मनुष्य इस ड्रामा के एक्टर हैं। यह सारा खेल दो बातें पर ही बना हुआ है। हार और जीत, पवित्रता और अपवित्रता। भारत की हार और भारत की जीत। भारत में सतयुग के समय पवित्र धर्म था, इस समय है अपवित्र धर्म।" सा.बाबा 8.6.05 रिवा.

"बाप भारत में ही आते हैं। यह भी ड्रामा अनादि बना हुआ है। कब बना, कब पूरा होगा - यह प्रश्न नहीं उठ सकता है। ... तुम अपने को आपेही राजतिलक देते हो। ... मनमनाभव, जिससे अपने को आपही राजतिलक मिलता है, बाप नहीं देते हैं।"

सा.बाबा 14.1.05 रिवा.

"बाप स्वर्ग का वर्सा देते हैं, माया रावण श्राप देती है। यह भी खेल बना हुआ है। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार मैं शिवालय स्थापन करता हूँ। भारत शिवालय था, अभी वेश्यालय है। विषय सागर में गोता खाते रहते हैं। ... अभी भारत कितना भिखारी बन गया है। भारत ही कितना साहूकार था, स्वर्ग में एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था।"

सा.बाबा 8.1.05 रिवा.

"नम्बरवन गीता में ही भूल कर दी है। यह ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। बाप आकर यह भूल बताते हैं। ... हीरो-हीरोइन का पार्ट भारतवासियों को ही मिला हुआ है। ... माया के तूफान आयेंगे, यह भी ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 4.1.05 रिवा.

"ये फिर बेहद के आज और कल का ड्रामा है। आज भारत पुराना नर्क है, कल नया स्वर्ग होगा। ... 5 हजार वर्ष पहले आदि सनातन देवी-देवताओं का धर्म था, ... अभी तो डेविल वर्ल्ड है। डेविल वर्ल्ड की इण्ड और डिटी वर्ल्ड की आदि का अब है संगम।"

सा.बाबा 29.12.04 रिवा.

"आधा कल्प सुख फिर आधा कल्प दुख, यह चक्र चलता ही रहता है। इसकी इण्ड नहीं होती है। ... अभी तुमको याद आता है कि हम कितने धनवान थे। बहुत धनवान जब देवाला मारते हैं तो याद आता है कि हमारे पास क्या-क्या था, कितना धन था। भारत साहूकार था, पैराडाइज था, अब देखो कितना गरीब है। गरीबों पर ही रहम पड़ता है।... यह भी नाटक है।"

सा.बाबा 21.1.04 रिवा.

"बाप समझाते हैं - यह नाटक है हार-जीत का, हेल-हेविन का। भारत पर ही सारा खेल बना हुआ है। यह बना-बनाया ड्रामा है। ऐसे नहीं कि परमपिता सर्वशक्तिवान है तो खेल पूरा होने के पहले ही आयेगा या आधे में खेल को बन्द कर सकता है।... तुम जानते हो - भारत है सबसे पुराना खण्ड, जो कभी विनाश नहीं होता है। सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य भी यहाँ ही होता है। ... वही भारत अभी पतित है तब फिर मैं आता हूँ। इस बेहद के ड्रामा में हर एक आत्मा का पार्ट नूँधा हुआ है, जो रिपीट होता है। इस बेहद के ड्रामा से ही कोई टुकड़ा निकाल हद का ड्रामा बनाते हैं।"

सा.बाबा 29.12.03 रिवा.

"भारत पर ही हार और जीत का यह खेल बना हुआ है। भारत ही पावन था। कितनी पीस-प्योरिटी थी। ... तुम किसको भी समझा सकते हो कि भारत जो स्वर्ग था, वह नर्क कैसे बनता है।"

सा.बाबा 4.4.06 रिवा.

"अभी तुम समझते हो कि कैसा वण्डरफुल खेल है। भारत का कितना डाउनफाल हो जाता

है। डाउनफाल आफ भारत अर्थात् डाउनफाल ऑफ भारतवासी।... अभी तुम मास्टर बीजरूप बनते हो। याद के साथ स्वदर्शन चक्र भी फिराना है। तुम भारतवासी स्प्रीचुअल लाइट-आउस हो, सबको घर का रास्ता बताते हो।"

सा.बाबा 5.4.06 रिवा.

"भगवान भारत की झोली कब भरते हैं ... ज्ञान से सद्गति मिल जाती है। भारत को सद्गति बाप ही देंगे। सर्व का सद्गति दाता वह एक है। ... परमात्मा भी ड्रामा में पार्ट बजाता है। वह क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर है।"

सा.बाबा 31.3.06 रिवा.

"भारत तो बहुत लम्बा-चौड़ा है, सब जगह तुमको जाना है। ... पानी की गंगा नहीं, तुम ज्ञान गंगाओं को सारे भारत में जाना पड़ेगा। ... मैं तुम आत्माओं को पवित्र बनाये, विश्व की बादशाही देता हूँ। ड्रामा अनुसार भारतवासी राज्य-भाग्य लेंगे।"

सा.बाबा 15.02.06 रिवा.

"एक बाप ही ग़रीब-निवाज है। भारत जो सबसे साहूकार था, अभी सबसे गरीब बना है, इसलिए मुझे भारत में ही आना पड़े। यह बना-बनाया ड्रामा है, इसमें जरा भी फर्क नहीं हो सकता। ... ड्रामा का भी पता होना चाहिए। ... भारत जैसी महिमा और कोई खण्ड की हो नहीं सकती।"

सा.बाबा 9.02.06 रिवा.

"यह खेल बना हुआ है। पावन भारत और पतित भारत। जब पतित बनते हैं तो बाप को पुकारते हैं। ... भारत स्वर्ग था और सब आत्मायें निराकारी दुनिया में थीं। अब बच्चे जान गये हैं कि ऊंच से ऊंच बाबा स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं।"

सा.बाबा 22.4.06 रिवा.

"भारत हेविन था, अभी भारत का क्या हॉल है। भारत बाप का जन्म स्थान है ना, तो ड्रामा अनुसार उनको तरस आ जाता है। ... भारत की महिमा का किसी को पता नहीं है। बाप ही आकर भारत की कहानी बताते हैं। भारत की कहानी माना दुनिया की कहानी।"

सा.बाबा 5.5.06 रिवा.

"ड्रामा में नई दुनिया और पुरानी दुनिया, सुख और दुख का खेल बना हुआ है। ... बाप हमको सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ सुनाते हैं कि यह खेल कैसे बना हुआ है। ... इस ड्रामा में हम सब एक्टर्स हैं, यह कोई नहीं जानते। तुम बच्चे समझते हो कि इस ड्रामा में भारतवासियों का ही आलराउण्ड पार्ट है।"

सा.बाबा 13.5.06 रिवा.

"जैसे ईश्वर की महिमा अपरमअपार है, वैसे भारत की भी महिमा अपरमअपार है। ... कोई मरता तो कहते स्वर्गवासी हुआ। ... शिवबाबा भारत में ही आकर स्वर्ग की रचना रचते हैं। ... यह सारा खेल तुम भारतवासियों पर ही बना हुआ है।"

सा.बाबा 12.5.06 रिवा.

"भारत ही परिस्तान था, और खण्ड परिस्तान नहीं बनते हैं। अभी है माया रावण का पॉम्प, यह थोड़ा समय चलने वाला है। ... नर्क का भी एक शो है, यह है अल्पकाल का शो। ... भारत कितना सुन्दर था, सो फिर तमोप्रधान बनना ही है, ड्रामा प्लेन अनुसार।"

सा.बाबा 8.5.06 रिवा.

"यह है प्रवृत्ति मार्ग, सन्यासियों का है निवृत्ति मार्ग। वह अलग है। बाबा ने यह भी समझाया है कि अगर शंकराचार्य नहीं आता तो पवित्रता का अंश नहीं रहता। भारत बिल्कुल ही जल मरता। यह भी ड्रामा में नूँध है भारत को थमाने के लिए।"

सा.बाबा 29.7.06 रिवा.

"अभी तुम सारे ड्रामा के खेल को जान गये हो। समझते हो यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। ... तुम इस खेल को पूरा जान गये हो। ... तुमको निश्चय है कि हम इस भारत को श्रेष्ठाचारी जरूर बनायेंगे, तब तो भ्रष्टाचारी दुनिया का विनाश होगा।"

सा.बाबा 25.7.06 रिवा.

विश्व-नाटक और क्यों, क्या और कैसे का प्रश्न

विश्व-नाटक में क्यों, क्या और कैसे का कोई प्रश्न ही नहीं है। ये सब प्रश्न अज्ञानता जनित हैं। जो इस विश्व-नाटक के यथार्थ रहस्य को समझ लेता है, उसके मन में कब भी ऐसे प्रश्न आ नहीं सकते।

"होली माना हो ली। ऐसी होली मना रहे हो या कुछ मथंन चलता है। ज्ञान का मंथन दूसरी बात है लेकिन ड्रामा की सीन पर क्यों, कैसे ... किस चीज का मंथन किया जाता है?"

अव्यक्त बापदादा 4.3.69

"ऐसा क्यों? यह व्यर्थ संकल्प पत्थर तोड़ना है। लेकिन एक ही शब्द 'ड्रामा" याद आ जाता है तो व्यर्थ खत्म। एक ड्रामा शब्द के आधार से हाई जम्प दे देते हो। उसमें कुछ मास लग जाते हैं और उसमें एक सेकण्ड लगता।" A.B.D. 17-3-81

विश्व-नाटक और स्मृति-विस्मृति

विश्व-नाटक में जैसे दिन-रात का समान महत्व है, उसी प्रकार इसमें स्मृति-विस्मृति

का भी समान महत्व है, जिसके कारण ही आत्मायें अपना पार्ट सफलतापूर्वक बजाती हैं और ये नाटक सफलता पूर्वक 5000 वर्ष तक गतिशील रहता है और सदा आकर्षक अनुभव होता है।

विस्मृति आत्मा को नये पार्ट को बजाने के लिए स्फूर्ति प्रदान करती है। विस्मृति के अनेक आधार हैं, जिनमें निद्रा के कारण विस्मृति, मृत्यु और पुनर्जन्म के कारण विस्मृति, समय के साथ विस्मृति, स्थान परिवर्तन के साथ विस्मृति, योग में व्यर्थ बातों की विस्मृति, कल्पान्त में परमधाम जाने पर पूर्ण विस्मृति आदि-आदि। इस विश्व-नाटक का सारा खेल स्मृति-विस्मृति पर आधारित है। विस्मृति होते हुए भी पार्ट का समय आने पर स्मृति अवश्य जाग्रत होती है और आत्मा उस पार्ट को बजाने के लिए बाध्य हो जाती है।

विश्व-नाटक और जीवन की कला

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान से ही हम समझ सकते हैं कि जीवन क्या है, क्यों है और किस लिए है। जो आत्मा इन सब रहस्यों को समझकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर जीता है, अपने कर्तव्य को समझकर कर्म करता है, उसका ही जीवन यथार्थ जीवन है। अभी परमपिता परमात्मा ने विश्व-नाटक का जो ज्ञान दिया है, उसको समझकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर, साक्षी स्थिति में इस विश्व-नाटक को देखता है और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाता है, वही इस विश्व-नाटक और इस जीवन का सच्चा सुख अनुभव करता है। उसका ही जीवन, जीवन है और यही जीवन जीने की सच्ची कला है। जो इस कला को समझ लेता है, वह सर्व बन्धनों से मुक्त मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करता है, जो प्राणीमात्र का अभीष्ट लक्ष्य है।

"पास्ट, प्रैजेन्ट और फ्युचर का ही खेल चलता रहता है। ... पास्ट को पास विद् ऑनर होकर पास करना है। ... प्रजेन्ट (वर्तमान) में प्रजेन्ट (सौगात) देने की विधि से वृद्धि को पाते रहना। ... दिल से श्रेष्ठ संकल्प का साथ, यही प्रजेन्ट्स बहुत हैं। ... फ्युचर को अपने फीचर्स से प्रत्यक्ष करो। ... सदा आपके कर्म, बोल से रुहानी नशा और निश्चिन्तपन के चिन्ह अनुभव हों।"
अ.बापदादा 31.12.86

"यह खेल बना हुआ है। ड्रामा में हर एक को पार्ट मिला हुआ है, इसमें बड़ी अचल, स्थेरियम बुद्धि चाहिए। जब तक अचल-अडोल, एकरस अवस्था नहीं तब तक पुरुषार्थ कैसे करेंगे।... यह है गुप्त मेहनत।"
सा.बाबा 10.7.04 रिवा.

विश्व-नाटक और साकार मम्मा-बाबा

ब्रह्मा बाबा और मातेश्वरी जी के जीवन-व्यवहार पर दृष्टि डालें तो हम देखेंगे कि उन्होंने इस ड्रामा के यथार्थ ज्ञान को सबसे अच्छी रीति समझा और समझकर कार्य-व्यवहार में लाया, जिससे ही वे अभीष्ट पुरुषार्थ करके नम्बर वन में चले गये। ड्रामा का यथार्थ ज्ञाता शिवबाबा है, ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा के संग से उनक समान ही ड्रामा के ज्ञान को धारण किया, इसलिए शिवबाबा के बाद उनका स्थान हो गया।"तुम जास्ती याद कर सकते हो क्योंकि इनके ऊपर तो मामला बहुत है। भल ड्रामा कहकर छोड़ देते हैं, फिर भी कुछ लैस जरूर आती है। ... लैस आ जाती है। उस समय यह नहीं समझते कि यह भी ड्रामा बना हुआ है। यह फिर बाद में ख्याल आता है कि यह तो ड्रामा में नूँध है ना।"

सा.बाबा 2.11.04 रिवा.

"ड्रामा के राज़ को अच्छी रीति समझना चाहिए। ... बच्चों को इस ड्रामा के गुह्य राज़ को अच्छी रीति समझना चाहिए। हर एक बात एक्यूरेट नूँधी हुई है। ... बच्चे इतना मीठे मुलायम नहीं बनते हैं। बाप कितना मुलायम बच्चे मिसल हो चलते हैं क्योंकि ड्रामा पर चलते रहते हैं। कहेंगे जो हुआ ड्रामा की भावी।" सा.बाबा 31.10.04 रिवा.

"ड्रामा पर मजबूत रहना चाहिए। मम्मा-बाबा भी जायेंगे, अनन्य बच्चे भी एडवान्स में जायेंगे। पार्ट तो बजाना ही है, इसमें फिकर की क्या बात है ? साक्षी होकर हम खेल देखते हैं। अवस्था सदैव हर्षित रहनी चाहिए। बाबा को भी ख्याल आते हैं, लॉ कहता है जायेंगे जरूर। ऐसे नहीं कि मम्मा-बाबा कोई परिपूर्ण हो गये हैं। परिपूर्ण अवस्थ अन्त में होगी।"

सा.बाबा 24.11.03 रिवा.

"कितना वण्डरफुल खेल है। कभी किसी बात में संशय नहीं होना चाहिए। बापदादा में जरा भी संशय नहीं लाना चाहिए। कदम-कदम पर श्रीमत लेनी है। नहीं तो माया नुकसान करा देती है।" सा.बाबा 29.6.06 रिवा.

"ड्रामा में जो होना है, सो होगा ही। समझो ये छत गिर जाती है... इसमें जरा भी हिलने की दरकार नहीं है। ... एक्सीडेण्ट आदि तो ढेर होते होते रहते हैं, फिर परमात्मा किसकी रक्षा करते हैं क्या ? यह सब ड्रामा में नूँध है।... जो ड्रामा को नहीं जानते, वे देह को याद कर आंसू बहाते हैं। वे कभी शिवबाबा को याद कर नहीं सकते।" सा.बाबा 26.6.06 रिवा.

"श्रीमत पर अपने को देखना है कि हमारी बाप के साथ कितनी प्रीत है ? ... बाबा अपना अनुभव सुनाते हैं कि कैसे बाबा से बातें करता हूँ। बाबा कैसा वण्डरफुल यह ड्रामा है, आप कैसे आकर पतित से पावन बनाते हो।" सा.बाबा 26.6.06 रिवा.

तृतीय अध्याय (III Chapter)

विश्व-नाटक अर्थात् ड्रामा शब्द का प्रयोग

(Application of Drama)

ड्रामा कहने का अधिकारी वही है, जो अपनी स्व-स्थिति में स्थित है, विश्व-नाटक के विधि-विधान को अच्छी रीति समझता है और उन विधि-विधानों में पूर्ण श्रृद्धा-विश्वास और निश्चय है। विश्व-नाटक में आत्मा ही पार्टधारी है और आत्मा ही दृष्टा है तथा इसके विधि-विधान सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी और अटल हैं। विश्व-नाटक की यथार्थता को देखें तो एक परमात्मा ही इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है और वही हर घटना को ड्रामा समझकर देखता है, इसलिए वही विश्व-नाटक की पुनरावृत्ति के लिए कल्पान्त में आकर इसका ज्ञान देता है। उसके बाद ब्रह्मा बाबा ने परमात्मा के सानिध्य से अपने पुरुषार्थ से इस ज्ञान को अपने जीवन में साकार किया और हर घटना को ड्रामा समझकर देखा और पार किया। उसके बाद अन्य आत्माओं ने जैसे-जैसे विश्व-नाटक के ज्ञान को समझा और धारण किया, उस अनुसार उनकी स्थिति है।

ड्रामा के हू-ब-हू पुनरावृत्ति का सिद्धान्त भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों कालों में समान रूप से प्रभावित होता है - ये सनातन सत्य है। परन्तु हम पूर्ण ज्ञानी नहीं हैं इसलिए बाबा ने हमको कहा है कि भूतकाल के लिए ही ड्रामा का प्रयोग करो और किसी आत्मा को पहले ड्रामा का राज़ नहीं बताओ, जिससे ड्रामा कहकर कोई आत्मा पुरुषार्थहीन न हो जाये या हतोत्साहित न हो जाये। परन्तु सत्यता ये है कि जो भूतकाल पर लागू होता है, वह वर्तमान और भविष्य पर भी अवश्य लागू होगा तब ही उसे हू-ब-हू पुनरावृत्त कहा जा सकता है अर्थात् जो भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों पर समान रूप से लागू हो, वही हू-ब-हू पुनरावृत्त हो सकता है।

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा की कसौटी

ड्रामा के यथार्थ स्वरूप में स्थित व्यक्ति की पहचान

(Critaria to real understanding of the knowledge of Drama)

Q. जिस व्यक्ति में इस विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा होगी, उसकी स्थिति क्या होगी ?

वह -

1. सदा साक्षी-दृष्टा होकर इस विश्व-नाटक की हर घटना को देखेगा।
2. वह सदा भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से सदा मुक्त, निश्चिन्त, निर्संकल्प, निर्विकल्प, निर्मान स्वरूप में स्थित होगा।
3. सदा आत्मिक स्थिति में स्थित होगा और उसकी सदा सर्व के प्रति आत्मिक दृष्टि होगी।
4. सदा निर्भय और निर्वैर होगा।
5. उसकी दृष्टि-वृत्ति सदा सर्व के प्रति निर्दोष होगी, इसलिए प्राणीमात्र के प्रति उसका स्नेह होगा।
6. सदा व्यर्थ से मुक्त, समर्थ स्थिति में होगा।
7. सदा हर्षित अर्थात् आनन्दमय स्थिति में होगा।
8. सदा मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति की अनुभूति में होगा।
9. उसकी लाभ-हानि, निन्दा-स्तुति ... सब में समान स्थिति होगी।
10. सदा नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप होगा।
11. सदा सर्व के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना वाला होगा।
12. ड्रामा के यथार्थ सत्य को जानने वाला ही निर्संकल्प, निर्विकल्प, निश्चिन्त, निर्भय, निरासक्त होने के कारण अपने अभीष्ठ लक्ष्य के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकता है, जिससे जीवन की अभीष्ट सफलता को प्राप्त कर सकता है।
13. वह क्यों, क्या, कैसे के व्यर्थ प्रश्नों से मुक्त प्रसन्नचित्त होगा।
14. उसका स्व-दर्शन चक्र सदा चलता रहेगा और औरों को भी स्व-दर्शन चक्रधारी बनाने का चक्र चलता रहेगा।
15. विश्व नाटक की विविधता को समझते हुए दूसरे की प्राप्तियों से तुलना न कर अपनी प्राप्तियों को देख सदा हर्षित रहेगा और उनका सुख लेगा।

विश्व-नाटक के विषय में अन्य विविध बिन्दु

* स्व-स्थिति में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को नाटक या खेल समझकर देखने वाले को कभी भी ये खराब नहीं लग सकता है, कोई इससे ऊब नहीं सकता। खेल समझकर देखने और खिलाड़ी समझकर खेल खेलने वाले को ये परमानन्दमय और परमसुखमय प्रतीत होगा। परन्तु देहाभिमान में आने और नाटक के यथार्थ रहस्य को भूलने से ही राजा-प्रजा, दास-दासी, ऊंच-नीच की भासना आती है, जिससे सुख-दुख की अनुभूति होती है। वास्तव में ये विश्व-नाटक एक खेल है। खेल समझकर खेलो और देखो तो ये परमानन्दमय है।
* ये विश्व-नाटक समयानुसार और स्थिति के अनुसार दो समान भागों में विभाजित है - स्वर्ग-

नर्क, दिन-रात, सुख-दुख, आत्माभिमानी-देहाभिमानी, रामराज्य-रावण राज्य आदि आदि। स्वर्ग है तो नर्क का ज्ञान नहीं और नर्क में स्वर्ग की रीति-रस्म का यथार्थ ज्ञान नहीं, केवल अंशमात्र ज्ञान है। अभी संगम पर ज्ञान सागर परमात्मा दोनों का ज्ञान देकर देहाभिमानी से देही-अभिमानी बनने का रास्ता बताते हैं, अभी ही स्वर्ग-नर्क का भेद समझ में आता और नर्क से स्वर्ग तथा स्वर्ग से नर्क कैसे बनता वह समझ में आता है। इस सत्य को जानने से आत्मा सहज निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकती है।

* देह में रहते देह से न्यारी अशरीरी अवस्था परमानन्दमय है परन्तु व्यर्थ संकल्प ही अशरीरी बनने में बड़ी बाधा है। ड्रामा का ज्ञान, परमात्मा की याद और अशरीरी बनने का निरन्तर अभ्यास ही इस बाधा से मुक्त होने का साधन है। ड्रामा का यथार्थ ज्ञान आत्मा को व्यर्थ संकल्पों से मुक्त करता है।

* पूर्ण ज्ञानी या पवित्र आत्मा माना स्व-स्थिति में स्थित हो साक्षी होकर विश्व-नाटक को देखने वाला। जो स्व-स्थिति में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखेगा, उसको दिन, रात, वर्ष, जीवन बीत जायेगा परन्तु वह इससे कब ऊबेगा नहीं, थकेगा नहीं क्योंकि ये विश्व-नाटक बहुत ही अद्भुत रहस्यों से युक्त परमानन्दमय है। ड्रामा के सर्व रहस्यों को जानना तो मनुष्य के वश की बात नहीं है परन्तु जैसे डेगरे के एक चावल को देखकर सारे डेगरे का पता लग जाता है, उसी प्रकार इसके कुछ मुख्य2 रहस्यों के अध्ययन से इसकी वास्तविकता को समझकर इसका सुख अनुभव किया जा सकता है। अपने मूल स्वरूप में स्थित आत्मा ही इनका सहज स्वभाविक अनुभव करती है और करा सकती है।

* हर आत्मा को आत्मा में अनादि-अविनाशी रूप से नीहित अपना मूल पार्ट ही अच्छा लगता है और वह समय पर उसे बजाये बिना रह नहीं सकती। कोई कितना भी अच्छा पार्टधारी हो परन्तु मूल आत्मा के समान उसका पार्ट दूसरा कोई बजा नहीं सकता। उसका पार्ट मूल आत्मा के समकक्ष हो सकता है परन्तु समान या उससे श्रेष्ठ नहीं। पार्टधारी आत्मा का पार्ट मूल पार्टधारी आत्मा के पार्ट की नकल करने का पार्ट है, इसलिए वह उससे अच्छा कदापि नहीं हो सकता है। मूल पार्ट मूल आत्मा ही बजा सकती है।

* ड्रामा का ज्ञान ड्रामानुसार पुरुषार्थ को तीव्र करता है तो ड्रामानुसार ड्रामा का अयथार्थ ज्ञान आत्मा को पुरुषार्थहीन भी बना देता है परन्तु ये अटल सत्य है कि ड्रामा का यथार्थ ज्ञान सदा ही पुरुषार्थ को तीव्र करता है।

"इस वर्ष हर एक सेवा के निमित्त बने हुए बच्चों को यह लक्ष्य रखना है कि कोई न कोई ऐसा नवीनता का विशेष कार्य करें, जो अब तक ड्रामा में छिपा हुआ, नूँधा हुआ है, उस कार्य को

प्रत्यक्ष करें।" अ.बापदादा 22.1.84

"बच्चों ने इन्दिरा गांधी की टी.वी. देखी। समय पर देखी, नॉलेज के लिए देखी, समाचार के लिए देखी इसमें कोई हर्जा नहीं है लेकिन क्या हुआ, क्या होगा, इस रूप से नहीं देखना। नॉलेजफुल बनकर हर दृश्य को कल्प पहले की स्मृति से देखो।"

अ.बापदादा 19.11.84

विविध प्रश्न और उत्तर

"यह भी ड्रामा में नूँध है। क्यों का सवाल नहीं उठता। यह तो बना-बनाया खेल है। तुम बच्चों को बाप समझाते हैं कि ऐसे-ऐसे होता है। ... मेरा पार्ट ही संगमयुग पर है, सो भी एक्यूरेट समय पर आता हूँ। ... ड्रामा में सब आत्माओं को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है। यह बहुत गुह्य बातें हैं। ... यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया ड्रामा है, कब शुरू हुआ, कह नहीं सकते। चक्र फिरता ही रहता है। संगमयुग पर बाप आकर बतलाते हैं - यह ड्रामा 5 हजार वर्ष का है।" सा.बाबा 22.3.04 रिवा.

Q. क्या इस विश्व-नाटक की कभी नई रचना हुई है? यदि हुई तो कब और कैसे?

अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक की रचना का कोई प्रश्न ही नहीं है लेकिन इसका चक्र बदलता है, जिसके अनुसार यह नया-पुराना होता है।

"निराकारी दुनिया में सभी आत्माओं का एक सिजरा बना हुआ है, उनको इन्कारपोरियल ट्री कहा जाता है। यह है कारपोरियल ट्री। निराकारी दुनिया से सबको नम्बरवार आना है। आत्मायें यहाँ आती हैं पार्ट बजाने। सभी आत्मायें इस ड्रामा के एक्टर्स हैं। आत्मा अविनाशी है, उसमें पार्ट भी अविनाशी है। ड्रामा कब बना, यह कहा नहीं जा सकता। ... यह ड्रामा का खेल है, जिसको बुद्धि में धारण करके औरों को भी कराना है।"

सा.बाबा 29.4.06 रिवा.

Q. क्या इस विश्व-नाटक में कुछ परिवर्तन हो सकता है? यदि हो सकता है तो क्या और कैसा?

गायन है - बनी बनाई बन रही अब कछु बननी नाहिं, चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होये। अंग्रजी में कहा गया है - Events can't be changed but we can change our attitude towards events. विश्व-नाटक में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता परन्तु विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान हमारी वृत्ति और दृष्टिकोण को परिवर्तन कर देता है, जिससे हर घटना

कल्याणमय और सुखमय प्रतीत होती है।

"बच्चे, इस ड्रामा में हर एक को अनादि पार्ट मिला हुआ है। मैं भी क्रियेटर, डायरेक्टर, प्रिन्सीपल एक्टर हूँ परन्तु ड्रामा के पार्ट को हम कुछ चेन्ज नहीं कर सकते।... परमात्मा तो खुद कहते हैं मैं भी ड्रामा के अधीन हूँ, इसके बन्धन में बांधा हुआ हूँ।"

सा.बाबा 12.12.04 रिवा.

Q. जीवन क्या है, क्यों है और किस लिए है ?

यह विश्व-नाटक परमानन्दमय है, जो आत्मा विश्व-नाटक के ज्ञान को समझकर देह में रहते देह से न्यारी अपने आत्मिक स्वरूप में होकर इसे देखती और पार्ट बजाती, उसको ये परमानन्दमय अनुभव होता है, उसके लिए साधन-सम्पत्ति, व्यक्ति की कोई आवश्यकता नहीं है। वह न इससे ऊबता है और न ही इसमें लिप्त होता है, सदा साक्षी होकर पार्ट बजाता है।

Q. ड्रामा हमारे जीवन में सहज रूप से धारणा में आये और समय पर कार्य करे, उसका साधन और साधना क्या है ?

ड्रामा का ज्ञान हमारे पुरुषार्थी जीवन के लिए परम उपयोगी है। ड्रामा का ज्ञान हमारे जीवन में धारणा में आये, उसका साधन और साधना है - ड्रामा के गुण-धर्मों, विशेषताओं एवं नियम-सिद्धान्तों के ज्ञान का मनन-चिन्तन करके, उनका अनुभव और उन पर पूर्ण निश्चय तथा देही-अभिमानी स्थिति का सतत अभ्यास। जितनी ही इन दोनों क्रियाओं की जीवन में धारणा होगी, उतना ही ये ड्रामा जीवन में प्रभावी होगा और हमारे जीवन को सफल बनाने में सहयोगी होगा।

Q. क्या इस विश्व-नाटक की हू-ब-हू रचना में कोई परिवर्तन हो सकता है ?

नहीं। यद्यपि ड्रामा में कुछ परिवर्तन नहीं हो सकता, कल्प-कल्प ये हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है परन्तु इसमें हर क्षण, पल-विपल परिवर्तन होता है। एक सेकेण्ड का दृष्य न मिले दूसरे से। मनुष्य को पुराना याद नहीं रहता है इसलिए परिवर्तन प्रतीत होता है और ये भूलना भी इस विश्व-नाटक में कल्याणकारी है, जो इस विश्व-नाटक को रहस्यात्मक और मनोरंजक बनाताहै।

ड्रामा के ज्ञान की धारणा, दैवी गुणों की धारणा, योगी जीवन की पहचान उसके कर्म और व्यवहार से होती है।

ये विश्व नाटक हू ब हू पुनरावृत्त होता है और हर आत्मा में अविनाशी पार्ट की नूँध है।

अविनाशी पार्ट की नूँध होते हुए भी कर्म और फल का अद्भुत सन्तुलन है।

प्रश्न:- क्या इस विश्व-नाटक का हू-ब-हू पुनरावृत्ति का सिद्धान्त भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों कालों में ड्रामा लागू होता है या केवल भूतकाल पर ही। ड्रामा को तीनों कालों में लागू करने में क्या2 लाभ और क्या2 हानियाँ हैं ?

हू-ब-हू का सिद्धान्त तीनों कालों में समान रूप से लागू होता है। सत्य सदा ही सत्य और कल्याणकारी होता है। जो सिद्धान्त भूत काल पर लागू होता है, वह तीनों कालों पर अवश्य लागू होगा, इसलिए विश्व नाटक का हू-ब-हू पुनरावृत्त का सिद्धान्त तीनों कालों में लागू होता है, जो इसकी वास्तविकता को जानता है वही इसका यथार्थ सुख अनुभव करता हैं। ये सत्य हमारे पुरुषार्थ में गति प्रदान करते हैं। यथा - इससे सहज ही साक्षी स्थिति हो जाती है, जो संगमयुग की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है और अतीन्द्रिय सुख अनुभव करने का एकमात्र साधन है। इससे हम ईर्ष्या-द्वेष और भविष्य की आशंकाओं से बच जाते हैं, जिससे वर्तमान में श्रेष्ठ संकल्प को धारण कर सकते हैं। हमारा वर्तमान ही भविष्य का आधार है।

प्राय: लोगों की यह परिकल्पना है कि ड्रामा के हू-ब-हू के सिद्धान्त को तीनों कालों में लागू होने को मानने से आत्मा पुरुषार्थहीन हो जाती है परन्तु सत्य तो यह है कि जब आत्म-स्थिति में स्थित होकर इस नाटक को देखते तो मनुष्य कभी भी पुरुषार्थहीन नहीं हो सकता है क्योंकि ड्रामा पुरुषार्थ और प्रारब्ध पर आधारित है। आत्मा पुरुषार्थ बिगर रह नहीं सकती। इस ड्रामा को, ड्रामा समझकर देखना और हर परिस्थिति में साक्षी होकर रहना भी एक श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। तीनों कालों में हू-ब-हू रिपीट होने के ज्ञान को समझने के कारण बीती को सहज बीती करके, उसके चिन्तन से और भविष्य की आशंका से जनित चिन्तायुक्त चिन्तन से भी बच जाते हैं, जिसके कारण निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति को धारण कर मुक्ति-जीवनमुक्ति का सहज अनुभव कर सकते हैं। व्यर्थ चिन्तन से मुक्त होने के कारण हमारी आत्मिक शक्ति ह्रासित होने से बच जाती है। इसीलिए गायन है - बनी-बनाई बन रही ... जो अनहोनी होये। बाबा ने भी अनेक बार मुरलियों में इन शब्दों को बोला है।

प्रश्न:- ये बना-बनाया विश्व-नाटक है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, सुख-दुख का खेल है, देह नश्वर है ... फिर भी इसमें मानव की अभिरुचि (Charm) क्या और क्यों है? जीवन का सार क्या है?

उत्तर:- 1- आत्मा और परमात्मा को जानकर परमात्म मिलन का परमानन्द प्राप्त करना और इस विश्व-नाटक की यथार्थता को जान साक्षी होकर इसके अवलोकन और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाने का परम सुख अनुभव करना ही मानव जीवन की सार्थकता या सार है।

2- यथार्थ ज्ञान की धारणा से देह से न्यारा होकर अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा पिता की मधुर स्मृति से यथार्थ रूप में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना जीवन की परम प्राप्ति है, जो अभी संगम युग पर ही होती है।

3- सतयुग-त्रेता में मनुष्य शुद्ध इन्द्रीय सुख और प्यार का अनुभव करता है और बाद में

देहाभिमान की प्रवेशिता के बाद अशुद्ध इन्द्रीय सुखों और प्यार का अनुभव करता है, यही प्यार बाद में मोह के रूप में बदल जाता है, जिसके आधार पर आत्मा सुख का अनुभव करती है इस प्रकार वस्तु और व्यक्तियों के साथ प्यार के कारण ही मनुष्य की इस विश्व-नाटक में अभिरुचि है जिसके कारण मृत्यु-शैय्या पर लेटा व्यक्ति भी इस देह को छोड़ना नहीं चाहता है। अभी संगम युग पर आत्मा को परमपिता परमात्मा की मधुर याद और यथार्थ ज्ञान की धारणा से जो अतीन्द्रिय सुख प्राप्त होता है, जो कल्प में मानव जीवन का परमसुख है, जो अभी हम आत्माओं को प्राप्त है, जिसके कारण आत्मा ज्ञान होते भी इस देह को छोड़ना नहीं चाहता है। आत्मा अधिक से अधिक समय तक इस सुख का अनुभव करना चाहती है।

Q. क्या सतयुग-त्रेता को ज्ञान मार्ग कहेंगे ?

नहीं। सतयुग-त्रेता में ज्ञान होता नहीं परन्तु उसको अज्ञान भी कह नहीं सकते क्यों कि वह ज्ञान की प्रालब्ध है। इसलिए सतयुग-त्रेता में ज्ञान और अज्ञान दोनों ही नहीं कहेंगे। जैसे बाप अपकारी पर उपकार करता है, वैसे हम भी अपकारी पर उपकार कब और कैसे कर सकेंगे ? अर्थात् इसके लिए क्या धारणा चाहिए ?

विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान धारण करेंगे और परमात्मा के समान साक्षी होकर रहेंगे तब ही हम अपकारी पर उपकार कर सकेंगे।

इस विश्व-नाटक में सुख-दुख को देखकर इसको अच्छा कहें या बुरा कहें ?

"यह बना-बनाया नाटक है, हम समझते हैं यह सभी एक्टर्स हैं। निन्दा तो कर नहीं सकते। नाटक की तो जरूर महिमा ही करनी पड़े। अपना ही नाटक है, हम उस नाटक के एक्टर्स हैं। नाटक को एक्टर्स खराब थोड़ेही मानेंगे। इसको देखकर तुम खुश होते हो, निन्दा नहीं कर सकते। बाकी मनुष्यों को माया के फंदे से छुड़ाने के लिए समझाते हैं।"

सा.बाबा 28.1.69 रात्रि क्लास रिवा.

Q. विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञाता के मन में क्या ये प्रश्न उठ सकता है कि यह नहीं होना चाहिए, ये होना चाहिए, ये हो जाये, ये न हो ?

नहीं, क्योंकि वह जानता है कि ड्रामा में जो हुआ, वही अच्छा है; जो हो रहा है, वही अच्छा है और जो होगा, वही अच्छा होगा और ड्रामा के सफल मंचन के लिए वही आवश्यक एवं हितकर है।

विविध विचारणीय प्रश्न

Q. ड्रामा के ज्ञान में क्या-2 बातें सिद्ध करनी हैं ?
ड्रामा हू-ब-हू कैसे पुनरावृत्त होता है ?
ड्रामा 5000 वर्ष का कैसे है ?
ड्रामा में किसी आत्मा को सदा काल की मुक्ति मिल सकती है या नहीं, यदि नहीं मिल सकती है तो आत्मायें मुक्ति क्यों चाहते हैं, उनके अन्दर ये इच्छा क्यों और कैसे जाग्रत हुई ?
क्या परमपिता परमात्मा ने इस विश्व-नाटक को कब रचा है ? यदि हाँ, तो कब और कैसे ?
क्या इस विश्व-नाटक में कोई परिवर्तन हो सकता है ? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो क्यों ? यदि नहीं हो सकता है तो पुरुषार्थ की क्या आवश्यकता है ?
विश्व-नाटक में 5 हजार वर्ष के बाद अणु-परमाण सहित हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है या केवल आत्माओं का पार्ट ही पुनरावृत्त होता है ? यदि अणु-परमाणु सहित हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है तो एक साथ एक ही समय पर परिवर्तन होते हैं या पांच हजार साल में परिवर्तन होते हैं ?
Q. यदि अणु-परमाणु सहित हू-ब-हू पुनरावृत्त नहीं होता है और यदि एक परमाणु भी हू-ब-हू पुनरावृत्त नहीं होता है तो क्या इसको हू-ब-हू पुनरावृत्त कहा जायेगा ? यदि एक परमाणु भी हू-ब-हू पुनरावृत्त नहीं होता है तो क्या आत्माओं का पार्ट हू-ब-हू पुनरावृत्त हो सकता है ?
ड्रामा कहने का अधिकारी कौन ?
क्या ड्रामा में किसी का पार्ट परिवर्तन हो सकता है ? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो क्यों ?
यदि हम कहें कि ड्रामा में कोई परिवर्तन होता है या हो सकता है तो उस परिवर्तन का प्रारम्भिक बिन्दु (Starting point) क्या है, जहाँ से ये परिवर्तन आरम्भ हुआ या होगा और अन्तिम बिन्दु (Ending point) क्या है, जहाँ ये परिवर्तन पूर्ण होगा। यदि परिवर्तन होता है तो हू-ब-हू पुनरावृत्ति का रहस्य क्या है ?
ये नाटक हर क्षण नया लगता है - क्यों ?
ड्रामा बीते पर ही लागू होता है या भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों कालों पर लागू होता है ?
"ड्रामा को भी बहुत महीनता से समझना होता है। जो पास्ट हो गया, उसका चिन्तन नहीं। मर गया, खलास। तुम अपने काम में लग जाओ। बीती को चितवो नहीं और आगे की कोई आश भी न रखो।" सा. बाबा 9.5.69 रिवा.
क्या बाबा को याद करें तो बरसात होगी ? बरसात आदि के लिए बाबा को याद करना चाहिए ?

"बरसात नहीं पड़ती तो यज्ञ रचते हैं। ऐसे नहीं कि सदैव यज्ञ करने से बरसात पड़ती है। नहीं, कहाँ फैमन पड़ता है भल यज्ञ करते हैं परन्तु यज्ञ करने से कुछ होता नहीं है। यह तो ड्रामा है। आफतें जो आनी हैं, वे तो आती ही रहती हैं।"

सा.बाबा 2.7.04 रिवा.

क्या ये ड्रामा रचा गया है ? यदि हाँ तो कब और कैसे ?

क्या ये नाटक सुख-दुख का है ? यदि हाँ तो कैसे, यदि नहीं तो कैसे ?

क्या इस विश्व-नाटक में किसको VIP या हीरो पार्ट मिला है और किसी को साधारण ? यदि हाँ तो क्यों और कैसे ?

कर्म और फल का सिद्धान्त ब्राह्मणों सहित सब पर समान रीति से प्रभावित होता है या नहीं ? यदि नहीं तो क्यों ?

कर्म और फल का सिद्धान्त सर्व आत्माओं पर समान रूप से लागू होता है या कोई भेद है ?

क्या ये फिल्म अभी शूट हो रही है या पहले कभी शूट हुई है ? यदि अभी हो रही है तो कैसे ?

ये ड्रामा अच्छा है तो क्यों है ? यदि नहीं है तो क्यों ?

इस ड्रामा में पूर्व का याद नहीं रहता तो क्यों और उससे क्या लाभ है ? यह भूलना अच्छा है या खराब ?

जब ये विश्व-नाटक हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है तो हमारा कर्तव्य क्या है ?

सार

यह विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। आत्मा, परमात्मा और जड़ तत्वों सहित सभी का इसमें अनादि-अविनाशी पार्ट है, जो पुनरावृत्त होता है। हर आत्मा अपने पार्ट अनुसार कर्म करती है और कर्मानुसार अच्छा-बुरा फल पाती है। परमात्मा भी कर्म तो करता है लेकिन वह निराकार होने के कारण निष्काम भावना से कर्म करता है, इसलिए कर्म-फल से प्रभावित नहीं होता है।

"रचयिता और रचना की नॉलेज तो सभी को मिलनी है जरूर। सभी धर्मों का यह अनादि खेल बना हुआ है। इन बातों को जो अच्छी रीति समझते हैं और धारण करते हैं, उनके लिए तरावट है। उनको बहुत खुशी रहेगी।" सा. बाबा 21.4.72 रिवा.

विश्व-नाटक की यथार्थता पर विचार करें तो विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान और परमात्मा की मधुर स्मृति ही विश्व की और आत्माओं की चढ़ती कला का आधार है। इस पुरुषार्थी जीवन की सफलता ज्ञान सागर परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान पर आधारित है अर्थात् वह ज्ञान ही आत्मा और सृष्टि की चढ़ती कला का आधार है। विचार करें तो सतयुग में जब आत्मायें इस धरा पर आती हैं तो शत-प्रतिशत पावन होती हैं लेकिन आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण उनकी उतरती कला ही होती है। चढ़ती कला अभी ही होती है, जब परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देते हैं और योग सिखलाते हैं। आत्म-कल्याण और योग की सिद्धि के लिए जितना आत्मा और परमात्मा के ज्ञान का महत्व है, उतना ही विश्व-नाटक के ज्ञान का भी महत्व है। इसलिए विश्व-नाटक के विषय में मुख्य-मुख्य सत्य, जिनका ज्ञान, अनुभव और निश्चय परमावश्यक है, वे निम्नलिखत हैं :-

विश्व-नाटक की अनादि-अविनाश्यता और हू-ब-हू पुनरावृत्ति
विश्व-नाटक की सत्यता, न्यायपूर्णता और कल्याणकारिता
विश्व-नाटक में कर्म का विधि-विधान अर्थात् कर्म और फल का विधि-विधान
कल्पान्त में विश्व-नाटक के अपने सतोप्रधान रूप में परिवर्तन
विश्व-नाटक की संरचना अर्थात् कलम
विश्व-नाटक की विविधता और सतत परिवर्तनशीलता का सिद्धान्त,
विश्व-नाटक के गुण-धर्मों का ज्ञान

ब्रह्मा बाबा के महावाक्य - ड्रामा के ज्ञान से बुद्धि पूर

विश्व-नाटक के इन सब सत्यों के ज्ञान से ही योग की सिद्धि सम्भव है, जो आत्मा को पवित्र बनाने का एकमात्र आधार है। विश्व-नाटक की सत्यता का अनुभव कर, राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होकर परमानन्द का अनुभव करना ही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान है, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है। ब्राह्मण जीवन की गाड़ी अपने पथ पर सफलतापूर्वक चले, उसके लिए विश्व-नाटक के ज्ञान की धारणा और आत्मिक स्थिति रूपी पहिये साथ-साथ चलना अति आवश्यक है, उसके लिए परमात्मा दोनों के बीच की धूरी है। तीनों का ही जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है।

ड्रामा का ज्ञान हमारे पुरुषार्थ में परमात्मा के समान ही परम सहयोगी है क्योंकि ड्रामा के यथार्थ ज्ञान से ही हम भूतकाल के चिन्तन, भविष्य की चिन्ता मुक्त होकर निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति में स्थित हो सकते हैं, जो ही आध्यात्मिक जीवन की सफलता के लिए यथार्थ पुरुषार्थ है और पुरुषार्थ की सफलता का आधार है। इस ज्ञान की धारणा से सहज ही हम सेकण्ड में बिन्दु रूप स्थिति में स्थित हो सकते हैं।

ड्रामा के यथार्थ ज्ञान वाली कोई भी आत्मा पुरुषार्थहीन नहीं हो सकती। शिव बाबा, जो ड्रामा का पूर्ण ज्ञाता है और सदा कर्मातीत है वह भी आकर हम आत्माओं को पावन बनाने का कितना अथक पुरुषार्थ करते हैं, तो आत्मायें ड्रामा के ज्ञान से कैसे पुरुषार्थहीन हो सकती हैं। यदि ड्रामा के ज्ञान से कोई पुरुषार्थहीन बन जाता है तो वह भी उसका ड्रामा में पार्ट है, ड्रामा के यथार्थ ज्ञान वाला उसको भी साक्षी होकर ही देखेगा।

विश्व-नाटक के विधि-विधान के अनुसार पुरुषार्थ जीवात्मा का स्वभाविक स्वभाव है। हर जीवात्मा अपने सुन्दर-सुखमय भविष्य के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है। जब तक विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान नहीं है तब तक वह भौतिक प्राप्तियों के लिए प्रयत्नशील रहता है परन्तु जब विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान मिल जाता तो आध्यात्मिक प्राप्तियों के लिए प्रयत्न करता ही है, जिसको ही सच्चा पुरुषार्थ (पुरुष+अर्थ) कहा जाता है। विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानने का प्रयत्न भी एक बड़ा पुरुषार्थ है।

बाबा ने मन्त्र ही दिया है कि देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को भूल कर अपने को अशरीरी आत्मा समझकर, मुझ अशरीरी बाप को याद करो। बाबा ने कहा है कि ऐसा अभ्यास करो जो सेकेण्ड में इस देह से न्यारा होकर अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जायें, जो अव्यक्त बापदादा अपने मिलन के समय भी कराते हैं और कर्म करते भी करने की प्रेरणा देते हैं। इसके लिए ही परमात्मा ने विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है, इस अभ्यास में परम सहयोगी है। ड्रामा का ज्ञान हमारे जीवन में सहज रूप से धारणा में आये और समय पर कार्य करे, इसका

साधन है - इस ड्रामा के गुण-धर्म एवं सिद्धान्तों का गहन चिन्तन करके अनुभव और निश्चय करके उनको जीवन में धारण करना और देही-अभिमानी स्थिति का अभ्यास करना।

परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर है और ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का पूर्ण ज्ञाता है इसलिए वह सदा साक्षी-दृष्टा है। आत्माओं में जो जितना इसके रहस्यों को समझकर जीवन में धारण करता, वह उतना ही साक्षी स्थिति धारण करता है और इस विश्व-नाटक के देव-दुर्लभ परम-आनन्द को अनुभव करता है, जो ही मानव-जीवन का लक्ष्य है और सार है। अपने मूल स्वरूप में स्थित हो साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखने में ही जीवन की सच्ची सम्पन्नता, सुख और सन्तुष्टता है।

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की समझ, उसकी धारणा से आत्मा निर्भय, निर्मान, निर्संकल्प, निर्विकल्प, निश्चिन्त, निर्विघ्न, निर्मोही स्थिति का अनुभव करेगी, जिससे वह विश्व-नाटक अर्थात् वर्तमान संगमयुग के परम-सुख अर्थात् अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द का अनुभव करेगी।

"अन्तर यह है कि ज्ञान को प्वाइन्ट्स के रूप में धारण करना और ज्ञान की एक-एक बात को शक्ति के रूप में धारण करना - इसमें अन्तर पड़ जाता है। जैसे ड्रामा की प्वाइन्ट उठाओ। यह बहुत बड़ा विजय प्राप्त करने का शक्तिशाली शस्त्र है। जिसको ड्रामा के ज्ञान की शक्ति प्रकटिकल जीवन में धारण है, वह कभी भी हलचल में नहीं आ सकता। सदा एकरस अचल-अडोल बनने और बनाने की विशेष शक्ति यह ड्रामा की प्वाइन्ट है। इसे शक्ति के रूप में धारण करने वाला कभी हार नहीं खा सकता।"

अ.बापदादा 21.3.85

"ये ड्रामा बड़ा एक्यूरेट है। इसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता।... यह अनादि-अविनाशी, बना-बनाया ड्रामा है। बड़ा वण्डरफुल है। इसमें नई एडीशन हो नहीं सकती। गायन भी है - बनी बनाई बन ... चिन्ता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होये।... साक्षी होकर देखना पड़ता है। ... तुमको कोई भी बात में अफसोस करने की जरूरत नहीं, सदैव हर्षित रहना है। ऐसी-ऐसी बातों पर विचार कर पक्का कर लेना चाहिए।" सा.बाबा 20.2.99 रिवा.

"अभी ड्रामा का राज़ बुद्धि में है। मुख से कुछ कहने का भी नहीं है। हम उनके हो गये इसलिए ज्यादा ज्ञान की भी दरकार नहीं है।... जो गाया हुआ है, वह अब प्रैक्टिकल में हो रहा है। फिकर की कोई बात नहीं।" सा.बाबा 11.8.06 रिवा.

"बाप कहते हैं - बच्चे अब तुम्हारा 84 का चक्र पूरा होता है... तुम समझते हो - कल्प-कल्प हू-ब-हू हम ऐसे ही बाप से मिलते हैं। जो बीता, वह कल्प-कल्प रिपीट होगा।... यह बाप का

तुम बच्चों के साथ अनादि-अविनाशी पार्ट ऐसे ही कल्प-कल्प रिपीट होता रहता है।"

सा.बाबा 12.8.06 रिवा.

"विनाश तो जरूर होने का है। ... गृह-युद्ध और कुदरती आपदाओं को ईश्वरीय आपदायें नहीं कहेंगे। यह तो ड्रामा में नूँध है, जिसमें नेचुरल केलेमिटीज़ आदि सब आने वाली हैं।"

सा.बाबा 14.8.06 रिवा.

"मैं संगमयुग पर ही आता हूँ। मैं न सतयुग में आता और न कलियुग में आता हूँ। दोनों के बीच में आता हूँ।... बाप ने सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज दी है। यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है।... यह बेहद की नॉलेज तो जरूर बुद्धि में होनी चाहिए।"

सा.बाबा 16.8.06 रिवा.

"भक्ति मार्ग का पार्ट भी कैसा वण्डरफुल है।... परन्तु यह सब ड्रामा में नूँध है। ड्रामानुसार बेहद की बेसमझी से भक्ति करते हैं।... श्रीमत पर चलने वाले ही समझदार बनते हैं। वे सदैव श्रेष्ठाचारी काम ही करेंगे।"

सा.बाबा 16.8.06 रिवा.

"भक्ति में जो जिस भावना से पूजा करते हैं, उनको उसका फल देने वाला मैं ही हूँ। वह भी ड्रामा में नूँध है। उनको आपही मिल जाता है, अपने पुरुषार्थ से। अब पवित्र भी अपने पुरुषार्थ से बच्चों को बनना है। ... इसमें कृपा आदि मांगने बात नहीं।"

सा.बाबा 16.8.06 रिवा.

- न परमधाम कभी खाली होता है और न कभी यह नाटक बन्द होता है।
- सतयुग-त्रेता में कोई पुत्रहीन नहीं होता, दुखी नहीं होता, वहाँ सन्तान योगबल से होती, कब अकाले मृत्यु नहीं होती।

"इसको क्यामत का समय कहा जाता है। सबका हिसाब-किताब चुक्तू होने वाला है। जानवरों का भी हिसाब-किताब होता है ना। कोई-कोई राजाओं के पास रहते हैं, उन्होंकी कितनी पालना होती है। ... यह भी ड्रामा में नूँध है। यह सारा बना-बनाया खेल है।"

सा.बाबा 21.2.04 रिवा.

विश्व-नाटक और उड़ती कला

पक्षी सदा आकाश में उड़ता है क्योंकि वह न भूतकाल का चिन्तन करता है और न भविष्य की चिन्ता करता है। उसके ऊपर कोई बोझ नहीं होता है और न वह किसी के ऊपर बोझ होता है। इसलिए वह स्वच्छन्द गगन में उड़ सकता है। ड्रामा के यथार्थ ज्ञान की धारणा हमको भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से मुक्त कर देती है, इसलिए हम ड्रामा के यथार्थ ज्ञान की धारणा होने पर ही उड़ती कला का अनुभव कर सकते हैं।

अमृत-धारा

ज्ञान के दर्पण में देखो तो विश्व-नाटक का यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता परन्तु इस सत्य का ज्ञान भी अवश्य रहे कि जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और सदा कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है। उसके जीवन में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होता है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए वह सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अवश्य होती है।

इस विश्व-नाटक में न कोई अपना है और न कोई पराया है, न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। सत्यता तो ये है कि जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य- बच्चे, तुम आत्म हो, परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। विश्व-नाटक की इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो तथा ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

"जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है।... किसी भी कारण से दुख का ज़रा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।"

अ.बापदादा 14.11.87